वर्धमान तप महिमा

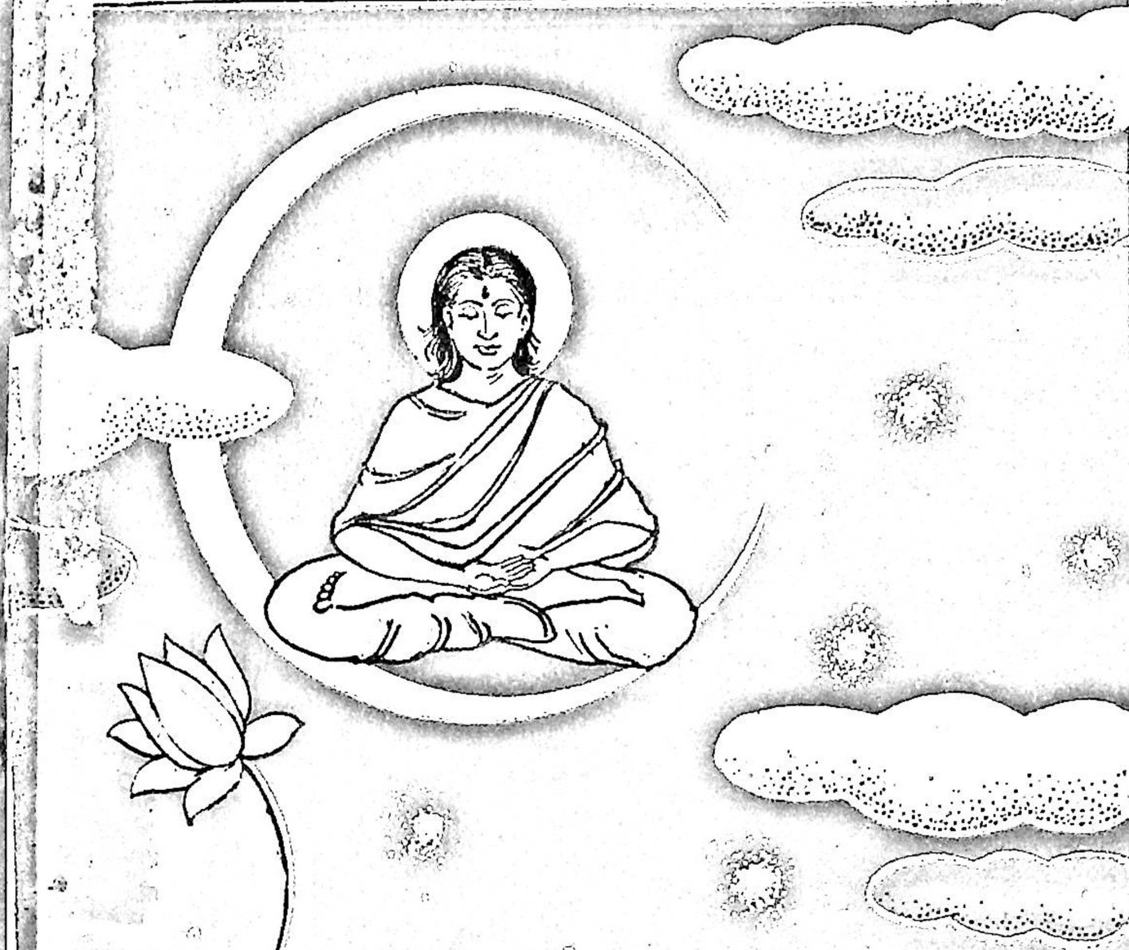

७/८५५८

विश्व शान्ति प्रकाशन, ब्यावर

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः

वर्धमान तप महिमा

अर्थात्

श्री 'श्रीचन्द्र' केवली
चरित्र

विश्व शान्ति प्रकाशन
C/o प्रधानाध्यापक, श्री शान्ति जैन विद्यालय,
ब्यावर

आ. श्री कैलाससागर सूरि ज्ञान मंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा
P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

प्रकट प्रभावी अचिन्त्य चिन्तामणि

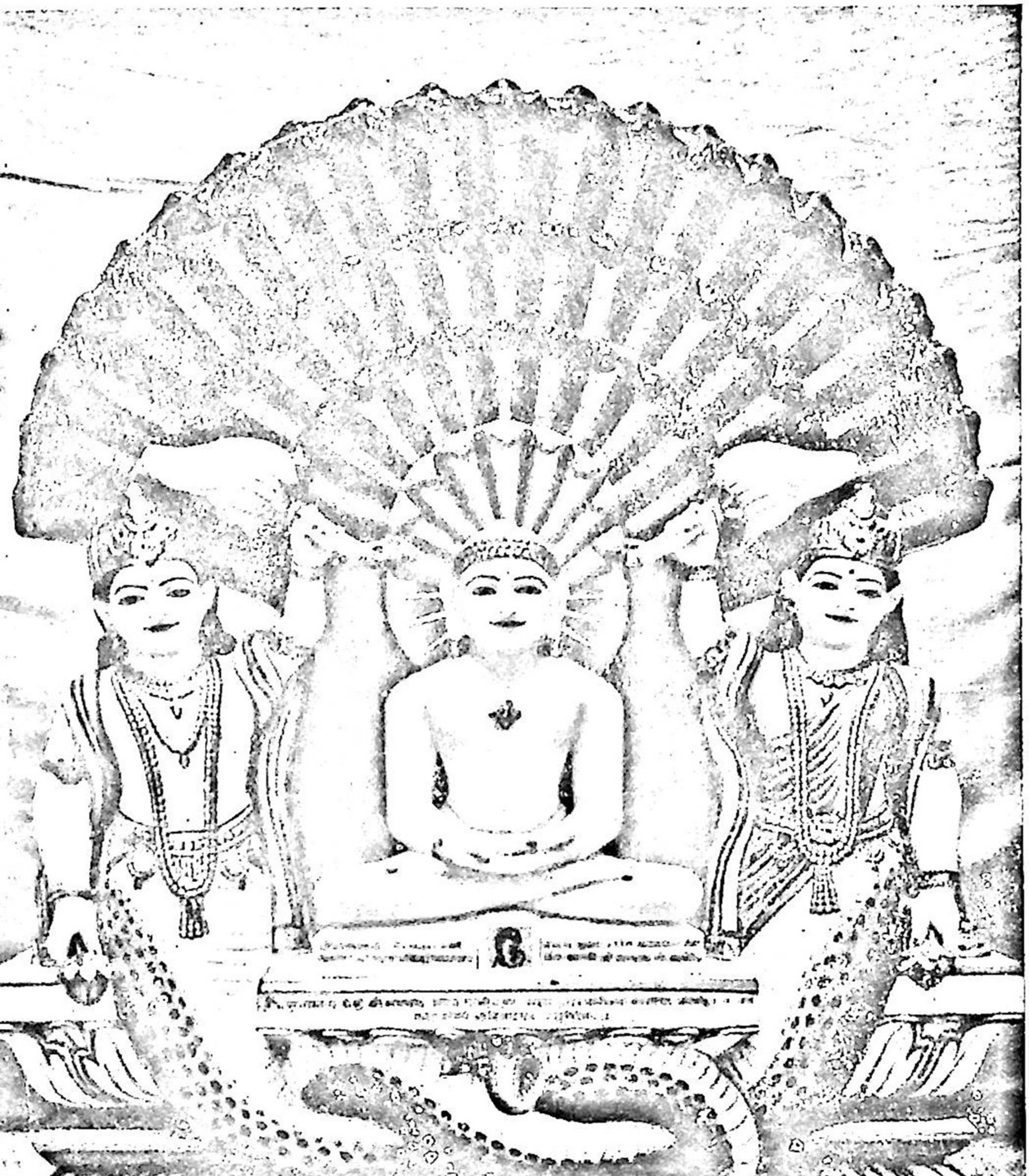

* सहस्रफणा श्री पार्श्वनाथ भगवान *

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः

श्री गौतम स्वामिने नमः

पू० आ० देव श्री सिद्धर्षि गणि कृत

श्री 'श्रीचन्द्र' केवलि चरित्र

ओंकारं बिन्दु संयुक्तं, नित्यं ध्यायन्ति योगिनः,
कामदं मोक्षदं चैव, ॐकाराय नमो नमः ॥

श्री पंचपरमेष्ठि वाचक प्रणव बीज ॐ का ध्यान धारण कर, भगवान् श्री जिनेश्वर देव तथा सद्गुरु महाराज को वन्दन करके श्री "श्री चन्द्र" केवलि चरित्र की रचना करता हूँ ।

श्रमण भगवान् महावीर स्वामी के प्रथम शिष्य अनन्त लब्धि निधान गणधर श्री गौतम स्वामी ग्रामानुग्राम विचरते हुए

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

करीब २५१२ वर्ष पूर्व श्री वैशाली नगरी के बाहर एक सुन्दर उद्यान में पधारे।

यह शुभ संवाद सुन कर गुरु भक्ति से अति हर्षोल्लसित चेटक महाराजा अपने परिवार तथा प्रजाजनों के साथ गणधर भगवंत की सेवा में उपस्थित हुआ। उन के चरण कमलों में वन्दन कर और सुख साता पूछ कर सब लोक यथा योग्य स्थान पर बैठ गये।

उस समय श्री गणधरजी महाराज ने धर्म देशना प्रारम्भ की:–

"हे महानुभावो! सर्वदर्शी जिनेश्वर भगवन्तों ने दान, शील, तप, और भाव रूप चार प्रकार का धर्म फरमाया है। यह धर्म मोक्ष की प्राप्ति का कारण भूत है। उन में तप धर्म को उत्कृष्ट कहा गया है। इस के अनेक भेद हैं।

पूर्व में भगवान् वर्धमान स्वामी ने श्रेणिक महाराजा के समक्ष सब तपों में विशाल तप का जिस प्रकार वर्णन किया था उसका आज कथन करते हैं।

निकाचित कर्मों का नाश करने वाला और सर्व अभीष्ट फल का प्रदान करने वाला श्री वर्धमान आयंबिल तप है जिस में क्रमशः एक २ वृद्धि को पाते हुए १०८ आयंबिल तप की ओली और पारणे में उपवास आते हैं।

श्री सिद्धान्त में कहा है कि 'एक आयंबिल एक उपवास ऐसे बढ़ते हुए अनुक्रम से सौ ओली करने पर यह तप पूर्ण होता है। इस महातप की पूर्णाहुति १४ वर्ष ३ मास और २० दिन में होती है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

आचामाम्लैर्वर्धमान स्याददतिदुष्करं ।
य एतत्कुरुते सोऽंते श्री चन्द्रवत्सुखी भवेत् ।।

इस अत्यंत दुष्कर आयंबिल वर्धमान तप को कोई विरला पुण्यशाली ही पूर्ण कर श्री 'श्री चन्द्र' के समान सर्वदा सुख का अनुभव करता है ।

इस अत्यन्त दीर्घ तप कीं सुन्दर आराधना चंदन ने की और तप के फलस्वरूप 'श्री चन्द' के भव में सर्वतोमुखी सुख सौभाग्य को प्राप्त किया वह दृष्टान्त इस प्रकार है:—

श्री जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र में पूर्वकाल में कुश स्थल नाम की एक सुन्दर एवं विशाल नगरी थी जहां पर १० लाख नगरों के अधिपति प्रतापसिंह नाम के एक न्यायी राजा राज्य करते थे । उनके ५०० रानियों में मुख्या जय श्री रानी से जय, विजय, अपराजय और जयंतक नामक चार पुत्र थे ।

राजा प्रतापसिंह के पास करोड़ सैनिक, १० लाख अश्व, यशोधवल मुख्य १० हजार हाथी, तथा इतने ही रथ, ऊंट, वाजित्र व चर पुरुष थे । मंत्रियों और सामन्तों से संयुक्त वह राजा प्रजा पर न्याय पूर्वक शासन करता था ।

एक दिन राजा राज्य सभा में बैठा था । उस समय व्यापार निमित्त देश विदेश घूमता हुआ वरदत्त नाम का एक सेठ वहां आया । राजा ने उसे पूछा कि "आप किस नगर के रहने वाले हैं ? देश

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

देशान्तर घूमते हुए क्या आपने कुशस्थल से अधिक सुन्दर कोई नगर देखा है ?"

वरदत्त सेठ प्रणाम पूर्वक बोला कि, "महाराज ! आप श्री के अधिकार में अनेक नगर हैं परन्तु दीपशिखा नगरी इन्द्रपुरी जैसी सुन्दर है। वहां सर्व प्रथम राजा का भव्य प्रासाद है। नगर के मध्य भाग में प्रथम भगवान् का चार मुख्य द्वारों वाला एक अति रमणीय मन्दिर है। उसकी चारों दिशाओं में बाजार, गृह, प्रासाद, किल्ले हैं। ईशान कोण में राज कुटुम्ब रहता है, अग्नि कोण में व्यापारी वर्ग और नैऋत्य कोण में अन्य जाति के लोग निवास करतें हैं। नगर के बाहिर सुन्दर कमलों की श्रेणी से सुशोभित पद्म सरोवर हैं। समीपवर्ती अनेक वाटिकाएं, उद्यान आदि मनोहर स्थल हैं।

मैं उसी दीपशिखा नगरी का निवासी हूँ, हे महाराज ! वह सुन्दर नगरी वास्तव में आप श्री के देखने योग्य है।"

यह सुन कर राजा प्रतापसिंह को उस नगरी को देखने की प्रबल इच्छा उत्पन्न हुई। मुख्य मन्त्री के प्रोत्साहन से उन्होंने सैन्य सहित दीपशिखा की ओर प्रयाण किया उस समय सारी प्रकृति रमणीय थी। मन्द २ समीर चल रही थी। शुभ पक्षी मधुर आलाप कर रहे थे।

एक दिन प्रतिहारी ने राजा के पास आकर विनंति की कि "महाराज ! चार कलाकार आप श्री की सेवा में उपस्थित होना चाहते हैं।" राजा की आज्ञा होने पर उन चारों को हाजिर किया गया। राजा ने उन से पूछा कि "आप किस २ कला में प्रवीण हैं ?" पहला

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कलाकार बोला कि 'महाराज ! मैं पक्षियों की बोली जान सकता हूँ" दूसरे ने कहा कि "मैं स्वामी के मन की बात जान लेता हूँ।" तीसरा बोला कि "मैं स्त्री पुरुष के लक्षणों का ज्ञाता हूँ।" चौथे ने उत्तर दिया कि "मैं रथ भ्रमण कला में प्रवीण हूँ। हमारे गुरु गुणधर हैं। आप श्री की सेवा करने के लिए हम आये हैं।" राजा प्रतापसिंह ने कलाकारों का सन्मान कर उनकी याचना स्वीकार की। वे प्रसन्नता पूर्वक राजा के पास रहने लगे।

कहा भी है कि "आहार, निद्रा, भय और मैथुन में तो मनुष्य और पशु समान हैं परन्तु वस्तुतः ज्ञान ही मनुष्य में विशेष है। ज्ञान रहित मनुष्य पशु तुल्य है।"

प्रयाण करते मार्ग में नदी, बाटिका, उद्यान आदि में राजा इच्छानुसार क्रीड़ा करता था। लोग राजा को भेंट अर्पण करते जिन्हें वह स्वीकार कर उन को सम्मानित कर दान देता था।

क्रमशः वे दीप शिखा नगरी के पास आये। उस समय एक शुभ पक्षी ने मधुर स्वर से शुभ शुकन किया पक्षियों की बोली जानने वाला कलाकार बोला कि "हे राजन्! आपको एक सुन्दर स्नेहवाली कन्या का मिलाप होगा। इस में कोई भी सन्देह नहीं।" इस से राजा के मन में हर्ष हुआ।

उसी समय दीप शिखा नगरी के राजा दीपचंद ने आकर प्रतापसिंह नरेश को प्रणाम कर विनंति की कि "हे देव! आप श्री अपने चरण कमलों से हमारी नगरी को पावन करें।"

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

॥ ६ ॥

विनंति स्वीकार कर दोनो राजाओं की सवारी नगर की ओर बढ़ी। आगे जाते हुए पद्म सरोवर की पाल पर पहुंचे। वहां से नगरी की सुन्दर रचना दृष्टिगोचर हो रही थी। विविध प्रकार के सुन्दर तोरणों से सज्जी हुई गली बाजारों की श्रेणियों को देखते हुए उन्होंने नगर में प्रवेश किया।

उस समय राज मार्ग में एक सात खण्ड के महल में सुन्दर झरोखों की श्रेणी के अग्र स्थान पर एक दिव्य कन्या सखियों सहित राजा प्रतापसिंह को देखने के लिए खड़ी थी। प्रतापसिंह की उस कन्या रत्न पर दृष्टि पड़ते ही प्रताप का मनरूपी भ्रमर उसके मुखरूपी कमल पर आसक्त हो गया।

क्षण वार में जैसे कि कोई योगी लय में स्थिर हो गया हो वैसी राजा प्रतापसिंह की दशा को देख कर मन जानने वाले कलाकार ने कहा कि "जिस कन्या रत्न को देख कर आप स्थिर हुए हैं, वह आप श्री के पुण्य के प्रताप से आप को प्राप्त होगी।"

यह सुन कर राजा प्रतापसिंह को आश्चर्य एवं हर्ष हुआ। प्रतापसिंह ने पूछा कि 'हे भद्र! यह किस का महल है? और यह मनोहर कन्या किसकी है?" कलाकार ने कहा कि "आप के भक्त राजा दीपचन्द की पटरानी प्रतीपवती का यह महल है और यह सूर्यवती कुमारी उसीकी पुत्री है।"

राजा दीपचन्द को बहुत दिनों से सूर्यवती के लिए योग्य वर की चिन्ता थी। राजा प्रतापसिंह के आगमन से उसकी यह चिन्ता दूर

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

हो गयी। जैसे किसी रोगी को उत्तम वैद्य के आगमन से आनंद होता है उसी प्रकार आज राजा दीपचन्द हर्षोल्लसित था।

इधर कुमारी सूर्यवती भी पलक झपके विना अनिमेषदृष्टि से प्रतापसिंह के मुख लावण्यरूपी अमृत का पान कर रही थी।

सवारी आगे वढ़ी। नगर के मध्य भाग में भव्य जैन मन्दिर को देखकर राजा प्रतापसिंह ने अति हर्ष से उसमें प्रवेशकर के विधि पूर्वक श्री जिनेश्वर भगवान् को वन्दन किया।

फिर वे लोग राज सभा में पहुँचे। राजा प्रतापसिंह एक सुन्दर सिंहासन पर विराजमान हुए। उस समय जैसे कि कोई मोर मेघ गर्जन से नाच उठे उसी प्रकार अति हर्षान्वित होकर राजा दीपचन्द ने प्रतापसिंह नरेश के साथ कुमारी सूर्यवती का हस्तमिलाप विशाल महोत्सव पूर्वक कर दिया।

यह देख कर स्त्री पुरुष के लक्षण जानने वाला कलाकार कहने लगा कि 'हे पृथिवीपति। सूर्यवती सुलक्षणा होने से दो भाग्यशाली पुत्रों की जनयिता होगी। वे कुल दीपक और जगत विख्यात होंगे। अतः यह पटरानी पद पर स्थापित की जाने योग्य है।" उसकें ये वचन सुन कर राजा प्रतापसिंह ने सूर्यवती को पटरानी पद से विभूषित किया। सब लोग सूर्यवती कें अद्भुत सौभाग्य की सराहना करने लगे।

उस समय राजा दीपचन्द की भतीजी चन्द्रावती के पति सिंहपुर नरेश शुभगांग के दूत ने वहां उपस्थित होकर राजा दीपचन्द को एक

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

संदेश दिया। राजा दीपचन्द उसे प्रतापसिंह नरेश के समक्ष रख कर बोला कि "हे देव ! वासंतिका नाम की भयङ्कर अटवी में शूर नाम का एक पल्लिपति रहता है। वह सर्व राजाओं के लिए दुर्जय है।

उस पल्ली के पश्चिम में सिंहपुर नगर है वहां के राजा शुभगांग के महल में से राणी चन्द्रावती का एकावली हार चोरी हो गया। कोतवाल ने चोरों को पकड़ कर राजा के समक्ष उपस्थित किया। दण्ड प्रहार होने पर उन्होंने अपराध स्वीकार कर लिया और बोले कि, "हम शूरपल्लीपति के भील हैं। शूर की आज्ञा से चोरी करने आये थे।' उन से एकावली हार लेकर क्रोधित होकर राजा शुभगांग ने कोतवाल को आज्ञा की कि इन चोरों को शूली पर चढ़ादो।

जब शूर ने ये समाचार सुने तो उसने रोष से भीलों की विशाल सेना के साथ सिंहपुर नगर को घेर लिया है। इस परिस्थिति में क्या करना उचित है? यह निर्णय आप श्री ही कर सकते हैं। शूर के भय से वहां के व्यापारी व्यापार नहीं कर सकते हैं। शूर ने आस पास के सारे मार्गों को घेर लिया है। जिससे कोई व्यक्ति कष्ट उठाकर भी वहां जा नहीं सकता है।"

हस्ती की चिंघाड़ को सुनकर जिस प्रकार केसरी सिंह गर्ज उठता है उसी प्रकार शूर के बारे में यह संदेश सुनकर प्रतापसिंह राजा गर्ज उठे। उन्होंने तुरन्त ही प्रयाण भेरी बजवादी। भेरी के नाद से चतुरंग सेना सज्ज हो गई। शूर को दण्ड देने के लिए प्रतापसिंह राजा ने एकदम प्रयाण कर दिया। कुछ ही दिनों में वे सिंहपुरी नगरी के

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

समीप पहुँच गये और नदी के किनारे पर पड़ाव डाल दिया। उस समय शूर की सेना आदि की संख्या के बारे में समाचार गुप्तचरों द्वारा प्रतापसिंह ने प्राप्त किये और तुरन्त ही परस्पर मन्त्रणा करके सेना को युद्ध के लिए तैयार हो जाने का आदेश दिया। उधर भीलों ने शूर को समाचार दिया कि कुशस्थल का राजा प्रतापसिंह विशाल सैन्य से सुसज्जित होकर आया है। शूर ने तुरन्त ही वृद्धजनों से सलाह की। उन्होंने कहा कि "हे देव! प्रतापसिंह राजा बहुत बलवान है। अतः अपने लिए भाग जाना ही श्रेयस्कर है" शूर बोला कि हम भागकर भी कहां जावेंगे? प्रतापसिंह यमराज के समान क्रूर है। उसके पंजे से छूट जाना भी तो कठिन है।" यह सुनकर वृद्ध पुरुष मौन हो गये। तब शूर ने कुछ विशेष विचार कर अपने उत्तम गंध हाथी के उपर आरूढ़ होकर भीलसेना सहित रणक्षेत्र में पदार्पण किया। प्रतापसिंह राजा भी सेना सहित तैयार ही थे। परन्तु उन्होंने अपनी सेना पर दृष्टि डालने पर अपने सब हाथियों को मद रहित तथा ऊंघते हुए देखकर राजा दीपचन्द से पूछा कि "ये हाथी इस दशा को कैसे प्राप्त हो गये हैं।?" दीपचन्द ने कहा कि 'शूर के गंध हस्ती की गंध से अपने हाथी मद रहित हो गये हैं।"

राजा प्रतापसिंह विचार करने लगे कि अब हमें क्या करना चाहिये?" इतने में रथभ्रमण विद्या वाले कलाकार ने आकर विनंती की कि 'हे राजन्! आप श्री इस रथ में आरूढ़ होकर मेरी कला का निरीक्षण करें।" प्रतापसिंह राजा धनुष और बाणों से सज्ज होकर रथारूढ़ हुए। रथ रण क्षेत्र के स्थल पर पहुंचा। शूर गंध हस्ती पर बैठकर

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उनके सामने आया। कलाकार ने रथ को अति वेग से चारों तरफ घुमाया। प्रतापसिंह राजा ने शूर को बाणोंसे नीचे गिरा दिया। तुरन्त ही उसे काष्ट के पिंजरे में कैद कर दिया गया और जय कलश गंध हस्ती को अपने कब्जे में कर लिया। प्रतापसिंह राजा का जय जय कार चारों तरफ गूंज उठा। शूर की सेना चारों तरफ भाग गई। सिंहपुर नगर से शुभगांग राजा ने आकर प्रतापसिंह राजा का प्रणाम पूर्वक सन्मान किया। सबने अटवी में जाकर पल्ली को भंगकर दिया एक मूडा मोती, ५६ कोटी स्वर्ण और दूसरी अमूल्य वस्तुओं को तो प्रतापसिंह ने अपने खजाने में रख लिया। शेष धन दीपचन्द और शुभगांग राजाओं को बांट दिया। वस्त्र आदि सेना में वितीर्ण कर दिये। उस समय राजा प्रतापसिंह चारों कलाकारों पर अति प्रसन्न होकर बोले कि, 'तुम अपनी २ कला में पूर्ण प्रवीण हो। एक ने पक्षियों की बोली जानी, दूसरे ने मेरे मन की बात को जाना, तीसरे ने कन्या के लक्षण जानकर उसके फल बतलाये तथा चौथे ने रथ भ्रमण की कला द्वारा मुझे विजय दिलवाई। तुम्हारी कला से मुझे अपार लाभ हुआ है। तुम्हारे कला विज्ञान पर मैं अति सन्तुष्ट हूँ। तुम्हारी तीव्र बुद्धि अति प्रशंसनीय है। तुमने कला प्राप्त करने में जो परिश्रम किया, वह सार्थक ही है।"

इस प्रकार प्रतापसिंह राजा ने उन कलाकारों की सराहना कर अति प्रसन्नता पूर्वक विशाल दान देकर उनका सन्मान किया।

सूर्यवती के नाम से पल्ली के स्थल पर सूर्यपुर नाम का नया विशाल नगर बसाया। दीपचन्द राजा और शुभगांग राजा ने बहुत सी भूमि भेंट की। प्रतापसिंह राजा ने सिंहपुर नगर का निरीक्षण

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

किया। तत्पश्चात राजा प्रतापसिंह और दीपचन्द दीपशिखा नगरी में वापिस आये।

कुछ समय वहां ठहरने के पश्चात् प्रतापसिंह सूर्यवती पटरानी सहित कुशस्थल की ओर प्रस्थान के लिए उद्यत हुए। वहां से विदा लेते समय राजा रानी तथा समस्त नगरजनों के नयनों में से अश्रु झरने लगे।

महारानी प्रदीपवती ने सूर्यवती को कुलांगना के योग्य हित शिक्षा दी।

प्रयाण करते २ प्रतापसिंह राजा अपनी नगरी के समीप आ पहुँचे। शुभ मुहूर्त में सजी हुई कुशस्थल नगरी में महोत्सव पूर्वक उन्होंने प्रवेश किया। पूर्व पुण्य के प्रभाव से वे विविध प्रकार के सांसारिक सुखों का उपभोग करने लगे।

कहा है कि, 'उत्तम कुल में जन्म, शरीर का निरोगीपन, सौभाग्य, पूर्ण आयु, निर्मल यश, विद्या और धन सम्पदा धर्म से ही प्राप्त होते हैं। धर्म सब संकटों में रक्षण करता है। शुद्ध मन से किया हुआ धर्म स्वर्ग और मोक्ष को देता है।"

एक दिन प्रतापसिंह राजा के पुत्र जय, विजय, अपराजय और जयंतक जब महल के झरोखे में खेल रहे थे तो उस समय राज मार्ग में बहुत से लोगों को इकट्ठे होकर जाते हुए देखकर उन्होंने सेवक को पूछा कि ये लोग एकत्रित होकर कहां जा रहे हैं? उसने कहा कि "एक विख्यात ज्योतिषी परदेश से आया है इसलिए ये

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लोग एकत्रित हुए हैं।" कुमारों ने सेवक को आज्ञा दी कि उस ज्योतिषी को हमारे पास बुला लाओ। आशीर्वाद देने में तत्पर उस ज्योतिषी को कुमारों ने उचित सन्मान देकर योग्य आसन पर बिठाया।

कुमारों ने पूछा कि 'आप कहां से पधारे हैं? और कहां जाने का विचार है? आप क्या जानते हैं?" ज्योतिषी ने कहा कि 'हे राजपुत्रों मेरी एक लम्बी कहानी है जो कि मैं तुम्हें सुनाता हूँ। इस नगर से पश्चिम दिशा में पृथ्वी की शोभा रूप, धर्म लक्ष्मी से मनोहर ऐसा सिंहपुर एक नगर है। वहां लक्ष्मी से परिपूर्ण श्रीधर ज्योतिषी रहते थे। उनके नागिला नाम की प्रिय भार्या थी उसके धरण नाम का एक पुत्र हुआ जो अनुक्रम से बड़ा हुआ। उसी नगरी में भियंकर नाम के एक दूसरे विख्यात ज्योतिषी भी थे। उनकी शीलवती नाम की स्त्री तथा श्री देवी नाम की पुत्री थी। जब श्री देवी तरुणवय को प्राप्त हुई तो वह रूप लावण्य से सुशोभित, कला कौशल में प्रवीण और जैन धर्म में अति अनुरक्ता हो गयी।

श्रीधर ने उस श्री देवी की धरण के लिए मांगनी की। महोत्सव पूर्वक दोनों का लग्न हो गया। श्री देवी अत्यन्त विशुद्ध स्वभाव वाली, बड़ी लज्जाशील और अर्हंत धर्म की क्रियाओं में तत्पर रहती थी। वह हित, मित, प्रिय और सत्य वचन बोलती थी परन्तु उसकी सासु नागीला निष्ठुर स्वभाव वाली थी। श्री देवी दिन रात घर का काम करती परन्तु सासु तो झूठा ठपका ही दिया करती थी। जिस प्रकार पानी के रेंट चलने पर लट्ठे कीं लकड़ीं से खटपट की आवाज रहती है. उसीं प्रकार नागींला के मुंह से हमेशा कलह क्लेश भरे शब्द

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

निकलते ही रहते थे ! झूठा कलंक, निन्दा, चुगली उसका नित्य प्रति का स्वभाव था । बिचारी श्री देवी तो प्रातः जल्दी उठती, घर की सफाई करती, पानी भरती, अनाज दलती, भोजन बनाती, तथा सासु ननन्द, देवर की सेवा करने में कोई कसर बाकी न रखती । वह कष्ट पूर्वक जीवन व्यतीत करती परन्तु श्री जिनेश्वर देव की भक्ति में सर्वदा उद्यमशील बनी रहती थी ।

श्री देवी के माता पिता पड़ौसी आदि जब कभी उससे पूछते कि क्या तुझे पति के घर सुख है ? तब वह अपने घर की हमेशा प्रशंसा ही किया करती परन्तु कभी दूसरी कोई घर की बात नहीं करती थी ।

समय बीतता गया । नागीला का स्वभाव दिन प्रतिदिन क्रूर बन रहा था, उसके घर में यदि कोई भी तोड़ फोड़ होती, या कोई चीज खो जाती तो वह अपने पुत्र को कहती कि यह श्री देवी का काम है । झूठी बातें कह कह कर उसके कान भरती रहती जिससे क्रोधित होकर धरण श्री देवी को मारने लगता ।

श्री देवी धर्मात्मा घराने में जन्मी थी । धर्म के संस्कारों के कारण वह अपने पूर्व के कर्मों को दोष देती परन्तु सासू के लिए अपने मन में कोई बुरा विचार नहीं लाती थी । वह यही मानती थी कि यह अपने किये हुए कर्मों का फल है ।

इस प्रकार कुछ दिनों के पश्चात् एक दिन उसके ससुर की अंगूठी घर में कहीं पड़ गई, परन्तु उसे ध्यान नहीं रहा । प्रभात में कचरा इकट्ठा करते हुए श्री देवी को अंगूठी मिली । एक स्थान पर

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

रख कर वह दूसरे कार्य के लिए चली गई। जब ससुरे को याद आयी तब वह पूछने लगा कि, क्या किसी को मेरी अंगूठी मिली है? वार २ पूछने पर भी अंगूठी का पता नहीं लगा।

इतने में श्री देवी ने पशुओं के बाढ़े में से अंगूठी लाकर ससुरे को दे दी। इससे ससुरा खुश तो हुआ परन्तु सासू ने श्री देवी को देते देख कर कहा कि, 'मैं जानती हूँ कि बहू चोर है। इस प्रकार यह चोर वहू सर्व वस्तुओं को चुराने लगेगी, तो मेरा घर किस प्रकार चलेगा? हे लोगों! मेरे घर का आचरण देखो! जहाँ ऐसी वहू हो वहाँ मेरा वचन कौन सुने? सब के घरों में बहुएं होगी परन्तु ऐसी नहीं होगी। बहु ने अंगूठी चुराली।"

इस प्रकार जोर २ से नाटक रचने लगी कि। हे पुत्र! सूकुल में उत्पन्न हुई तेरी स्त्री घर में आनन्द करती है। मां के चिढ़ाने से धरण को आवेश आ गया, और बिना विचारे एकदम उस सती के मस्तक पर लकड़ी से प्रहार किया। श्री देवी का मस्तक फट गया और वह मूर्च्छित होकर गिर पड़ी उस समय श्री देवी नमस्कार महा-मंत्र का स्मरण कर रही थी। मस्तक में से रक्त कीं धारा छूट पड़ी। धरण हाहाकार करने लगा। मस्तक पर औषधी लगाई। किसी ने श्री देवी के माता पिता को ये समाचार दे दिये।

वे विलाप करते हुए वहां आये। माता श्री देवी को गोद में लेकर कल्पान्त करने लगी कि। हे पुत्री! यह क्या हुआ? मेरे मुख

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

को देख। हे पुत्री ! तेरे किस वचन को याद करूं। अब मुझे माता कह कर कौन बुलाएगा ? हे पुत्री ! तूं छोटी होने पर भी लज्जा से उत्तर नहीं देती थी। तेरा मुख कमल सदा शान्त रहता था। मैं कभी तुझे ढांटती फिर भी तू क्रोधित नहीं होती थी। तुम्हारी वह उत्तम भाव पूर्ण जिनेश्वर देव की भक्ति, नियम पालन, तप और त्याग, तेरे सिवाय दूसरी कन्या में तो देखने को नहीं मिलते। हे पुत्री ! तूं चुप क्यों है ?" पिता ने कहा कि, "मेरी पुत्री रत्न के साथ जो व्यवहार हुआ है उसे विधाता भी सहन नहीं कर सकता।" इस प्रकार के विलाप सुनकर धरण भी विह्वल हो उठा। पश्चातापपूर्वक वह भी विलाप करने लगा कि मैंने क्रोध से सोच विचारे किये विना कैसा घोर पाप कर डाला है। उसका कोई भी दोष नहीं था फिर भी मेरे निष्ठुर प्रहार से यदि वह मृत्यु को प्राप्त हो गई तो जगत में मैं स्त्री हत्यारा कहलाऊगां, हाय ! मैंने महान् पाप कर डाला।"

हमेशा झूठ बोलनें वाली नागीला का लोगों ने तिरस्कार किया पड़ोस की स्त्रियां कहने लगी कि जिस प्रकार सांप के मुंह में से मेंढक छूटे, उसी प्रकार श्री देवी मृत्यु पाकर सासु के पञ्जे में से छूटेगी। इस प्रकार लोगों में उसकी वड़ी अपकीर्ति हुई।

श्री देवी के पुण्य से एक योग्य वैद्य वहां आ पहुँचा। उसने पानी मंत्रित करके श्री देवीपर छांटा। उससे श्री देवी में चैतन्य आया। यह स्वरुप देख कर वैद्य ने कहा कि "अब धर्म रुपी ओषध का सेवन करो।" श्री देवी को उसके माता पिता घर ले गये अन्त समय

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

समीप जान कर उसे भव्य आराधना करायी। उसने सब जीव राशि को खमाया। चित्त की शुद्धि पूर्वक पापो की निन्दा की पुण्य की अनुमोदना की सात क्षेत्रों में दान दिया। चारशरण धारण किये। अनशन, ममता त्याग, ब्रह्मचर्यादि व्रत ग्रहण किये। इस प्रकार श्री देवी ने सुसमाधि पूर्वक मृत्यु का आलिङ्गन किया। लोगों ने उसके श्वसुर पक्ष का तिरस्कार किया जिससे श्रीधर नगर में मुंह बताने योग्य नहीं रहा। सिंहपुर में धरण को विवाह के लिए कन्या प्राप्ति न होने से श्रीधर ने दूसरे नगर के एक ज्योतिषी की पुत्री उमा के साथ उसका विवाह किया।

उमा अति उद्धत और क्रोधी स्वभाव वाली थी। सब के सामने बोलने लगती और हठ से घर का कोई काम नहीं करती थी। बात २ में सब का दोष प्रगट करती रहती थी।

उमा के सामने उसकी सासु नागीला की तो ऐसी दशा थी जैसी शेर के सामने बकरी की होती है। अब तो घर का सारा काम नागीला को ही करना पड़ता। कुछ काल के पश्चात सासु ससुर मृत्यु को प्राप्त हो गये।

उमा ने माया भक्ति और युक्ति से पति को वश में कर लिया। धरण ने अपने मित्र सोम देव के सामने अपनी पत्नी की प्रशंसा की। जिसे सुनकर उसका श्रावक मित्र बोला। तुम्हारी बात सत्य हो परन्तु नीतिकारों का कथन है कि गुरु की प्रशंसा समक्ष करनी, मित्र व बन्धु की परोक्ष में करनी तथा पुत्र व स्त्री की मृत्यु

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

के बाद करनी चाहिये। स्त्री अत्यन्त निर्दयी होती है। स्त्री हिरण के सींग के समान टेड़ी होती है। नदी के समान नीचे जाने वाली होती है। वज्र जैसी कठोर हृदय वाली होती है। स्त्री के चित्त में एक बात होती है, वचन में दूसरी और क्रिया में कोई तीसरी चीज नजर आती है। ऐसी मायावी स्त्रियों से कौन स्नेह करे। तू वृथा ही अपनी स्त्री की इतनी प्रशंसा करता है।" धरण ने पूछा कि, "हे मित्र! इस तरह तुम कैसे बोलते हो?" वह बोला कि "हे मित्र! मैं तुम्हारी स्त्री को अच्छी तरह जानता हूँ। वह एक दिन भी घर में नहीं रहती। मायावी आचरणों से स्नेह नहीं होना चाहिये। यदि तुझे मेरी बात का निर्णय करना हो तो परदेश जाने के बहाने से रात्री में परीक्षा कर लो।' 'धरण ने इसे स्वीकार किया।

धरण ने परदेश जाने की सम्मति बहुत कठिनाई से प्राप्त की। सारा दिन मित्र के घर विताया। रात्रि में उमा घर से कहीं बाहर गई। मित्र के कहने से धरणघर में गुप्त तरीके से छुप गया और जिस प्रकार पहले दरवाजा बन्द था उसी प्रकार दरवाजा बन्द कर दिया। मित्र वापिस अपने घर चला गया। उत्साह से कुछ समय पश्चात उमा ने कहीं से वापिस आकर विशेष रसोई आदि की तैयारी कीं इतने में एक पुरुष मुंह को ढांके हुए आया आश्चर्य से धरण उसे देख रहा था। मन में विचारने लगा कि 'यह कौन हो सकता है? यह तो पापात्मा रणधीर है। यह क्षत्रिय मेरे घर में किस लिए आया है।"

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

इतने में तो उमा ने घर का द्वार बन्द कर दिया। रणधीर को खुश करके आनन्द से दोनों हास्य विलास करके सो गये। यह दुष्ट कृत्य देख कर धरण ने क्रोधित होकर विचार किया कि इन दोनों दुष्टों को मार डालूं ? फिर विचार करने लगा, कि इससे तो मैं स्त्री हत्यारा कहलाउंगा, ऐसा विचार कर कोतवाल पुत्र रणधीर को नीचे आकर मार डाला। द्वार खोल कर धरण वापिस अन्दर छुप गया।

उमा के कण्ठ के पास रणधीर का रक्त आया। उसकी ठण्डक से एकदम चमक कर जागी। यह दृष्य देख कर हा! हा! यह क्या हुआ। किसने रणधीर की हत्या कर डाली। द्वार को खुल्ला देख कर उमा ने निश्चय किया कि किसी शत्रु ने ही इसकी हत्या की है। अब तो वह रणधीर का शरीर और तलवार, रक्त वाले वस्त्र आदि बांध कर पोट्ला अपने सिर पर रख कर तुरन्त बाहर निकली।

गुप्त रीति से धरण भी पीछे २ गया। उमा गठरी को कुएं में फेंक कर तुरन्त वापिस घर आ गई। धरण बाहर खड़ा होकर विचारने लगा कि 'अहो! कैसी इस स्त्री की क्रूरता और कुकर्मता है ?"

इतने में तो उमा खिचड़ी आदि लेकर घर के द्वार को बन्द करके एकदम आगे बढ़ी। धरण भी कौतुक वश गुप्त रुप से पीछे २ गया। उमा ने जल मार्ग द्वारा नगर से बाहर निकल कर निर्भयता से श्मशान पार करके गुफा में प्रवेश किया। दीपमाला से सुशोभित उसमें एक महल था। वहां सुन्दर आसन पर स्त्रियों के समूह में

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अग्रमुखी योगिनी खर्परी बैठी थी। उमा को देखकर स्त्रियां उमा आ गयी' इस प्रकार कोलाहल करने लगीं।

योगिनी खर्परी को अन्नदान से खुश कर उमा नमन करके बैठ गया। खर्परी ने पूछा कि, 'तूने मंत्र के साधना की ?'

'हाँ, आपके प्रभाव से साधना की।'

"हे बुद्धिमते! फिर तूं क्या कहती है ?"

"हे महेश्वरी! मेरे उपर प्रसन्न हो, वृक्ष को उड़ाने की विद्या मैं मांगती हूँ।"

खर्परी ने कहा कि, 'हे शुभे! मुझे बड़ी बलि दे' उमा नें कहा कि, 'हे माता! काली चउदस को अपने पति की बलि दूंगी। 'अच्छा' कह कर आज्ञा दी। उमा ने अंजली कर के वश करने का चूर्ण मांगा।

"मैंने तुझे पहले दिया था वह कहां गया ?"

उमा ने कहा कि, "उस चूर्ण से जिसे वश किया था वह आज मृत्यु पा गया"

दूसरा चूर्ण पाकर उमा भक्ति से नमन करके घर आ गयी।

धरण सर्व स्त्री चारित्र देख कर और सुन कर भयभीत हो गया। भय, आश्चर्य और रौद्ररस से धरण का हृदय वीर, शोक और बीभत्स रस युक्त हुआ। फिर हास्य शृंगार रस का त्याग करके शान्त रस मय हुआ।

मायावी कुटिल और दुष्ट आचरण वाली उमा को धिक्कारता हुआ धरण विचारने लगा कि चूर्ण से वश करके वह मेरी बलि चढ़ा देगी, जिस

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

प्रकार रस्सी से बंधी हुई गाय दूसरी जगह जा नहीं सकती उसी तरह मैं भी दूसरी जगह कैसे जा सकूंगा। ऐसा विचार करता हुआ धरण मित्र के घर गया, मित्र के पूछने पर सब हकीकत उसे कह सुनायी। मित्र ने कहा कि, "दुख, निन्दा और भय से क्या ? स्त्रियों का स्वभाव ही चंचल होता है। कर्म की गति कैसी विचित्र है ? बता अब तू क्या करना चाहता है।" धरण ने गद्‌गद् स्वर से कहा कि "उमा का मुख देखे बिना दूर देशान्तर जाना चाहता हूं। दो हत्या के पाप से भरा हुआ मैं आत्महत्या करूंगा।"

मित्र ने कहा कि, "इस प्रकार मत करना क्यों कि दूध से सर्पनी की तरह तुम्हारे धन से उमा उन्मत्त हो जायगी। इस लिए पहले अपने घर जाकर सर्व सम्पत्ति को अपने अधीन करलो। फिर सदगुरु से दो हत्या का प्रायश्चित ग्रहण कर लेना। इस प्रकार से कार्य करना ही तुम्हें योग्य होगा परन्तु कदापि आत्म-हत्या का विचार न करना।"

मित्र की सलाह से धरण ने अपने घर जाकर सारी सम्पत्ति को अपने अधिकार में किया। उमा ने बड़े आडम्बर से कृत्रिम स्नेह दिखाया। परन्तु वह अब उसके स्नेह पाश में न फंसा।

दूसरी और लोगों ने शव को कुएं में से बाहर निकाला, रणधीर को पहचान कर हा हा कार करने लगे। यह सुनकर उमा भी हा हा कार करने लगी।

धरण सारी लक्ष्मी को लेकर मित्र के घर चला गया। वह

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वहां भोजन कर योगी का वेष धारण कर उस नगर से बाहर निकला और देश देशान्तर भ्रमण करने लगा।

भ्रमण करते हुए एक ग्राम में पानी की प्याऊ पर एक सिद्ध पुरुष को बैठे देखा। उस को नमन कर धरण पास में बैठ गया। उसे विनय आदि गुणों से युक्त देखकर सिद्ध पुरुष ने पूछा कि हे भद्र। तू कौन है?"

धरण ने सर्व हकीकत कह सुनायी। और उससे पूछा कि "मैंने दो मनुष्यों की हत्या का पाप किया है। उस पाप से मैं किस प्रकार मुक्त हो सकता हूँ?" सिद्ध ने मन में विचार किया कि, 'धरण बहुत मुग्ध है, कारण कि अपनी गुप्त बात मुझे कहता है।"

फिर वह बोला कि "मैं भी चिन्तित मन वाला हूँ। जिसका मन स्वच्छ होता है, उसकी बुद्धि भी अच्छी होती है।"

धरण ने पूछा कि, 'आप श्रीमान् को कौन सी चिन्ता है?' सिद्ध ने कहा कि, 'मेरे गुरु ने संन्तुष्ट होकर मुझे एक विद्या दी थी। वह विद्या स्वर्ण से सिद्ध हो सकती है। 'यह चिन्ता मेरे मन में शूल की तरह दुख देती है।" धरण ने पूछा कि "कितना स्वर्ण इसके लिए चाहिये?'

सिद्ध ने हंस कर कहा कि, 'हे बुद्धिशाली! मुझे कितना स्वर्ण दे सकेगा?" धरण ने कहा कि, 'मेरे पास बहुत से रत्न है।"

धरण की उदारता तथा गुणों से सिद्ध प्रसन्न हुआ और विचारने लगा कि, यह भद्र मुझे जानता भी नहीं फिर भी मुझ पर

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

विश्वास करता है'। सिद्ध ने कहा कि 'हे मुग्ध । मुझे रत्नों से कोई प्रयोजन नहीं । मैंने तो सिर्फ तेरी परीक्षा के लिए ऐसा कहा था। रत्न अपने पास ही रख। मुझे तो स्वर्ण पुरुष बनाने के लिए एक पुरुष ला दे।" धरण उसके लिए भी तैयार हो गया। तब वह सिद्ध पुरुष अति प्रसन्न होकर बोला कि "हे सज्जन ! मुझे कोई स्वर्ण पुरुष आदि नहीं चाहिये, परन्तु मुझे तो एक सुन्दर सुपात्र पुरुष की आवश्यकता थी ? वह पूरी हो गयी है। मैं अब वृद्ध हो गया हूँ इस लिए अपने गुरु की दी हुई वर्तमान भूत और भविष्य को जाने वाली त्रिकाल विद्या, तुझे देता हूं। पूर्व संचित पुण्य प्रताप से तू मुझे मिला हैं हे कल्याणकारी ! मेरे पास 'कर्ण पिशाचिका' नाम की विद्या है। उस विद्या से त्रिकाल सम्बन्धी सत्य वस्तु का ज्ञान होता है। उस विद्या को तूं ग्रहण कर।"

धरण ने हर्ष पूर्वक सिद्ध पुरूष से उस विद्या को ग्रहण किया और विधि पूर्वक उस विद्या को सिद्ध भी कर लिया। बहुत दिनों तक वह सिद्ध की सेवा में रहा। सिद्ध की आज्ञा से धरण पृथ्वी तल पर भ्रमण करने लगा। गिरि, वन, अरण्य गांव, आदि के नये २ आश्चर्यों कोदेखते हुए एक दिन सुन्दर आम्रवृक्ष की छाया में ध्यान मग्न मुनि श्री को देखकर धरण ने उनके चरण कमलों में उल्लास पूर्वक नमन करके अपने आपको धन्य माना। वह उनके पास बैठ गया। मुनि श्री ने धर्मलाभ देकर अर्हंत धर्म की देशना देते हुए फरमाया कि "जो दुर्गति में पड़ते हुए जीव को धारण करे, और उसे शुभ स्थान में पहुँचाए वही धर्म है।"

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

"श्री नमस्कार महामन्त्र जैसा मन्त्र, 'श्री शत्रुंजय जैसा तीर्थ और प्राणी की रक्षा जैसा धर्म, इन तीनों के समान त्रिभुवन में तुलना करने वाली कोई वस्तु नहीं है। श्री नमस्कार मन्त्र के स्मरण मात्र से प्राणी भवोभव की विपत्तिओं को पार कर जाते हैं और सम्पत्ति को प्राप्त करते हैं। अनन्ता जिनेश्वर देवों द्वारा स्पर्शित तथा अनेकों महर्षिओं की सिद्ध भूमि ऐसा सिद्धाचल गिरिराज सिद्ध क्षेत्र कहलाता है। अनेकों पापों को करने वाले हत्यारे सैकड़ों जीवों को मारने वाले तिर्यंच भी इस तीर्थ को प्राप्त कर अपने कर्म खपा गये हैं। जिस प्रकार हमें अपने प्राण प्रिय हैं, उसी प्रकार जीव मात्र को भी अपने प्राण प्रिय होते हैं! यह जानकर उत्तम पुरुषों को प्रत्येक जीव की रक्षा करनी चाहिये"

इस धर्म देशना को सुन कर धरण हाथ जोड़कर अपना पाप प्रकाशित कर आत्म निन्दा करने लगा। "हे पूज्य! मैं महा पापी हूँ, हत्यारा और क्रूर कर्म को करने वाला हूं। दो हत्याओं के पाप से मेरी क्या गति होगी?"

मुनिश्री ने फरमाया कि, 'हे पुण्यात्मा! तप और क्रिया में में उद्यमशील, होकर तुम शत्रुंजय तीर्थ पर जाकर दुष्कर तप की आराधना करो और विधि पूर्वक श्री नमस्कार महामन्त्र का जाप करो। इस से तुम दो हत्याओं के पाप से शीघ्र मुक्त हो जाओगे।"

मुनिश्री के वचन स्वीकार कर उसने अर्हन्त धर्म को धारण

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

किया। मुनिजी की बार २ स्तुति करते हुए वह बोला कि "निश्चय ही आप मेरे बड़े उपकारी हैं। आप के अलौकिकउपकार से मैं कभी उऋण नहीं हो सकता।" फिर हर्ष पूर्वक नमस्कार करके घरण श्री शत्रुंजय तीर्थ की तरफ प्रायश्चित करने की भावना से चल पड़ा। क्रमशः प्रयाण करते हुए वह आज कुशस्थल में आया है। हे राजकुमारों मैं वही घरण हूँ। यहां से मैं शत्रुंजय जाऊंगा।

उस सिद्ध पुरुष के प्रसाद से मैं भूत भविष्य वर्तमान को जान॰कर बतला सकता हूँ। मुझे लोग प्रख्यात ज्योतिषी घरण के नाम से जानते हैं।" यह अद्भुत वृतान्त सुनकर राजकुमारों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

परस्पर विचार विमर्श करके उनमें से ज्येष्ठ कुमार जय ने घरण को फल पुष्प आदि देकर पूछा कि "पिताजी का राज्य किसको मिलेगा ?" घरण ने विधि से देखकर सिर हिलाया और बोला कि "राज्य के बारे में क्या पूछते हो ? आप में से राज्य किसी के भाग्य में दृष्टिगोचर नहीं होता। नूतन पटराणी सूर्यवती के एक अद्भुत पुत्र होगा। वही राज्य लक्ष्मी को प्राप्त करेगा ऐसा मेरा अभिप्राय है।"

यह कटु वाक्य सुनकर क्रोध से राजकुमारों ने कहा कि "ऐसे अनिष्ट वचन क्या बोलते हो ? तुम तो कुछ भी नहीं जानते हो। सर्व शूरवीरों में अग्रसर जयकुमार के अतिरिक्त तथा हमें भी छोड़कर इस राज्य को दूसरा कौन भोग सकेगा ?"

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

राजकुमारों का यह प्रतिकूल वर्तावं देख कर धरण कहने लगा कि "अभी तो मेरा मन अशान्त है। अतः पीछे कभी अच्छी तरह देख कर बतलाऊंगा। अब मैं जाता हूँ।" फल को ग्रहण कर व धन को छोड़ कर धरण वहां से शीघ्र ही रवाना हो गया। क्रम से वह शत्रुंजय तीर्थ पर पहुँच गया और मुनिश्री के आदेशानुसार विधि पूर्वक धर्माराधन करने लगा।

इधर चारों राजकुमार विचार सागर में डूब गये। अति-चिन्तातुर होकर परस्पर विचार करने लगे कि "क्या उसकी कही हुई बात सत्य सिद्ध होगी? परन्तु सरस्वती की वाणी भी तो किसी समय असत्य हो जाती है।

"जिस प्रकार पूर्व में एक ज्योतिषी द्वारा यह बतलाये जाने पर कि तुम्हारे पुत्र से कुल का नाश होगा, बुद्धिमान मन्त्री ने अपनी चतुराई से कुल का रक्षण कर लिया था। व्यन्तर देव द्वारा राजकुमारी की चोटी काट लेने से जो कष्ट उत्पन्न होने वाला था वह भी उसके बुद्धि बल से टल गया था अतः हम भी उसी प्रकार कोई कार्य करेंगे।

"जैसे मन्त्री पुत्र रोहणीया को देवी ने संकट में डाला था परन्तु उसे भोयरे में डाल देने से संकट जाता रहा था। वैसे हमें भी कोई उपाय सोच लेना चाहिये।"

वृद्ध शुक समान बुद्धि वाला जय कुमार बोला, "चिन्ता करने

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

की आवश्यकता नहीं, क्योंकि वह सर्वज्ञ तो है नहीं जो सदैव सत्य ही बोलता हो। फिर भी मैं उपाय कर लूंगा। यदि सूर्यवती के पुत्र होगा तो मैं किसी को ज्ञात होने से पूर्व ही उसे समाप्त कर दूंगा।"

सौभाग्यवश सूर्यवती की सखी सैन्द्री आम्रफल भक्षणार्थ वहाँ आयी हुई थी।

ज्योतिषी को राजकुमारों के महल में जाते हुए देख, वह वहां ही सीढ़ियों में छुप गई। धरण की भविष्य वाणी और राजकुमारों के उपाय को सुन कर वह वहां से तत्काल भाग निकली और रानी सूर्यवती के पास पहुंच कर उसे सारी हकीकत कह सुनाई।

यह सुन कर हर्ष और शोक से युक्त सूर्यवती रानी की उस समय वैसी ही दशा थी जैसी जम्बूद्वीप में सुमेरु पर्वत के एक तरफ दिन और दूसरी तरफ रात्रि होने से होती है।

वह कहने लगी कि "अब क्या होगा? क्या हम प्रतापसिंह राजा को यह बात बतायें? परन्तु अभी ऐसे विकल्पों का क्या अर्थ है? भावि जो होना होगा वैसा हो जायगा।"

विविध तपश्चर्या का आचरण करती हुई सूर्यवती रानी ने एकदा मध्य रात्रि में चार शुभ स्वप्नों का स्पष्ट दर्शन किया।

(१) आकाश के मध्य में से पूर्णिमा का चन्द्र खिसक कर वापस

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उसी स्थान पर आ गया। (२) किसी ने सूर्यवती को विकसित कमल दिया, पहले तो वह मुरझा गया परन्तु देवी के हाथ से वापिस खिल उठा। (३) अमृत समान उज्जवल मंदिर बारिश के कारण काला पड़ गया। सूर्यवती सोचने लगी कि फिर यह काला न हो जावे इसलिए उसको रत्नो से उज्जवल बना दिया। (४) किसी के द्वारा बन्द छत्र सूर्यवती के मस्तक पर रखा गया वह अपने आप खुल गया।

रानी सूर्यवती हर्ष से जागृत हो कर श्री नमस्कार महामन्त्र का ध्यान कर प्रतापसिंह राजा के पास गई और अपने स्वप्न राजा को कह सुनाये। राजा ने हर्षित होकर अलग २ विचार कर कहा कि "तुमने बहुत ही शुभ स्वप्न देखे हैं। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि तुम भाग्यशाली पुत्र को जन्म दोगी।" सूर्यवती ने हर्ष पूर्वक कहा कि "जैसा आपने कहा है उसी प्रकार ही हो।"

"आज अपना धर्म रुपी कल्पवृक्ष फलीभूत हुआ है।"

प्रातःकाल प्रतापसिंह राजा राजसभा में पधारे। तत्पश्चात मन्त्रिओं को स्वप्न पाठकों और ज्योतिषिओं को बुलाने का आदेश दिया। उनके आते हीं उन्हें फलों पुष्पों आदि से सन्मानित कर, रानी के देखे हुए स्वप्नों को कह कर, उनका फल पूछा।

उन्होंने आपस में विचार करके कहा कि "महारानी सूर्यवती एक पुत्र को जन्म देगी (१) वह पूर्ण चन्द्र के समान कलावान् होगा (२) वह लक्ष्मी कें निवास रुप कमल के समान होगा (३)

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अद्भुत धर्म परायण होगा तथा (४) सकल पृथ्वी पर एक छत्री को भोगेगा।

इन स्वप्नों के भाव बड़ी कठिनता से समझ में आते हैं ये स्वप्न अति शुभ हैं।" प्रतापसिंह राजा ने उनका उचित स करके स्वप्नों के फल सूर्यवती रानी को कह सुनाये।

जिस प्रकार रोहणगिरि में रत्न वृद्धि को पाते हैं उसी प्र सूर्यवती की कुक्षि में गर्भ वृद्धि पाने लगा। बहुत दिनों बाद सूर्य को "चन्द्र" का पान करने का दोहद उत्पन्न हुआ।

परन्तु वह दोहद पूर्ण न होने से रानी धीरे २ कमजोर लगी। प्रतापसिंह ने पूछा कि "क्या कारण है ?" सूर्यवती ने की सर्व हकीकत कही।

इससे चिन्तातुर राजा ने मन्त्री से कहा कि "ऐसा उपाय जिस से रानी का दोहद पूर्ण हो।"

मन्त्रियों ने तुरन्त की ब्याही हुई गाय के दूध में शक्कर कर पानी के साथ उबाल कर चांदी के थाल को पूर्ण भर क झोंपड़ी में रख दिया, बाद में छत में छेद कर दिया उसमें च प्रतिबिंब जब पड़ने लगा तब सूर्यवती रानी को एकान्त में चन्द्र क करने की प्रार्थना की। रानी धीरे २ उसका पान करने लगी। पर पहले से एक सेवक को बैठा रखा था। वह छेद को धीरे २

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

करता गया जब बर्तन पूरा खाली हो गया तब छेद को बन्द कर दिया। दोहद पूर्ण होने से सूर्यवती को अति हर्ष हुआ।

प्रतापसिंह और सूर्यवती ने उस सुन्दर दोहद के कारण आनन्द से यह निश्चय किया कि "चन्द्र के दोहद के कारण भविष्य में जो पुत्र जन्मेगा उसका शुभ नाम "श्रीचन्द्र" कुमार रखेंगे।

अतः उन्होंने इस नाम की रत्न जड़ित सुन्दर अंगूठी तैयार करवाई।' "राजा रानी के मन में इतना अत्यधिक हर्ष उत्पन्न हुआ जो तीन जगत में भी नहीं समा सकता था।

एक बार प्रतापसिंह राजा वन में क्रीड़ा करने गये हुए थे वहां कितने ही चर पुरुष कोलाहल करते हुए आये। राजा ने पूछा कि "क्या बात है?" चर पुरुषों ने कहा कि "महाराज! नैऋत्य कोण में समुद्र के किनारे कणकोटपुर और रत्नपुर नगर हैं। वहां के राजा मल्ल और महामल्ल मिल कर अपने ग्राम नगर आदि को त्रासित कर रहें हैं।"

कुशस्थल में वापस लौट कर राजा प्रतापसिंह ने सेनापति को सेना सहित तैयार होने का आदेश दिया। चारों तरफ प्रयाण भेरी बजने लगी। अन्तःपुर में जाकर रानी सूर्यवती को राजा ने कहा कि, "हे प्रिये! अचानक विजय यात्रा उपस्थित हुई है। तुम सुख से यहां रहना। मैं जल्दी ही शत्रुओं को जीत कर यहां लौट आऊंगा।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

रानी सूर्यवती ने कहा "मैं भी आपके साथ चलूंगी।" प्रतापसिंह ने कहा कि "प्रोढ़ गर्भ के कारण वहां चलना ठीक नहीं।" सूर्यवती ने गद्‌गद् कंठ और ज्योतिषी का भावि कथन कह कर कहा, "मैं यहां नहीं रहूंगी" प्रतापसिंह ने कुछ क्षण सोच कर कहा कि 'हे प्राण प्रिये! तूं दुःखी मत हो, सब शुभ ही होगा। जय आदि चारों कुमारों को मैं अपने साथ लेता जाऊंगा। तूं निर्भय हो कर यहां सुख से रहो जैसे गुफा में सिंह रहता है।"

दूसरी तरफ परस्पर सलाह करके बड़े भाई जयकुमार को महल में ही रख कर तीनों राजकुमार राजा प्रतापसिंह के पास पहुँचे। उन तीन कुमारों को देख कर प्रतापसिंह ने पूछा कि "जयकुमार कहां है?" कुमारों ने कहा कि, "जयकुमार का शरीर ठीक नहीं है।" यह सुन कर प्रतापसिंह ने जयकुमार को बुलवाने के लिए फिर सैनिकों को भेजा। दूसरी बार बुलाये जाने पर भी जयकुमार नहीं आया।

उत्साह में राजा ने शीघ्र प्रयाण कर दिया और जयकुमार के न आने की बात जल्दी के कारण राजा प्रतापसिंह को ध्यान में नहीं रही।

"चाहे जितना भी पुरुषार्थ करें भवितव्यता को कोई टाल नहीं सकता।" कहा है कि, "चाहे सूर्य पश्चिम में उदय हो जावे, चाहे मेरु पर्वत चलायमान हो जाय, चाहे पर्वत के अग्र भाग में कमल उग जाय अथवा अग्नि शीतलता धारण करले, तो भी निकाचित कर्म की रेखा बदल नहीं सकती।"

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

प्रयाण करते हुए राजा प्रतापसिंह की सेना स्थान २ से आये हुए राजाओं सुन्दर रथों सारथियों और सैन्य दलों से वृद्धि को प्राप्त हुई।

राजा ने योग्य स्थल पर सारी सेना को विश्राम कराया। गुप्तचरों ने शत्रु के सैन्य की खबर प्रतापसिंह को दी। विचारणा करके राजा प्रतापसिंह ने तैयार हो कर रण क्षेत्र में प्रवेश किया और युद्ध प्रारम्भ हो गया।

भाले वाले के सामने भाले वाला, तलवार वाले के सामने तलवार वाला, धनुषबाण वाले के सामने धनुषबाण वाला, अश्वारोही के सामने अश्वारी, सामन्तों के सामने सामन्त आदियों का भयंकर युद्ध हुआ। शत्रु के बल के समक्ष अपने विशाल सैन्य को भागते हुए देख कर विजयादि तीनों कुमारों ने आगे आकर भयंकर बाणों की वर्षा करके शत्रु को पराङ्गमुख कर दिया।

कुमारों को बलवान जानकर और भागती हुई अपनी सेना को रोकने के लिए तत्काल रोष से होंठ चढ़ा कर शस्त्रों से सज्ज होकर मल्ल और महामल्ल सामने आए और बहुत समय तक कुमारों के साथ युद्ध करते रहे।

मल्ल राजा ने तलवार के वार से विजय को मूर्छित कर दिया। पुत्रों और सेना को खिन्न देख कर सूर्य समान तेजस्वी प्रतापसिंह राजा ने अपनी तलवार खींच कर, "कहां है, दुष्ट मल्ल ?" इस प्रकार बोलते

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

हुए अति वेग से मल्ल का मस्तक शीघ्र ही काट डाला।

उसी समय प्रतापसिंह राजा की जय २ कार होने लगी। महामल्ल अपनी जान बचाने के लिए सेना के साथ रत्नपुर में घुस गया। मल्ल के कणकोट्टपुर आदि नगरों पर अधिकार करके, राजा प्रतापसिंह ने महामल्ल के रत्नपुर सिवाय सारे देश को जीत कर, रत्नपुर पर घेरा डाल दिया और उसे जीतने की प्रतिज्ञा कर वह वहां सुख पूर्वक रहने लगा।

इधर पट्टरानी सूर्यवती प्रतापसिंह राजा के प्रयाण से उत्पन्न हुए दुःख को भूल कर, श्री जिनेश्वर देव द्वारा कथित धर्म की आराधना में तत्पर थी। एक दिन हथियारों से सज्जित सैनिकों को आये हुए देख कर उसने अपनी सखी सैन्द्री को कहा कि, "ये सैनिक यहां किस लिए आये हैं?" सैन्द्री ने सैनिकों से पूछा कि, "तुम कौन हो?" सैनिक बोले कि, "राजा प्रतापसिंह ने हमें रत्नपुर से रानी के गर्भ के रक्षणार्थ भेजा है, इसलिए हमसे भयभीत होने की कोई आवश्यकता नहीं है।" परन्तु सैन्द्री ने उन्हें मृषावादी जान कर रानी के पास आकर कहा कि "मुझे तो ये जय के सैनिक प्रतीत होते हैं, परन्तु वे अपने आप को राजा प्रतापसिंह के कह कर झूठ बोल रहे हैं! जय ने, गर्भ रक्षण के बहाने से इन्हें दुष्ट विचार से यहां नियुक्त किया प्रतीत होता है।" ऐसी दुखद् परिस्थिति देख कर निश्वास लेते हुये सूर्यवती ने कहा कि, "प्यारी सैन्द्री! अब हम क्या करगी?

सैन्द्री ने कहा कि, "हे सूर्यवतीदेवी! ज्योतिषी के वचनों को

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सुन कर जय ने एकान्त में जो विचारणा की थी, यह सारा षड़यन्त्र उसी के अनुसार रचा गया है। प्रयाण के समय राजा के बार २ बुलाने पर भी जय जानबूझ कर यहीं ठहर गया। अब क्या होगा? कुछ समझ में नहीं आता। अब तो प्रभु जिनेश्वर देव की ही शरण ग्रहण करो।"

शुभ महूर्त में जब चंद्र उच्च नक्षत्र में था और सर्व ग्रह उच्च स्थान पर थे। तब मध्य रात्रि के समय सूर्यवती पट्टराणी ने गर्भकाल पूर्ण होने पर एक पुत्र रत्न को जन्म दिया।

वह पुण्यशाली मूर्तिमान सूर्य जैसा तेजस्वी था। उसके तेज के सामने दीपक भी निस्तेज दिखाई देता था। उस पुत्र रत्न को देख कर सूर्यवती का हृदय रुपी सरोवर हर्ष रूपी जल से उच्छल उठा।

श्री 'श्रीचन्द्र' कुमार रूपवान, भाग्यवान, शुभ लक्षणों से युक्त, चन्द्र जैसी कान्ति वाला, विकसित कमल के समान नयनों वाला और अष्टमी के चन्द्र के जैसे ललाट वाला था।

दूसरी ओर जय के यम जैसे सैनिकों को देख कर सूर्यवती गद्गद् स्वर से कहने लगी, "हे सखियो! मेरे विचित्र भाग्य को देखो। आज राजाजी भी कुशस्थल में नहीं हैं। इस समय भला किसे हर्ष न होता? परन्तु वाजिन्त्र गीत नृत्य आदि महोत्सव तो दूर रहे, हम थाली भी बजा सकें ऐसी भी परिस्थिति नहीं! धिक्कार हो मेरे ऐसे दुष्ट कर्मों को।"

"जैसे रोहणाचल रत्नों से युक्त होता है ऐसे यह श्रीचन्द्र कुमार सब गुणों से युक्त है। परन्तु आज हम अपने हर्ष का शोषण करें ऐसी भवितव्यता बन गई है।" रानी सूर्यवती के दुःख से सर्व सखियां दुःखित हुईं।

दीर्घ निश्वास वाली स्वामिनी को देख कर सखियों ने कहा कि, "हे देवी! दुःख को हृदय में धारण मत करो क्योंकि अभी ही प्रसव हुआ है। चिन्ता से व्याधि वृद्धि पाती है। शरीर क्षीण होता है, बुद्धि घटती है, इसलिए बुद्धिशालियों को चिन्ता नहीं करनी चाहिये। दुःख और विकल्पों से क्या? श्रीचन्द्र के पुण्य प्रताप से सब शुभ होगा। स्वमनोरथ रुपी कल्पवृक्ष आज पुत्र जन्म से सफल हो गया है। अब तो "श्रीचन्द्र" का उनके नाम की अंगूठी से और आभूषणों से शृंगार करें।" ऐसा कह कर उसे पुनः स्नान करवा कर सुन्दर आभूषणों से अलंकृत करके, इन्द्र के समान रुपवान देख कर सैन्द्री ने कहा कि, 'हे बहनों! श्री 'श्रीचन्द्र का शुभ भाग्य और अति सुन्दर शरीर, विधाता ने रत्नों आदि के सार में से सार ग्रहण कर बनाया होगा · ऐसा मैं मानती हूं। राजा प्रतापसिंह के घर आज कल्पद्रप तुल्य श्री 'श्रीचन्द्र' कुमार जन्मा है। हमें उसकी यत्न पूर्वक रक्षा करनी चाहिये। अभी क्या है और सुवह क्या होगा, कुछ पता नहीं! जब उस दुष्ट को पता लगेगा तो इस पुत्र रत्न को ग्रहण कर लेगा। तब हम क्या कर सकेंगी? अतः अभी ही विचार करके रक्षा कर लेनी चाहिये।"

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

एक सखी बोली कि, "पेटी आदि में इसे छुपा देवें तो वह कैसे जान सकेगा ?"

दूसरी ने कहा कि "यह ठीक नहीं, वह बल प्रयोग करने लगेगा तो हम उसे कैसे रोक सकेंगी ? क्रूर दृष्टि वाले शत्रु से कुमार को कौन बचा सकेंगी ?

तीसरी ने कहा कि, "हे सैन्द्री तूं ! अपने बुद्धि बल से रक्षा का कोई उपाय ढूंढ निकाल ! बुद्धि से वह कार्य हो सकता है जो बल से भी शक्य नहीं, विपुल धन से भी जो कार्य नहीं हो सकता वह कार्य बुद्धि से हो जाता है "

तब रानी सूर्यवती ने कहा कि, "मैंने पूर्वभव में पुण्यानुवन्धी पुन्य किया होगा, जिससे ऐसा सुन्दर पुत्र रत्न जन्मा है । इसलिए इसके रक्षणार्थ उपाय करना चाहिये । इसलिए हे बुद्धिमती सैन्द्री ! इस समय तूं अपनी चतुराई का उपयोग कर ।"

विचार पूर्वक सैन्द्री ने कहा कि, "मैं निर्बुद्धि होने पर भी कुमार को महल के बाहर किसी अच्छे स्थान पर रखने का उपाय करना चाहती हूं, परन्तु वह भी बहुत दुष्कर है क्योंकि द्वार पर खड़े सैनिक बाहर जाने वाले से पूछताच्छ करेंगे ।

रानी कहने लगी कि "महा संकट में से निकलने का फि कौनसा उपाय करें ?" सैन्द्री बोली कि, "मेरी अल्प बुद्धि में एक उपाय नजर आता है । प्रतिदिन शाम को मालन अपने गृह उद्यान से ताजे

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

फूल तोड़ कर शय्या के लिए दे जाती है और प्रभात में त्यागे हुए फूल ले जाती है।

हमेशा की तरह आज प्रभात में वह मालन शंका रहित श्रीचन्द्र कुमार को उन पुष्पों में गृह उद्यान में लेजा कर इकट्ठे किये हुए पुष्पों के पुंज में गुप्त रूप से रख देगी। जब संकट टल जायेगा तब उसे वापिस ले आयेंगे। "देखते हैं अब क्या होता है?"

सूर्यवती ने अति हर्षित होते हुए कहा कि, "हे बुद्धिशालिनी! सर्व शुभ है। तेरी बुद्धि तो पंडितों से भी बढ़ कर है।" रात बीत गई।

श्री 'श्रीचन्द' के रूप का दर्शन करने के लिए उदयाचल पर्वत पर धीरे २ सूर्य आया। विकसित मुख कमल वाले श्रीचन्द्र को सखियों ने गोद में लेकर बार २ चुम्बन करके, तिलक नेत्रांजन आदि करके, मस्तक पर मुकुट रखा। सखियों में से किसी की भी श्रीचन्द्र को छोड़ने की इच्छा नहीं होती थी।

श्री 'श्रीचन्द्र' को सूर्यवती गोद में लेकर बारबार चुम्बन करके, दृढ़ स्नेह से, बहुत स्तनपान करा कहने लगी कि, "हे पुत्र! वहां तू अकेला कैसे रहेगा? गिरि गुफा में केसरीसिंह के बालक का कौन रक्षक होता है? हे वत्स! तू अपने मुख कमल के दर्शन मुझे जल्दी करवाना।

इतने में हमेशा की तरह मालन प्रभात में आयी। निश्चित

Jun Aaradhak Trust P.P. Ac. Gunratna

सुझावानुसार मालन को समझा कर श्री 'श्रीचन्द्र' को पुष्पों के करंडिये में रख कर उसे दे दिया। वह हमेशा की भांति सैनिकों के आगे से हो कर गृह उद्यान में चली गई।

रत्न कम्बल में लपेटे हुऐ, श्री 'श्रीचन्द्र' को पुष्पों के पुंज में बड़ी सावधानी पूर्वक बिना किसी प्रकार की पीड़ा पहुंचाये गुप्त रख कर दोनों हाथों से, वह कहने लगी कि, "हे वत्स ! तुम सुखी रहो। अब मैं चलती हूं। सैनिकों को इस स्थान की जरा भी शंका उत्पन्न न हो जाये इसलिये मैं पुंज कोयहां एक क्षण के लिए भी नहीं रुक सकती हूँ।" मालन पुष्पको निरखती हुई वहाँ से सूर्यवती के पास आ गयी।

इतने में सैनिकों ने अन्दर अवलोकन करते प्रसव के चिन्हों को देख कर सखियों से पूछा कि, "स्वामिनी ने कुमार को जन्म दिया या कुमारिका को ?" जब किसी ने भी उत्तर नहीं दिया तो तत्काल सैनिकों ने जय को समाचार दिया। शीघ्र ही जय वहां आ पहुँचा।

बालक को न देखकर, जय ने तुरन्त ही सूर्यवती की पेटियों भोरे आदि की छान-बीन की परन्तु कहीं भी कुछ न मिलने पर जय को अति खेद हुआ। जय ने सैन्द्री से पूछा कि, "यहां क्या हुआ ?"

सैन्द्री ने गर्भ का जर आदि इकट्ठा करके उसे बतलाते हुए कहा कि, "हमारा मनोरथ तो मन में ही रह गया। देवी ने पुत्र तो क्या पुत्री को भी जन्म नहीं दिया।" यह सुनकर जय के मन में आनन्द हुआ। मन में विचारने लगा कि, "औषधी के बिना ही व्याधि मिट

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

गई ।" परन्तु उनको जय बोला कि, "मेरे मन में तो था कि माता के पुत्र का जन्ममहोत्सव मैं बड़ी धूम - धाम से करुंगा ।" फिर कृत्रिम शोक दर्शा कर सैनिकों को अपने साथ ही वहां से ले गया ।

सूर्यवती ने सैन्द्री से कहा कि, "जय ने कैसा दिखावा किया ? अब तू जल्दी जाकर मेरे पुत्र को लाकर मुझे आनन्दित कर ! क्षुधा से पुत्र रुदन कर रहा होगा ।" सैन्द्री ने तुरंत जाकर पुष्पों के पुंज को देखा, परन्तु श्री 'श्रीचन्द्र' तो वहां कहीं भी लजर न आया । इस लिए इधर उधर उसकी खोज करने लगी परन्तु प्राप्त न होने से वह रुदन करती २ मूर्छित हो गई ।

जब मूर्छा हटी तो फिर वहां देख कर विलाप करती हुई वापिस आगयी । सैन्द्री का रुदन दूर से ही सुन कर सूर्यवती ने कहा "मेरे पुत्र को कुशल तो है !"

सैन्द्री ने गद्गद् होकर कहा कि, "यदि श्री 'श्रीचन्द्र' को कुशल हो तो फिर दुःख किस बात का है, परन्तु पुत्र कहीं भी दिखता नहीं है ।"

"तो वह कहां गया ?"

वज्र के समान कटु वाक्य सुन कर सूर्यवती मूर्छित हो गयी ! कैर की डालियों से हवा कर सखियों ने सूर्यवती की मूर्च्छा को दूर किया ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

रुदन करती हुई सखियों से युक्त गृह उद्यान में जाकर सूर्यवती ने मालन से पूछा कि, "पुत्र को कहां रखा था ?"

मालन ने वह स्थान बताकर कहा कि, 'मैंने तो यहां पुत्र को रखा था ।"

सूर्यवती और सखियों ने चारों तरफ शोध की परन्तु कहीं भी पुत्र प्राप्त नहीं हुआ ।

"क्या मनुष्य को कल्पवृक्ष आसानी से मिल सकता है ? दरिद्री के हाथ में चिन्तामणी रत्न आ भी जाये तो क्या वह वहां टिक सकता है ?"

"यहां श्री श्रीचन्द का क्या हुआ होगा ? कौन ले गया होगा ? अथवा किसने पुत्र रत्न का हरण किया होगा ?

"हे सखी ! अभागिनी के पास पुत्र रत्न कैसे रह सकता है ? "हाय ! हाय ! मैं दुर्भाग्य द्वारा मारी गई हूँ ।" सूर्यवती मुक्त कंठ से रुदन करती हुई बेहोश होती जा रही थी । हाथ पकड़ कर सैन्द्री उसे महल में ले गई ।

सूर्यवती ने कहा कि, "हे देव ! क्या मैंने तेरा कुछ लिया है ? क्या मैंने तेरा विनाश किया है ? मेरे पुत्र रत्न को ले जाकर तूने मेरी आंखों में धूल झोंक दी है । तेरी इसी प्रकार करने की इच्छा थी तो, हे विधाता ! पहले इस पुत्र रत्न को क्यों दिया था ? मेरे उपर

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

यह कैसा शोक बरसाया है।

परन्तु इसमें तुम्हारा क्या दोष है ? पूर्व भव में मेरे द्वारा कोई महापाप आचरण हुआ होगा जिसके दुखद परिणाम स्वरुप दुष्कर ऐसा वनाव बना है। पूर्व में की हुई हिंसा व दुष्कर्म उदय में आने से मुझे यह फल मिला। अभी मुझे जो दुःख है उसे केवली ही जान सकते हैं।"

सूर्यवती के रुदन से सारी सखियां रुदन करने लगी जिससे सब जगह शोक का साम्राज्य फैल गया। स्नेह से क्यां नहीं होता ?

"हे वत्स ! जगत में चन्द्र समान, हे 'श्रीचन्द !' हे चन्द्र के समान निर्मल प्रगट होकर मुझे दर्शन दे। अपनी माँ की सांत्वना के लिए एक बार तो बोल ! तूं कहां गया है ?

यह विलाप सुनकर 'राजकुल में यह क्या हुआ ?' ऐसा महान् कोलाहल उत्पन्न हो गया स्वजनों ने आकर दुःख का कारण और गर्भ का वह सर्व वृतांत जाना।

उस समय स्वजन समझाने लगे कि 'हे महाराणी ! अब क्या हो सकता है ? भवितव्या टाली नहीं जा सकती। विधि के अशक्य परिहारको निवारण नहीं कि जा सकता। आप तो तत्व ज्ञान की ज्ञाता हैं। क्या श्री जिन आगम को नहीं जानती हैं ?"

"अति शोक और विलाप का अब त्याग करो। बीते हुए का

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

साधर्मिक जनों की भक्ति होने लगी थी। याचकों को दान दिया जाने लगा। महोत्सव से चारों तरफ आनन्द छा गया था।

लक्ष्मीदत्त ने पुत्र का नाम श्री 'श्रीचन्द' ही रखा। राजपुत्र धाय माता द्वारा पलते हुए वृद्धि पाने लगा।

पहले पुण्य से श्रेष्ठी लक्षाधिपति था परन्तु बाद में वह वृद्धि पाकर क्रोड़ाधिपति बन गया। पुण्य के प्रभाव से धन, धान्य, मणि, स्वर्ण आदि से गृह परिपूर्ण हो गया।

श्रेष्ठी ने छठे दिन जागरणोत्सव हर्ष से मनाया। सर्व कुलाचार भी आनन्द एवं विस्तार से मनाये।

प्रतापसिंह राजा का पुत्र नाना प्रकार की क्रीड़ा को करते २ धीरे २ पैरों से चलने लगा।

श्री 'श्रीचन्द्र' को बन्धु स्वजन मित्र आदि बड़े प्रेम से लेते थे। 'श्रीचन्द्र एक की गोद में से दूसरे की गोद में जाता था। सब कोई उसे दीर्घ समय पर्यंत अपने ही पास रखना चाहते थे। वह सबके पास चला जाता था जिससे सबको आनन्द दिलाने वाला बना। हस्त चक्र में कमल के समान वह सबको प्रिय लगता था।

किसी भी वस्तु के लिए श्री 'श्रीचन्द' कभी हठ नहीं करता था। और किसी समय भी वह क्रुद्ध नहीं होता था। क्रम से वह पांच वर्ष का हुआ। बालक होने पर भी पराक्रम में विशाल था।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पर भेजा है। वह पुण्यशाली आत्मा है; फिर भी तेरे पास रहने से कोई विघ्न उत्पन्न होता। इसलिए मैंने इस प्रकार किया है।"

"राजा होकर श्री 'श्रीचन्द ❀२४ वर्ष बाद तुझ से भेंट करेगा। देवी ऐसा कह कर तत्काल अन्तर्धान हो गई। तत्क्षण सूर्यवती शोक रहित हुई, विस्मय से अति हर्ष पाकर विचारने लगी, कि "मैंने तो यह साक्षात शुभ ही देखा।"

उसने सारा वृतान्त सैन्द्री आदि सेखियों से कहा। सखियों ने कहा, "ऐसा ही हो" शोक रहित होकर हर्ष से स्वामिनी के मंगल के लिए गान गाने लगीं।

श्री 'श्रीचन्द्र' जीवित है। और मिलाप की आशा से सूर्यवती सखियों सहित धर्म क्रिया में हार्दिक आदर बहुमान पूर्वक विशेष रुप से तत्पर हो गयी। श्री जिनेश्वर देव की पूजा, श्री पंचपरमेष्ठी मंत्र का ध्यान, आवश्यक क्रिया आदि विशेष उत्साह पूर्वक करने लगी।

कुशस्थल में लक्ष्मीदत्त नाम का एक वणिक श्रेष्ठि रहता था। उसकी लक्ष्मीवती भार्या थी। वह श्रेष्ठिओं में श्रेष्ठ माना जाता था। वह धनवान और धर्मात्मा माना जाता था परन्तु पुत्र हीन था।

श्रेष्ठी ने मध्य रात्रि के समय शुभ स्वप्न में गोत्र देवी को देखा

❀ संस्कृत चरित्र में १२ वर्ष पश्चात् मिलाप लिखा हुआ है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उस देवी ने बधाई दी कि, "हे श्रेष्ठी ! उठ, प्रभात में कल्प वृक्ष तेरे घर आयेगा। बंधुओं को आमन्त्रित कर यथा शक्ति महोत्सव कर।" लक्ष्मीदत्त ने जाग्रित होकर विचार किया कि, "मैंने उत्तम स्वप्न के दर्शन किये हैं।" श्री नमस्कार महामन्त्र पढ़कर तत्काल उठकर लक्ष्मीवती को शुभ स्वप्न की बधाई दी। प्रभात में सर्व बन्धुओं को आमन्त्रित कर प्रेम से भोजन आदि का आयोजन किया।

कुशस्थल में आवश्यकतानुसार फूल न मिलने के कारण श्रेष्ठी भेंट ले कर राजकुल में गया। जयकुमार को नमन करके भेंट अर्पण करके पुष्पों की मांग की। जयकुमार की आज्ञा लेकर वह राजा के गृह उद्यान में गया। पुष्पों के पुंज के पास अनेक छोटे २ सर्प होने पर भी निर्भय होकर वह स्वयं तथा उसके नौकर फूल एकत्रित करने लगे।

इतने में पुष्पों के पुंज में गुप्त रहे हुए प्रतापसिंह राजा के पुत्र ने दैव योग से पैर को हिलाया। श्रेष्ठी पुष्पों को हिलते देख कर मन में विचार करने लगा कि, "यहाँ क्या है ?" पुष्पों को हटाते ही एक अद्भुत कुमार के दर्शन हुए।

श्री 'श्रीचन्द्र' सूर्य के बिम्ब के समान तेजस्वी, चन्द्र के समान सौम्य, कल्पवृक्ष की शोभा तुल्य, रत्न कम्बल और आभूषणों से श्रृङ्गारित तथा श्री 'श्रीचन्द्र' नाम की अंगूठी से सुशोभित था। हर्षित हुए श्रेष्ठी ने एकदम उठा कर विचार किया कि "कुल-देवी ने स्वप्न में जो कहा था वह सत्य ही हुआ। बन देवता ने ही पुत्र रत्न दिया है।"

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

शान्ति पूर्वक व्यतीत करने लगी।

पहले जन्म भूमि में श्री वीतराग देव के फरमाये हुए उपदेश ज्ञानी मुनि द्वारा श्रवण कर तोती तीव्र तप को करने लगी, और निर्मल सम्यक्त्व को पालने लगी। ज्ञानी मुनि ने भावि कथन करते हुए कहा कि "तू अगले भव में राजपुत्री होगी।"

इन वचनों को सुन कर वह उत्साह से विशेष धर्म करने लगी। सूर्यवती के रोकने पर भी हार्दिक भाव से इसने अट्ठाई तप पूर्ण किया है। उसका आज पारणा है। हर्ष से सूर्यवती देवी ने तप के अनुमोदनार्थ महोत्सव से चैत्य परिपाटी निकाली है।

तपस्विनी तोती अति हर्ष से श्री जिनेश्वर देव की पूजा पूर्वक फल, स्वर्ण, मोती आदि भेंट करके अपना जन्म सफल कर रही है।" श्री 'श्रीचन्द' हर्ष पाकर बोला कि "अहो भाग्य! अहो शक्ति! अहो वैराग्य! तिर्यंच योनि में जन्म लेने पर भी यहां शुभ कर्म के उदय से, श्रद्धा, दया आदि पुण्य सामग्री इस को प्राप्त हुई है।"

इस प्रकार प्रशंसा करके, चैत्य के अन्दर जाकर श्री जिनेश्वर देव को नमन करके, श्री "श्रीचन्द' तोती का निरीक्षण करते हुए खड़ा हो गया।

तोती श्री अरिहंत भगवान की पूजा कर चोंच से अष्टमंगल करके विधि पूर्वक श्री जिनेश्वर देव की स्तुति कर, वापस लौ

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

शोक नहीं करना चाहिये तथा भावि को भी नहीं विचारना चाहिये। बुद्धिमान मनुष्य तो केवल वर्तमान का ही ध्यान करते हैं।

"श्री 'श्रीचन्द्र' कहां गये हैं ? कब आयेंगे ? मन को अभिलषित को कहने मात्र से क्या लाभ ? जो भाग्य में लिखा होता है वही मिलता है। कभी २ प्राप्त न होने योग्य भी प्राप्त हो जाता है।"

स्वजनों के इस प्रकार वचनों को सुनकर, सूर्यवती को पूर्व के स्वप्न और दोहद आदि याद आने से दुःख उमड़ आया। फिर उन श्रावकों के वाक्यों से हृदय में उत्पन्न हुए दुःख को शान्त किया। जैसे वर्षा के द्वारा दावाग्नि शान्त हो जाती है बाद में स्वजन स्वस्थान पर चले गये।

श्री नमस्कार मन्त्र का ध्यान धारण करती हुई सूर्यवती को मध्य रात्रि में क्षण वार के लिए निद्रा आ गयी। इतने में एक श्वेत वस्त्र वाली देवी ने सूर्यवती से कहा कि, "हे वत्से ! क्या तू जागती है ?" देवी दर्शन से, सभ्रम सूर्यवती ने कहा कि "हे माता ! दुःखी को निद्रा कहां ? मेरे पुण्य प्रताप से आपश्री ने दर्शन दिया। नेत्र को आनन्द देने वाली आप कौन हैं ?"

देवी ने कहा कि, "हे भद्रे ! मुझे कुल देवी समझ। तू मोह का त्याग कर, वृथा ही दुःख को धारण न कर। तेरा पुत्र श्री 'श्रीचन्द्र' विजयी है। पुष्पों के पुंज में से मैंने उसे दूसरे सुखद स्थान

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वह बहुत ही प्रतिभाशाली था। ज्ञान और विज्ञान आदि की बातें एक बार सुने या देखे तो तुरन्त उसकी समझ में आ जाती थीं, जैसे कि पहले से ही पढ़ा हो।

एक बार रथ में आरुढ़ हो कर श्री 'श्रीचन्द' लक्ष्मीदत्त सेठ सहित कौतुक से क्रीड़ा करने के लिए उद्यान में गया। वहां कंकोली, नाग, पुन्नाग, चंपा, गुलाब आदि के रसदार वृक्ष थे। सुन्दर २ बावड़ियां भी थीं। 'श्रीचन्द्र' घूम फिर कर यह सब देख रहे थे।

इतने में बाजों की मधुर ध्वनि सहित महादान को ती और छत्र, चामर से शोभित, हस्ती पर राणी के समान आरूढ़ हुई तोती के साथ, मन्त्री व नगर के श्रेष्ठ लोगों को आते हुए देखा।

समस्त नगरजन आश्चर्य को प्राप्त हुए। नगर से बाहर आते हुए देख कर श्री 'श्रीचन्द्र' को भी आश्चर्य हुआ।

उद्यान में आकर हस्ति पर से तोती उतर कर प्रथम जिनेश्वर के मन्दिर में दर्शन करने गई। श्री 'श्रीचन्द' मन में विचार करने लगा कि "क्या यह तोती मानुषी है? या कोई विशेष ज्ञान वाली है?" उसी समय एक स्त्री पालकी में से उतर कर सेवकों को आदेश करने लगी।

श्रीचन्द्र ने पिता की आज्ञा लेकर उस स्त्री से मधुर स्वर से पूछा कि, "हे सुन्दरी! तुम कौन हो? तोती पक्षी होने पर भी मानुषी के समान क्रिया करती है तथा श्री जिनेश्वर देव के मूल

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

भंभारे में जाने का क्या उद्देश्य है ?"

सुन्दरी ने कहा कि, "कुशस्थल के प्रतापसिंह राजा वर्तमान में रत्नपुर में रुके हुए हैं। उनकी सूर्यवती राणी है। मैं उसकी सहेली सैन्द्री हूं। कुल के श्रृंगार, हे कुमार! मेरी स्वामिनी को यह तोती अति वल्लभ व प्रेम पात्र है। सुनने लायक उसका कौतुकमय वृतान्त मैं तुम्हें सुनाती हूँ।

तोती का जन्म पूर्व में करकोट द्वीप में हुआ था। समुद्र में यात्रा करनें वाले एक वणिक ने राजा प्रतापसिंह को रत्नपुर में यह भेंट भेजी। वह अपूर्व प्रिय सुभाषित और कथाओं से मनोरंजन करती थी।

यहां कुशस्थल में सूर्यवती देवी को पुत्र रत्न के वियोग में जो दुःख हुआ था वह तो तुमने सुना ही होगा।

वह हकीकत दूत द्वारा भेजे संदेश से राजा ने जानी व अति दुःख को प्राप्त हुए।

"हा!......हा!... देव ने यह क्या किया? वह मुग्धा राणी किस प्रकार रह सकेगी?" बाद में मंत्रिओं के साथ मन्त्रणा करकें, दुःख को भुलाने के लिए मानुषी भाषा बोलती इस तोती को जो श्री जिनेश्वर देव द्वारा फरमाये श्लोक, उपदेश और वैराग्य को जानने वाली है, जिनभक्ता रानी के सुख के लिए यहाँ भेज दी।

जब से यह तोती यहां आयी, धर्मशास्त्रीय वार्तालाप व अनेक प्रकार के ध्यान आदि क्रियाओं को करती हुई रानी सूर्यवती अपने दिन

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

ताजे पुष्पों के करंडिये में कुमार को गुप्त रख कर लक्ष्मीदत्त ने घर लेजा कर एकान्त में प्रिया लक्ष्मीवती को सौंपा और प्राप्ति का स्वरुप विस्तार से कहा। लक्ष्मीवती ने हर्षित होकर कहा कि, "आपने बहुत अच्छा किया, कि सुन्दर पुत्ररत्न को ले आये।"

"श्री 'श्रीचन्द' के रूप और तेजस्विता से मेरा बहुत समय का मनोरथ पूर्ण हुआ हैं। अहो! आपकी बुद्धि! अहो! धैर्य! अहो! आपका साहस!"

"वास्तव में, पूर्व के पुण्य ही मनोवांछित पूर्ण करते है। वह पुण्य सुख का कारण होने पर भी, यह आश्चर्य है कि प्राणी उस पुण्य को उपार्जित नहीं करता है।"

श्रेष्ठी ने भोजन के बाद बंधुओं और स्वजनों से कहा कि, "मेरी पत्नी गुप्त गर्भ वाली थी, पुण्योदय से आज पुत्र रत्न का जन्म हुआ है।"

हर्षित हुए श्रेष्ठी ने चारों तरफ भूमि पर केसर का छिड़काव करवा कर पुष्पों को चारों तरफ सजाया, स्वर्ण मोती के स्वस्तिक किये, द्वार पर तेजस्वी तोरण बांधे, सारा चौक पुष्प मालाओं तथा चन्द्रवो से सुशोभित किया। सुहागनाऐं उच्च स्वर से मंगल गीत गाने लगी तथा याचकों की मिश्र ध्वनि से चारों दिशाएं गूंज उठीं।

स्वर्ण के अखण्ड अक्षत से पूर्ण हजारों थाल घर में आने लगे वाजिन्त्रों का मधुर नाद व स्वर चारों तरफ गूंजने लगे। बंधुओं तथ

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

ही रही थी कि वहां पुण्य से श्री 'श्रीचन्द' कुमार इन्द्र पर दृष्टि पड़ते ही उसकी अद्‌भुत रूप को देखकर फिर से जिनेश्वर देव के चरणों में नमन करके, तोती ने उच्च स्वर से विनंति कीं, कि "जन्मान्तर में जो पति हो तो यह राजकुमार ही मेरा पति बने। श्री जिनेश्वर मेरे देव हैं, निर्ग्रंथ मेरे गुरु हैं और जिनेश्वर देव द्वारा प्रकाशित धर्म मुझे प्राप्त हो।"

ऐसा कह कर अनशन स्वीकार कर, हर्ष से श्री जिनेश्वर देव के चरण कमल में ही बैठ गयी। श्री 'श्रीचन्द' ने कहा "कि हे पंडिते! हा! हा! ऐसा नियाणा न कर। यह उचित नहीं है। श्री जिनेश्वर ने पुण्य कर्म नियाणा रहित करने के लिए फरमाया है। हे तोती! मैंने तत्व की बात कही है इसलिए तूं मोहाधीन न हो।"

तोती ने कहा कि, "मुझे नियाणा न हो। हे कुमार! कुस्वामी के पास रहने से धर्म की सिद्धि नहीं होती, इस बुद्धि से मैं बोली हूँ अर्थात उससे मुझे धर्म की सिद्धि होवे।"

इतने में सूर्यवती आ पहुँची। सैन्द्री ने तोती का अनशन आदि वृतान्त कह सुनाया। सूर्यवती ने कहा कि, 'हे सखी! साहस न कर! तेरा शरीर आहार योग्य है! अनशन दुष्कर है। पहले जिस प्रकार का तप करती थी, वैसा तप करती रहना।" तोती ने मस्तक हिलाया। तब सूर्यवती ने कहा कि, "अट्ठाई का पारणा कर महल में आकर मुझे वार्तालाप से आनन्दित करो। तुम्हारा अयुष्य कितना है। यह नहीं जानते हुए भी तुम ने अनशन कैसे कर लिया?"

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तोती ने कहा कि, "इन प्रभुजी की साक्षी में जो कुछ बोला गया है, वह अन्यथा नहीं हो सकता। ज्ञानी का वचन भी है। इसलिए मैंने अनशन स्वीकार किया है। मेरा सर्व दुष्कृत मिथ्या हो।" इस प्रकार कह कर मौन हो गई।

सूर्यवती ने कहा कि, "हे सखी! तेरे बिना मेरे दिन कैसे बीतेंगे?" फिर सूर्यवती राणी, सखियों तथा नगर के लोगों ने तोती का अनशन महोत्सव किया।

तीसरे दिन तोती वीर मरण को प्राप्त हुई। तोती के देह का चन्दन की चिता में अग्नि संस्कार किया गया।

शनै २ शोक का त्याग कर सूर्यवती नित्य तोती को याद करने लगी।

इधर सूर्यवती को आई हुई देख कर श्रीचन्द्र तोती की दृढ़ता की अनुमोदना करता हुआ बाहर निकला। अभिमान बिना सर्व हकीकत लक्ष्मीदत्त से कह सुनायी। सैंकड़ों मित्रों से युक्त, अमृत का भंड़ार श्री 'श्रीचन्द' घर आकर अपनी आत्मा में अतीव आनंद का अनुभव करने लगा 'जिस प्रकार आकाश में रहा चन्द्र चकोर को आनन्द दिलाता है उसी प्रकार श्री 'श्रीचन्द्र' सब को आनन्द प्राप्त कराने वाला था।

कुशस्थल में एक धीधन मन्त्री था। उसके मतिराज और सुधीरराज दो पुत्र थे। मतिराज मन्त्री बना। सुधीरराज की कमला

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पत्नी से गुणचन्द्र नामक पुत्र हुआ।

गुणचन्द्र श्री 'श्रीचन्द्र' का समान वयस्क होने से उसका प्रीति भाजन हो गया। क्षीर नीर के समान् दोनों की परस्पर मैत्री हो गई।

गुणचन्द्र ने विवेक से, विनय से, भक्ति से, तथा अति सेवा से श्री 'श्रीचन्द्र' का मन जीत लिया था। दोनों के मन एक हो गये। श्रद्धा का स्थानभूत गुणचन्द्र सज्जनों में श्रेष्ठ श्री 'श्रीचन्द्र' के मन में बस गया।

एक दिन लक्ष्मीदत्त सेठ विचारने लगा कि, "बाल्यावस्था में वस्तुत: कुमार को पढ़ाना चाहिये। उसे पढ़ाने के लिए कौन योग्य है?" इतने में देश देशान्तर की यात्रा करते गुणंधर उपाध्याय कुशस्थल पधारे। श्री गुणंधर उपाध्याय सर्व विद्याओं में प्रवीण, वृहस्पति के समान सकल शास्त्रों के जानकार, नीति वृद्ध, पंडित, शान्त, दयावान, और स्पष्ट वाणी वाले, शस्त्र और शास्त्र के मर्म के ज्ञाता थे।

उन पाठकजी को आमन्त्रित करके सेठ ने श्री 'श्रीचन्द्र' के विद्याभ्यासहेतु उनसे विनंति की। गुणंधर उपाध्यायने पूछा कि, "आपका कुमार कहां है?" श्रेष्ठी ने कुमार को बुलाया। पिता के आदेश से लावण्य रुपी लक्ष्मी के लतागृह जैसे, श्री 'श्रीचन्द्र' ने आकर, गुरु के चरणों में प्रणाम किया, फिर पिताजी को प्रणाम करके शान्ति से विनय पूर्वक, योग्य स्थान पर बैठ गया। पाठक भी श्री 'श्रीचन्द' को सर्व लक्षणों से युक्त विनय आदि गुणों से सर्व प्रकार से योग्य जानकर, उस

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

की भक्ति से रंजित होकर दूसरे स्थान जाने की इच्छा होने पर भी श्री 'श्रीचन्द्र' के पुण्य प्रभाव से निस्पृह उपाध्यायजी ने उसे पढ़ाना स्वीकार कर लिया।

श्रेष्ठी ने उपाध्याय को धन ग्रहण करने का बड़ा आग्रह किया। गुणधर बोले कि "मैं ज्ञान को धन से बेचता नहीं हूँ। जो गुरु विनय से प्रभावित हो कर विद्या देता है, वह पुण्यात्मा है। परन्तु जो विद्यार्थी स्वयं विद्या प्राप्त करता है तथा जो गुरु धन लेकर विद्या देता है वे दोनों लोभी हैं।" इस प्रकार के वचनों को सुनकर लक्ष्मीदत्त ने मन में सोचा कि "मैं इनका अमूल्य आभूषणों से सत्कार करुंगा।" फिर सेठ ने कहा कि "आप अभ्यास कहां करवायेंगे ?" गुणंधर गुरु ने कहा कि "योग्य स्थान में व्यवस्था करें।" लक्ष्मीदत्त सेठ ने कहा कि, "राजा की आज्ञा से लक्ष्मीपुर की विशाल भूमि व महल मुझे मिले हुए हैं। आप वहां पर पधारें।"

लक्ष्मीपुर का महल शास्त्र अभ्यास के लिए उपाध्यायजी को योग्य लगा। शुभ दिन, शुभ चन्द्र के योग, शुभ मुहुर्त में उपाध्याय ने अत्यन्त विनयी, शुद्ध वस्त्र और आभूषणों से सुशोभित श्री 'श्रीचन्द्र' को ॐ से पढ़ाने का शुभारम्भ किया। श्रेष्ठी ने सबकी उचित रीति से भक्ति की।

श्री 'श्रीचन्द्र' उपाध्याय की अतीव भक्तिपूर्वक सेवा करता हुआ क्रम से सूत्र और अर्थ का अभ्यास करने लगा। विनय से श्री 'श्रीचन्द्र' में गुणों का विकास हुआ। जैसे चिल्ला चढ़ाने से धनुष झुक जाता है, परन्तु

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

हरा बांस मोड़ने से कार्य नहीं होता, उसी प्रकार विनय से ही गुणों की प्राप्ति होती है विनय विना गुण आते नहीं हैं।" उपाध्याय के पास पाठशाला में बहुत से विद्यार्थी पढ़ते थे। परन्तु उनमें से श्री 'श्रीचन्द्र' पर सभी का विशेष आकर्षण था। जैसे तारों का समूह होने पर भी आकाश में चन्द्र ही सब को आर्कषित करता है। 'श्रीचन्द्र' गुरु की भक्ति ने विद्या प्राप्ति हेतु नहीं परन्तु गुरु के गुणानुराग से की थी। वह गुरु का थोड़ा सा भी विरह सहन नहीं कर सकता था। धीरे २ श्री 'श्रीचन्द्र' लक्षण शास्त्र, छंद, सर्व अलंकार, ज्योतिष गणित साहित्य आगम आदि में अत्यन्त प्रवीण हो गया।

उसने सामुद्रिक शास्त्र, अश्व परीक्षा, प्रश्नोत्तर, नाड़ी चेष्ठा, रेखा चिह्न, लग्न, कालज्ञान, स्वरोदय, कल्प विद्या, रसज्ञान, मलमूत्र परीक्षा, नाटक पिंगल आदि गुरु के पास पढ़ लिये। तथा वह स्वर्ण, रत्न, हीरे की परीक्षा, हस्ति शिक्षा, लेखन सकल शास्त्र विद्या, कला में पारंगत हो गया। गुरु ने श्रेष्ठी को यह सारी सूचना दी। लक्ष्मीदत्त ने कहा कि, "क्षत्रिय के योग्य शस्त्र विद्या भी मेरे पुत्र रत्न को सिखा देवें।"

गुरु ने शस्त्र विद्या, राधावेध, धनुष्य विद्या आदि में श्री 'श्रीचन्द्र' को प्रवीण कर दिया। गुरु कृपा से श्री 'श्रीचन्द्र' सकल विद्या में पारंगत हो गए। गुरु की सारी विद्याएं श्री 'श्रीचन्द्र' के हृदय रुपी दर्पण में जल में तेलवत् प्रतिबिम्बित हो गयीं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

गुरु भी जिस विषय में ज्ञाता न थे। उन विषयों में गुरु श्री 'श्रीचन्द्र' की बुद्धि से जानकार हुए। गुरु से शिष्य बढ़ कर निकला। कुमार सर्व प्रकार से कुशल हो गये। तब उपाध्याय अपने घर जाने को तैयार हुए। इससे श्री 'श्रीचन्द्र' घर में रुदन करने लगा। उसका मुख रुपी कमल दिवस में रहे चन्द्र के समान म्लान हो उठा।

श्री श्रीचन्द्र की यह हालत देख कर प्रेम पूर्वक लक्ष्मीदत्त ने कहा कि, "हे वत्स ! तुझे किस बात का दुःख है ? चाहे जितनी लक्ष्मी खर्च हो जाय वह मुझे स्वीकार है परन्तु मैं तुम्हारा मुख म्लान नहीं देख सकता। मैंने कभी तुम्हारे मुख पर आंसु नहीं देखे हैं। आज इस प्रकार क्यों दुःखित हो रहे हो ? क्या मैंने अथवा तुम्हारी माता या गुरु ने तुम्हें कुछ कहा है ? या किसी मित्र ने तुम्हारे साथ दुष्ट व्यवहार किया है।"

श्रीचन्द्र कहने लगा कि "मुझे किसी ने भी कुछ नहीं कहा है। आपकी कृपा से मुझे सब प्रकार का सुख है। परन्तु गुरुजी यहां से जाना चाहते हैं। जो गुरु हृदय रूपी नेत्र को खोलने वाले हैं, उनका विरह मुझ से सहन नहीं होगा। अब मुझे कौन बुद्धि देगा ? मेरे संशय कौन दूर करेगा ?"

इतने में पंडितों में अग्रणी, उपाध्यायजी अनुमति के लिए वहां पधार गये। श्री 'श्रीचन्द्र' की यह स्थिति देख कर बोले कि, "अहो भक्ति ! अहो स्नेह ! अहो विनय ! अहो निराभिमानता !" ऐसी वारंवार प्रशंसा करने लगे।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

श्रेष्ठी ने कहा कि "गुरुदेव! आपश्री अपने शिष्य के संतोष के लिए थोड़े दिन और ठहरने की कृपा करें।" गुरुदेव ने स्वीकार कर लिया।

महात्मा लोग दाक्षिणता से क्या नहीं करते? गुरु की सौम्य दृष्टि से श्री 'श्रीचन्द्र' को अति आनन्द हुआ। श्रीचन्द्र का मुरझाया हुआ हृदय रूपी सरोवर गुरु रूपी मुख चन्द्र से अति उल्लसित हो उठा। हर्ष रुपी नीर छोटे उर में नहीं समा सका।

उधर प्रतापसिंह राजा समुद्र किनारे ८ वर्ष रुक कर बलपूर्वक रत्नपुर को जीत वहां अपनी आज्ञा फैला कर कुशस्थल में वापिस लौटे। प्रजा जनों ने नगरी को बहुत सजाया और बड़ी धूमधाम से विजयी राजा को लेने के लिए गये। उनमें सेठ लक्ष्मीदत्त भी श्री 'श्रीचन्द' सहित थे।

राजा के आगे अपूर्व भेंट अर्पण कर, पिता पुत्र ने बड़े प्रेम पूर्वक नमस्कार किया। लक्ष्मीदत्त सेठ के साथ सर्व गुणों में श्रेष्ठ सुन्दर 'श्रीचन्द' को देखकर प्रतापसिंह राजा ने पूछा कि, 'यह कुमार कौन है?" श्रेष्ठी ने कहा कि, 'महाराज यह मेरा पुत्र है!' श्री 'श्रीचन्द' को देख कर आन्तरिक स्नेह और हर्ष के वश राजा ने उसे कोणकोट्टपुर नगर भेंट में दे दिया।

राजा ने क्रमशः सारी प्रजा के साथ बातचीत करके उदारता पूर्वक उचित दान देकर, सब को विदा किया। सर्वत्र आनन्द व्याप्त

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

हो रहा था। गुणधर गुरु ने 'घाव को तुरन्त ठीक करने वाली औषधि' की दिव्य जड़ें श्री 'श्रीचन्द्र' को देकर अपने नगर की ओर प्रस्थान किया ।

कुश स्थल में ८ क्रोडाधिपति श्रेष्ठी १- धनप्रिय, २- धनदेव, ३- धनसार ४- धतदत्त ५- धनेश्वर ६- धनगोप ७- धनमित्र और ८- धनचन्द्र रहते थे । अनुक्रम से उनकी पत्नियां १- कमलसेना २- कमलावली ३- कमलश्री ४- कमला ५- कनकावती ६- कुसमश्री ७- कनकदेवी ८- कोडिमदेवी थीं । उनके क्रमशः १- धनवती २- धनाई ३- धारणी ४- धारु ५- लक्ष्मी ६- लीलावती ७- लच्छी ८- लीलाई, रुप लावण्य, चातुर्य आदि से युक्त लक्ष्मीदेवी के क्रीडा कें स्थानभूत अद्भुत पुत्रियां थीं ।

जब वे यौवनवय को प्राप्त हुईं तो चन्द्र के समान सौम्य और सुन्दर श्री 'श्रीचन्द्र' को देख कर उसके साथ उन ८ कन्याओं का पाणिग्रहण करवाने की इच्छा पूर्वक उनके पिताओं ने लक्ष्मीदत्त श्रेष्ठी से निवेदन किया। उन्हें योग्य जानकर, महोत्सव पूर्वक श्रेष्ठी ने श्री 'श्रीचन्द' के साथ उनका हस्त मिलाप करवाया। अब श्री 'श्रीचन्द' आठों स्त्रियों सहित अत्यधिक शोभायमान दिखने लगे। ८ स्त्रियों के हृदय और मुख रुपी दर्पण में श्री 'श्रीचन्द' का प्रतिबिम्ब पड़ने से १६ कलाओं से जैसे चन्द्र शोभा देता है उसी प्रकार श्री 'श्रीचन्द्र' सुशोभित हो रहे थे ।

कवीश्वर नये २ काव्यों की रचना कर श्री 'श्रीचन्द्र' की

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

स्तुति करते थे। "चन्द्र तो कलंक वाला है, परन्तु श्री 'श्रीचन्द्र' निष्कलंक है। तथापि मुख रूपी चन्द्र के चक्षुओं में कालिमा है।"

"जब चन्द्र अस्त हो जाता है तब चन्द्र-विकासी कमल कुम्हला जाता है परन्तु श्री 'श्रीचन्द्र' तो नित्य उदयवाले होने से लक्ष्मी भी कमल का त्याग कर, श्री 'श्रीचन्द्र' के नाम में, तेज में तथा कर कमल में रही हुई है।"

"जिस प्रकार रोहणगिरि रत्नों से सुन्दर दिखाई देती है उसी प्रकार श्री 'श्रीचन्द्र' गुणों से शोभित है।" "जैसे देवों में इन्द्र शोभायुक्त हैं उसी प्रकार विद्वानों में श्री 'श्रीचन्द्र' शोभायमान हैं।" श्री "श्रीचन्द्र" मनुष्य के हृदय रूपी नयनों को हर्षामृत से विकसित करने वाले हैं।"

"जैसे मेरुगिरि के मध्यस्थल में गुणरत्नमय श्री जिनेश्वर देवों के बिम्ब होने से, स्वर्णगिरि के गौरव का वर्णन नहीं किया जा सकता वैसे ही अनुपम गुणों से युक्त श्री 'श्रीचन्द्र' अवर्णनीय हैं।" इस प्रकार श्री 'श्रीचन्द्र' की सर्वत्र स्तुति हो रही थी। महान् पुण्य के योग से वे इच्छानुसार लक्ष्मी का दानादि शुभ कामों में उपयोग करते थे।

एक दिन श्री 'श्रीचन्द्र' अपने मित्र गुणचन्द्र के साथ क्रीड़ा के लिए उद्यान में गये वहां सरोवर के किनारे अश्वों का पड़ाव देखा। अश्व ऐसे सुन्दर थे जैसे कि वे मानों सूर्य के रथ से ही तो न जुड़े हुए हों।

श्री 'श्रीचन्द्र' ने पूछा कि "हे मित्र ! इन अश्वों का क्या मूल्य है ?"

वृद्ध व्यापारी ने कहा कि, 'हे कल्याणी ! मैंने बहुत से अश्व वेच डाले हैं। अब तो उत्तम जाति के केवल १६ अश्व ही बाकी रहे हैं। गुणचन्द्र ने श्रीचन्द्र से पूछा कि, 'हे स्वामिन ! कौनसे अश्व उत्तम हैं ?" श्री 'श्रीचन्द्र' नें परीक्षा करके कहा कि, "जिन अश्वों के मुख और पैर उज्वल हैं वे गंगाजल जाति के हैं। जिनके ऊपर अष्ट मंगल रेखा हैं वह ताक्ष्य जाति के हैं। जो लाल रंग का है; वह कीया जाति का है। श्याम रंग अश्व खुगार जाति का है। हल्का पीला तथा श्याम रंग के पैर वाला अश्व कुला जाति का है। जो विचित्र रंग का है वह हला जाति का है। जो अश्व घृत जैसी क्रान्ति वाला तथा निर्मल है वह सराह जाति का है। जो पीला और लाल रंग का और श्याम रंग के पैरों वाला है वह रोहनाक जाति का है जो हरे रंग का है वह हरीक जाति का है। जो श्वेत और पीले रंग के हैं वे होलक जाति के हैं। ये दोनों अश्व पंचभद्र जाति के हैं। ये अति उत्तम और अति वेग से चलने वाली जोड़ी है। उनकी छाती, पीठ, मुंह और पसली में शुभ लक्षण हैं।"

इतने में जयकुमार आदि अश्व खरीदने के लिए आये। वे एक लाख से भी ज्यादा देने को तैयार हुए फिर भी उत्तम अश्वों की जोड़ी नहीं खरीद सके। उन्होंने कई बलिष्ठ अश्व देख कर, २५ और ५० हजार में इच्छानुसार खरीद लिये। अब केवल तीन अश्व बाकी रह

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

गये थे ।

श्री 'श्रीचन्द्र' परीक्षा करके वायुवेग और महावेग 'पंचभद्र' जाति के अति शीघ्रगामी अश्वों की जोड़ी दो लाख रुपये में खरीद कर अपने घर आये ।

पुण्य का अद्‌भुत प्रभाव है । "विश्व में प्रत्येक के शत्रु मित्र होते ही हैं ।" किसी ने लक्ष्मीदत्ता सेठ से कहा कि, 'हे श्रेष्ठी! तुम्हारे चतुर पुत्र ने दुबले पतले अश्व दो लाख रुपये में खरीदे हैं । जबकि जयकुमार आदि ने उनसे आधे मूल्य में कई हृष्ट पुष्ठ अश्वों को खरीदा है । दोनों में कितना अन्तर है ?"

लक्ष्मीदत्ता ने कहा, 'उसमें तेरे कहने की कोई आवश्यकता नहीं हैं, श्री 'श्रीचन्द्र' के आगमन से पहले मेरे पास कितनी लक्ष्मी थीं और अब कितनी है ? मेरे पास लाख से क्रोड़ की लक्ष्मी की जो वृद्धि हुई है, वह सब श्री 'श्रीचन्द्र' के पुण्य के प्रभाव से आयी है । वह लक्ष्मी घटने वाली नहीं है । दर्भ और कुएं का पानी कितना भी निकालें फिर भी क्या वह घटता है ?"

इतनें में श्री 'श्रीचन्द्र' ने आकर कहा कि, "पिताजी! मैंने दो लाख में ये अश्वों की जोड़ी खरीदी है ।" लक्ष्मीदत्ता ने कहा कि, "तुमने शुभ ही किया! तूं आनन्द को प्राप्त हो ।" स्नेहपूर्वक उसने पुत्र को गोद में बिठाया, जैसे मुकुट के मध्य में रत्न को बैठाते हैं । फिर पिता के आदेश से श्री 'श्रीचन्द्र' ने गारुडी रत्न जड़वा कर सुवेग

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

नामक एक दिव्य रथ को तैयार करवाया ।

वह रथ जगत के लोगों को मोहित करने वाला । पंचभद्र अश्वों और सुवेगरथ का सारथी उसने धनंजय को परीक्षा करके नियुक्त किया । धनंजय राजा के सारथी के कुल में जन्मा था । वह स्वामी के चित्त को अनुसरण करने वाला, स्नेही, गंभीर हृदय वाला, भक्तिवान, और चतुर सारथी था ।

एक शुभ दिन पिता की आज्ञा ग्रहण कर श्री 'श्रीचन्द्र' ने पंचभद्र अश्वों को पुचकार कर उनके सर्व अङ्गों की मालिश करायी फिर परीक्षा के लिए मित्र सहित रथ पर आरुढ़ होकर, एक दिशा में रथ को चलाने की सारथी को आज्ञा दी ।

'पंचभद्र' अश्वों ने इतने वेग से रास्ते को पार किया कि जिससे रथ में बैठे हुए उन्हें वृक्ष पर्वत आदि सर्व घूमते हुए नजर आने लगे । आधे पहर में (९० मिनिट) में तो वे १५ योजन (१२० मील) दूर पहुंच गये और कुछ देर वहां विश्राम करने के पश्चात् वापिस अपने घर लौट आये ।

इस प्रकार श्री 'श्रीचन्द्र' इच्छानुसार भिन्न २ दिशाओं में मित्र के साथ रथारूढ़ होकर नगर, वन, पर्वत आदि का निरीक्षण करते रहते थे ।

एकदा सेठ लक्ष्मीदत्त ने पूछा कि "आज इतनी देर कहां लग गयी ?" श्री 'श्रीचन्द्र' ने कहा कि, ' पिताजी ! नगर के बाहर क्रीड़ा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कर रहे थे।" लक्ष्मीदत्त बोले कि, "वत्स! तुम इच्छानुसार क्रीड़ा करो, परन्तु समय पर घर शीघ्र आ जाया करो। क्योंकि तुम्हारे बिना मुझे भोजन करने की इच्छा ही नहीं होता।" यह सुनकर श्री 'श्रीचन्द' कहने लगा कि "यह तो मेरा अहोभाग्य है कि आप पूज्यों का मेरे प्रति इतना स्नेह है।"

एक बार क्रीड़ा करते हुए वे त्रिकुट पर्वत पर पहुंचे। वहां पद्मासन में भैरव योगी को देख कर श्री 'श्रीचन्द्र' ने नमस्कार किया। लक्षण और गुणों से युक्त उसे देख कर योगी ने हर्षित होकर कहा कि "कुमार! तुम छोटे होने पर भी रत्नों के आभूषणों से सुसज्जित और स्वर्ण रथ में आरूढ़ होकर दुष्ट शेर आदि हिंसक पशुओं से भयानक इस महा अटवी में अकेले कैसे आये हो?" श्रीचन्द्र कहने लगा कि "क्रीड़ा के लिए तथा आश्चर्य को देखते हुए नगर से यहां आ पहुँचा हूं। आप के दर्शनों के प्रताप से मुझे किसी प्रकार का भय नहीं है।"

"श्रीचन्द्र" को साहसिक जानकर योगी ने कहा कि, 'यदि तुम मेरे उत्तर साधक बन जाओ तो आज रात्रि को मैं श्मशान में मन्त्र की साधना कर लूंगा।" श्री 'श्रीचन्द्र' ने स्वीकार कर लिया। रात्रि को योगी आहुती देने लगा। श्री 'श्रीचन्द्र' वहां निर्भयता पूर्वक अकेला खड़ा रहा। उसकी निर्भयता को देख कर सिद्ध योगी मधुर वाणी से कहने लगा कि, भविष्य में कभी किसी योगी का तुमने विश्वास न करना। मैंने तो तुम्हारी परीक्षा की है। तुम्हारे पुरुषार्थ से मैं प्रसन्न हूं। सर्व क्षुद्र जन्तुओं को अन्धा करने वाली यह जड़ी बूटी

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तुम ग्रहण करो।" श्री 'श्रीचन्द्र ने कहा कि, 'आपकी-बड़ी कृपा है।" उस जड़ी बूटी को विधि पूर्वक ग्रहण कर योगी की आज्ञा लेकर श्रीचन्द्र अपने घर लौट आया।

इस प्रकार सदैव अलग २ स्थानों पर इच्छानुसार श्री 'श्रीचन्द्र' को मित्र के साथ रथ पर आरुढ़ होकर विविध क्रीड़ा करते हुए अनेक प्रकार की विद्या, जड़ी बूटी तथा विषहरमणी आदि सारभूत वस्तुएं प्राप्त हुईं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दूसरा खण्ड

एक बार श्री 'श्रीचन्द्र' महल के अद्भुत झरोखे में अपने मित्र गुणचन्द्र सहित झूला झूल रहे थे, कि अचानक बाजों के मधुर नाद से दिशाएं गूंज उठीं। अनेक रथ, अश्व, हाथी, सैनिक सहित जयकुमार, आदि राजपुत्रों को जाते हुए देख कर 'श्रीचन्द्र' ने पूछा कि, "ये आडम्बर पूर्वक कहां जा रहे हैं ?"

तब सर्व वृतांत को मालूम करके गुणचन्द्र ने कहा कि, "हे स्वामिन् ! पश्चिम दिशा में तिलकपुर एक सुन्दर नगरी है। वहां पर तिलक राजा और रतिप्रिया रानी के तिलक मंजरी नामक एक कन्या है। ६४ कलाओं से युक्त वह कन्या विश्वश्री के तिलक तुल्य है। जब वह योवन अवस्था को प्राप्त हुई तो एक बार पिता से तिलकमंजरी ने कहा कि "राधावेध करने वाले पुरुष के अतिरिक्त दूसरे किसी भी व्यक्ति के साथ मेरा पाणिग्रहण नहीं होगा।" तिलक राजा ने शास्त्रानुसार 'राधावेध' की सर्व सामग्री गुरु की देख रेख में तैयार करवा कर निमन्त्रण भेज कर राजाओं और राजकुमारों को स्वयंवर में पधारने की विनंति की है। इस स्वयंवर में अभी १७ दिन बाकी हैं वह नगर यहां से ८० योजन (६४० मील) दूर है। जयकुमार आदि

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सब वहाँ ही जा रहे हैं।"

इतने में ही लक्ष्मीदत्त श्रेष्ठी ने गुणचन्द्र को बुला कर कहा कि, "तुम कौतुक प्रिय और नई २ वस्तुओं को देखने की उत्कंठा रखने वाले अपने मित्र 'श्रीचन्द्र' को पूछ लो। वह राधावेध को जानता है। इसलिए क्या वह भी वहां जाना चाहता है?" जब श्रेष्ठी के वचनों को गुणचन्द्र ने कह सुनाया तब सत्वशाली और धीर वीर श्री 'श्रीचन्द्र' मौन रहा। उसने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। सोहलवें दिन को शाम को पिता को पूछे बिना अकस्मात् श्री 'श्रीचन्द्र' ने मित्र सहित, रथ पर आरुढ होकर, सारथी को तिलकपुर चलने की आज्ञा दी।

विशाल पर्वत, सरोवर और नगर आदि को पार करता हुआ उनका रथ तिलकपुर के उद्यान में आ पहुँचा, जैसे कि उदयचल पर्वत पर प्रातःकाल सूर्य का आगमन होता है। रथ का त्याग कर श्री 'श्रीचन्द्र' अपने मित्र के साथ स्वयंवर मंडप में पहुँचा। वहाँ चारों तरफ बड़ा कोलाहल हो रहा था। मंच पर राजा और राजकुमार बड़े ठाठ बाठ से विराजमान थे।

शास्त्र युक्ति से स्थापित स्थम्भ पर ८ चक्र उलटे सीधे घूम रहे थे। उनके ऊपर मीण की राधा की पुतली थी। स्तम्भ के पास भूमि पर तेल की कढ़ाई थी। उसमें राधा का प्रतिबिम्ब पड़ता था। स्तम्भ के आगे धनुष बाण रखा हुआ था। श्रीचन्द्र मित्र से कहने लगा कि "हे मित्र! जो व्यक्ति ऊंची मुष्ठी से बाण को आठ चक्रों में

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

से निकाल कर राधा की बायीं आंख को बींधेगा वह भाग्यशाली 'राधावेध' करने वाला समझा जायेगा।"

इतने में अनेक बाजों की मधुर ध्वनि पूर्वक राजपरिवार सहित राजकुमारी तिलकमंजरी देदीप्यमान वरमाला लिये हुए वहां आ पहुंची। सब को आनंदकारी वह राजकन्या स्तम्भ के दाहिना ओर खड़ी हो गयी।

श्रीश्रेष, हरिषेण, आदि अनेक राजे और राजकुमार स्वयंवर मण्डप में एकत्रित हो गये थे। श्री तिलकराजा के आदेश से भाट ने उन महान् राजाओं के नाम, उनके पिता के नाम, वंश, जाति तथा देश आदि वर्णन करके उन्हें राधावेध के लिए प्रोत्साहित किया।

स्तम्भ के पास आकर धनुषबाण का उन राजाओं ने क्रमशः निरीक्षण किया परन्तु उनमें में कोई भी राधावेध की कला को सिद्ध न कर सका। विपरीत क्रिया करने से वे दूसरों के हास्य पात्र बने।

राधा की बायीं आंख को बींधने में अपने तीरों के निष्फल रहने से जयकुमार आदि के मुख लज्जा से म्लान हो गये।

केवल नरवर्मा राजा ने एक चक्र को बींधा परन्तु उसका भी तीर टूट जाने से वह लज्जित होकर लौट गया। वामाङ्ग राजा, वरचन्द्र राजा, शुभगांग राजा तथा दीपचन्द्र राजा का दक्षकुमार तो मन में राधावेध को दुष्कर समझ कर अपने स्थान से ही नहीं उठे। यह देख कर तिलकराजा, तिलकमंजरी और राज परिवार बड़ा उदासीन

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

हो गया ।

तब भाट ने फिर ऊंचे स्वर से कहा "हे भद्र पुरुषों ! क्या कोई राधावेध को सिद्ध करने में समर्थ धनुर्विद्या में प्रवीण पुण्यशाली है ?"

तब गुणचन्द्र ने श्री 'श्रीचन्द्र' को कहा, "देव ! राधावेध के लिए यह शुभ अवसर है। आप राधावेध जानते हैं अतः उसे सिद्ध करने की कृपा करो।"

मन्त्री की प्रार्थना पर कलानिधि और तेजस्वी श्री 'श्रीचन्द्र' स्तंभ के पास गये और क्रमशः देव, गुरु, भूमि और धनुष को नमस्कार करके धनुष को तीन बार टंकारा, फिर शास्त्रोक्त विधि से अच्छी तरह निरीक्षण करके उस पुण्यात्मा ने तीर छोड़ कर राधावेध सिद्ध कर डाला। चारों ओर जय जयकार की ध्वनि गूंज उठी।

राजकन्या तिलकमंजरी ने अति हर्ष पूर्वक श्री 'श्रीचन्द्र' के गले में वरमाला पहना दी। सभी लोग उसके भाग्य, रूप, विद्या, बल, बुद्धि तथा कला कौशल की प्रशंसा करने लगे। राजा ने पूछा कि, "ये कौन है ? किस का पुत्र है ?"

वहां बड़ा कोलाहल मच गया था। उसी समय श्री 'श्रीचन्द्र' मित्र का हाथ पकड़ कर रथ के पास पहुँचे। गुणचन्द्र ने कहा कि, 'हे कुलरत्न ! कुछ समय ठहर कर इन की मनोकामना को पूर्ण करो और राजकन्या से पाणिग्रहण कर अपने माता-पिता को आनन्दित करो।"

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

निस्पृही श्री 'श्रीचन्द्र' कहने लगा कि, "हे मित्र क्या तुम यह नहीं जानते हो कि हम पिताजी को पूछे बिना ही यहां आये हुए हैं; अतः हमें विलम्ब नहीं करना चाहिये। और शीघ्र ही घर पहुंच जाना चाहिये।" इतना कह रथ पर सवार हो कर सारथी को कुशस्थल लेजाने की आज्ञा दी।

भाट ने श्री 'श्रीचन्द्र' को पहचान कर सबके सामने उसका स्पष्ट वर्णन किया कि, "यह कुशस्थल के लक्ष्मीदत्त श्रेष्ठी का पुत्र श्री 'श्रीचन्द्र' है। आठ प्रियाओं का पति है। गुणंधर गुरु से इसने शिक्षा ग्रहण की है। इसके पास सुवेग रथ और पवनवेगी वायुवेग और महावेग घोड़ों की जोड़ी है। राजा प्रतापसिंह ने कणकोट्टपुर इसे भेंट में अर्पण किया हुआ है।

तिलकराजा ने उंचे स्वर से कहा कि, "हे सैनिकों! जो कुमार जा रहा है, उसे वापिस लौटा लाओ।" अनेक सैनिक घोड़ों पर सवार होकर व रथों में बैठ कर पीछे दौड़े परन्तु कोई भी श्री 'श्रीचन्द्र' के पास नहीं पहुंच सका। वह तो वायु के समान अतिवेग से निकल गया। यह देख कर मन में अति आश्वर्य युक्त होकर राजा कहने लगा 'सब से दुष्कर कार्य श्री 'श्रीचन्द्र' ने किया है। अति कष्ट पूर्वक भी जो न छोड़ा जा सके वह श्री 'श्रीचन्द्र' ने क्षणवार में त्याग कर दिया है।"

सैनिक खाली हाथ वापिस लौटे। यह देख कर राजा बहुत दुःखी हुआ। कन्या तिलकमंजरी मूर्छित हो गई। शीत उपचार

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

करने से स्वस्थ होने पर वह विलाप करने लगी, "हे नाथ ! आप क्यों जा रहे हैं ? प्राणेश्वर ! मुझे स्वीकार करो ! हे कृपा निधि ! आप मुझे अपने पास बुला लो ! हे स्वामिन् ! मेरी ओर कृपादृष्टि करो ! आपने कठिन राधावेध को सिद्ध कर लिया, अब सुसाध्य मेरे शरीर को क्यों सिद्ध नहीं कर रहे हो ! हे विभो ! अन्य कोई तो राधा में एक भी छिद्र न कर सके परन्तु आपने तो मेरे हृदय में दो छिद्र कर डाले। आपके दूर चले जाने और दिखाई न देने पर मेरा हृदय विदीर्ण हो रहा है। आप दिशा रूपी चक्र को भेद कर नया वेध कर रहे हैं। हे स्वामिन् ! क्या ये उत्तम पुरुष को योग्य है ? यदि जाना ही है तो मेरे हृदय में से क्यों नहीं चले जाते" इस प्रकार विलाप करती हुई तिलकमंजरी को उसके पिता और जयकुमार आदि ने रोकने का प्रयास किया।

जयकुमार ने कहा कि "मेरे पिता ने कोणकोट्टपुर श्री 'श्रीचन्द' को योग्य जान कर ही हर्ष पूर्वक भेंट दिया है। वह हमारे नगर में गया है। इसलिए मेरे साथ आप राज-कन्या को जल्दी भेज देवें।"

इससे तिलकराजा और तिलकमंजरी को संतोष हुआ। तिलकमंजरी कुशस्थल जाने को तैयार हो गयी।

मन्त्री ने तिलकराजा से विनंति की कि, "महाराज ! हमारे सेवक जयकुमार के निवास पर गये थे। तब वह अपने भाइयों के साथ

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मन्त्रणा कर रहा था कि, अपने सेवक के सेवक से हम लज्जित हुए हैं। परन्तु उसके साथ राजकुमारी का पाणिग्रहण तो नहीं हुआ। इससे अपना भाग्य स्फुरायमान दिखाई देता है, कारण कि जब कन्या कुशस्थल आयेगी तब, अपने सामने श्री 'श्रीचन्द्र' कन्या से कैसे विवाह करेगा। इसलिए कन्या को जयकुमार के साथ न भेजें।" तब राजा ने धीर मंत्री को आमन्त्रण देकर श्री 'श्रीचन्द्र' को लाने के लिए कुशस्थल भेज दिया। तत्पश्चात् तिलक राजा ने सर्व राजाओं और राजकुमारों का हाथी, अश्व, आभूषण आदि से सम्मान किया और वे अपने २ नगर की ओर विदा हुए।

श्री 'श्रीचन्द्र' जल्दी से कुशस्थल पहुँचे। पुत्र के वियोग से सेठ लक्ष्मीदत्त बाहर ही खड़ा देख रहा था। श्री 'श्रीचन्द्र' को द्वितीया के चन्द्र के समान देख कर वह हर्षित हुआ। श्री 'श्रीचन्द्र' ने तत्क्षण रथ में से उतर कर विनय पूर्वक पिता को प्रणाम किया। पिता ने बड़े प्यार से पूछा कि, 'हे पुत्र। आज देरी कैसे हुई?"

श्रीचन्द्र ने उत्तर दिया कि, 'पिताजी ऐसे ही क्रीड़ा करते हुए देरी हो गयी है।" मित्र ने भी हां भरी, क्यों कि श्रेष्ठ मित्र स्वामी के चित्त का अनुसरण करने वाला ही होता है। यह सुन कर श्रेष्ठी चुप हो गया।

कुछ दिन पश्चात् जयकुमार आदि भी कुशस्थल वापिस आ पहुँचें। उन्होंने प्रतापसिंह राजा के समक्ष विस्तार से सारी घटना का

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वर्णन किया। प्रतापसिंह हृदय में आश्चर्य चकित हो कर कहने लगे कि, "मेरे नगर का श्रेष्ठी पुत्र भी रुप, क्रान्ति, गुण और कला में सब से अधिक रहा। पुण्य के प्रभाव से जयश्री भी श्री 'श्रीचन्द्र' ने प्राप्त की। श्रीचन्द्र ने महान यश को प्राप्त किया है। श्रेष्ठ राधावेध जैसी दुष्कर कला को सिद्ध कर के उसने सर्व देशों में अपने यश के साथ मेरी भी कीर्ति और नाम को फैलाया है। ऐसे गुणी श्री 'श्रीचन्द्र' ने किस गुरु के पास और कब अभ्यास किया था ?" इस प्रकार उसके पुरुषार्थ की प्रतापसिंह ने बारम्बार प्रशंसा की। 'मतिराज मन्त्री ने पूछा कि 'हे देव! श्रीचन्द्र कब तिलकपुर गया और कब आया ? क्योंकि मैं तो उसे कुशस्थल में रोज देखता हूँ।"

यह सुनकर प्रतापसिंह ने हृदय में अति विस्मित हो कर मन्त्री को आमन्त्रण दे कर 'श्रीचन्द्र' और लक्ष्मीदत्त सेठ को लाने के लिये तुरन्त भेजा।

दूसरी तरफ लोगों द्वारा राधावेध का वृतान्त जानकर लक्ष्मीदत्त श्रेष्ठी ने श्रीचन्द्र को गोद में बिठा कर पूछा कि, 'बारह पहर में (३६ घन्टों में) तिलकपुर में तुम किस प्रकार गये और वापिस लौटे ? वह सुनने लायक आश्चर्य को कहो।"

लक्ष्मीवती भी उस चमत्कारिक वृतांत को सुनने की इच्छा से अति हर्ष पूर्वक सामने आकर बैठ गयी। सत्य सुधा जैसी मधुर वाणी से श्री 'श्रीचन्द्र' ने कहा कि, "हे तात! आप श्री की कृपा और पूर्व पुण्य से सुवेग रथ अश्वों से युक्त अद्भुत है। उस रथ द्वारा अपूर्व

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वेग से ४ पहर में (१२ घन्टों में) १०० योजन (८०० मील) का सफर कर सकते हैं।"

यह सुन कर आनन्दित माता पिता ने कहा कि "हे पंडित शिरोमणी ! यह अद्‌भूत् राधावेध तुमने कहां से सीखा था ? राजपुत्री जो हमारी बहू है, उसे क्यों नहीं लाये हो ?" तब गुणचन्द्र ने स्वयंवर की वरमाला का सारा वृतांत कह सुनाया।

हृदय में राग उत्पन्न हुआ। फिर भी श्री 'श्रीचन्द्र' कहने लगे कि 'आप पूज्यों का आदेश नहीं लिया था जिससे इस प्रकार ही हम वापिस आ गये। वह राजकन्या कुछ ही दिनों में यहां आयेगी अथवा आमन्त्रण के लिए मन्त्री आयेगा।"

हर्ष युक्त माता पिता ने 'श्रीचन्द्र' की प्रशंसा करते हुए कहा कि, 'धन्य है इसकी गंभीरता ! धन्य पूज्यों की भक्ति ! धन्य अद्‌भुत निस्पृहता ! धन्य दो लाख में पंचभद्र अश्वों को खरीदने की इसकी निपुणता ! इस प्रकार के मित्र का कैसा सुन्दर योग मिला। सत्य बात होने पर भी अपनी प्रशंसा नहीं करता ! अहो ! राजकन्या के पाणि-ग्रहण का भी इसे उत्साह नहीं है।"

लक्ष्मीदत्त सेठ ने श्रेष्ठ महोत्सव शुरु किया। सगे सम्बन्धियों ने अक्षत वस्त्र, वर्तन आदि की भेंट अर्पण कर लक्ष्मीदत्त सेठ के घर को भर डाला। सेठ ने महादान देकर सब को आनंदित किया। नंदावर्त, स्वस्तिकों तथा केले के मनोहर तोरणों से, घर शोभायमान हो गया।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

गीत गान और वाजिन्त्रों के नाद से सारा वातावरण गूंज उठा।

इन सर्व लीलाओं को देखते हुये मोतियों की श्रेष्ठ माला के समान और चन्द्र की क्रान्ति के तुल्य निर्मल 'श्रीचन्द्र' कुशस्थल के किल्ले के बाहर श्रीपुर के अपने नये महल में पहुँच गया।

पूर्व की भांति मित्र सहित श्री 'श्रीचन्द्र' रात्रि के आरम्भ में रथ पर आरुढ़ होकर पश्चिम दिशा में क्रीड़ा के लिए चला गया। प्रातःकाल प्रतापसिंह राजा के आदेश से मंत्री हस्ती आदि सहित आमन्त्रण देने के लिए श्रेष्ठी के घर आया। श्रेष्ठी ने बड़ी प्रसन्नता पूर्वक मन्त्री का स्वागत किया।

अति हर्ष से मन्त्री ने कहा कि, 'राजा प्रतापसिंह ने आदेश दिया है कि, लक्ष्मीदत्त श्रेष्ठी और श्री 'श्रीचन्द्र' को पट्टहस्ती पर आरोहण कराके राज्य चिन्हों से युक्त उत्सव पूर्वक राज्य सभा में उपस्थित करो।"

प्रसन्नचित्तासे श्रेष्ठी ने पुत्र को बुलाने के लिये सेवक को भेजा। सेवक ने आकर निवेदन किया कि श्री 'श्रीचन्द्र' क्रीड़ा के लिए बाहर पधारे हैं।" इससे लक्ष्मीदत्त श्रेष्ठी राजा की आज्ञानुसार मन्त्री के साथ अकेले ही भेंट लेकर राजसभा में गये।

प्रतापसिंह ने 'श्रीचन्द्र' का वृतान्त पूछा। लक्ष्मीदत्त ने कहा कि, 'हे महाराज! अश्वों के गुण और राधावेध आदि का वृतांत

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मैंने भी अभी ही सुना है। श्री 'श्रीचन्द्र' मित्र से युक्त फिर क्रीड़ा के लिए चले गये हैं। इसलिए मैं अकेला ही आपकी सेवा में उपस्थित हुआ हूँ।" श्रेष्ठी ने सर्व बातों का विस्तार से वर्णन किया।

प्रतापसिंह राजा ने कहा कि, श्री 'श्रीचन्द्र' बहुत ही पुण्यशाली है। लोकोत्तर चारित्र वाला है। जब वह वापिस आये तब उसे मेरे पास लेकर आना। श्री 'श्रीचन्द्र' को मैं अपने पुत्र से भी बड़ा बनाऊंगा। इसमें कोई भी संदेह नहीं है"

राजा को लक्ष्मीदत्त ने भेंट अर्पण की, भेंट स्वीकार कर राजा ने लक्ष्मीदत्त और श्री 'श्रीचन्द्र' के लिए रत्न, वस्त्र आदि भेंट दिये। श्रेष्ठी राजा को प्रणाम कर श्री 'श्रीचन्द्र' के बहुत से गुणों को याद करते २, जगह २ दान देते हुए अपने घर पहुँचा।

सूर्यवती का पुत्र भ्रमण करते २ महावन में मध्य रात्रि में वृक्ष के नीचे, सारथी सहित रथ रख कर मित्र द्वारा बिछाए वस्त्र पर सुख से निद्राधीन हो गया। पास में गुणचन्द्र जाग्रित अवस्था में थे। उस वृक्ष पर एक शुक शुकी का जोड़ा रहता था।

श्री 'श्रीचन्द्र' के मस्तक पर तेज प्रकाश देख कर शुकी ने शुक से कहा कि, "हे नाथ! यह राजपुत्र बहुत पुण्य शाली है। हम इन्हें दो बिजोरे आतिथ्य सत्कार के रुप में दें। बड़ा बिजोरा जो खाएगा वह राजा होगा तथा जो छोटा बिजोरा खाएगा वह मन्त्री होगा। हम इनका इस प्रकार से आतिथ्य करेंगे तो हमें महान् फल की प्राप्ति

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.   Jun Gun Aaradhak Trust

होगी।"

ऐसा कह कर वह युगल उड़कर कहीं से दो बिजोरे ले आया। क्षणवार डाल पर विश्राम करके बिजोरे 'श्रीचन्द्र' और गुणचन्द्र के पास रख कर वे उड गये।

बुद्धिमान गुणचन्द्र ने दोनों फलों को ग्रहण किया। जब निद्रा से श्री 'श्रीचन्द्र' जाग्रित हुए तब गुणचन्द्र ने उन फलों को सम्मुख रख कर तोती तोते की बात कह सुनायी। वे फल मित्र के हाथ में देकर राजपुत्र ने रथ में आरुढ़ हो कर आगे प्रयाण किया।

विशाल सुन्दर सरोवर के किनारे प्रभात में प्रातः विधि करके मित्र द्वारा दिये गये बड़े बिजोरे को काट कर 'श्रीचन्द्र' ने तथा छोटे को गुणचन्द्र ने खा लिया। फिर दोनों तृप्त होकर नजदीक के रम्य वन में चले गये।

इधर उधर भ्रमण करते हुए उन्हें दयामूर्ति शान्तदांत और इन्द्रियों का दमन करने वाले और क्रियाशील श्री सुव्रत मुनि के दर्शन हुए। श्री 'श्रीचन्द्र' ने मन में विचार किया कि, 'मुनि के दर्शन होना तो अपना बड़ा पुण्योदय है। साधु तीर्थं हैं। साधु समागम तुरन्त ही आत्मा को पवित्र करता हैं।' दोनों वन्दन करके समीप जाकर बैठे गये। भद्र प्रकृति के देख कर मुनि श्री ने 'धर्मलाभ' शुभआशीर्वाद दिया और धर्म देशना प्रारम्भ की 'हे भद्र! मनुष्य जन्म दुर्लभ है, उसमें श्रावक धर्म दुर्लभ है। उसमें दीर्घ आयुष्य, आरोग्यता, धर्म की

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

इच्छा धर्म पर श्रद्धा होना, इन सर्व दुर्लभ वस्तुओं को प्राप्त करके भी धर्म आचरण करना अति दुर्लभ है। अतः हे भव्य आत्माओ! प्रमाद आदि का त्याग कर दानादि क्रिया रुपी धर्म कार्य में विशेष अनुरक्त बनो। समकित मूल पांच अनुव्रत, तीन गुण व्रत और चार शिक्षा व्रत-- ये श्रावक के बारह व्रत हैं। हे वत्स! धर्म वृक्ष के जड़ समान सम्यक्त्व ग्रहण करो। तुम राजपुत्र हो, इसलिए यथा शक्ति व्रतों को ग्रहण कर सकते हो। तुम्हारे शरीर पर जो शुभ चिन्ह दिखाई देते हैं इससे मुझे महान् राजा होने के लक्षण नजर आ रहे हैं। जो छत्राकार रेखा दिखायी देती है इससे यह प्रतीत होता है कि मातापिता और स्वमस्तक पर अवश्य ही छत्र धारण होगा। लक्षणों से ऐसा प्रतीत होता है परन्तु मुझे विशेष ज्ञान नहीं है।"

"समय होने पर सामायिक व्रत को जरुर धारण करना चाहिये और श्री नमस्कार महामंत्र का प्रति दिन स्मरण करना चाहिये समभाव वाला श्रावक दो घड़ी में देव आयुष्य को बांधता है और कर्मों की निर्जरा करता है। त्रस और स्थावर जीवों के प्रति समता भाव आता है इसलिये सामायिक व्रत अवश्य करना चाहिये।

एक व्यक्ति नित्य प्रति एक लाख स्वर्ण मोहरों का दान करे और दूसरा एक सामायिक करे तो, वह स्वर्ण का दान करने वाला भी सामायिक करने वाले जितना पुण्य नहीं बांध सकता। श्रावक भाव से स्वर्णगिरि का दान करे तो भी उसके पुण्य में इतना सामर्थ्य नहीं होता जितना कि एक सामायिक करने वाले के पुण्य में होता है।"

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

"चन्द्र के समान श्वेत श्री अरिहंत देव श्रेष्ठपद्मराग के समान श्री सिद्ध भगवंत, स्वर्ण के समान कान्ति वाले श्री आचार्य प्रियंगु जैसी कान्ति वाले श्री उपाध्याय, अंजन मणि के समान देदीप्यमान साधु भगवंत इस प्रकार पच परमेष्ठी पदों का विधि पूर्वक ध्यान करना चाहिये। इन पांचों को नमस्कार करने से सर्व तो मुखी मंगल होता है।

स्वर्ग, मर्त्य और पाताल तीनों लोकों में यह मन्त्र शाश्वत माना जाता है। पांच ऐरवत क्षेत्र, पांच भरत क्षेत्र, पांच महाविदेह क्षेत्र में भूत, भविष्य और वर्तमान काल के सब जिनेश्वर देवों को इस मन्त्र से नमस्कार होता है।

महा विदेह क्षेत्र के १६० विजयों में भी जहां अनादि काल से श्री जिन धर्म है और जहां शाश्वत धर्मकाल है; इस महा मन्त्र का ही स्मरण होता है।"

"श्री नमस्कार मन्त्र का स्मरण करने वाला अद्भुत फल को प्राप्त करता है। मृत्यु के समय इसका शुद्ध मन से जो ध्यान करता है वह अवश्य ही सद्गति को प्राप्त होता है जो आपत्ति में नमस्कार मंत्र का ध्यान करता है उसकी सैंकड़ों आपत्तियां नष्ट हो जाती हैं। जिस प्रकार गारुड़ी मन्त्र से सर्प द्वारा काटे हुए व्यक्ति का विष उतर जाता है, उसी प्रकार श्री नमस्कार महामन्त्र सर्व पाप रूपी विष को नाश करने वाला है।

वास्तव में यह महामन्त्र कामकुम्भ चिन्तामणि रत्न और

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कल्प तरु से भी बढ़ कर है। कामघट, देवमणि, कल्पतरु एक ही जन्म में सुख के दाता हैं, परन्तु नमस्कार महामंत्र तो श्रेष्ठ स्वर्ग व मोक्ष को प्राप्ति करवाने वाला है।

सत्तर कोड़ा कोड़ी सागरोपम स्थिति वाला मोहनीय कर्म है। उसकी स्थिति केवल एक कोड़ा कोड़ी की ही शेष रहे तो जीव को नमस्कार महामन्त्र की प्राप्ति हो सकती है। यदि कोई परमतत्व व परम पद का कारण हो तो नवकार मन्त्र उसमें प्रथम है। परम योगी भी नमस्कार मन्त्र का ध्यान धरते हैं।

'ॐ ह्री अर्हं'' यह बीज मन्त्र अपूर्व प्रभावशाली है। सर्व मन्त्रों का मूल यह नवकार मन्त्र है। जो जीव विधि पूर्वक पन्द्रह लाख जिनेश्वर भगवान को नमस्कार करता है और विधि पूर्वक पूजन करता है वह भव्यात्मा तीर्थंकर नाम कर्म को बांधता है। इसमें कोई भी संदेह नहीं। जो आठ करोड़, आठ हजार, आठ सौ और आठ नवकार गिने वह तीसरे भव में सिद्ध पद को प्राप्त होता है। हाथों के आवर्त से श्री नमस्कार मन्त्र का जाप करने वाले को पिशाच डाकिनी, वेताल, राक्षस आदि का भय नहीं रहता। श्री नवकार के प्रभाव से सब पाप नष्ट हो जाते हैं।

सिद्ध किया हुआ नमस्कार मंत्र जल और अग्नि को भी शांत कर देता है। शत्रु, राजा, चोर प्लेग आदि के भयंकर उपसंग भी इस के ध्यान द्वारा शान्त हो जाते हैं। जंगल में, गिरि गुफा में और समुद्र में भी ध्याया हुआ नमस्कार मंत्र डर को दूर करता है। भव्य जीव द्वारा स्मरण किया हुआ नमस्कार सैंकड़ों जीवों का उसी प्रकार रक्षण करता है जिस प्रकार माता पुत्र का रक्षण करती है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सर्प, ज्वर व्याधि, चोर, सिंह, हस्ति, संग्राम आदि के भय इसके स्मरण मात्र से दूर हो जाते हैं। जिस भाग्यशाली के हृदय रुपी गुफा में केसरीसिंह रूपी नमस्कार रहा हुआ है, वह पुरुष आठ कर्म रूपी दुर्भेद गांठ का भी कुछ समय मे नाश कर देता है।

नवकार के एक पद को गिनने से सात सागरोपम के पाप नाश हो जाते हैं। जो मोक्ष चले गये हैं, वर्तमान में जो जा रहे हैं और भविष्य में कर्मों से मुक्त होकर जो मोक्ष जायेंगे, उन सब जिनेश्वरों का इस नमस्कार द्वारा वंदन हो जाता है। श्री जिन शासन का सार, चौदह पूर्व का उद्धार ऐसा श्री नमस्कार मंत्र जिसके चित्त में हो उसका संसार क्या बिगाड़ सकता है। यह महामन्त्र अचिंत्य फल को देने वाला है।"

यह सुन कर मित्र गुणचन्द्र सहित श्रीचन्द्र ने सद्भाव पूर्वक सम्यक्त्व मूल श्रावक धर्म को ग्रहण किया और श्री जिनेश्वर भाषित दयामूल हितकारी जैन धर्म को प्राप्त करके श्रीचन्द्र अमृत के स्वाद से भी अधिक तृप्ति को प्राप्त गुरुदेव की स्तुति करते हुए श्रीचन्द्र ने कहा कि, आप धर्मरुपी नेत्र को प्रकाशित करने वाले साक्षात् जंगम तीर्थ ही हैं। आज आप श्री के दर्शन करके हमने अपने जीवन को सफल किया। आपश्री परम पूजनीय हैं। हितकारी धर्म तत्व को गुरु बिना बुद्धिमान भी नहीं जान सकता। रससिद्धि, कला, विद्या, धर्मतत्व यह गुरु बिना कोई प्राप्त नहीं कर सकता। माता पिता आदि तो सर्व जन्म २ में मिल सकते हैं। परन्तु धर्म को प्राप्ति कराने वाले सद्गुरु की

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

प्राप्ति पुण्य से कदाचित ही होती है। आप गुरु श्री के दर्शन से मैं अपना अहोभाग्य मानता हूं। मैं अपने आप को पुण्यशाली समझता हूँ। सच वास्तव में आप श्री ने मुझ पर बहुत उपकार किया है। मैं आपको बार २ नमस्कार करता हूँ।"

गुरु की इस प्रकार स्तुति करके और आत्मा की अनुमोदना करके 'श्रीचन्द्र' गुरु के गम्भीर उपदेश को विचारने लगे और परमेष्ठी महामन्त्र का नित्य जाप करने का नियम लेकर, मित्र सहित पूर्व की भांति कौतुक देखते २ एक महा अटवी में पहुँचे।

मध्याह्न के समय अत्यन्त गर्मी से तृषातुर होने के कारण मित्र ने रथ से उतर कर चारों दिशाओं में जल की खोज की। परन्तु कहीं भी जल दिखाई नहीं दिया। "अब क्या करेंगे ? भावि क्या होगा" इस तरह दोनों चिन्ता में पड़ गये। स्वामी के मुख को मुरझाया हुआ देख कर गुणचन्द्र ने सारथी से कहा कि 'हे मित्र ! इस ऊंचे वृक्ष के शिखर पर चढ़ कर देखो कि कहीं जल नजर आ रहा है ?" सारथी ने वृक्ष पर चढ़ कर देखा कि दक्षिण दिशा में बगुले सारस आदि पक्षी उड़ रहे हैं, इससे वहां सरोवर होगा ऐसा अनुमान लगा कर नीचे उतर कर रथ को उस दिशा में ले जाने के लिये अनुमति मांगी।

तत्क्षण रथ पर आरुढ़ हो कर दोनों मित्र उस तरफ गये वहां एक छोटा सरोवर आया। उसके किनारे आम्र वन था। मित्र ने सरोवर से पानी लाकर 'श्रीचन्द्र' को दिया। उसका पान करके श्रीचन्द्र सरोवर देखने पहुँचे। श्रीचन्द्र मित्र के साथ सरोवर की पाल पर बैठे

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

और वहां से मनोहर और स्फटिक के समान सरोवर को देख कर आश्चर्य चकित हो गये।

सरोवर की पाल से आगे जाते हुए एक धोबी को भव्य वस्त्र धोते हुए देखा। उसमें एक छोटी साड़ी को देखकर बुद्धिशाली श्रीचन्द्र ने कहा कि, 'हे गुणचन्द्र ! तुमने यहां कोई कौतुक देखा है। गुणचन्द्र ने पूछा कि 'यहां क्या आश्चर्य है ?"

श्रीचन्द्र ने कहा कि, 'हे मित्र ! यह श्रेष्ठ साड़ी किसी पद्मिनी की जान पड़ती है। इस श्रेष्ठी साड़ी की गंध से उस तरफ भंवरों की श्रेणी भ्रमण कर रही है। पद्मिनी का शरीर प्रस्वेद पुष्पों की सुगंध से भी अधिक सुगन्धित होता है। पद्मिनी पद्म के गंध वाली होती है। हस्तिनी स्त्री मधु के गंध वाली होती है। चित्रिणी विचित्र सुगन्ध वाली तथा शखिनी मत्स्य के गंध वाली होती है।"

आश्चर्य पाकर गुणचन्द्र ने धोबी से पूछा कि, हे मित्र ! यह कौनसा स्थान है। यह भव्य वस्त्र किसके हैं ?" धोबी ने कहा कि "हे सद्बुद्धि ! तुम परदेशी जान पड़ते हो सुनो ! यह दीपशिखा नगरी है। दीपचन्द्र राजा का मैं नल नामक धोबी हूं। यह पद्म सरोवर है। ये वस्त्र प्रदीपवती रानी के और राजा के भाई की पुत्री और उसकी पुत्री की साड़ियां हैं।

गुणचन्द्र ने फिर से पूछा कि, "राजा के भाई की पुत्री कौन है ?" धोबी ने कहा कि, 'भाई की पुत्री चन्द्रवती है। वह शुभगांग

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

राजा की प्रिया है। उनके वामांग पुत्र और पुत्रियां हैं। बड़ी पुत्री शशिकला और छोटी पुत्री चन्द्रकला है। शशिकला का विवाह सिंहपुर के राजा महामल्ल के साथ हुआ है और छोटी चन्द्रकला वह पद्मिनी है अति रुप, लावण्य से शोभित है। उसे उसके मामा आदर पूर्वक विवाह के लिए यहां लाये हैं। चन्द्रकला के जन्म के समय "यह पद्मिनी राजा की रानी होगी ऐसी हर्ष वाली मुनि की वाणी हुई हैं। नैमित्तिक ने भी कहा है कि, 'सूर्यवती के पुत्र की पटरानी होगी। परन्तु यह वाणी अभी तक फलीभूत नहीं हुई है। प्रतापसिंह राजा की राणी सूर्यवती इस नगर के राजा की पुत्री है। शुभगांग राजा को कुलदेवी ने कहा कि, 'पद्मिनी का पाणि ग्रहण सत्वर उसके मामा के घर तूं कर।"

इसलिये पद्मिनी, माता, भाई आदि परिवार के साथ ५००-५०० पांच वर्णं के अश्वों में युक्त दीपशिखा नगरी में आयी है। और भी सामग्री माता पिता ने पद्मिनी के विवाह के लिए तैयार करवायी है।

यह सुन कर 'श्रीचन्द्र मित्र सहित दीपशिखा नगरी का निरीक्षण करने की इच्छा से युक्त रथ को वहां रख कर आगे बढ़े।

सरवर के पास एक तम्बु देख कर श्रीचन्द्र ने एक सेवक से पूछा कि "हे मित्र ! यहां सैन्य का पड़ाव क्यों डाला गया है" सेवक ने कहा कि "हे मित्र ! तिलक राजा के आदेश से, वीर मन्त्री कुशस्थल की तरफ प्रयाण करते हुए यहां रुके हैं। नायकों में अग्रसर वीणारव कें साथ राजसभा में जा रहे हैं।"

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

आगे चलते हुए सुन्दर उद्यान को देख कर उसकी छटा को देखने के लिए श्रीचन्द्र ने मित्र सहित उसमें प्रवेश किया। इतने में उद्यान पालक ने, "यह राजपुत्र है ऐसा विचार कर दो आम्रफल भेंट किये। उन्हें स्वीकार कर उद्यान पालक का सत्कार करके उद्यान को देखने के लिए आगे बढ़े।

पवन से झूमते हुए वृक्ष इस प्रकार दिखाई दे रहे थे मानों कि वे उन्हें हाथों से इशारा करके बुला रहे हों। वहां श्रीचन्द्र ने चम्पक आदि वृक्षों को देखा वहीं उसी के पास एक मनोहर रुपवती कन्या देखी। जिस के हाथों को कमल समझ, गर्दन को महुआ के पुष्प समझ कर नेत्रों में नीलकमल की शंका से, अधर और हाथों को वापोरिया पुष्प समझ कर, केश और वेणी को अपनी ही जाति के जैसे काले वर्ण की स्पृद्धा से भवरे चारों तरफ मंडरा रहे थे।

उसे देख कर लज्जा से श्रीचन्द्र मित्र सहित तत्क्षण उद्यान से बाहर निकल गये। श्री 'श्रीचन्द्र' के रुप से मोहित होकर, पद्मिनी ने भी विचार किया कि, मेरे पूर्व भव के पति यही प्रतीत होते हैं। कारण कि स्त्री को अपने पति को देखते ही जो चेष्टाएं होनी चाहिये वे सब मेरे अंग में हो रहा हैं।

चतुर पद्मिनी ने सखी से कहा कि, "मेरे चित्त को हरने वाला वह पुरुष कौन है? जो सर्व लक्षणों से युक्त है। रुप और लावण्य का निधि है। क्या नाम है? इनका पिता कौन होगा? क्या कुल होगा?

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कहां रहते हैं ? जल्दी जाकर इनके मित्र से पूछ !"

उसी समय सखी ने जाकर नमस्कार कर के पूछा कि, 'हे स्वामी, हे कृपानाथ मेरी नम्र विनति स्वीकार करो।

मेरी स्वामिनी चन्द्रकला राजकन्या रुपलक्ष्मी की सुरांगना है। मैं उसकी प्रेम पात्र चतुरा सखी हूं। मेरी स्वामिनी ने आप दोनों के नाम आदि पूछवाये है। अतः कृपा करके आपश्री मुझे बताएं।

हर्ष से गुणचन्द्र कहने ही लगा कि श्रीचन्द्र ने बलात् दूर ले जाकर उसे कहने से रोक दिया। और कहने लगा कि "नाम कुल आदि पूछने का क्या प्रयोजन है ?" ऐसा कह कर श्रीचन्द्र मित्र के साथ तालाब दुकान आदि देखते २ नगर में प्रवेश कर गये।

चतुरा ने आकर वहां जैसा बनाव बना था उसको कह सुनाया। चन्द्रकला ने कहा कि, हे सखी। ये ही मेरे पति हों। इसलिए अब तुझे इस विषय में चारों तरफ से प्रयत्न करना पडेगा। वे किसी राजा मन्त्री या श्रेष्ठी के पुत्र होंगे ! किसी के भी हों इस विकल्प से क्या ? जिसे मैंने मन से वर लिया वही मेरे पति हैं ? परन्तु नाम कुल आदि मैं नहीं जान सकी। वे नगर में कहां गये हैं ?

यह सर्व हकीकत माता को बताने के लिये कोविदा सखी को तुरन्त भेजा। राजकुमारी भी राज वाहन में बैठ कर श्रीचन्द्र के पीछे २ शहर में गई।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

नगर के मध्य भाग में जिनेश्वर देवाधि देव के मन्दिर में विधि पूर्वक वन्दन करने की भावना से श्रीचन्द्र ने मित्र सहित वहां प्रवेश कर प्रत्येक प्रभुजी को वन्दन करके भाव पूर्वक स्तुति की बाद में बाहर रंगमंडप में आये। वहां सिंह, तोते, हाथी, कमल पुतलियों आदि के सुन्दर चित्र थे।

निरीक्षण करते और मित्र को दिखाते हुए द्वार के पास आये तब गुणचन्द्र ने विनति की कि, 'हे स्वामिन् यहां थोड़ी देर विश्राम करें, मित्र की प्रेरणा से श्रीचन्द्र वहां बैठे। उसी समय पद्मिनी ने मन्दिर में प्रवेश किया।

पद्मिनी को देख कर श्रीचन्द्र सोचने लगे कि, "कितना सुन्दर कमल के समान मुख है, कितने सुन्दर नयन हैं, होठ शरीर और प्रकृति आदि कितनी सुन्दर हैं।"

पद्मिनी का अद्भुत रुप देख कर फिर हृदय में सोचने लगे कि, मैंने अनेकों स्त्रियां देखी परन्तु इस पद्मिनी जैसी रुपवती नहीं देखी। श्रीचन्द्र को पद्मिनी को स्नेह युक्त दृष्टि से देखते हुए देख कर गुणचन्द्र को अति हर्ष हुआ। वह मन में प्रार्थना करने लगा कि इन दोनों का मनोरथ पूर्ण हो।

अपने मित्र गुणचन्द्र को श्रीचन्द्र ने कहा कि 'इस संसार में मन को जीतना बड़ा ही कठिन है। दृष्टि के समक्ष जिनेश्वर देव के होने पर भी मूर्ख मैंने विलास की पटरानी के कटाक्ष, छाती, मुख आदि में ध्यान किया।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कहा है कि, जब तक सुन्दर स्त्री के कमल नयन कटाक्षों का प्रहार नहीं होता तब तक ही मनुष्य का मन दृढ़ रह सकता है। और वह अपनी इन्द्रियों को वशीभूत कर सकता है। उसके लज्जा, धैर्य, विनय आदि गुण स्थिर रह सकते हैं।

"यहां स्त्रियां आती हैं। इसलिये यहां बैठना योग्य नहीं है" ऐसा कह कर श्रीचन्द्र जिनेश्वर देव के पास जाकर स्तुति करने लगे। समीप में बैठी हुई पद्मिनी ने श्री अरिहंत भगवान् की स्तुति करते श्रीचन्द्र के रुप को एकाग्र दृष्टि से देखा।

सुन्दर शीलवान गुणचन्द्र ने भी सिंहावलोकन दृष्टि से पद्मिनी को देखा। राजकन्या ने भृकुटी संज्ञा से स्वामी का नाम नगर आदि पूछा। बुद्धिमान गुणचन्द्र ने हस्त संज्ञा से अपने स्वामी का नाम आदि बताया। पद्मिनी नें भी अपने भाव बताये और हस्त संज्ञा से कुछ विलम्ब करने के लिए कहा।

पद्मिनी ने माता को "श्रीचन्द्र नाम के श्रेष्ठी पुत्र कुशस्थल से आये हैं" इस प्रकार की जानकारी दी। श्रीचन्द्र दर्शन करके तत्काल बाहर आये। कुछ ठहरने के हेतु गुणचन्द्र ने कहा चलो हम राजा का अद्‌भुत महल देख कर आवें। परन्तु अपने मन के भाव छुपा कर "देर हो रही है इसलिये अब हमें जल्दी चलना चाहिये" ऐसा कह कर श्रीचंन्द्र रथ की तरफ रवाना हुए।

गुणचन्द्र ने चारों ओर दृष्टि डाली परन्तु कहीं भी पद्मिनी या

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उसकी दासी दिखाई नहीं दीं। विलम्ब का कारण भी समझ में नहीं आया। इतने में वाजिन्त्रों के मधुर स्वर को सुन कर हर्षित होकर गुणचन्द्र ने कहा कि, "हे स्वामी! इस मधुर संगीत को सुनना चाहिये।"

मित्र के आग्रह से श्रीचन्द्र संगीत वाले स्थान पर आये। इतने में तो श्री 'श्रीचन्द्र' के नाम का श्रीराग में ध्रुपद में गाते हुए संगीत नृत्य आदि देखा और सुना और विचारने लगे कि श्रीचन्द्र तो बहुत से हैं यह कौनसे श्रीचन्द्र हैं। इतने में तो गायक ने कहा 'लक्ष्मीदत्त' श्रेष्ठी के पुत्र 'श्रीचन्द्र' जय को प्राप्त हो।

यह सुनकर श्रीचन्द्र ने कहा कि, 'हे मित्र! यह किसका घर है? यहां कौन सज्जन रहते हैं? यह जानना चाहिये।' घर के द्वार पर वरदत्त श्रेष्ठी को देख कर श्रीचन्द्र ने कहा कि "यह तो वरदत्त श्रेष्ठी जो कि पिताजी के मित्र हैं उनका घर है। ये पिता के पास व्यापार के काम से आते हैं।" यदि वे मुझे देख लेंगे तो अवश्य रोकेंगे। इसलिये चलो आगे चलें।

वहां के द्वारपाल ने यह सर्व वृतांत सुनकर वरदत्त श्रेष्ठी से कह दिया। वरदत्त श्रेष्ठी ने सोचा कि 'यह श्रेष्ठी पुत्र कौन होगा? लक्ष्मीदत्त श्रेष्ठी का पुत्र अचानक कहां से आ गया है? वह श्रीचन्द्र तो हजारों सैनिकों अश्वों आदि का स्वामी है। अतः यह कौन होगा?" यह जानने के लिये वरदत्त श्रेष्ठी तत्काल पीछे २ गये।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

श्रीचन्द्र को मिलकर श्रेष्ठी ने कहा कि, 'आज तो मेघ बिना ही वृष्टि हुई। मेरा जन्म सफल हुआ। आज यह भूमि भाग्यवती हुई। जो कि आपश्री का मेरे यहां आगमन हुआ! धन्य भाग्य! धन्य घड़ी! कृपा करके मेरे घर पधारो। आज बालक को पाठशाला में भेजने के कारण उत्सव हो रहा है।"

वरदत्त श्रेष्ठी के आग्रह से श्रीचन्द्र को वहां जाना ही पड़ा। इस प्रकार से विलम्ब होने पर हर्षित होकर बुद्धिशाली गुणचन्द्र ने कहा कि, 'नगर के बाहर हमारा रथ है उसे मंगवाना है।" श्रेष्ठी ने उसे मंगवा लिया। श्रेष्ठी के आंगन में श्रीचन्द्र ऐसे शोभने लगे जैसे आकाश में सूर्य शोभता है अथवा तारों में चन्द्रमा शोभायमान होता है। श्रेष्ठी की पत्नी ने अक्षत से वधामणी की विवेकी श्री 'श्रीचन्द्र' सर्व व्यक्तियों को प्रणाम करके उनके समक्ष बैठ गये।

दीपचन्द राजा मन्त्रियों सामन्तों व प्रजा जनों के साथ राज-सभा में बैठे थे। उस समय गंधर्व गायक ने वीणा बांसुरी आदि बजाने वाले कलाकारों के साथ, मनोहर सुधा समान नव रसों से युक्त मधुर भाषा से शोभित और विविध रागादि द्वारा श्रवण इन्द्रियों को आनन्द-दायक श्री 'श्रीचन्द्र' का चरित्र रास हर्ष उल्लास से गाना आरम्भ किया, उसमें सर्वजन आनन्द मग्न हो गये। परदे के पीछे चंद्रवती व प्रदीप-वती राणी आदि भी यह सुन रही थी। इतने में कोविदा सखी ने आकर पद्मिनी चन्द्रकला के उद्यान में जाने आदि की सारी हकीकत कह सुनायी।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

रानी ने कहा कि, 'तेजस्वी और रूपवान् 'श्रीचन्द्र' पद्मिनी के लिए योग्य तो है परन्तु वह कोई श्रेष्ठी पुत्र है। उसके कुल की वह जानकारी न होने से उसे कन्या कैसे दे सकते हैं ? फिर भी मैं दीपचन्द राजा को इस बात की जानकारी देती हूं।"

चंद्रावती ने सर्व हकीकत दीपचन्द राजा से कही। दीपचन्द राजा ने हंस कर कहा, 'हे बुद्धिशालिनी! यह तुम क्या कह रही हो ? यह कोई बालक के धूल का घर तो नहीं है। पद्मिनी कन्या वणिक के साथ किस तरह व्याही जा सकती है ? इसमें अपनी क्या इज्जत रहेगी शुभगांग राजा के समक्ष यह बात किस प्रकार कही जावे ? वैसे तो चन्द्रकला भी दक्ष है। पहले तो वह सूर्यवती के पुत्र के साथ विवाह के लिए उत्साह वाली थी, परन्तु उसका वह मनोरथ तो सब हृदय में ही रह गये। मेरे विचार में तो चन्द्रकला स्वयंवर द्वारा जिस राजा को पसन्द करे उसके साथ उसका विवाह कर दिया जाय।"

उधर चन्द्रकला ने चैत्य के समीप खडी अपनी सखी को कहा कि, 'हे सखी! तुम शीघ्र जाओ और आर्य पुत्र कहां है, इसकी जानकारी करो।" मुझ आदेशानुसार सखी ने दोनों मार्गों द्वारा किल्ले के द्वार तक अच्छी तरह देखा परन्तु उसे कहीं भी "श्रीचन्द्र" नजर नहीं आये। तब वह वापिस आकर कहने लगी कि, "सर्वत्र तलाश करने पर भी श्री 'श्रीचन्द्र' कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं हुए।"

वियोग से दुःखी चन्द्रकला ने दीर्घ निश्वास लेते हुए कहा कि,

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सर्वथा योग्य हो यह मैं जानती हूँ। अतः हमारे सामने 'मैं वणिक हूँ' इस प्रकार क्यों बोलते हो ? यदि तुम वणिक हो तो भी यह तुम्हारे घर का कार्य करेगी, ऐसा जानकर हम आपको इसे समर्पित कर रहे हैं।"

प्रदीपवती ने श्रीचन्द्र से कहा कि, नैमित्तिक ने पहले कहा था कि, "इस पद्मिनी का दर्शन स्पर्श करने वाला बहुत राज कन्याओं से विवाह करेगा और राज्य को प्राप्त करेगा। इसमें संशय नहीं है। आपका नाम, कुल नगर आदि नहीं जानते हुए केवल आपके दर्शन मात्र से जिसकी बुद्धि पवित्र हुई है उसने आपको मन से वर लिया है। इसमें पूर्व भव का स्नेह निमित्त मात्र है। ऐसा आप समझें। आमुं बहानी इस कन्या को छोड़ना उचित नहीं। श्री जिनेश्वर देव की नित्य पूजा करने वाली और सिद्धान्त में कहे हुए तत्त्वों की ज्ञाता इस पद्मिनी का हृदय सम्यक्त्व से पवित्र है। वह रात दिन परमेष्ठी महामन्त्र का ध्यान धरती है। ऐसी सुशीला सती वास्तव में जिसे मन से वर चुकी है, उसे इन्द्र भी अन्यथा करने में समर्थ नहीं हैं। अतः इसे स्वीकार कर आप सब को प्रसन्न करें।"

श्री 'श्रीचन्द्र' पद्मिनी के प्रति स्नेह के कारण, महाराणी के आग्रह भरे शब्दों का उत्तर देने में असमर्थ हो गये। प्रदीपवती रानी ने इसे कुमार की सम्मति मान कर अति हर्ष से चन्द्रकला को बुला कर कहा "हे पद्मिनी ! इष्ट वर श्री 'श्रीचन्द्र' के गले में वरमाला पहनाओ।"

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

आनन्द पूर्वक चन्द्रकला श्रीचन्द्र के मुख रूपी चन्द्र को निरखती हुई, तत्क्षण उसके गले में वरमाला पहना कर और अपनी दृष्टि श्रीचन्द्र पर स्थापित कर लज्जा से माता के पीछे आकर खड़ी हो गई। सर्वत्र अति आनन्द से विवाह उत्सव मनाया गया।

कुछ विचार कर श्रीचन्द्र बहाना निकाल कर नीचे गये। गुणचन्द्र ने रानी से कहा कि रथारुढ़ होकर श्रीचन्द्र अभी कुशस्थल को प्रस्थान की सोच रहे हैं।

यह सुनकर तुरन्त ही वामांग चतुरा आदि सखियां श्रीचन्द्र को रथ से वापिस लेकर आयीं। चन्द्रवती राणी ने पुत्री से कहा कि "कुछ प्रश्न पूछो जिससे विद्याभ्यास आदि की जानकारी हो।"

चन्द्रकला ने चतुरा सखी द्वारा "पान का बीड़ा क्या है?" यह पुछवाया। श्रीचन्द्र ने उत्तर में कहा कि "सत्य वचन रुपी पान का बीड़ा है। सम्यक्त्व रुपी सुपारी है, स्वाध्याय रूपी कपूर है, शुभ तत्व रुपी मसाला है और वह शिवसुख का कारण भूत है।"

फिर स्नान के गुणों को पूछा, उत्तर में श्रीचन्द्र ने कहा, "स्नान मन को प्रसन्न करने वाला है, दुःस्वप्न का नाश करने वाला, सौभाग्य का गृह, मल को दूर करने वाला, मस्तक को सुखकारी, काम अग्नि को जागृत करने वाला, स्त्रीओं के काम के अस्त्र रुप श्रम को हरने वाला है।"

पान का बीड़ा देकर श्रीचन्द्र ने पूछा कि "हे चतुरा! पान

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

के कितने गुण हैं ?" विकसित रोमांच वाली चन्द्रकला ने सखी द्वारा पान का बीड़ा ग्रहण कर मधुर स्वर से बोली कि "पान कड़वा, तीखा, गरम, मधुर और कषायरस से युक्त, वायु तथा कृमि को हरने वाला, मुख के अलंकार रुप, मुख विशुद्धि करने वाला, काम अग्नि प्रदीप्त करने वाले ऐसे पान के बीड़े की आपश्री ने प्रसादी दी है।

श्रीचन्द्र कहने लगे कि इसके आंतरिक, गुणों को कहो, तब वह बोली प्रिय वचन रुपी पान, प्रेम रुपी सुपारी सद्विवेक रुपी मसाला है। संतोष रुपी कपूर है। ऐसा पान का बीड़ा आपने मुझे दिया है।'

पद्मिनी ने खिचड़ी के आंतरिक गुणों को पूछा, श्रीचन्द्र ने कहा कि "गुण रुपी अक्षत, सद्मैत्री रुपी दाल है, सम्यकत्व रुपी संपूर्ण घृत से युक्त खीचड़ी का सेवन करना चाहिये।" श्रीचन्द्र ने कहा कि लापसी का वर्णन करो।

चन्द्रकला ने कहा कि, 'सुक्ष्म गेहूं का दलिया, घी, गुड, श्रीफल के टुकड़े, दाख, खजूर, सूंठ, काली मिर्च से युक्त, सुन्दर तांबे की कड़ाई में मन्द अग्नि पर सिकी हुई, प्रचुर घृत से युक्त, उत्तम हेमन्त ऋतु में ऐसी लापसी बहुत ही गुणकारी होती है।

चन्द्रकला द्वारा भृकुटी संज्ञा करने पर कोविदा सखी ने लापसी के आंतरिक स्वरुप को पूछा। श्रीचन्द्र ने कहा कि, "चित्त की भक्ति से शोभित ऐसी, तीन प्रकार की भक्ति रुपी लापसी, भोजन करते समय हमेशा शोभा की वृद्धि करती है। पद्मिनी ने बड़े का स्वरुप पूछा।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

श्रीचन्द्र ने कहा कि "हींग, मिर्च, जीरा और गंध से युक्त, जो बड़ा दांत के बीच में रखा हुआ तुरन्त ही भुक २ शब्द की आवाज करता हुआ, प्रेमाल पत्नी द्वारा प्रेम पूर्वक दिया हुआ सुन्दर बड़ा भाग्यशाली पुरषों के मुख में प्रवेश करता है।

इस प्रकार श्रीचन्द्र और चन्द्रकला परस्पर बातचीत कर रहे थे। तब चंद्रकला को वामांग व चतुरा ने विनंति की कि आप श्रीचन्द्र के नाम का वर्णन करें। अति आग्रह करने पर पद्मिनी ने कहा कि, 'लक्ष्मी के क्रीड़ा करने का सरोवर, अट्टहास्य का समूह, दिशा रूपी ललना के मुख दर्शन का काच, रात्रि रुपी श्यामलता का पुष्प, आकाश रुपी समुद्र का कमल, तारा रुपी कामधेनु का समूह, रति का गृह, कामदेव रुपी सुधा की बावड़ी जो लक्ष्मी से युक्त है, ऐसे श्रीचन्द्र हमेशा विजय को प्राप्त हों।"

सभी ने आग्रह पूर्वक श्री श्रीचन्द्र से कहा कि 'हे कुल में चन्द्रमा के समान ! चन्द्रकला के नाम का आप श्री भी वर्णन करें।" श्रीचन्द्र ने कहा कि "कामरुपी ब्राह्मण का ॐ कार तारा रुपी मोतियों की सीप, अंधकार रुपी हस्तिओं का अंकुश, शृंगार रुपी ताले की चाबी विरहणी के मान को काटने के लिए कैंची और चन्द्र सम्बन्धी कला समान, ऐसी यह चन्द्रकला सुशोभित हो रही है।'

श्रीचन्द्र के तत्वज्ञान, कला और विद्वत्ता से आश्चर्य को प्राप्त हुए सब लोगों ने हंसते २ कहा कि, चन्द्र और चद्रिका का वास्तव में उत्तम योग मिला है। स्तुति करते २ प्रातःकाल सब 'श्रीचन्द्र को राजमहल में ले जाने को तैयार हुए तब श्रेष्ठी ने कहा कि, "इस प्रकार

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

"अभी तक माता आदि भी नहीं आयीं। अब मैं निर्भागी क्या करूंगी ?"

इतने में चतुरा ने आकर माता तथा राजा ने जो कुछ कहा था उसकी सर्व हकीकत चन्द्रकला को कह सुनायी। इससे दुःखी होकर पद्मिनी चन्द्रकला मूर्छित हो गई। शीत उपचार करने से वह सचेत हुई। प्रियवंदा द्वारा चन्द्रकला के स्वरुप को जानकर तत्क्षण माता वहां आयी। पद्मिनी की ऐसी स्थिति देख कर, उसे अपनी गोदी में लेकर कहने लगी:—

'हे वत्से ! तुझे इतना दुःख क्यों हुआ है ? तू अपने चित्त को शान्त कर सर्व शुभ ही होगा। तू तत्व ज्ञान की ज्ञाता और धीर है अतः इस प्रकार दुःख को धारण करना उचित नहीं है। तेरे विवाह के लिए स्वयंवर रचने की हमारी इच्छा है।"

पद्मिनी ने कहा कि "हे माता ! मैं तेरी कुक्षि में उत्पन्न हुई हूं। मैंने मन से जिसे वर लिया उसे छोड़ कर मैं दूसरे किसी भी पुरुष के साथ विवाह नहीं करुंगी। स्वयंवर में अब क्या सार ? श्रीचन्द्र ही मेरे पति होंगे। अन्यथा मुझे अग्नि की शरण लेनी पड़ेगी" कन्या का यह निश्चय जान कर चन्द्रवती ने कहा कि "हे सैनिको ! दीपचन्द्र राजा से कहो कि श्रीचन्द्र की तलाश करावें।"

चन्द्रकला की सर्व वार्ता चन्द्रवती ने दीपचन्द्र राजा से कही। राजा तत्क्षण सभा विसर्जित करके, वीणारव गायक और अमात्य के

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

साथ जिनेश्वर देव के मन्दिर में आये।

इतने में चन्द्रकला की दाहिनी आंख फड़कने लगी। उसी समय लोगों ने 'श्रीचन्द्र' के समाचार राजा से आकर कहे। दीपचन्द्र राजा वरदत्त श्रेष्ठी के घर आये। श्रीचन्द्र का देदीप्यमान रुप लावण्य और कान्ति आदि देख कर राजा बहुत आश्चर्य चकित हुए।

श्रेष्ठी द्वारा स्थापित सिंहासन पर दीपचन्द्र राजा विराजमान हुए। श्रीचन्द्र के नमस्कार करते ही राजा दीपचन्द्र ने उसे अपनी गोद में बिठा कर दोहते के समान हर्ष का अनुभव किया। वरदत्त श्रेष्ठी ने श्रीचन्द्र का सब वृतान्त राजा से निवेदन किया। इतने में वीणारव ने श्री 'श्रीचन्द्र' को देख कर कहा, "हे राजन्! जिन 'श्रीचन्द्र' का अभी मैंने रास गाया था वे ये ही गुणसागर हैं। राधावेध को करने वाले, तिलक जगी के पति, याचकों की आशा पूर्ण करने वाले, कल्पवृक्ष के समान श्रीचन्द्र जय को प्राप्त हों। सर्व राजाओं के गर्व को हरने वाले अद्वितीय वीर की जय हो।" इतने में तो प्रदीपवती राणी आदि सब राज परिवार वहां आ पहुँचा। सब लोग श्रीचन्द्र के दर्शन कर अति प्रसन्न हुए।

वरदत्त श्रेष्ठी ने श्री 'श्रीचन्द्र' को कहा कि "हे गुण सागर! पद्मिनी के साथ तुम्हारा पाणिग्रहण करना सर्वथा योग्य है। 'दूध और शक्कर' के समान आपका पद्मिनी से संयोग अद्भूत होगा। इसलिए हे गुणशील! आप सब की आशा को पूर्ण करो।" श्रीचन्द्र ने कहा कि, "हे पूज्य! आपका कहना ठीक है परन्तु यह कार्य मैं अभी नहीं कर

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सकता हूँ क्योंकि मैं क्रीड़ा का आदेश लेकर इस देश में आया हूँ। माता पिता को पूछे बिना मैं विवाह कर लूं तो यह मेरी अशिष्टता मानी जायगी। वहां जाकर मैं उन्हें क्या कहूँगा?"

चन्द्रवती राणी ने कहा कि "श्रीचन्द्र जो कुछ कह रहा है यह सर्वथा उचित है परन्तु पहले भी राजा, मन्त्री, श्रेष्ठी पुत्र आदि अनेक लोगों ने अपने भाग्य की परीक्षा के लिए पृथ्वी पर स्थान २ पर भ्रमण किया था और उन्होंने पिता के आदेश बिना क्या राज्यादि को ग्रहण नहीं किया? उसी प्रकार उन्होंने क्या पाणिग्रहण आदि भी नहीं किया? वस्तु की प्राप्ति में, भाग्य ही योग्य सम्पदा होती है। पिता अपनी स्थिति में रहता है और पुत्र राज्य लक्ष्मी भोगता है। पूर्व के पुण्य और पाप कर्म सबके अलग होते हैं इसलिए हे श्रीचन्द्र! आप शास्त्र के जानकार हैं अतः विवाह निषेध न करिये।"

श्रीचन्द्र ने विचार किया कि माता तुल्य इस रानी को मैं क्या उत्तर दूं? इतने में वामांग ने साहस से कहा कि, 'लग्न करने में आपको क्या कठिनाई है? हमें तो कोई कहता ही नहीं, हम तो तुरन्त ही मान लेवें। कौन गृहस्थ, लग्न, धन, राज्य आदि को प्राप्त करने की इच्छा नहीं करता?"

वरदत्त श्रेष्ठी ने कहा कि, "संसार इसी कारण से तो विचित्र कहलाता है। जो लघुकर्मी होता है, उसमें बहुत धैर्य होता है। अतः अति आग्रह से ही श्रीचन्द्र विवाह करेंगे। विवेक यह जीव का जीवत्व है। मान यह बड़ा धन है। विवेक रूपी रत्न तो श्रीचन्द्र के हृदय का

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अलंकार है। हे पुत्र! तुम दीपचन्द्र राजा के वचनों को हृदय में धारण करो।"

श्रीचन्द्र ने कहा कि, "वणिक के घर पर स्त्री को सभी कार्य करने पड़ते हैं जिससे वणिक के घर में वणिक कन्या ही योग्य होती है। दैवयोग से राजपुत्री वणिक के घर आये तो यह कमल के पत्तों को कूटने के समान होगा। कहां वणिक गृह की कार्य लीला, कहां राज महल की आनन्द लीला? आपकी बातें मेरे चित्त में बैठती नहीं हैं। अभी तो आप सब एक हो कर कह रहे हैं। परन्तु विवाह के पश्चात् पत्थर के नीचे अंगुली के समान सहन तो उसे ही करना पडेगा, वह किस प्रकार सहन करेगी? आप सब मिलकर विचार करें कि वणिक कुल में कन्या किस प्रकार सुखी रह सकेगी? राज कन्या वणिक कुल में न जाय ऐसा विचार कर पहले भी एक राजकन्या के साथ मैंने विवाह नहीं किया। फिर दूसरी को किस प्रकार स्वीकार करूं? यदि राज कन्या मेरे साथ विवाह करने योग्य होती तो विधाता मेरा जन्म राजकुल में क्यों नहीं करते? विधाता ने मेरा जन्म वणिक कुल में किसलिए किया?" यह वचन सुनकर सब चुप हो गये।

श्रीचन्द्र के गुणों द्वारा मोहित पद्मिनी पर्दे के पीछे बैठी आंसू बहाने लगी। यह बात चन्द्रवती रानी को चतुरा ने कही। चन्द्रवती ने पद्मिनी को गोद में बिठाया। प्रदीपवती ने श्रीचन्द्र से कहा 'श्रीचन्द्र! तुम कला आदि में प्रवीण हो। अपूर्व लावण्य, कांति आदि से देदीप्यमान हो, तुम्हारे अंग में क्षत्रिय का तेज स्फुरायमान है। गुणों आदि से तुम

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

श्रीचन्द्र नहीं आएंगे क्योंकि वे हमेशा अपने घर श्री जिनेश्वर देव की पूजा आदि करते हैं।" फिर चन्द्रकला को ले कर सर्व राज महल में गये दीपचन्द्र राजा ने विवाह के लिए शुभ मुहूर्त देखने का आदेश दिया। ज्योतिषी ने अच्छी तरह देख कर कहा कि कल ही शुभग्र से शोभित, अति शुभ मुहूर्त है। दीपचन्द्र राजा ने कहा कि "शुभगांग राजा किस प्रकार कल तक यहां पहुँच सकेंगे।"

ज्योतिषी ने कहा कि "कल वैशाख शुक्ला पंचमी का लग्न अति उत्तम है। बहुत सी रेखाओं से शोभित है ऐसा यह लग्न अवश्य ही साध लेना चाहिये।" दीपचन्द्र राजा ने तत्काल विवाह की सर्व सामग्री तैयार कराई।

प्रदीपवती राणी ने विचार किया कि "मेरी पुत्री सूर्यवती के नगर का श्री 'श्रीचन्द्र' है, इससे वह सूर्यवती का पुत्र ही कहलाएगा। अतः मुझे उसके पास रह कर ही विवाह महोत्सव करना चाहिये।" सात मंजिल के महल में विवाह की सर्व सामग्री तैयार करवा कर प्रदीपवती ने अपने मुकुट, कुंडल हार आदि से श्री 'श्रीचन्द्र' को अलंकृत किया।

परन्तु श्रीचन्द्र देदीप्यमान कान्ति वाले होने से अपने ही आभूषणों से शोभित थे। दूसरे दिन अति श्रेष्ठ लग्न में ज्योतिषी ने विधि को आरम्भ किया। कुल स्त्रियां गीत गा रही थीं। वाजिन्त्रों के मधुर नाद से दिशाएं गूंज उठी थीं। चारों तरफ से चतुरंगी सेना

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

द्वारा घिरे हुए श्री 'श्रीचन्द्र' हस्ति पर आरुढ होकर, लग्न मंडप में आये ।

उत्तम लग्नांश के समय ज्योतिषी ने पद्मिनी चन्द्रकला के साथ श्रीचन्द्र का हस्तमिलाप करवाया ।

दीपचन्द्र राजा ने अश्व, हाथी, रथ आदि चतुरंगी सेना, छत्र, चामर आभूषण आदि सर्व हस्त मिलाप के समय हर्ष पूर्वक दिये । चन्द्रवती रानी ने धरणेन्द्र द्वारा प्रदान किया हुआ दैवी हार, श्री 'श्रीचन्द्र, को दिया । चन्द्रकला के भाई वामांग ने सिंहपुर से लायी हुई वस्तुए — पांच वर्ण के ५००-५०० अश्व आदि बड़े उत्साह से समर्पित किए । श्री 'श्रीचन्द्र' को १६ नववद्ध नाटक चतुरा कोविदा नंदा आदि ७२ सखियों, छत्र चामर आदि राज्य के सर्व चिन्ह भी भेंट किये ।

प्रातःकाल होने पर मुकुट आदि से सुशोभित होकर श्री 'श्रीचन्द्र' ने हस्ति पर आरुढ़ होकर दीपशिखा नगरी में सर्वत्र भ्रमण किया । उस समय स्थान २ पर गीत नृत्य हो रहे थे । सर्वत्र जनता उनके रुप लावण्य की मुक्त कण्ठ से स्तुति कर रही थी ।

कनकदत्त श्रेष्ठी की लघु पुत्री ने श्रीचन्द्र पर अनुरक्त होकर पिता से कहा कि 'ये श्रीचन्द्र ही मेरे पति हों ।

कनकदत्त श्रेष्ठी ने कहा "क्या तूं मूढ़ तो नहीं हो गयी ! श्री चन्द्र को पद्मिनी के हस्तग्रहण के लिए दीपचन्द्र राजा ने छः पहर तक

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

समझाया तब कहीं वह तैयार हुए। तुम्हारे साथ वे किस प्रकार विवाह करेंगे। श्रेष्ठी पुत्री ने भोज पत्र पर श्लोक लिख कर उस पर पुष्प माला लपेट कर झरोखे में खड़ी हो गयी। जब हस्ती नीचे आया तब श्रीचन्द्र के उपर वह माला डाली। पुष्प माला को आती देख श्रीचन्द्र ने उपर दृष्टि कर अनुरागिणी कन्या को देखा।

भोजपत्र खोल कर पढ़ा कि "जिस कमलिनी ने चन्द्र को देखा नहीं उसका जन्म निरर्थक है। और जो चन्द्र अपनी किरणों से कमलिनी को विकसित नहीं करता, उस चन्द्र की उत्पत्ति भी निरर्थक है।" वह भोज पत्र श्रीचन्द्र ने चन्द्रकला को सौंप दिया।

इधर उधर देखते २, स्थान २ प० दान देते श्रीचन्द्र व चन्द्रकला अपने महल में वापिस लौटे। राजा ने नगरजनों का सम्मान करके उन्हें भोजन कराके विदा किया। कनकदत्त श्रेष्ठी की कन्या ने दासी द्वारा चन्द्रकला से भोजपत्र का उत्तर मांगा? पद्मिनी ने कहलाया कि "अभी अवसर नहीं है।"

तिलकमंजरी के हस्त ग्रहण के लिए तिलकपुर नगर पधारने की श्रीचन्द्र से धीर मन्त्री ने अति आग्रह भरी विनंति की। कमल के समान मुख वाले श्रीचन्द्र ने कहा कि "पाणिग्रहण के सम्बन्ध में मैं कुछ नहीं जानता इन सब बातों का लक्ष्मीदत्त श्रेष्ठी ही उत्तर दे सकते हैं।

दीपचन्द्र राजा आदि सुभगांग राजा के आगमन तक रोकना चाहते थे, परन्तु श्रीचन्द्र नहीं ठहरे। दूसरे ही दिन सबकी अनुमति लेकर हस्तियों के अलावा सर्व वस्तुओं से युक्त कुशस्थल की तरफ प्रस्थान किया। कुछ आगे जाने पर श्री 'श्रीचन्द्र' ने दीपचन्द्र राजा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

व सर्व लोगों को नमस्कार किया। और सबसे विदा मांगी।

कन्या को यथा योग्य शिक्षा देकर अश्रु युक्त नेत्रों वाले लोग वापिस लौटे। चन्द्रकला को प्रदीपवती राणी तथा माता चन्द्रावती राणी ने कुलांगना के योग्य हित शिक्षाएं दीं कि शास्त्र में कुल वधु का धर्म इस प्रकार बताया है कि "हे पुत्री ! गुरु और पति के आगमन के समय खड़े होकर स्वागत करें। सदैव नम्रता पूर्वक वार्तालाप करें।" इस प्रकार हितशिक्षा देकर सजल नयनों वाली दोनों महाराणियां वापिस लौटीं।

कुशस्थल जाने को इच्छुक श्रीचन्द्र ने परिवार सहित पद्मिनी को समझा कर, उन्हें तथा मित्र गुणचन्द्र और सैन्य आदि को पीछे छोड़ कर स्वयं रथ पर आरुढ़ होकर वेग से उसी रात्रि श्रीपुर में पहुंच गया। रथ को वहां छोड़ कर वह कुशस्थल जाकर माता पिता के चरणों में उसने नमस्कार किया। लक्ष्मीदत्त व लक्ष्मीवती उसे देख कर खिल उठे और कहने लगे कि "हे पुत्र ! तेरे वियोग के दुःख से हमारे पांच दिन इस प्रकार बीते कि मानो पांच वर्ष व्यतीत हो गये हों। इतने दिन तूं सुख को भोगता हुआ कहां रहा ? क्या तूं अपनी इच्छा से रुका या किसी ने तुम्हें बल पूर्वक रोक लिया था।" श्रीचन्द्र ने कहा, "आपश्री की कृपा से सर्वत्र जय, सौख्य और सम्मान प्राप्त होता है। मैं किसी स्थल पर सुख पूर्वक क्रीड़ा कर रहा था। वहां वरदत्त श्रेष्ठी मुझे जबरदस्ती से अपने घर ले गये और वहां बड़ा महोत्सव हुआ। आज प्रातः मैं उनकी आज्ञा लेकर आया हूं।"

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लक्ष्मीदत्त श्रेष्ठी ने कहा कि "तेरा अद्भुत चारित्र जान कर राजा ने तुझे रत्नपुर नगर भेंट में दिया है। आज शुभ दिन तुम प्रताप सिंह राजा से भेंट करो।" "पूज्यों का आदेश शिरोधार्य हो।" कह कर श्रीचन्द्र मौन हो गये।

लक्ष्मीवती श्रीचन्द्र के शरीर और वस्त्रों पर से रज को हटा रही थी तो वहां हाथ के ऊपर मोंढला बांधा हुआ देखा। हर्षित होकर उसने लक्ष्मीदत्त श्रेष्ठी से कहा "अपने पुत्र के हाथ में विवाह सूचक कुछ बंधा हुआ दिखाई देता है।"

लक्ष्मीदत्त ने कहा कि, "हे वत्स! हमें आनन्द होवे ऐसी कोई बधाई दो।" श्री 'श्रीचन्द्र' ने कहा कि मेरे हाथ में ज्योतिषी ने अलभ्य लाभ प्राप्त कराने वाली प्रभावशाली कोई वस्तु बांधी है। क्रीड़ा में आसक्त श्रीचन्द्र कभी अपने घर रहते, कभी श्रीपुर में और किसी समय उद्यान में घूमने के लिए चले जाते थे।

एक दिन श्रीचन्द्र तो अपने महल के ऊपर झरोखे में बैठे और श्रेष्ठी लक्ष्मीदत्त नीचे थे कि इतने में बाजिन्त्रों का मधुर नाद सुनाई दिया। पद्मिनी गुणचन्द्र आदि सभी लोग पद्मिनी चन्द्रकला आदि को देखकर आश्चर्यचकित हो रहे थे। वे पूछने लगे कि "ये कहां जा रहे हैं?" जब वे सब श्रेष्ठी लक्ष्मीदत्त के घर के पास आये तो कोलाहल सुनकर श्रेष्ठी ने पूछा कि "यह क्या है? बाहर आकर सेना को देख कर श्रेष्ठी व्याकुल हो उठे।"

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

इतने में तो गुणचन्द्र ने वंदन करके कहा कि, 'हे पूज्य ! यह पद्मिनी चन्द्रकला आपश्री की पुत्र वधु है ।" विवाह आदि की सर्व हकीकत कह कर चन्द्रकला से कहा कि "आपके पति यहीं हैं । अपने ससुर को प्रणाम करो ।" महाआश्चर्य स युक्त श्रेष्ठी ने, सखियों से घिरी हुई पद्मिनी को देखा । अति उत्कंठा से सर्व हकीकत पत्नी से कही ।

गुणचन्द्र ने कहा कि, हे पूज्य ! इन रथों, अश्वों आदि को कहां रखना है ?" लक्ष्मीदत्त ने कहा कि "भाग्यशाली श्रीचन्द्र से पूछो, जैसे वह कहे वैसे करो" झरोखे में विराजमान श्रीचन्द्र को विनंति की । श्रीचन्द्र ने सैनिकों आदि को आदर पूर्वक बुलाकर यथास्थान जाने की आज्ञा दी । रथों और अश्वों आदि को श्रीपुर में रखा ।

श्रेष्ठी ने श्रीचन्द्र से कहा, "हे वत्स ! यह सब उत्कृष्ठ कार्य तो तूं ने किये परन्तु हमारी आज्ञा भी नहीं ली ? तुम्हारी धीरता, निरभिमानता आदि अत्यंत आश्चर्यकारी है । हमें प्रवेश महोत्सव करने का भी हर्ष प्राप्त नहीं हुआ ।"

सातवीं मंजिल में श्रीचन्द्र के निवास में पद्मिनी सखियों से युक्त आयी । पति के साथ वार्तालाप विनोद आदि को करती सुख पूर्वक रहने लगी । श्रेष्ठी के घर मन्त्री, श्रेष्ठी आदि आनन्द से आये । महान महोत्सव, गीत दान आदि से घर अति शोभा को प्राप्त हुआ । दहेज आदि देख कर सब को बहुत आनन्द हुआ ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कई लोग श्रीचन्द्र के पुण्य सौभाग्य का वर्णन कर रहे थे। और कई पद्मिनी के मुख कमल की प्रशंसा कर रहे थे। सर्वत्र हर्षोल्लास छा गया।

जयकुमार ने धीर मन्त्री को वीणारव के साथ जानकर गायक वीणारव को जल्दी से बुलाकर कहा कि, "तूं ने जो श्रीचन्द्र का रास रचा है। वह उसे सुनाना। जब श्रीचन्द्र तुम पर संतुष्ट होकर मन इच्छित मांगने का कहे, तब उसके रथ के दो अश्वों में से एक अश्व को तुम मांग लेना। यदि तू ऐसा करेगा तो हम तुझे बहुत इनाम देंगे। मेरा यह कार्य तुझे अवश्य करना होगा।"

राजकुमारों के भय व दाक्षिण्यता से वीणारव ने उनकी बात स्वीकार करली। यह कपट जाल श्रीचन्द्र के रथ की अपूर्व गति को रोकने के लिए जयकुमार ने रचा था। जैसे भवितव्यता होती है उसी प्रकार की बुद्धि उत्पन्न हो जाती है। दूसरे दिन श्रेष्ठी द्वारा चतुराई से अनुमति लेकर वीणारव गाने के लिए तैयार हुआ। उस रास को सुनने के लिए मन्त्री, श्रेष्ठी, स्वजन आदि सर्व आनन्द पूर्वक आये थे। पुत्र वधुओं से युक्त लक्ष्मीवती भी उत्कंठा पूर्वक बैठी थी। परिवार से युक्त धीर मंत्री और अनेक नगर के लोग बैठे थे। गायक वीणारव ने प्रथम राधावेध के समय का वर्णन किया। राजा महाराजा और राजपुत्रों के नाम, कुल, नगर आदि राधावेध साधने में निष्फल, सर्व के समक्ष श्याम मुख वाले हुए, हास्यरस की जिस प्रकार उत्पत्ति हुई, तिलकमंजरी तिलकराजा आदि को दुःख हुआ, तब श्रीचन्द्र का आगमन,

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

राधावेध की साधना साध कर तिलकमंजरी द्वारा वरमाला पहनाये जाने पर मित्र सहित रथ पर आरुढ़ होकर कुशस्थल आना, राजा द्वारा धीर मंत्री को आमन्त्रण के लिए भेजना वह सब विस्तार से गाने लगा। वह संगीत कानों को अत्यन्त आनंदकारी था स्थान २ पर श्रेष्ठि आदि गायक को धन देने लगे।

वीणारव ने काव्य के अन्त में अति हर्ष से श्रीचन्द्र के गुण-गान के अनेक श्लोक बोले वे कहने लगा:—

'हे श्री 'श्रीचन्द्र'! तुम्हारे चित्त में विशुद्ध बुद्धि है! मुख में सुन्दर वाणी है! ललाट में भाग्योदय है! गृह में लक्ष्मी है! भुजाओं में वीरता भरी है, वाणी में सत्य रहा हुआ है, हस्त में दान रहा हुआ है, शरीर में कान्ति प्रकाशित हो रही है, हृदय में अरिहंत परमात्मा विराजमान हैं, क्रिया में दया भरी हुई है, इससे आपकी कीर्ति को रहने के लिए आपमें स्थान न मिलने पर वह कीर्ति दशों दिशाओं में फैल गई है।

हे श्रीचन्द्र! तुम्हारे मुख में कमल बुद्धि से, हृदय में गंभीर समुद्र की शंका से नाभि में पद्मद्रह की शंका से, दोनों नयनों में खिले हुए कमल की शंका से, शरीर में कल्प वृक्ष की शंका से लक्ष्मी ने निवास किया हुआ है।

हे श्रीचन्द्र! समुद्र खारा है, चन्द्र कलंक से दूषित है, सूर्य उष्म कान्ति वाला है, कल्पतरु लकड़ी है, चिन्तामणी पत्थर है, कामधेनु पशु है, मेरु धन के ढेर से अदृश्य है, अमृत शेषनाग द्वारा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

घिरा हुआ है, इस कारण से इन सब की भी आपके साथ तुलना नहीं की जा सकती।"

तब सन्तुष्ट होकर श्रीचन्द्र ने कहा कि "हे वीणारव! इच्छानुसार रथ, अश्व, धन, वस्त्र गांव आदि मांग लो।"

मूढ़, मंद बुद्धि वाले वीणारव ने वायुवेग अश्व को मांगा। अल्प पुण्य वाले को विवेक कहां? क्योंकि कर्म के अनुसार ही बुद्धि होती है। श्रीचन्द्र ने कहा कि "यह तुमने क्या मांगा? अच्छा" कह कर गुणचन्द्र को कहा कि, "श्रीपुर से रथ को लाकर वायुवेग अश्व दे दो और दूसरे महावेग को यहीं रख दो।

गुणचन्द्र रथ ले कर आ गया, तब श्रीचन्द्र ने कहा, हे वीणारव! एक अश्व से तेरी कार्य सिद्धि नहीं होगी अतः महा बलवान वायुवेग, और महावेग अश्वों से युक्त यह रत्न जडित सुवेग रथ तुम ले लो।" इसके अलावा और भी बहुत सा धन देकर उसका सम्मान किया। "चिरंजीव रहो" इस प्रकार की जयजयकार गूंज उठी।

तत्पश्चात् श्रीचन्द्र ने गौरव पूर्वक महाजनों, कवियों आदि को भोजन करवा कर वस्त्र और स्वर्ण से सब का सन्मान किया। उसकी उत्कृष्ठ उदारता देख कर सबने आश्चर्य चकित हो कर कहा कि "अहो भाग्य! राजा तथा राजकुमार भी इतना दान देने में उदार नहीं है यह श्रेष्ठी पुत्र होने पर भी याचना करने से कई गुणा अधिक देता है। नगर के नर नारी सुन्दर वस्त्रों और अलंकारों से शोभते हुए नगर के

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

नर नारी अपने २ घरों को रवाना हुए। अश्वों से आनंदपूर्वक वीणारव अश्वों से युक्त रथ लेकर अपने स्थान पर गया।

दूसरी तरफ लक्ष्मीदत्त श्रेष्ठी ने सेवकों के साथ विचार किया कि "पंचभद्र अश्व दुबारा पुष्कल द्रव्य व्यय करने पर भी श्रीचन्द्र को प्राप्त नहीं हो सकेंगे। अति उदारता के कारण ऐसे उत्तम दोनों अश्व दान में दे दिये हैं अश्वों का कितना भी मूल्य क्यों न देना पड़े। परन्तु उन्हें वापिस ले लेना चाहिये।"

लक्ष्मीदत्त ने श्रीचन्द्र से कहा कि "तुमने दान दिया यह तो अच्छा किया परन्तु वह दान राजा के दान से भी अधिक है। जयकुमार द्वेष से तेरे छिद्र देखता है। ऐसा और मन्त्री ने कहा था क्या यह तुझे मालुम नहीं है? जिस रथ की सहायता से इतनी दूर २ की तुमने भूमि देखी। ऐसे उत्तम अश्वों को जैसे तैस किस प्रकार दे सकते हैं? अश्वों और रथ को वापिस मंगवा लो। और इनका उचित मूल्य दे दो। राजा को पता चलेगा तो वह नाराज होगा।" क्योंकि ऐसे अश्वों का आनन्द राजा ने भी नहीं भोगा।"

मन में कुछ विचार कर विनय पूर्वक श्रीचन्द्र ने कहा कि, पिताजी! इस अपराध को क्षमा करो। दान दिया हुआ वापिस लूं तो मैं हलके में भी हलका मनुष्य कहलाऊंगा। वह रथ किसका? वे अश्व किसके? धन आभूषण आदि किसके? वे सब तो पुण्य और भाग्य से मिले हैं और मिलेंगे।" ऐसा कह कर श्रीचन्द्र अपने महल में चले गये।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चित्त में श्रीचन्द्र ने विचार किया कि "मेरी परतंत्रता को धिक्कार हो। मैंने दिया ही क्या है? परन्तु यहां पर उसका भी विचार हो रहा है।

अब मेरे लिए यहां रहना ऐसा है जैसे चारपाई में खटमल आदर रहित रहने से क्या लाभ? साहस से कौनसी सिद्धि नहीं मिलती? सुविद्या वाले को विदेश क्या है? समर्थ के लिए कौनसी चीज भारी है। पृथ्वी भ्रमण से विविध चरित्र को जाना जा सकता है। आत्मा कितनी शक्ति शाली है इसका बोध होता है। अतः मैं आज ही रात्रि के समय यहां से प्रयाण कर दूंगा। पिता को जानकारी दिये बिना ही मुझे प्रस्थान करना चाहिये तथा गुणचन्द्र जानेगा तो वह मुझे जबरदस्ती से रोक लेगा अथवा मेरे साथ आयेगा तो उसके माता-पिता का उससे मेरे कारण वियोग होगा। अतः उसे बताने से भी क्या लाभ होगा। पद्मिनी को तो जानकारी देनी चाहिये नहीं तो मेरे वियोग से वह अति दुःखी होगी। वह मेरे बिना कैसे रहेगी। मेरे लिए उसने माता, पिता, मामा और राज्य का भी त्याग किया। राजकन्या का मेरे प्रति कितना स्नेह है, फिर मैं उसे हरिणी की तरह यहां से और वहां से कैसे वियोगी करूं। उसे सर्व वृतान्त कह कर सर्व शिक्षादि देकर विदा ग्रहण करूंगा।"

उसी समय गुणचन्द्र ने आकर विनंति कि "हे मित्र! सेठ लक्ष्मीदत्ताजी के विचार जानकर बुद्धिशाली वीणारव ने मेरे द्वारा आपश्री को विनंति की है कि, जयकुमार आदि के कहने पर मैंने अभी

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

की मांगनी की थी। परन्तु अपनी इच्छा से नहीं की। अब मैं राजपुत्र के पास नहीं जाऊंगा। अतः मुझे उचित स्वर्ण देकर अश्वों से युक्त रथ ले लें। आपश्री का चक्रवती दान पणा मैं जानता हूं। अश्वों से युक्त रथ के दान का फल विशाल है। मणि, मुक्ताफल, धन, वस्त्र आदि के दान से हे वीर! आपने हमें खरीद लिया है। आपश्री के इन गुणों से हम बांधे गये हैं। आप श्री ने जो दिया है वह दूसरा कौन दे सकता है? अतः कृपा करके इन अश्वों से युवत रथ ग्रहण कर मेरे दाहिने हाथ को मुक्त करें।"

श्रीचन्द्र ने कहा कि, 'हे मित्र! वीणारव से कहना कि, 'इन हाथों से दिये हुए दान को अब मुझे कोई प्रयोजन नहीं। क्योंकि सज्जन के मुख में एक जीभ होती है। बह्मा की चार, अग्नि की सात, कार्तिक स्वामी की छः, रावण की दस, शेष नाग की दो हजार और दुर्जन की लाखों और क्रोड़ों से भी अधिक जीभें होती हैं। अभी भी उसे कोई और इच्छा हो तो ले सकता है।"

जाते हुए मित्र को आगामी विरह की स्मृति से, आर्द्र नयन से श्रीचन्द्र ने कहा "मेरी जो कीर्ति सम्पत्ति आदि है वे सब तेरे द्वारा ही प्राप्त हुई है, इसलिए हे मित्र! तुम अपनी इच्छानुसार करो।"

इतने में धनंजय सारथी ने आकर नमस्कार करके कहा कि, 'हे स्वामिन्! आपश्री के दोनों उत्तम अश्व श्रीपुर से आगे जाते ही नहीं। वीणारव ने बहुत प्रेरणा की परन्तु श्रीपुर से तो वे आगे पांव ही नहीं उठाते।' तत्क्षण श्रीचन्द्र मित्र अश्वों और सैनिकों से युवत

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

श्रीपुर में आये अपने स्वामी को देखकर दोनों अश्वों ने जोर से हिनहिना कर हर्ष व्यक्त किया।

श्रीचन्द्र के नयनों में आंसु आ गये। जब स्नेह से अश्वों को थपथपा रहे थे तो अश्वों के भी आंसू बह गये। दोनों अश्वों का सन्मान करके, उनके गुणों की प्रशंसा करके कहा कि, "हे भद्रो ! तुम दोनो मेरे हस्त समान हो। मेरे चित्त नेत्र और हस्त से कभी भी अलग नही होते, तो भी मेरा ऐसा समय आया है। मैं वरदान से देवदार हूं। अतः तुम गायक के साथ जाओ।"

वे 'पंचभद्र' अश्व श्रीचन्द्र के चित्त को अनुसरण कर आगे बढ़े उन अश्वों के गुणों को याद करके श्रीचन्द्र का हृदय भर गया। उन्होंने गुणचन्द्र को सर्वाधिकारी नियुक्त किया। धनंजय को सेनापति नियुक्त किया। दूसरों को भी योग्य स्थलों का अधिकारी नियुक्त किया किले और महल में कार्य करने वाले सेवकों को यथा योग्य स्वर्ण धन, दान आदि देकर यथा योग्य हित शिक्षा देकर श्रीपुर को स्वर्ग के समान बना कर, परदेश जाने की इच्छा वाले श्रीचन्द्र राजा के समान सर्व हस्तियों, अश्वों, १५ हजार अंग रक्षकों, पांच सो बन्दीजनों, से युक्त शीघ्र ही कुशस्थल में अपने महल में पधारे।

धीर मंत्री ने श्री 'श्रीचन्द्र' को नमस्कार करके गुणचन्द्र के साथ लक्ष्मीदत्त श्रेष्ठी के पास आकर विनंती की। श्रेष्ठी ने कहा कि "हे धीर मन्त्री ! दो दिन की राह देखो श्रीचन्द्र प्रतापसिंह राजा से भेंट करेंगे तब आप भी जाना और राजा से विनंति करना। सभी कार्य राजा के आदेशानुसार ही होगा।"

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

शाम के समय भोजन गृह में आकर श्रीचन्द्र ने कि, माताजी ! लड्डु दो " लक्ष्मीवती ने बहुत से लड्डु दिये। भाव पूर्वक लड्डुओं के टुकड़े करके पत्नियो और सखियों आदि सर्व के पास भेज दिये। बुद्धिशाली ने बाद में संध्या का भोजन श्रेष्ठी के साथ किया। बाद में अपने महल में आकर कोणकोट्ट से आये हुए मन्त्रियों के साथ हिसाब करने के लिए गुणचन्द्र को भेज कर तथा दूसरों को भी भिन्न २ कार्य सौंप कर रात्रि के प्रारम्भ में पद्मिनी के महल में आये।

प्रफुल्लित हृदय से पटरानी चन्द्रकला ने अति हर्ष से मन वचन और काया से श्रीचन्द्र की अद्भुत सेवा की। श्रीचन्द्र ने पिता के साथ हुई सर्व बात पद्मिनी से कही। यदि पिता इस प्रकार कहे तो इसे कैसे सहन किया जा सकता है ? इतना अल्पदान भी पिता को योग्य नहीं लगा। तो मन की इच्छानुसार किस प्रकार दान दिया जा सकता है ? मैंने किसी दिन भी पिता की आज्ञा को भंग नहीं किया। आज पहली बार ही मैंने उनकी आज्ञा का उल्लंघन किया। मूल्य देकर अश्वों को वापिस लेने की भी मेरी बिल्कुल इच्छा नहीं है सुधासिन्धु से भी अधिक ऐसे माता पिता और गुरु की आज्ञा जो नहीं मानता वह दुष्ट बुद्धि वाला मृतक समान है यह बात मैं मन में जानता था फिर भी हे वल्लभा ! मैंने यह आज्ञा नहीं पाली इससे मैं पुण्यहीन और कदाग्रही हूं।"

चंद्रकला सोचने लगी कि "अहो इनकी कितनी नम्रता, गुरुभक्ति, दान प्रिया और चित्त गम्भीरता है।"

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

फिर वह कहने लगी कि "हे नाथ ! आपश्री का मन अनुत्तर है। जिससे दान पुण्य के अनुसार आपश्री की वृद्धि है। कुटुम्ब में प्रत्येक व्यक्ति का स्वभाव भिन्न २ होता है। अपने तो सुखपूर्वक रहेंगे।" शकुन की गांठ बांध कर श्रीचन्द्र ने कहा "हे प्रिये ! यह तो पिताजी जाने। मेरे स्वाधीन में कुछ भी नहीं है। मैं तो पिता के समक्ष किस प्रकार जाऊं ? अतः मैं देशाटन के लिए अल्प समय के लिए जा रहा हूं।

यदि मेरे शुभ भाग्य का उदय होगा तो मैं कौतुक देखने की इच्छा से पृथ्वी पर भ्रमण करके थोड़े ही दिनों में वापिस लौट आऊंगा।" मानो वज्र का प्रहार हुआ हो वैसी पद्मिनी हृदय के दुःख से रुदन करती २ बोली कि, "हे देव ! इस प्रकार आप क्या कह रहे हैं। पति सास, ससुर आदि को दुख उद्वेग आदि की कारणभूत क्या अभी ही मैं विषकन्या हो गई हूं ? हे नाथ ! आप श्री यहीं रहो आपश्री के पास किस बात की कमी है। हाथी, अश्व, रथ, सेनिक, स्वर्ण रत्न आदि विशाल सामग्री है। आप श्री अपने पुण्य की लीला दिखा रहे हैं और भविष्य में भी देखेंगे। आपका पुण्य प्रबल है इसमें कोई भी शंका का स्थान नहीं है।"

श्रीचन्द्र ने कहा कि, "हे चित्त को जानने वाली ! तुम धैर्य धारण करो। हे कल्याणी ! रुदन करने से क्या ? यह तो अमंगल है। हे अबले ! तुम समझदार हो अतः दुःख को धारण न करो। मुझे सास ससुर से जो मिला है। वह मुझे रुचता नहीं है। परन्तु जो मैं भुज बल से करुं उसमें मेरी शोभा है। मेरा तेरे प्रति विशेष स्नेह है। अतः

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मैंने केवल तुझे ही यह बातें कही हैं। मैंने माता पिता और मित्र से भी नहीं कहा। अतः हे भद्रे! मुझे जाने के लिए अनुमति दो। इससे मैं आज ही अपना अभीष्ट सिद्ध करुं।" चन्द्रकला ने कहा कि, "हे स्वामिन! आपकी बुद्धि वचनातीत है। हे नाथ! मुझे भी साथ ले चलें! क्या पत्नी पति के साथ विदेश नहीं जाती? मैं माता पिता के वियोग को सहन करने में समर्थ हूं। परन्तु हे स्वामिन आपके वियोग को क्षणवार भी सहन करने में मैं समर्थ नही हूं। मुझे क्षणवार भी आपका वियोग ना हो। बहुत सी सखियों में भी आपके बिना मैं अकेली ही हूं। मेरे प्राण आपके आधीन है आप सुखी तो मैं भी सुखी हूं। पूर्व के पुण्य से यहां मुझे हमेशा दुःख होगा। हे स्वामिन्! मुझे साथ ले जाने से मार्ग में आपको कोई भी तकलीफ नहीं होगी। आपके शरीर की छाया की तरह मैं साथ आऊंगी। मुझे आज्ञा प्रदान करें" श्रीचन्द्र ने कहा कि, 'हे बुद्धिशाली पद्मिनी! तुम अपने कुल के उचित ही कह रही है परन्तु प्रवास में कहां तो ग्रीष्म ऋतु की कर्कशता और कहां तुम्हारे अंग की सुकोमलता! कहां क्षुधा तृष्णा का कष्ट और कहां तू राजपुत्री! कहां तो सूर्य की उग्र किरणों से तपा हुआ मार्ग और कहां तेरे सुकोमल चरण! कभी सर्दी कभी गर्मी। पग-पग पर तुझे मार्ग में अति कष्ट होगा। हे स्नेह वाली। तेरे साथ मुझे भी दुःख सहन करना पड़ेगा। अतः स्वयं विचार करो। अतः मेरे आदेश से तुम यहां अपने घर पर ही रह कर आनन्द पूर्वक देवाधि देव की पूजा आदि धर्माचरण करती रहो तुम्हारी धर्माराधना और शील के प्रभाव से मैं भी प्रवास में सुखी रहूँगा।"

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अपने वस्त्र के किनारे से श्रीचन्द्र ने चन्द्रकला के आंसु पूंछे और उसे पुनः हित शिक्षा दी। विदुषी पद्मिनी ने पति के प्रवास का निश्चय जानकर उनके शुभ की कामना करती हुई गद्गद् कण्ठ होकर बोली "प्राणनाथ ! 'जाओ' यदि ऐसा कहूँ, तो मुझ में स्नेह नहीं, 'न जाओ' ऐसा कहूं तो अमंगल होता है, 'रहो' ऐसा कहूं तो स्वामी को आज्ञा देने वाली कहलाती हूँ, 'रुचि के अनुसार करो' ऐसा कहूं, तो उदासीनता कही जाती है, 'साथ ही आऊंगी' ऐसा कहूँ तो, कदाग्रह होता है, 'साथ नहीं आऊं' ऐसा कहूँ तो वाणी की तुच्छता कहलाती है। हे नाथ ! प्रयाण के समय मैं क्या कहूं यह समझती नहीं हूं। हे स्वामिन् ! मैं तो आपश्री को गुरु महाराज द्वारा दिये हुए आत्म रक्षा का महामंत्र के लिए आह्वान करती हूँ। यह महामंत्र मस्तक और मुख का रक्षण करता हैं, काया का कवच रुप है, पांच पदों द्वारा हमेशा आत्मारक्षा करनी चाहिये, चूलिका से भूमि वज्रमय शिला बन जाती है, चौथी चूलिका से कोट के ऊपर वज्रमय मंडप रचता है। इस महामन्त्र से आप बाह्य शरीर की रक्षा करें।

इस मन्त्राधिराज के प्रभाव से शत्रु चोर, शेर, वैताल आदि के सर्व भय दूर हो जाते हैं। मन्त्र के ध्यान से और स्मरण से पग २ पर संपदाएं उत्पन्न होती है। महामन्त्र के ध्यान से आपश्री का मार्ग मंगलमय हो। हे नर रत्न ! आपश्री का कल्याण हो और तुरन्त आपश्री का शुभागमन हो। आपश्री को मार्ग में सर्वत्र मनोवांछित प्राप्त हों।"

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चन्द्रकला के शुभ वचन ग्रहण कर के, स्नेह वार्ता करके शकुन के लिए फल स्वीकार कर द्रव्य से युक्त नित्य के वेष में नगर से बाहर निकल कर श्री 'श्रीचन्द्र' ने जिस दिशा में शुभ पक्षिओं ने शकुन किये थे उस दिशा में विशुद्ध हृदय से प्रयाण किया।

प्रभात के समय श्रीचन्द्र ने एक अवधूत को देखा। उसे उचित मूल्य देकर श्रीचन्द्र ने उसका वेष लेलिया और अपना वेष छुपा कर उस अवधूत के वेष में ही उत्तर दिशा की ओर प्रयाण किया।

ग्राम, नगर, उद्यान, नदी, सरोवर, गिरी आदि में भ्रमण करते हुए उन्होंने स्थान २ पर श्रीचन्द्र का रास सुना। कहीं राधावेध का रास सुनने को मिला, कहीं तिलकमंजरी का दिया उपालम्भ सुना, कभी वार्ता काव्य गीन और सुवेग महावेग अश्वों तथा पद्मिनी चन्द्रकला आदि के वर्णन का श्रवण किया। स्थान २ पर अपने गुणों को सुनते हुए वे आगे बढ़ते गये।

प्रतापसिंह राजा के समक्ष राजसभा में धीर मन्त्री युक्ति पूर्वक विवाह के लिए श्रीचन्द्र को ले जाने के लिए उनका आदेश मांगा। वहां तो दीपचन्द्र राजा का सेनापति जो चन्द्रकला को छोड़ने के लिए आया हुआ था, उसने चन्द्रकला की सर्व हकीकत प्रतापसिंह राजा से निवेदित की। वह सर्व हकीकत प्रतापसिंह ने पटरानी सूर्यवती को कही। हर्ष से सूर्यवती ने कहा कि, "चन्द्रकला! मेरी ही बहिन की पुत्री चन्द्रकला है, राजा की आज्ञा लेकर सूर्यवती महोत्सव पूर्वक श्रीचन्द्र के महल में आयी।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सूर्यवती ने हर्ष पूर्वक चन्द्रकला से मिल कर उसे गले लगाया और पूछा कि, 'दीपशिखा नगरी में सर्व कुशल हैं ?" हस्तमिलाप में मिली सर्व वस्तुओं को देखकर और चन्द्रकला को लेकर प्रतापसिंह राजा के पास आयी। तब प्रतापसिंह ने पूछा कि, श्री 'श्रीचन्द्र' कहां हैं ?" चन्द्रकला मौन रही। सूर्यवती ने पूछा कि 'हे चन्द्रकला ! स्वयवर विना तुमने कैसे लग्न किया ? चन्द्रकला ने सर्व वृतान्त सविस्तार कह दिया। बाद में वह अपने घर लौट आयी।

श्रेष्ठी लक्ष्मीदत्त, मित्र गुणचन्द्र और सैनिकों ने श्रीचन्द्र की बहुत खोज की, परन्तु उनका कहीं भी पता नहीं लगा।

इससे सब दुःखी हुए। जैसे अल्प जल में मछली तड़फती है उसी प्रकार गुचचन्द्र को कहीं भी चेन न पड़ने से, श्रेष्ठी ने कहा कि, "मैं निर्भागी हूं। अश्वों आदि का ल्य देकर वापिस ग्रहण करने का मैंने ही कदाग्रह किया। जिससे दुःखी होकर श्रीचन्द्र कहीं चले गये है।"

लक्ष्मीवती ने कहा, 'किसी भी समय अपने मुख से कोई चीज नहीं मांगी थी, परन्तु कल ही उसने लड्डु मांगे और अपने हाथ से तोड़ कर सबके पास भेजे। परन्तु मैं समझ न सकी कि कल श्रीचन्द्र जाने वाले हैं।" श्रीचन्द्र के जाने की बात तत्क्षण नगर में सर्वत्र फैल गई।

अतिशय दुःखी और रुदन करते गुणचन्द्र ने चन्द्रकला के पास आकर पूछा कि "हे स्वामिनी ! मेरे मित्र कहां गये हैं ? यह जानती

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.		Jun Gun Aaradhak Trust

हो तो कहो, "सतियों में शिरोमणी पद्मिनी ने सस्मित कहा कि, "आपके मित्र का गूढ़ मन और गमन यह दोनों कोई भी जान नहीं सकता।"

कुशस्थल से सर्व दिशाओं में जाने के मार्गों में सैनिकों द्वारा प्रतापसिंह राजा ने सर्वत्र खोज करवाई, परन्तु कहीं भी पता नहीं लगा। तीन दिन तक किसी ने भी व्यापार, विलास आदि कुछ भी कार्य नहीं किया। श्रेष्ठी के घर तो भोजन भी नहीं बना। अच्छी तरह कोई वार्तालाप भी नहीं करता। सर्वत्र शोक छा गया।

श्रीचन्द्र के जाने के चौथे ही दिन बाद कुशस्थल में ज्ञानी गुरु महाराज पधारे। प्रतापसिंह राजा, सूर्यवती पटराणी, लक्ष्मीदत्त श्रेष्ठी आदि सर्व नरनारी वन्दन करने गये। सब यथा योग्य स्थान पर बैठे। महा तपस्वी गुरु महाराज ने धर्मलाभ का आशीर्वाद देकर धर्म देशना दी।

देशना के अन्त में सूर्यवती ने प्रश्न किया, "हे भगवन्! जय के भय से मैंने उद्यान में पुष्पों के ढगले में पुत्र को छुपाया था, उसके बाद मेरे पुत्र का क्या हुआ?" ज्ञान से जानकर गुरु महाराज ने कहा, "हे भद्रे! महा पुण्य निधान, तुम्हारे पुत्र 'श्रीचन्द्र' को सुरक्षित रखने के लिए गोत्रदेवी ने स्वप्न में सूचित कर लक्ष्मीदत्त श्रेष्ठी को अर्पण किया था। श्रीचन्द्र के पुण्य से लक्ष्मीदत्त लक्षाधिपति से क्रोड़ाधिपति बना। लक्ष्मीदत्त और लक्ष्मीवती ने भी उसे अति हर्ष से अपने पुत्र के समान रखा। उसके जन्म से पहले तुमने श्रीचन्द्र नाम निश्चित करके इस नाम की अंगूठी तैयार कराई थी। उस अंगूठी के नाम के अनुसार श्रेष्ठी ने उसका वही नाम रखा था।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

हे राजन् ! तुमने पहले जब इसे गोद में बिठाया था तब दृष्टि में मोह से क्या पुत्र प्रेम उत्पन्न नहीं हुआ था ? श्रेष्ठी के मुख से दूसरी ख्याति सुनकर क्या तुम्हें आनन्द नहीं हुआ ? दानेश्वरों में भी अग्रणी श्रीचन्द्र देशान्तर गया है। इस वर्ष के अन्त में राजा होकर आपसे मिलेगा।"

राजा प्रतापसिंह और सूर्यवती तो लक्ष्मीदत्त और लक्ष्मीवती की अति प्रशंसा करने लगे। श्रीचन्द्र ही सूर्यवती का पुत्र है। इस प्रकार हर्ष को प्रकाशित करती वाणी निकली। विशेषत: चन्द्रकला और मन्त्रीपुत्र गुणचन्द्र को अति आनन्द हुआ।

ऋषियों ने कहा कि, 'नरसिंह राजा के कुल में सूर्य समान प्रतापसिंह राजा की सूर्यवती पटराणी का पुत्र 'श्रीचन्द्र' जगत में जय को पायें।" गुरु महाराज को सब लोग वन्दन कर अपने २ घर गये। "अपना पुत्र श्रीचन्द्र है" इस बोध के निमित्त से प्रतापसिंह राजा ने नगर में सर्वत्र महोत्सव किया। पद्मिनी चन्द्रकला किसी समय सूर्यवती के महल में, किसी समय श्रेष्ठी के महल में और किसी समय श्रीपुर में रह कर धर्माचरण करने लगी।

"इस ससार में धर्म ही श्रेष्ठ बन्धु है। वह धर्म प्रिय को धर्म साधन, सामग्री आदि देता है, धन प्रिय को धन देता है, सौभाग्य के अर्थी को सौभाग्य देता है, पुत्रार्थी को पुत्र देता है, राज्य के अर्थी को

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

राज्य देता है। वस्तुतः धर्म क्या नहीं देता ?" धर्म इन सब के अतिरिक्त स्वर्ग और मोक्ष की सम्पदाओं को प्राप्त कराने वाला है।"

" यतो धर्मस्ततो जयः "

= द्वितीय खण्ड समाप्त *=*

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

॥ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः ॥

❀ श्री गौतम स्वामिने नमः ❀

पू० आ० देव श्री सिद्धर्षि गणि कृत

श्री 'श्रीचन्द्र' केवलि चरित्र

द्वितीय भाग

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमः प्रभुः, ।
मंगलं स्थूलभद्राद्या, जैनो धर्मोऽस्तु मंगलम् ॥

[तृतीय खण्ड]

चन्द्र के समान कान्तिवान प्रतापसिंह राजा का पुत्र श्री 'श्रीचन्द्र' घूमते हुए तथा देखने वालों को आनन्द देते हुए कभी घोड़े पर, कभी गाड़ी पर, किसी जगह पैदल, कभी दिन में, कभी रात में, श्री परमेष्ठी महामन्त्र के पद के ध्यान से पूर्व पुण्य के प्रताप से और गुरु की दी

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

हुई औषधी के कारण सब जगह विजयी हुआ।

एक समय एक वनिक को सोना मोहर दी और उसके यहां भोजन करके बाकी पैसे लिये बिना रवाना हो गए। हमेशा ५-७ मनुष्यों के साथ ही भोजन किया करते थे। अकेले कभी भोजन नहीं करते, जंगल में भूले भटके मुसाफिरों को धन की मदद देते थे। एक बार श्री 'श्रीचन्द्र' वृक्ष पर बैठे हुए होते हैं, उसी समय चन्द्रमा के प्रकाश में एक मनुष्य की छाया दिखाई देती है परन्तु मनुष्य कोई नजर नहीं आता। श्री 'श्रीचन्द्र' ने सोचा कि यह जो पुरुष है वह अंजन गोली से सिद्ध हुआ लगता है और वह किसी भारी वस्तु को ले जाता हुआ नजर आ रहा है। यह कौन है?

उसे देखने की इच्छा से बुद्धिशाली 'श्रीचन्द्र' वृक्ष से नीचे उतर कर उस छाया के पीछे २ चलने लगे। आगे जाकर बहुत वृक्षों की छाया में वह छाया अदृश्य हो गई। 'श्रीचन्द्र' वहां कुछ क्षण रुके और सूर्य के उदय होने पर अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से उस छाया वाले मनुष्य के पद चिन्ह खोज निकाले। उन पद चिन्हों के अनुसार चलने पर एक बहुत बड़े विशाल पर्वत में एक ऊंची शिला को देखा। उसके बीच के भाग में प्रवेश करते हुए और बाहर निकलते हुए मनुष्य के पद चिन्ह देखे। बाद में नजदीक में जो जल कुण्ड था उसकी खोखल में फल और जल से तृप्त होकर गुफा की ओर एक टक देखते ही रहे।

तीसरे पहर में गुफा के मध्य भाग में से शिला को उठा कर एक पुरुष बाहर आया वह बादली रंग के वस्त्रों से सुशोभित, शस्त्र से-

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सज्जित और पान चबा रहा था। उसने जलकुण्ड के पास जाकर पानी पीया और जल लेकर गुफा में चला गया और वहां जल रखकर पहले की तरह बाहर आया और गुफा के आगे शिला रखकर बावड़ी के जल से मुंह को साफ करके मुंह में अद्‌भुत गोली रखते ही वह व्यक्ति अदृश्य होगया पहले ही की तरह धूप में उस मनुष्य की छाया दिखाई दी। छाया दूर गई ऐसा जानकर 'श्रीचन्द्र' गुफा के आगे से भारी शिला को उठा कर अन्दर प्रवेश कर गये।

गुफा के अन्दर कंचन और रत्नों से भरपूर एक महल के बीच में प्रौढ़ उम्र की स्त्री को देखा और नमस्कार करके कहने लगा, 'हे बहन! तुम यहां अकेली कौन हो ?' आंखों में आंसू लाती हुई वह कहने लगी, 'हे उत्तम पुरुष! नायक नगर में ब्राह्मण सार्थवाह लोग रहते हैं। वहां का राजा भी ब्राह्मण है और रविदत्त मंत्री भी ब्राह्मण है, उसी की मैं शिवमती नाम की पत्नि हूँ। राज्य के रक्षा के लिये पूरा बंदोबस्त होते हुए भी हमेशा चोरियें हुआ करती थीं। जिससे नगर के लोगों ने राजा से कहा कि अगर आपसे राज्य की रक्षा नहीं हो सकती हो तो हम कुश स्थल के राजा से रक्षा के लिए प्रार्थना करें।'

राजा ने कुछ भय से व्याकुल होकर लोगों का सम्मान करके कोतवाल को बुलाकर गुस्से से उपालम्भ दिया। कोतवाल ने कहा 'राजन् कोई सिद्ध चोर है ऐसा दिखता है, आज रात मैं उसे खोज निकालूंगा। कोतवाल ने रात को बहुत छान बीन की परन्तु चोर

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तो मिला ही नहीं। चोर ने जब यह बात जानी तो उसने कोतवाल के घर ही उस रात चोरी की। इस प्रकार जो कोई भी उसे पकड़ने की प्रतिज्ञा करता उसके घर ही चोर चोरी करने जाता। एक बार रविदत्त मन्त्री ने भी अपने घर को खाली करा कर चोर को पकड़ने की प्रतिज्ञा की। तथा रात्रि को सब जगह चोर की खोज करने लगा परन्तु चोर का कोई पता नहीं चला।

चोर जब मंत्री के घर गया और वहां उसे कुछ भी नहीं मिला जिससे वह क्रोधित होकर मेरे मुंह तथा हाथों को बांधा और कंधे पर डाल कर अपने यहां ले आया। फिर कहने लगा हे भद्रे ! मैं रत्नखुर चोर हूं। मैंने कहा कि भैया मैं तो कुछ भी नहीं जानती हूं।

इस प्रकार प्रतिदिन किसी समय दृश्य और किसी समय अदृश्य होकर इस समय रोज आता है और कुछ रात्रि रहती है तब लौट जाता है। तीन दिन होगये हैं मैं अपने छोटे पुत्र के वियोग में बहुत दुःखी हूं। तुम कौन हो ? क्या मेरा भाग्य ही तुम्हें यहां ले आया है ? श्रीचन्द्र ने कहा कि "मैं अवधूत हूं" तब शिवमती ने कहा कि हे भद्र ! अगर तुम इस पापी के पंजे से मुझे मुक्त करोगे तो मेरी मुक्ति का और मुझे पुत्र मिलाप कराने का इस प्रकार दोनों ही दानों का फल तुम्हें प्राप्त होगा।

'श्रीचन्द्र' शिवमती को गुफा के बाहर ले आया और उसे उसके घर पहुँचा आया। रविदत्त मंत्री ने भी 'श्रीचन्द्र' की बहुत प्रशंसा की और शिवमती ने भी यथा योग्य सन्मान कर कुछ भेंट दी

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

परन्तु 'श्रीचन्द्र' ने वस्त्र और धन लेने से इन्कार कर दिया तब शिव-मती ने अपनी यादगार रूप में एक अंगूठी जबरदस्ती भेंट की। बाद में सूक्ष्म दृष्टि वाले 'श्रीचन्द्र' चोर के पद चिन्हों के अनुसार गुफा के पास एक वृक्ष पर बैठ गये। इतने में ही कुछ मनुष्यों और उस चोर को आते हुए देखा। चोर ने आकर 'श्रीचन्द्र' से उसका नाम पूछा। 'श्रीचन्द्र' ने कहा 'मेरा नाम लक्ष्मीचन्द है।' चोर ने कहा 'मेरा नाम रत्नाकर है।' 'श्रीचन्द्र' ने मन में ऐसा सोचा कि अगर चोर कहे कि मैं गुफा के द्वार को खोलूं फिर पूछने लगा कि हे मित्र! तुम आज चिंतातुर क्यों दिखाई दे रहे हो? चोर कुछ सोच कर कहने लगा था इतने में ही दूसरे और पांच मुसाफिर आकर उसी वृक्ष की छाया में बैठकर परस्पर बातचीत करने लगे।

सूक्ष्म बुद्धि से यह जानकर कि चोर के सिर पर जो पगड़ी है उसके पल्ले पर अदृश्यकारिणी गोली बंधी हुई है इसलिये 'श्रीचन्द्र' ने पांचों मनुष्यों की साक्षी में शर्त लगाई कि दोनों की पगड़ी शिला के नीचे रख दें जो अपने दोनों में से शिला के नीचे से पगड़ी निकालेगा उसे पगड़ियों के पल्लों में जो कुछ बंधा हुआ है सब कुछ मिलेगा। धन कि लालच में चोर ने शर्त स्वीकार कर ली और पगड़ी को निकालने के लिये भरसक प्रयत्न किया लेकिन शिला टस से मस नहीं हुई।

बाद में श्रीचन्द्र ने अपनी लीला से दोनों पगड़ियों को निकाल लिया और जीत की खुशी के उपलक्ष में आम लेकर थोड़ा २ सबको बांट दिया। चोर सोचने लगा कि 'यह लक्ष्मीचंद तो गुफ़ा के द्वार को

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

भी खोल सकता है ?" इतने में तो नायकपुर नगर की तरफ बाजों की आवाज गूंजने लगी। चोर यह सोच कर कि यह राजा की सेना है सबसे पहले भाग खड़ा हुआ और बाद में दूसरे पांच व्यक्ति भी भाग छूटे।

चोर की पगड़ी में से श्रीचन्द्र ने गोली निकाली और मुंह में रखकर अदृश्य हो वृक्ष पर बैठ गये। इतने में रविदत्त मंत्री पद चिन्हों के जानकारों को साथ लेकर आया। उन लोगों ने एकाग्र चित्त से चिन्हों का निरीक्षण किया। वहां पद चिन्ह तो दिखाई देते थे परन्तु कोई मनुष्य दिखाई नहीं देता था। जिससे उन्होंने मन्त्री से कहा कि हे स्वामी ! क्या यहां कुछ संभव है ऐसी कौनसी शक्तिशाली आत्मा यहां आई होगी ? उसकी सैनिकों द्वारा खोज कराइये। चारों तरफ से सेना ने छान बीन की लेकिन वापिस खाली हाथ रात्रि को नगर में लौट आई। बाद में श्रीचन्द्र ने अपने इच्छित स्थल की ओर प्रयाण किया।

पूर्व पुण्य के प्रताप से श्रीचन्द्र को चारों तरफ जहां जाते हैं संपत्ति ही प्राप्त होती है। यात्रा में उन्हें स्वर्ण पुरुष प्राप्त हुआ। अदृश्य होने वाली गुटिका के कारण श्रीचन्द्र बहुत प्रभावशाली बन गये। रास्ते में एक कुटिया में बहुत से मनुष्यों को बातें करते सुना कि कुशस्थल के राजा प्रतापसिंह और सूर्यवती पट्टराणी के पुत्र कुल में चन्द्रमा के सदृश्य ऐसे श्री 'श्रीचन्द्र' जय को प्राप्त हों।

सिंहपुर के श्रेष्ठ सुभगांग राजा की पुत्री पद्मिनी चन्द्रकला

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जिसने पूर्व भव के स्नेह के कारण श्रीचन्द्र से विवाह किया वे श्रीचन्द्र जय को प्राप्त हों। इत्यादि तरह २ की बातें कर रहे थे। किसी ने कहा कि श्रीचन्द्र तो सेठ पुत्र हैं परन्तु तुम राजपुत्र कैसे कह रहे हो? दूसरे ने कहा कि मैं जब कुशस्थल में था तब पद्मिनी चन्द्रकला का नगर प्रवेश हुआ, श्रीचन्द्र ने वीणारव को दान दिया सबको बड़े आदर से भोजन करवाया। उसके बाद दूसरे दिन बिना किसी को कहे विदेश चले गये। कुछ ही दिनों में ज्ञानी महाराज वहां आये उन्होंने अपने मुखार्विन्द से फरमाया कि श्रीचन्द्र प्रतापसिंह और सूर्यवती के पुत्र हैं और वह विदेश भ्रमण के लिये गये हैं। एक वर्ष बाद राजा और रानी से मिलेंगे। ऐसा जानकर राजा और रानी आदि सबको जानकर बहुत प्रसन्नता हुई। सब कवि भाट भी इसी प्रकार से स्तवना करते हैं।

इन सब बातों को सुनकर श्रीचन्द्र बहुत आनन्दित हुए। और सोचने लगे ये सब बातें ज्ञानी महाराज ही जान सकते हैं। उस शुभ संदेश सुनाने वाले को बहुत सा दान दिया तथा दूसरों को घी और गुड़ देकर उसी वेश में आगे के लिये रवाना हो गये। किसी जगह दृश्यमान होकर और कहीं अदृश्य होकर चलते हुए एक भयंकर जंगल में पहुंचे। रात्रि व्यतीत करने के लिये एक बड़े वृक्ष के नीचे अपना डेरा डाल दिया। उस वृक्ष पर तोतों का स्थान था। रात्रि शुरु होते ही सब दाना चुग २ कर आगये। वे सब आपस में हंसी खुशी से तरह २ की बातें करने लगे। उनमें से एक ने पूछा अच्छा यह बताओ कि कौन २ कहां २ गया था। उनमें से एक वृद्ध तोता जो

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दिन बाद आया वह बोला—हे वत्स ! पूर्व दिशा में महेन्द्रपुर नगर में त्रिलोचन राजा राज्य करता है उसके गुणसुन्दरी नाम की एक सुशीला रानी है। उनके रूप और गुणों से सुशोभित सुलोचना नाम की एक पुत्री है, परन्तु वह जन्म से अन्धी है। चौसठ कलाओं से युक्त युवावस्था को प्राप्त हुई वह राजकुमारी हृदय रूपी दृष्टि से नाम श्लोक आदि लिख लेती है। त्रिलोचन राजा ने मन्त्रियों की सलाह से पटह बजवाया है कि जो कोई भी सुलोचना को देखती करेगा उसे आधा राज्य तथा कन्या दे दूंगा। इस पटह को बजते आज पांच महिने हो गये हैं अब पता नहीं सुलोचना के भाग्य में क्या लिखा है।

छोटे २ तोतों ने पूछा 'पिताजी वह अन्धी पुत्री देखती हो जाये ऐसी औषधी कहां मिलेगी।' बूढ़े तोते ने कहा कि 'किसी बड़े वन में हो सकती है।' तब उन्होंने कहा कि 'क्या इस बन में है ?' बूढ़े तोते ने कहा कि होसकती है परन्तु यह बात गुप्त रखने योग्य है इसलिये रात्रि को नहीं कही जा सकती।' बच्चों के हठ से वृद्ध तोते ने कहा कि "इस वृक्ष के मूल में दो प्रभावशाली बेलें हैं। एक विशाल पान की अमृत संजीवनी वेल अन्धे को देखता करती है और दूसरी घाव हरणी गोल पान की बेल है जो घाव को तुरन्त भर देती है।' उस वार्तालाप को सुनकर परोपकारी राजकुमार नें हर्ष से दोनों औषधियों की बेलें ली और पूर्व दिशा की ओर रवाना होगया। तीन दिन चलने के पश्चात् एक सुनसान देश में पहुँचा। वहां एक शून्य नगर था। उसमें बाग, सरोवर, बावड़ी और वृक्ष भी थे, ऊंचे २ किल्लों, महलों से और मोहल्लों से वह शहर बहुत सुन्दर दिखाई दे रहा था परन्तु सबसे बड़ी कमी यह थी कि वह बिना राजा का था। अन्दर बाहर सब जगह सुनसान थी। राजकुमार को

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

बहुत आश्चर्य हुआ, श्रीचन्द्र उस नगर में प्रवेश करने ही वाला था इतने में एक तोती उड़ती हुई घबराई हुई सी वहाँ आई और कहने लगी, 'हे मुसाफिर ! इस नगर में मत जाओ। इस नगर में जाने वाले को विघ्न आता है।

श्रीचन्द्र ने पूछा कि 'इस नगर और यहां के राजा का क्या नाम है ? यह नगर शून्य किस तरह हो गया है ? यहां किसका डर है ?' तोती बोली कि 'कुन्डलाचल देश में प्रसिद्ध कुन्डलपुर नाम का यह नगर है यहां अर्जुन नाम का राजा राज्य करता था। उसके पांच रानियां थीं। मुख्य रानी का नाम सुरसुन्दरी था। कुन्डलपुर में ६-७ दिन में एक चोरी हो जाया करती थी। कोतवाल आदि चोर की खोज करते पर चोर पकड़ में नहीं आता था. एक रात राजा चोर को पकड़ने निकला। रास्ते में राजा ने किसी को घुमते हुए देखा, राजा ने चुपचाप उसका पीछा किया।

चोर समझ गया कि राजा उसका पीछा कर रहा है। चोर ने नगर के बाहर आकर राजा की नजर से बचकर किसी एक मठ के अन्दर जाकर चोरी किया हुआ रत्नों का डिब्बा सोये हुए परिव्राजक के पास रखकर परिव्राजक का वेश पहन क अदृश्य हो गया। जब प्रातःकाल हुआ तब अर्जुन राजा ने उस परिव्राजक को चोर समझकर पकड़ लिया और उसे मरवा डाला। वह मृत्यु के बाद ाक्षस हुआ।"

'बदला लेने की भावना से उस राक्षस ने यहां के राजा को मार

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दिया । नगर के सारे लोग राक्षस के डर से सब कुछ छोड़ कर भाग गए । पांचों रानियों का अंतपुर में रक्षण करता है, उनमें से गुणवती रानी सगर्भा थी, उसके पुत्र होगा तो उसको मैं मार डालूंगा ऐसी राक्षस की इच्छा थी । दैवयोग से पुत्री का जन्म हुआ । उसका नाम चन्द्रमुखी रखा, अब उसका भविष्य क्या है यह मैं नहीं जानती । जो कोई भी नगर में प्रवेश करता है उसको राक्षस मार डालता है ।'

तोती के मुख से सारा वृतांत सुनकर श्री 'श्रीचन्द्र' नगर में गए । राजकुमार ने सारे राजमहल को देखा, बाद में राज-सभा में आकर कोमल वस्त्र से ढ़के हुये तथा घूमते हुये पलंग को देखकर अनुमान लगाया कि यह राक्षस का ही पलंग होगा, अपनी शरीर की थकान को दूर करने के लिये श्रीचन्द्र आत्म रक्षक नमस्कार मंत्र से शरीर की रक्षा कर पलंग पर निर्भयता से सो गये । नगर में मनुष्य के पद चिन्हों को देख कर राक्षस बहुत क्रोधित हुआ । उसी समय महल में आया, पलंग में आराम से सोते हुये श्रीचन्द्र को देखकर मन में सोचने लगा—

'अद्भुत वीररस से युक्त और अत्यन्त तेजस्वी यह कौन है ? बडे धैर्य से मेरी शैया पर कौन सो रहा है ? यहां कैसे आया होगा ? किस प्रकार सो गया होगा ? क्या इसको उठा कर समुद्र में फेंक दूं ? या तलवार से टुकडे २ कर दूं या दंड से पलंग सहित इसका चूरा कर दूं ? केसरीसिंह की जगह सियाल किस प्रकार रह सकता है ? 'हे दुष्टात्मा ! तूं जल्दी से खड़ा हो जा, तूं मेरे से डरता क्यों नहीं ?'

राक्षस की धमकी से श्रीचन्द्र ने जागृत होकर कहा कि 'तुझे

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

क्या काम है ? नकली आडंबर युक्त तूं कौन है ? क्या तेरे पुरुषार्थ का तुझे गर्व है ? अपना विशाल पेट और अपनी भयंकर आंखें किसे दिखा रहा है ? तुझे अपने क्रूर कर्मों से अभी भी तृप्ति नहीं हुई है ? पलंग पर मैं अपनी शक्ति तथा सत्व से बैठा हूँ। जैसे-तैसे बोलते हुये तेरे में सज्जनता नहीं दिखाई देती। सदाचारी सुशीला रानियों को तूने क़ैद कर रखा है, अगर तुझे ठीक तरह रहना हो तो रह नहीं तो इसी क्षण रवाना होजा। तू शस्त्र से युक्त है और मैं शस्त्र विना का हूँ। तू मनुष्य नहीं है इसलिये तुझे मारता नहीं हूँ।'

श्रीचन्द्र के अचिंत्य प्रभाव से अपना तेज खतम हो गया है ऐस जानकर राक्षस ने शांत होकर कहा कि, "मैं तेरे साहस पर तुझ से सन्तुष्ट हुआ हूँ, इसलिये तूं कुछ भी मांग।' श्रीचन्द्र ने मजाक से कहा कि, 'मेरे नेत्रों की शान्ति के लिये मेरे पैर के तलुवों की दोनों हाथों से मालिश कर।' सर्व लक्षण संपन्न जानकर राक्षस ने चरण स्पर्श किये ही थे कि जल्दी से राक्षस के दोनों हाथों को अपने हाथों में ले बड़े विनय से श्रीचन्द्र ने नमस्कार किया। राक्षस श्रीचन्द्र के चरणों में झुक पड़ा। उन्होंने आपस में जो कुछ कहा था उसके लिये क्षमायाचना की और बहुत प्रसन्नता अनुभव करने लगे।

श्रीचन्द्र ने राक्षस से कहा कि, अगर तुम सचमुच मुझ पर प्रसन्न हो तो आज से प्राणी वध के पाप को छोड़ दो और धर्म वुद्धि को ग्रहण करो। राक्षस ने अति हर्ष से यह बात स्वीकार की। धर्म का दान करने वाले परम उपकारी जानकर सविशेष संतुष्ट होकर राक्षस ने

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कहा कि 'हे धीर पुरुष ! इस राज्य का तुम उद्धार करो। राक्षस ने रानियों से कहा कि, 'हे रानियों ! तुम्हारे और मेरे भाग्य से कोई पुण्यात्मा यहां आयी है।

आज से तुम मेरी बहनों के समान हो, मेरे दुष्ट वचनों को जो कि मैं पहले बोल चुका हूं उसे तुम क्षमा करदो। मैंने इस व्यक्ति को महात्मा, धीर तथा गंभीर पुरुष जानकर यह राज्य इन्हें अर्पित कर दिया है।

तब श्रीचन्द्र ने कहा कि 'हे माताओं ! आपके कुल में इस राज्य को संभाल सकने वाला कोई है ?' रानियों ने कहा कि 'हे वत्स ! जो कुछ राक्षस ने कहा है उसमें हम सहमत हैं।' गुणवती रानी ने कहा कि मेरी पुत्री चन्द्रमुखी को तुम ग्रहण करो। श्रीचन्द्र ने कहा कि 'आप लोग अज्ञात कुल शील वाले को कन्या क्यों सौंप रहे हैं।' इतने में राक्षस ने अपनी शक्ति द्वारा हाथियों, घोड़ों तथा सेना लोगों आदि को वहां प्रगट कर दिया तथा कन्या को भी ले आया। श्रीचन्द्र ने कहा कि हे राक्षस राज ! मुझे कन्या क्यों सौंप रहे हो ? तुम्हें योग्य जानकर ही कन्या दी है, ऐसा राक्षस ने जवाब दिया।

श्रीचन्द्र ने अपनी अंगूठी बतायी, नाम जानकर सबको बहुत खुशी हुई। राक्षस ने श्रीचन्द्र का नगर में राज्याभिषेक करके उसकी आज्ञा का विस्तार करके कहा, जिस पापी ने मेरे पास चोरी का माल रख कर मुझे मरवाया था उस वज्रखुर चोर को मैंने मार दिया है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

"हे राजन् ! कुंडलगिरि के मुख्य शिखर के मध्य में रत्न और सुवर्ण से भरपूर उसका महल है उसे तुम ग्रहण करो। राक्षस के वचन को स्वीकार कर श्रीचन्द्र ने वहां जाकर सब वस्तुओं को ग्रहण करलीं।

उस महल के स्थान पर देवलोक से भी अद्भुत चन्द्रपुर नाम का एक नया नगर बसाया। उसके मध्य भाग में राक्षस के मन्दिर में चोर के शरीर के ऊपर राक्षस की प्रतिमा को स्थापित कर उसका नाम नरवाहन रखा। उसके बाद कुन्डलपुर नगर में आकर कुन्डलेश्वर कुछ दिन ठहर कर सास, पत्नि, सेनापति, सैनिकों आदियों को हित शिक्षा देकर अपनी पादुका सिंहासन पर स्थापित कर श्रीचन्द्र जिस छिपे वेश में आये थे उसी वेश में रात्रि के प्रथम पहर में आगे के लिये प्रयाण कर गये।

अनुक्रम से महेन्द्रपुर के पास आए वहां रात्रि व्यतीत करने के लिये किसी वृक्ष के नीचे निद्राधीन हो गए, इतने में जिसने अवस्वापिनी विद्या से लोगों को निद्राधीन किया है ऐसा लोहखुर चोर चोरी करके भार से व्याकुल हुआ वहां आया और कहने लगा 'हे अवदूत ! इस भार को तू उठा ले मैं तुझे जमदूरी दे दूंगा। सत्त्ववानों में सिंह के समान श्रीचन्द्र उस भार को उठा कर चोर के पीछे २ चले। लोहखुर ने एक गुफा में प्रवेश किया। गुफा के अन्दर भूमि में दीपों से देदीप्यमान रत्न और एक स्त्री थी। उस स्त्री को लोहखुर ने कहा इस पुरुष का तूं आदर सत्कार कर।

स्त्री ने कहा हे स्वामिन ! भोजन आदि करके मेरे साथ खेलो।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

आश्चर्य से इन सब बातों को कपट जाल समझ कर श्रीचन्द्र ने उस स्त्री को बाहर खेंचा और क्रोधित होकर पूछा, "यह कौन है, और तू कौन

'स्त्री ने भयभीत होकर कहा यह लोहखुर चोर है और मैं इसके संकेत से इसकी पुत्री हूँ। लोहखुर को शिक्षा देकर और बाद में खुश होकर उस स्त्री को छुड़ा कर चोर को छोड़ दिया और रात्रि कहीं और जाकर व्यतीत की।

प्रातःकाल अरिहंत भगवान का स्मरण करके महेन्द्रपुर नगर में प्रवेश किया। नगर में जाकर किसी सेठ की दुकान पर बैठ गये। उसी समय पटह बजने की आवाज सुनाई दी। इस पटह को बजते ६ महिने में ६ दिन कम है जो कोई व्यक्ति राजकन्या को देखती करेगा उसे निश्चय ही कन्या और राज्य मिलेगा। जिस प्रकार तोता रटी हुई बात बोलता रहता है उसी प्रकार सब बातें वह पटह वाला बोल गया। श्रीचन्द्र ने उसी समय पटह को स्पर्श किया पटह वाले ने यह हकीकत राजा से कही। राजा ने बड़ी खुशी से अवदूत को छत्र, चामर, हाथी आदि सहित ले आने का आदेश दिया।

राजमहल में आकर राजा के दिये हुए आसन पर अवधूत बैठा त्रिलोचन राजा ने पूछा हे भद्र! तुम कहां के रहने वाले हो? श्रीचन्द्र ने कहा महाराज मैं कुशस्थल में रहता हूं। राजा ने कहा आपके चरण कमल आज मेरे नगर में पडे हैं मेरा अहो भाग्य है। पटह के अनुसार कन्या को देखती करके आधा राज्य स्वीकार करो। श्रीचन्द्र ने कहा यह तो ठीक है गुरुदेवों के प्रताप से मेरे पास विद्या, मंत्र और कुछ औषधियां हैं परन्तु कन्या को दिखाओ तब कुछ हो सके।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

राजा ने कन्या को बुलवाया। अवदूत ने कहा सभा को चारों तरफ से पवित्र करो ! बाद में कन्या को पर्दे के पीछे बिठा कर विज्ञान चिकित्सा करके कन्या के नेत्रों में अमृत संजीविनी वेल का रस डाल कर तथा और भी क्रिया कान्ड करके वहीं अपना असली वेश धारण कर नमस्कार महामन्त्र का ध्यान करने के लिये बैठ गये। जब तक रस सूखे तब तक पूजा आदि क्रिया करते रहे। अमृत संजीवी औषधि के प्रभाव से कन्या के नेत्र कमल जैसे हो गये। कुमार इन्द्र की तरह पूजा कर रहा था। अलौकिक आभूषणों से भुषित, सूर्य के समान तेजस्वी कुमार के मस्तिष्क को देखकर कन्या श्री अरिहंत भगवान को नमस्कार करके बहुत ही खुश हुई। श्रीचन्द्र ने कहा हे भद्रे ! तुझे अच्छी तरह दिखाई दे रहा है ? मेरी अंगूठी में क्या नाम है पढ़।

उसे पढ़कर बड़ी प्रसन्नता से सुलोचना ने श्रीचन्द्र की प्रशंसा करते हुए कहा कि 'हे प्राण जीवन ! पहले मुझे पिताजी ने आपको दी थी, अब मैं हृदय से आपका वरण करती हूँ। अंगूठी से नाम की जानकारी हुई तथा आचार से कुल पहचान गई हूँ।'

उसके बाद श्रीचन्द्र ने अद्‌भुत रूप बदल कर अपना पुराना अवदूत का वेष पहन, भस्म आदि लगाकर बाहर राजा के पास आए। राजा ने पूछा, नेत्र ठीक हो गये हैं ? राजकुमार ने कहा हां नेत्र बहुत सुन्दर हो गये हैं अब राजकुमारी सचमुच सुलोचना है।

त्रिलोचन राजा ने सुलोचना को अपनी गोदी में बिठाया, सब को बहुत आनन्द हुआ। राजा ने पुत्र जन्म जैसा महान महोत्सव किया।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

बाद में अंतपुर में खबर भिजवाई । सुलोचना को देखकर सबको आनन्द हुआ । अवदूत को बड़े आदर सत्कार से भोजन करने महल में भेजा जहां छत्तीस प्रकार का स्वादिष्ट भोजन बनाया गया था ।

बाद में राजा ने मंत्रियों को बुलाकर सलाह दी कि हम अगर अवदूत को कन्या देते हैं परन्तु इसका कुल आदि तो हम जानते नहीं । तब मंत्री जहां अवदूत को ठहराया था वहां गये और पूछने लगे 'हे भद्र ! आपका नाम, कुल आदि क्या है यह तो बताओ ।

श्रीचन्द्र ने हंसकर कहा कि आप लोगों ने पूछा वह तो ठीक है परन्तु आपने तो पानी पीकर घर पूछने वाली कहावत को सत्य कर दिखाया । फिर भी सुनिये—

'मैं कुशस्थल में रहने वाले लक्ष्मीदत्त सेठ का पुत्र हूं । व्यसनी और हठवाला होने से पिताजी की गुप्त रीति से बहुत लक्ष्मी लेकर दूसरों को दे देता था, जिससे पिताजी ने मुझे बहुत समझाया पर मैं अपनी आदत से हटा नहीं । इसलिये उन्होंने मुझे घर से निकाल दिया ।

उसके बाद पृथ्वी घूमते हुए मुझे एक सिद्ध पुरुष मिले जिनकी मैंने बहुत सेवा की । उन्होंने सेवा से सन्तुष्ट होकर मुझे मन्त्र आदि दिये । उनको अब छोड़कर मैं यहां आया हूं । धन के बिना जुआ खेला नहीं जा सकता इसलिये मैंने पटह को स्पर्श किया । सारी बातें मन्त्रियों ने राजा से कही । यह भी कहने लगे कि सारा धन उसकी इच्छानुसार जुए में जायेगा इससे हमें तो बहुत चिन्ता होने लगी है । राजा भी चिन्तातुर हो गया । कहने लगे कि ऐसे जुआरी को कन्या

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कैसे दें। अगर कन्या न दें तो मेरा वचन जाता है और वचन के सामने धन, राज्य और प्राण भी तुच्छ है।

बाद में जिस अंतःपुर में नृत्य, गान आदि हो रहे हैं वहां राजा आया। सुलोचना ने पिता को देखकर कहा कि आपके चेहरे पर हर्ष के स्थान पर विषाद क्यों? राजा ने सारी हकीकत रानी आदि से कही सब चितातुर हो गये, तब सुलोचना ने हस कर कहा कि वह पुरुष ऐसा नहीं है, यह तो वाणी की विचित्रता है। जो रूप उसने पर्दे के पीछे देखा था उसका वर्णन किया और जो अंगूठी पर नाम पढ़ा था वह बताया। कुल और पिता का नाम बताया। तब तो राजा को बहुत खुशी हुई। राजा ने राजसभा में जाकर ज्योतिषी को बुलबाकर लग्न मुहूर्त निकलवाया।

राजा ने श्रीचन्द्र को बुलवाने जितनी देर में भेजा उतने समय में तो श्रीचन्द्र वहां से रवाना हो गये थे। मंत्री ने आकर कहा कि महाराज श्रीचन्द्र तो कहीं भी दिखाई नहीं दिये। बाद में व्याकुल राजा ने अंतःपुर, महल, नगर आदि सब जगह खोज करवायी पर श्रीचन्द्र तो कहीं नहीं मिले। जिससे सुलोचना मूर्छित हो गई। शीत उपाय करने से होश आया राजकुमारी रुदन करती तथा दूसरों को रुलाती हुई रात्रि व्यतीत करती है। वह न बोलती है, न खाती है, न पीती है। उसके दुःख के कारण दूसरे लोग भी भोजन नहीं करते। मंत्रियों की समझ में भी नहीं आता कि अब क्या किया जाय। एक बार राजा ने कुशस्थल से आने वाले यात्रियों से श्रीचन्द्र के समाचार

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पूछे उन्होंने कहा कि लक्ष्मीदत्त सेठ के पुत्र श्रीचन्द्र बहुत गुणवान तथा रूपवान हैं। हमारे सेठ के जमाई भी हैं उनकी अंगुली में उनके नाम की हीरे की अंगूठी पहनी हुई है। धन सेठ की पुत्री धनवती के पति है, मैं उन्हीं सेठ का नौकर हूँ। जब ये सारी बातें सुलोचना ने सुनी तो कहने लगी कि वही श्रीचन्द्र थे। त्रिलोचन राजा ने कहा पुत्री वही तेरे पति हैं मैं अभी कुशस्थल के राजा प्रतापसिंह के पास मंत्रियों को भेजता हूँ कि वे श्रीचन्द्र को भेजें। तब सुलोचना ने भोजन किया।

सूक्ष्म बुद्धि वाले चतुर श्रीचन्द्र ने अग्रदूत का वेष तो किसी को दे दिया और बटोही का वेष पहन कर घुमते घामते किसी बड़े वन में पहुंचे। कमलों से युक्त निर्मल पानी वाले, चक्रवाक आदि पक्षियों से भरपूर एक बड़े सरोवर को देखकर वहां सूर्यवती रानी के पुत्र ने स्नान किया, स्नान करकें श्रीचन्द्र बाहर आकर कुंड की पाल से आ रहे थे कि दूसरी तरह एक उद्यान दिखाई दिया। उसमें एक तरफ आश्रम था, दूसरी तरफ घोड़े, हाथी और कितने ही स्त्री पुरुषों को देखा। कितनों को आश्चर्यकारी वेष पहने हुए देखकर सोचनें लगे कि ये लोग अवधूत, तापस हैं या योगी हैं। सोचने के बजाय वहां जाकर ही पूछूं।

आम्रवन में प्रवेश करके, बीच में अद्‌भुत कान्ति वाले, तरह २ के वेष धारण किये हुये तापस कुमारों को देखा। चारों तरफ चन्द्रमा के समान देदीप्यमान मोर के पंखों की पादुकायें पड़ी थीं। पास ही में झूले पर झूलती हुयी एक कन्या जो कि पुरुष वेष में थी, देखी। सुवर्ण

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

के आभूषणों से जिसका अंग विभूषित है। जिसका मुख कोमल है ऐसी दुसरी कन्या को उसके आस पास घूमते देखा। श्रीचन्द्र को आये हुये देखकर तापसकुमार ने कहा, हे सखी! तेरे सौन्दर्य से आकर्षित यह पुरुष आया इसका फल फूल देकर आदर करो।

सखी ने आदर पूर्वक कहा, 'हे बटुक इस रायण वृक्ष के नीचे बैठो।' सखी फल लाकर देने लगी, बटोही ने ऊपर से ही फल ले लिये और पूछने लगा तुम कौन हो और यह कौन है? इतने में एक सुन्दर बाला गाती हुई आयी, सर्व कलाओं से युक्त चन्द्रकला राजकन्या ने जिसे स्वयंपरख कर स्वीकार किया है ऐसे श्रीचन्द्र जय को प्राप्त हों। ऐसा सुन कर श्रीचन्द्र पूछने लगे, ये क्या बोलती है? वह कौन है? और यह कौनसा स्थान है? इतने में ही एक श्वेत वस्त्रधारी विधवा वृद्धा ने उस पुरुष वेषधारी कन्या को स्त्री वेश दिया।

वृद्ध स्त्री ने बटुक से पूछा, 'हे भद्र! तुम कहां से आये हो? बटुक ने कहा, 'मैं कुशस्थल से आया हूँ।' यह सुनकर सबको बहुत आनन्द हुआ। उन लोगों ने यह समाचार दूसरों को भी पहुँचा दिया, जिससे दूसरे सारे लोग बटुक के चारों ओर आकर बैठ गये। भ्रान्ति से बाला ने पूछा चन्द्रकला का पति कौन हुआ? उसका वर्णन करो। श्रीचन्द्र ने कहा वह बाला गाती २ आयी है वह सत्य है, लक्ष्मीदत्त श्रेष्ठी के पुत्र से शादी हुई है।' कुशल बुद्धि वाले श्रीचन्द्र ने फिर उस वृद्धा से पूछा कि हे माता! आप यहां कैसे आयी हुयीं हैं आदि वृतान्त कहने योग्य हो तो कहो।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वृद्ध स्त्री ने कहा, 'हे वत्स !' वसतपुर में वीरसेन राजा था। उसके वीरमती और वीरप्रभा दो रानियां थीं। हम दो बहनें थीं। पहली जयश्री जो प्रतापसिंह राजा की रानी है और दूसरी मैं हूँ। मेरा दुसरा नाम विजयवती है। वीरसेन राजा के सदामति मंत्रि है, वह मेरा चाचा लगता है। वीरप्रभा के नरवर्मा पुत्र हुआ। वह शस्त्र और शास्त्र में प्रवीण हुआ। वह बहुत ही बलवान हुआ। बहुत समय पश्चात् चन्द्र के रुप को भी मात करके ऐसी चन्द्रलेखा नाम की मेरे पुत्री हुई। उसकी यह सखियें हैं। बाद में मुझे वीरवर्मा नामका पुत्र हुआ। वह पांच वर्ष का हुआ, उसके बाद राजा को बहुत भयंकर कालज्वर हो गया। वीरसेन ने वीरवर्मा को सदामति की गोद में बिठा कर कहा, मेरा राज्य इस कुमार को देना, बाद में राजा की मृत्यु हो गयी। नरवर्मा ने बल पूर्वक राज्य को अपने हाथ में ले हमें वहां से निकाल दिया।

हम लोग अपने पिता के नगर को जा रहे थे तो रास्ते में किसी नगर के उद्यान में ठहरे। सदामति मंत्री ने देखा कि नगर से कोई ज्योतिषी आ रहा है, उसे मान पूर्वक मेरे पास ले आया। उसकी गोदी में चन्द्रलेखा को बिठा कर मैंने सारी हकीकत कही और पूछा कि पुत्री का पति कौन होगा और कब आयेगा ? कुछ क्षण सोच कर ज्योतिषी ने कहा कि, चन्द्रलेखा का एक महान पति होगा, राजा प्रतापसिंह का पुत्र जो चन्द्रकला से ब्याहा है, वह ही तुम्हारी पुत्री का पति होगा। एक श्लोक लिख कर दिया और कहा कि, 'तुम खादिखन में जाओ, वहां रायण वृक्ष है जिस पर दूध झराये बस उसी को

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तुम चन्द्रलेखा का पति मानना श्लोक पत्र लेकर उसका सत्कार कर हम यहां आये हैं।

चन्द्रलेखा कभी अपने वेष में कभी पुरुष वेष में सखियों के साथ तरह २ क्रीड़ा करती हुई रहती है। श्रीचन्द्र ने सोचा मुझे यहां नहीं रहना चाहिये। ऐसा सोचकर ज्योंही खड़े हुये त्योंही रायगा वृक्ष में से दूध झरने लगा। जिस प्रकार बहुत समय पश्चात् पुत्र मिलने पर माता के नेत्रों में से अश्रुधारा बहने लगती है वही हाल उन सब लोगों का हुआ और उन्होंने बड़े आनन्द से कहा कि, चन्द्रलेखा को पति प्राप्त हो गया।' लज्जा से चन्द्रलेखा का सिर झुक गया। माता के आदेश से पति को पुष्पों की माला पहना कर, अनेक प्रकार के फलों से भक्ति की। बाद में श्रीचन्द्र ने अपने नाम की अंगूठी दिखलाई।

चन्द्रलेखा के हस्तमिलाप के समय सास ने विष को हरने वाली मणी दी। रानी वीरमती ने अपने पुत्र को श्रीचन्द्र की गोद में बैठा कर कहा कि इस कुमार को भी अपने जैसा उदार, वीरों में शिरोमणी बनाना। सास के वचन को स्वीकार कर प्रतापसिंह राजा के पुत्र ने कहा कि 'हे माता! उसी प्रकार का होगा, धीरज रखो। भविष्य में जो होगा अच्छा ही होगा। आप मंत्री सहित कुण्डलपुर जाकर सुख से रहो।

मुझे अभी आगे जाने की चिन्ता है इसलिये मुझे आज्ञा दीजिये। ऐसा कहकर कुन्डलपुर के मन्त्री के नाम पत्र लिखकर सदामती मंत्री को दिया। कुछ दिन वहां ठहर कर पहले के ही वेष में आगे प्रयाण

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कर गये। वीरमती पुत्र, मंत्री आदि सहित कुन्डलपुर नगर जाते हुए क्रमशः महेन्द्रपुर नगर में आई। वहां के राजा ने जब सुना तो उन सबको राज सभा में बुलाकर उनसे सारा वृतांत सुना। सुलोचना और चन्द्रलेखा दोनों के सम्बन्ध बहनों जैसे हो गये। सब को बहुत आनन्द हुआ। इतने में ही एक भाट कुन्डलपुर नगर की तरफ से होकर आया था, वह श्रीचन्द्र के गुण गाने लगा।

'जिसने राधावेध में विजय प्राप्त की, तिलकमंजरी ने जिसे वरमाला पहनाई, सिंहपुर के राजा की पद्मिनी पुत्री से जिसकी शादी हुई जो प्रतापसिंह राजा का पुत्र है जिसका कुंडलपुर में वास स्थान है इत्यादि तरह २ के उसने श्लोक बोले। राजा के पुत्र ऐसे श्रीचन्द्र का चरित्र सुन कर सबको बहुत आनन्द हुआ। सुलोचना द्वारा राजा ने आग्रह पूर्वक वीरमती को यहीं रहने का कहलाया परन्तु वे नहीं रहे और कुन्डलपुर के लिये प्रस्थान कर गये।

उधर आगे जाते हुए श्रीचन्द्र ने नगर के बाहर तंबू, घोड़े, हाथी, रथ तथा सुन्दर २ वेष वाले सैनिकों को देखा। वहां दान दिया जाते देख श्रीचन्द्र ने किसी व्यक्ति से पूछा 'ये सब क्या हो रहा है?' उसने कहा हे बटुक! यह कपिलपुर नगर है। यहां के राजा का नाम जितशत्रु है उसके प्रीतिमती नाम की पटरानी है और वह रतिरानी की बहन होती है। उनका पुत्र कनकरथ मित्रों के साथ अभी राधावेध का अनुकरण कर रहा है। एक समय गायकों में शिरोमणी वीणारव ने कभी भी नहीं सुना हुआ श्रीचन्द्र राजा का चरित्र सुनाया। यह सुनकर

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जितशत्रु राजा ने उसे खुश होकर बहुत इनाम देना चाहा परन्तु वीणारव ने कहा कि मेरे हाथ श्रीचन्द्र राजा के दान से बंध गये हैं, जिससे अब मैं दान नहीं ले सकता।' उसके जाने के बाद रतिरानी की पुत्री तिलकमंजरी का जिस प्रकार राधावेध हुआ था ये लोग उसी प्रकार से नाटक कर रहे हैं।

पिंगल भाट ने कहा 'लौकिक मिथ्यात्व दो प्रकार के हैं, देवगत और गुरुगत। लोकोत्तर मिथ्यात्व भी देव और गुरु दो प्रकार का है। इस प्रकार चारों प्रकार के मिथ्यात्व का जिसने श्री सुव्रत मुनि के मधुर वचनों को सुनकर त्याग किया ऐसे श्रीचन्द्र जय को प्राप्त हों। नाटक देखकर कनकवती हर्ष को प्राप्त हुई। श्रीचन्द्र पर मोहित हुई राजपुत्री ने धायमाता से कहा कि यह श्रीचन्द्र की आकृति चित्त को हरने वाली है तो वे साक्षात कैसे अद्भुत महिमा वाले होंगे। इससे श्रीचन्द्र ही मेरे पति हों। उसकी तीन सखियें मंत्री की पुत्री प्रेमवती, सार्थवाह की पुत्री धनवती, सेठ पुत्री हेम श्री ने भी श्रीचन्द्र को ही अपना पति धारण कर लिया। धायमाता ने सारा हाल राजा से निवेदित किया जिससे राजा ने मंत्री को कुशस्थल भेजा है।

पृथ्वी के इन्द्र श्रीचन्द्र ने इन सब बातों को सुनकर सोचा कि मेरे यहां रहने से मुझे यहां के लोग पहचान जायेंगे इस कारण अब मैं नगर को देखते हुए शीघ्र ही आगे के लिये रवाना हो जाऊं। ऐसा विचार कर नगर को देखते हुए वे बहुत दूर निकल गये।

आगे जाकर यक्ष के मंदिर में एक पुरुष को चिंतातुर बैठा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पाया। उसे देखकर श्रीचन्द्र ने पूछा यह कौनसी नगरी है? तुम्हें क्या चिन्ता है? निश्वास डालकर वह बोला हे मुसाफिर! यह कान्ति नामक नगरी है। इसमें नरसिंह राजा के चौसठ कला युक्त सुन्दर प्रियंगुमंजरी पुत्री है। उसे प्राप्त करने की मुझे चिन्ता है। मैं कौन हूँ, अब यह सुनो। नैऋत्य दिशा में हेमपुर नगर में है वहां मकरध्वज राजा के मदनपाल नामक पुत्र था। युवावस्था को प्राप्त हुआ वह राजकुमार एक बार गवाक्ष में बैठा हुआ था। उसने रास्ते में जाती हुई एक योगिनी को देखा और अपने पास बुलाकर पूछने लगा आप कुशल तो हैं? कहां से आई हैं और कहां जा रही हैं? कोई अद्भुत घटना हो तो सुनाओ।

योगिनी ने कहा 'जरा के आगमन से यौवन नष्ट हो जाता है। दिन प्रतिदिन कान्ति घटती जाती है। इसलिए हे भद्रिक! कुछ न पूछो बुढ़ापा जब आता है तो यौवन स्वप्न मात्र रह जाता है। प्रति क्षण हानि, बहुत ही हानि हो रही है। जब तक काल राजा का आगमन नहीं होता तभी तक यौवन शोभा देता है। इसलिए हे भद्रिक! कुशल न पूछ। कोई एक घड़ी और कोई दो पहर खुशी के मानता है तो मूर्ख है। जब तक जीव यमराज को भूला हुआ और उस पर दृष्टि नहीं रखता तब तक ही जीव खुश हैं। बुढ़ापा सबको आकर पकड़ लेता है।

जो पूर्ण रुप से सुखी होते हैं वे जन्मते ही नहीं। जो जन्मते हैं वो मृत्यु को अवश्य प्राप्त होंगे। हम भी मृत्यु के मुख में बैठे हुए हैं। जब

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

तक यह मुंह बन्द नहीं होता तब तक ही हम हैं। जब मृत्यु आनी है तब सुख किस बात का। चार गतियों में चौरासी लाख योनियों में घूमते २ यहां आए हैं। जो जहां जन्म लेता है वहीं पर मन को वश में करे या करने का प्रयत्न करे तो वो मोक्ष को प्राप्त करता है। जो व्यक्ति आत्मा के अन्दर रहे हुए गुणों का विचार करता है वह अद्भुत वस्तु को प्राप्त करता है वह अद्भुत वस्तु को प्राप्त करता है। लडकपन, यौवन, बुढ़ापा आता है बाद में शरीर के अंग प्रत्यंग नाश को प्राप्त होते हैं।

स्वामी सेवक बन जाता है तो उसका स्वामित्व नष्ट हो जाता है। इस प्रकार बाह्य और अंतर की बातें करके, मैं श्री जिनेश्वर परमात्मा की कृपा से कुशल हूँ। मैं कान्तिपुर से आई हूँ और कुशस्थल को जा रही हूं। यह मेरे पास जो चित्र है उसे देखो ऐसा योगिनी ने कहा। चित्र में एक अपूर्व, अद्भुत रुप को देखकर मदनपाल ने पूछा कि यह किसने अद्भुत स्त्री का चित्र चित्रण किया है? योगिनी ने कहा कि, "कान्तिपुर के नरसिंह राजा की पुत्री प्रियंगुमंजरी राजकुमारी के चित्र का चित्रण किया गया है।"

प्रियंगुमंजरी गुणंधर पाठक के मुख से श्रीचन्द्र के रुप का वर्णन सुनकर उनपर आसक्त हो गई हैं। उसी का यह चित्रपट वहां देने के लिए मैं जा रही हूं। मदनपाल ने चित्र को लेने के लिए बहुत मेहनत की परन्तु उसने दिया नहीं और योगिनी जल्दी से निकल गई। मदनपाल कामज्वर से पीड़ित हो गया और दिन-प्रतिदिन उसके शरीर

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

की कान्ति नष्ट होने लगी। मित्र ने यह हकीकत राजा को बताई जिससे राजा ने नरसिंह राजा से कन्या की मांगनी की परन्तु नरसिंह राजा ने यह बात स्वीकार नहीं की। मदनपाल से पिता ने कहा धैर्य रखो, इस कन्या से भी अधिक रुपवाली कन्या से मैं तुम्हारी शादी करुंगा।

वही मैं मदनपाल पिता से छुपकर यहां आया हूँ। मेरा मन प्रियंगुमंजरी के रुप से आकर्षित है। जिस प्रकार केतकी की सुगंध से भ्रमर आकर्षित होता है उसी प्रकार मुझे वहां शान्ति नहीं मिली इस लिए मैं यहां आया। पहले मैं राजा के बगीचे के आरामगृह में रहा था, तब मैंने मालिन से कहा था कि, हे भद्रे! राजकन्या को मेरा संदेशा कहो कि हेमपुर राजा का पुत्र तुम्हारा चित्र देखकर तुम्हारे पर मोहित हुआ है और तुम्हारे शहर में आया है। मेरा रूप, कला आदि सबका वर्णन राजकुमारी से करना और अत्यन्त सुख वाली राजकुमारी मुझ पर अनुराग वाली हो ऐसा प्रयत्न करना इस प्रकार समझा कर मालिन को मैंने बहुत धन देकर भेजा। प्रियंगुमंजरी ने कहा उसकी बुद्धि की परीक्षा तो करें। बाद में विचार कर कनेर के पुष्पों के ढ़ेर में से लाल रंग का फूल लेकर कान पर रखकर मालिन को देखते हुए फेंका। बाद में कमल को लेकर कुमकुम से रंग कर, उसे बड़े प्रेम से देखकर, हृदय पर धारण करके कहा कि, हे मुग्धे! उसके पास जा और उससे उत्तर ला।

मालिन ने सारा वृतांत मुझे सुनाया, परन्तु मैं उसका उत्तर

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

नहीं दे सका, इसलिये अब मैं क्या करुं ? कहां जाऊं ? इसकी चिन्ता में हूं। प्रियंगुमंजरी हमेशा इस कामदेव के मंदिर में आती है। यहां रहने से किसी समय मिलाप हो सकता है, परन्तु प्रतिहारियें मुझे मारकर बाहर निकाल देती हैं। हे सुन्दर ! यह दुख है मुझे।

ये सुनकर श्रीचन्द्र मदनपाल के ऊपर दया लाकर सोचने लगे कि गुणंधर गुरु पहले यहां आये थे, अहो ! यह कन्या कितनी बुद्धिमति है। फूल द्वारा अपने भाव प्रदर्शित किये हैं, 'लाल पुष्प से तूं स्वयं रक्त है ऐसा मैंने कान से सुना है, परंतु मैं देख भी नहीं सकती और स्थान भी नहीं दे सकती इसलिये तूं अपना प्रयत्न छोड़ दे ऐसा दर्शाया है। श्वेत कमल दिखा कर उसने यह दर्शाया है कि विरक्त को मैंने रक्त किया है, मैंने कान से सुनकर हृदय में स्थापित कर लिया है ऐसा बताया है। परन्तु अपने आपको पंडित मानता हुआ यह इतना भी नहीं जान सका।

श्रीचन्द्र ने कहा अब तूं क्या करेगा ? मदनपाल ने कहा, मैंने प्रियंगुमंजरी को देखा है, परन्तु उसने मुझे नहीं देखा। हे मित्र ! मेरा कार्य किस प्रकार सिद्ध होगा ? आप परोपकारी लगते हैं इसलिये आप बतावें कि मैं क्या करुं ? इतने में तो शंख ध्वनि सुनकर, इसलिये यहां से चले चलो, मदनपाल ने कहा। दोनों ने उद्यान में से राजकुमारी को सखियों से युक्त कामदेव के मंदिर में प्रवेश करते हुये देखा वहां वे सब मृदंग, वीणा, नृत्य गीत आदि में मस्त हो गई।

कुछ समय बाद वहां एक स्त्री ने जिसके कपड़े धूल से भरे हुए

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

थे, मंदिर में प्रवेश किया, उसी क्षण नृत्य, संगीत आदि बंद हो गया, क्षण में रोने की आवाज आने लगी और रुदन करती हुई सखियें बाहर आयीं। एक सखी से मदनपाल ने पूछा कि भद्रे ! गीत के स्थान पर रुदन क्यों शुरु होगया ये तो बताओ। सखी ने कहा मुझे समय नहीं है। किसी की तो दाढ़ी जल रही है और कोई दीपक जला रहा है। इतने में दूसरी सखी ने कहा कि हे बहन जल्दी केले के पत्ते लाओ, स्वामिनी मूर्छित हो गई हैं।

बुद्धिशाली सखी ने कहा कि पहले अपनी स्वामिनी ने कुशस्थल एक सखी को श्रीचन्द्र का अपने ऊपर कितना प्रेम है यह जानने के लिये भेजा था, परन्तु श्रीचन्द्र वहां हैं नहीं जिससे हमारा कार्य सिद्ध नहीं हुआ। उस दुःख से राजकुमारी विलाप करती मूर्छित हो गई है। अब क्या होगा पता नहीं। ऐसा कहकर अन्दर चली गई। बाद में सब लोग नगर में चले गये। —

सूर्यवती के पुत्र श्रीचन्द्र ने विवाह की इच्छा वाले मदनपाल को कहा कि फालतू में तुम अपना राज्य छोड़ घूम रहे हो। अगर इसके बिना तू नहीं रह सकता है तो जैसे मैं कहूँ वैसा कर, परन्तु तेरे कार्य की सिद्धि धन द्वारा होगी, धन बिना सब निष्फल है। अब किस प्रकार से तेरा कार्य सिद्ध हो सकता है उसे सुन। सखी ने अभी कहा कि कुशस्थल से श्रीचन्द्र देशान्तर गए हुए हैं, तो उसके आधार एक प्रपंच करें। तूं तो श्रीचन्द्र बन और मैं तेरा सेवक बनता हूं। नगर में जाकर किसी को द्रव्य देकर एक मकान खरीद कर वहां गरीबों को

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दान देना जिससे तेरी प्रसिद्धि हो जायेगी।

उसकें बाद जो योग्य होगा मैं करूंगा। जिससे राजा को खबर पहुंचेगी कि कुशस्थल से गुप्त रीति से श्रीचन्द्र आए हैं बाद में तो कर्म की शक्ति बलवान है। यह सुनकर तो मदनपाल बहुत ही हर्षित हुआ। इस प्रकार दोनों ने निश्चय किया। ऊपर की मंजिल पर मदनपाल श्रीचन्द्र बन कर रहता है और द्वार पर श्रीचन्द्र जो योग्य समझता है करता है। उसके बाद एक दिन राजा को समाचार मिले कि श्रीचन्द्र यहां आए हुए है तब राजा बहुत खुश हुआ। श्रीचन्द्र ने मदनपाल से कहा कि अब तू मुनि की तरह मौन रहना।

उसके बाद श्रीचन्द्र ने अपने चातुर्य से राजा कन्या और मंत्रि को खुश किया। राजा ने बहुत ही मुश्किल से उसे शादी के लिये मनवाय शादी में देर नहीं करनी चाहिये। दूसरे ही दिन गोधुलिक समय लग्न पक्का हुआ। दोनों जगह शादी की तैयारियां होने लगीं। श्रीचन्द्र आये हैं ऐसा जानकर लोगों ने नगर को बहुत सुन्दर ढंग से सजाया। शादी के दिन मदनपाल एक झरोखे में बैठा है उसी समय मार्ग से जाती हुई पनिहारियों की बातचीत उसने सुनी, हे बहन तूं आज जल्दी २ क्यों जा रही है? जवाब मिला कि हे सखी क्या तू नहीं जानती? प्रियंगुमंजरी और श्रीचन्द्र दोनों गुणधर पाठक से पढ़े हैं। राजकुमारी पद्मिनी के लक्षणों की गोष्ठी करके फिर शादी करेगी, वहां बहुत आनन्द आयेगा।

यह सुनकर मदनपाल को चिंता हुई। वह श्रीचन्द्र से पूछने

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लगा हे मित्र अब क्या करेंगे ? श्रीचन्द्र ने कहा कि पद्मिनी आदि स्त्री के चार भेद मैं जानता हूँ इसलिये तूं लिख कर उन्हें याद कर ले जिससे तेरा कार्य सिद्ध हो जायेगा। नहीं याद करेगा तो सब कुछ निष्फल हो जायेगा। मदनपाल ने कहा कि अब पढ़ने का टाइम ही कहां है ? 'आग लगे तब कुआ खोदने जाना' उसके अनुसार तुमने मेरे लिये बहुत मेहनत की है परन्तु मैं अभागी हूँ। अब मैं बताऊं वैसा करो। तुम मेरे से छोटे लगते हो परन्तु रूप में मेरे ही समान हो और जब तुम आभूषण पहनोगे तो बहुत सुन्दर लगोगे इसलिये तुम मेरा वेष पहन कर कन्या से शादी करके मुझे सौंप देना। जो काम तुम्हें भविष्य में करना था वह अभी कर लो। परोपकारी पुरुष याचना का भंग नहीं करते।

श्रीचन्द्र ने कहा अच्छा तुम्हारे कहे अनुसार करता हूँ। बाद में वेष बदल कर मदनपाल अपने रूप में और श्रीचन्द्र अपने वेष में शोभायमान होने लगे। वे दूसरों के वेष से नहीं अपने वेष से शोभ रहे थे। उनके सारे मांगलिक रीति रिवांज राज्य की स्त्रियों ने ही किये। श्रीचन्द्र ने स्वर्ण रत्नों से जड़ित मुकट धारण किया, कानो पर कुंडल व हाथ में अपने नाम की अंगूठी पहनी। देदिप्यमान राजा की भांति वे हाथी पर सवार हुए, ऊपर छत्र व दोनों तरफ चामर डुलनें लगे और बाजे बजाने वाले आगे चलने लगे। अनेक सैनिकों आदि के साथ वह जुलूस सारे शहर में फिरता हुआ राज्य सभा में आया।

भाट ने श्रीचन्द्र की जय जयकार की और कहा धनवती आदि

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

आठ कन्याओं के साथ विवाह करने वाले श्रीचन्द्र की जय हो। राजा ने तारक भाट को बहुत दान दिया। वरसिंह राजा ने श्रीचन्द्र को अपनी गोदी में बिठाया व अपनी पुत्री को चरणों के पास बिठाकर दोनों को परिचित करवाया। उसी समय प्रियंगुमंजरी ने कहा 'हे राजाओं के इन्द्र स्त्रियों के भेद लक्षण आदि बताओ।

श्री 'श्रीचन्द्र' ने कहा हे भद्रे! स्त्री के ४ भेद हैं १ पद्मिनी २ हस्तिनी ३ चित्रिणी ४ शंखिनी। प्रत्येक के ४-४ भाग होते हैं इस प्रकार १६ भेद हुए। १ कमल के गंध वाली २ हाथी के मद समान गंध वाली ३ चित्र विचित्र गंध वाली और ४ मगरमच्छ के गंध वाली होती है। १ शोभायमान मुंह वाली २ जिसकी चाल सुन्दर हो। ३ सुन्दर साथल वाली और सुन्दर स्तन वाली होती है। १ हंस के जैसी चाल वाली २ हथिनी की जैसी चाल वाली ३ हिरण जैसी चाल वाली ४ गधी की जैसी चाल वाली होती है। १ कोमल सुन्दर दांत वाली २ मोटे दांत वाली ३ छोटे दांत वाली ४ लम्बे दांत वाली होती है। १ चिकने, बारीक बालों वाली २ मोटे बालों वाली ३ छोटे बालों वाली ४ वरछट बालों वाली होती है।

१. विशाल नेत्रों वाली २. छोटी आंखों वाली ३. अणीदार नेत्रों वाली ४ पीले नेत्रों वाली होती है। १. विशाल स्तन वाली २. छोटे स्तन वाली ३ ऊंचा स्तन वाली ४. लम्बे स्तन वाली होती है १. अल्प निद्रा वाली २. भारी निद्रा वाली ३ थोड़ी निद्रा वाली ४. खूब निद्रा वाली होती है। १. अल्प काम वासना वाली २. गाढ़

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

काम वासना वाली ३. चित्रविचित्र काम वासना वाली ४. अतिशय कामवासना वाली होती है। १. अल्प प्रस्वेद वाली २. बहुत प्रस्वेद वाली ३. मध्यम प्रस्वेद वाली और ४. अतिशय प्रस्वेद वाली होती है। १. अल्प क्रोधी २. अतिशय क्रोधी ३. विचित्र क्रोधी ४. लम्बे क्रोध वाली होती है। १. पुष्पों का समूह प्रिय होता है २. मोती प्रिय होते हैं ३. विभूषा प्रिय होती है ४ कलह प्रिय होता है १. अल्प आहार वाली २. ज्यादा आहार वाली ३. कम आहार वाली ४. अतिशय आहार वाली होती है। १. कमल के समान सुन्दर हाथ वाली २. शंख के समान हाथों वाली ३. मगर के समान हाथों वाली ४. मत्स्य के समान हाथों वाली होती है।

'स्त्रियों के शुभ और अशुभ दो प्रकार के लक्षण होते हैं। पूर्ण चन्द्र के समान मुख वाली, बाल सूर्य जैसी कान्ति वाली, विशाल मुख वाली और लाल होठ वाली शुभ कन्या कहलाती है। अंकुश, कुन्डल और चक्र जिसके हाथ में हो वो पुत्र को जन्म देती है व उसका पति राजा बनता है। जिसके हाथ की हथेली पर तोरन होता है, व दासी के कुल में जन्मी हो तो भी राजा की पत्नी बनती है। जिसके हाथ में मंदिर, कमल, चक्र, तोरन, छत्र और पूर्ण कुंभ होता है व राजपत्नि बनती है और उसके वहुत पुत्र जन्मते हैं।

जो स्त्री कोमल अंग वाली; हिरण के समान नैत्रों वाली, पतली गर्दन वाली और पेट वाली, जिसकी चाल हंस की तरह हो वह राज पत्नि बनती है। जिस स्त्री के छोटे बाल जो गोल मुख वाली और

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दक्षिणावर्त वाली हो तो वह प्रेम की भाजन बनती है। जिसके अंगुलियां लंबी और बाल लंबे हों वह दीर्घ आयुष्य वाली होती है और धन धान्य से वृद्धि को पाती है। जो स्त्री कृष्ण के जैसी श्याम, चम्पक जैसी प्रभावाली, गोरी और स्निग्ध अंग वाली हो वह भी सुख को प्राप्त होती है। नील कमल के दल जैसी कांति वाली, पीली कांति वाली हो तो वह समस्त अंग प्रत्यंग पर अलंकार धारण करेगी।

जिस स्त्री के ललाट पर स्वस्तिक हो वह हजार जहाजों के आधिपति का वरण करती है। जिस स्त्री के दांयें तरफ गले पर, स्तन पर लांछन तिल या मसा अगर हो तो वह पहले पुत्र को जन्म देती है। जिस स्त्री के प्रस्वेद, रोम, निद्रा और भोजन अल्प हों तो वह उत्तम लक्षणों वाली होती है। जिस स्त्री की साथल हथिनी की सूंढ जैसी भरावदार हो, योनि पीपल के पत्ते जैसी और रोम बिना की हो, कमर, ललाट और पेट कछुए जैसा उन्नत हो और मणिबंध गूढ़ हो तो वह विपुल लक्ष्मी को प्राप्त करती है।

'जो स्त्री की जंघा रोम वाली हो, स्तन और हाथ पर अगर रोम हों तो वह तत्काल विधवा हो जाती है। जिस स्त्री का साथल मोटा हो, पैर चपटे हो वह विधवा और दारिद्रय के दुख को प्राप्त होती है। जिसके पीछे आवर्त हो वह पति को मारती है, जिसके हृदय पर आवर्त हो वह पतिव्रता होती है, जिसके कमर पर आवर्त हो वह स्वच्छन्दी होती है। जिसकी तीनों ललाट, पेट और योनि लम्बी हो तो वह ससुर, देवर और पति का नाश करती है। जिसकी जीभ काली

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

हो, होठ लम्बे हों. नेत्र पीले हों आवाज मोटी (घोघरा) हो, अतिश्वेत, अतिश्याम यह ६ प्रकार की स्त्रियें त्यागने योग्य हैं।

जिसके गालों पर खड्डे पड़ते हों वह पति के घर स्थिर हो कर नहीं रहती और स्वच्छंद आचार वाली होती है। पैर के अंगूठे की पास वाली पहली अंगूली अंगूठे से बडी हो तो वह अच्छी नहीं होती। दूसरी अंगूली यानि बीच की अंगूली अंगूठे से बड़ी हो तो वह स्त्री दुर्भागा होगी और पति को छोड़ देगी। पैर की तीसरी अंगुली ऊंची न हो और जमीन से स्पर्श न करती हो तो वह कुमारी अवस्था में जार के साथ खेलती है। जिसकी सबसे छोटी अंगुली जमीन से स्पर्श न करे तो वह यौवन वय में जार के साथ क्रीड़ा करे इसमें कोई संशय नहीं। जैसा मुख वैसा ही गुप्त भाग, जैसी चक्षु हो वैसी कमर हो, जैसा हाथ हो वैसे ही पैर हों, जैसी भुजायें हों वैसी जंघा हो, जिसको कौए के आवाज जैसी वाणी हो, कौए जैसी जंघा और पीठ रोम वाली हो, मोटे दांत वाली हो वह दस महीने में पति का नाश करती है।

जिसकी अंगुलियों में छेद पड़ते हों, जिसकी अंगुलियें विषम हों वह वेर को बढाने वाली होती है ऐसा सामुद्रिक कहते हैं। इसमें शंका नहीं है अति दीर्घ, अति छोटी, अति मोटी, अति पतली, अति श्याम और अति काली योनि वाली स्त्री दुर्भागा कहलाती है। विवाद करने वाली, अस्थिर आश पर बैठने वाली शूरातन वाली, दूसरों के अनुकूल और दूसरों की आश्रय से खिली हुई, अति आक्रोश को करने वाली, और शून्य घर में बैठने वाली, जिसकी दस पुत्र पुत्री हो भी तूं उस

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

भार्या को छोड़ दे।

गाल में जिसके खड्ड पड़ते हों, गधे जैसी आवाज वाली, मोटी जंघा वाली, खड़े बालों वाली, लम्बे होठ वाली, मोटे मुख वाली, अलग २ दांतों वाली, काले दांत, होठ और जीभ वाली, सुके हुये अंगों वाली, विषम भृकुटि और स्तन वाली, नाक, मुंह चपटा हो तो वह स्त्री त्यागने योग्य है। ऐसी स्त्री सुख से रहित और भ्रष्ट शील वाली होती है। कछुए जैसी पीठ वाली, हाथी जैसे स्कन्ध वाली, कमल के पत्र जैसे पुष्ट साथल वाली, पुष्ट गाल वाली, छोटे और एक समान दांतों वाली, अच्छी तरह से गुप्त, अति उष्ण और गोलाकार वाली, इस प्रकार की ६ योनियें अच्छी मानी गयी हैं। दक्षिणावर्त्त नाभि, स्निग्ध अंग वाली, सुन्दर भृकुटि खुली कमर वाली और खुले जघन, अच्छे सुन्दर बालों वाली कछुए जैसी पीठ वाली, ठंडी, दांत जिसके एक समान हे, जिसके ह के भाग खुले हैं, सुन्दर गोल कमल जैसे नेत्र वाली सुव्रता, सारे ही गुण से युक्त ऐसी स्त्री विवाह के योग्य है। इस प्रकार बहुत समय तक श्रीचन्द्र ने प्रियंगुमंजरी के साथ वार्तालाप करने के पश्चात् प्रियंगुमंजरी ने श्रीचन्द्र के कंठ में वरमाला पहनाई।

बाद में मंडप के द्वार में पांखण आदि सारी विधि के बाद श्रीचन्द्र राज आंगन में आए वहां सारी क्रिया होने के बाद कन्या से युक्त हरे बांस की बनी हुई बड़ी चोरी में आए। अग्नि के चारों तरफ फेरी फिरते, चौथे मंगल फेरे में नरसिंह राजा ने जमाई को चतुरंग सेना आदि सौंपी और कहा यह सब तुम्हारे साथ भेजूंगा। श्रीचन्द्र प्रियंगु-

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मंजरी से युक्त श्रेष्ठ वाहन में बैठ कर अपने महल की तरफ गए।

रास्ते में स्थान २ पर लोगों के मुख से अद्भुत वाणी सुनते हुए कि 'रूप, विद्या, कुल, चतुर बुद्धि, अनुत्तर कांति, मुख्य गुणों और रूप में अनुत्तर, जिस प्रकार इन्द्र और इन्द्राणी का योग, चन्द्र और रोहिणी का योग, सूर्य और रत्नादेवी का योग हुआ वैसा ही विधि ने (प्रकृति) यह योग बनाया है। श्रीचन्द्र ने अपने महल में प्रवेश किया। मंगल पूर्वक सब वस्तुओं को उचित स्थान पर रखकर यथा योग्य दान देकर वास गृह में आए। हंसते हुए मुख वाली प्रियंगुमंजरी सखियों से युक्त पलंग पर बैठे हुए पति के पास बैठकर काव्य गोष्ठी करने लगी।

इतने में मदनपाल ने भू संज्ञा से "अपने वचन को याद कर" ऐसा संकेत किया श्रीचन्द्र शंका के बहाने बाहर निकले तब प्रियंगुमंजरी पानी लेके इनके पीछे गई। तब श्रीचन्द्र ने कहा तुम यहीं रहो वहां बहुत पानी है। ऐसा कह कर नीचे आकर ससुर के पास से प्राप्त की हुई सब वस्तुएं मदनपाल को देकर और अपने कुन्डल नाम की अंगुठी और ससुर की अंगुठी लेकर अपना वेश ग्रहण करके कहा कि हे मदनपाल ! तेरे मन को संतोष होगया ? अब मैं जाता हूं।

मदनपाल ने कहा कि तुमने बहुत ही सुन्दर किया अब तुम्हें जैसा सुन्दर लगे वैसा करो। आनंद से आंख में अंजन डाल कर श्रीचन्द्र की वेशभूषा को पहन कर मदनपाल जिसके चेहरे पर कोई तेज नहीं है, गंदे हाथ पैर वाला वास गृह में जाकर बैठ गया। उसको इस प्रकार

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

का देखकर प्रियंगुमंजरी उसी क्षण बाहर निकली और सखी से कहने लगी कि "पति का वेश लेकर कोई और व्यक्ति आया है"। सखी ने कहा यहां ऐसा कौन है जिसने तेरे पति का वेश धारण किया है? तू व्यामूढ हो गई है। राजकुमारी ने कहा हे सखी! अगर तू नहीं मानती तो तू स्वयं जाकर पूछ पहले के प्रेम वाक्यों और कथा वार्तालाप अब वह किस पकार कर रहा है और उसे देख. सखी ने उसी तरह किया तो वह पहले की बजाय उल्टा ही बोला।

उससे सखी ने कहा कि ये श्रीचन्द्र नहीं है परन्तु वेष तो उन्हीं का पहन कर कोई और ही आया है। प्रियंगुमंजरी ने कहा तू द्वारपाल से पूंछ। सखी ने जब द्वारपाल से पूछा तो द्वारपाल ने कहा कि मैंने तो किसी दूसरे को आते नहीं देखा है। बाद में सखियों को वहां छोड़कर प्रियंगुमंजरी अपनी मा के पास गई। माता ने पूछा तुम इस समय स्वयं कैसे आई हो? कुशल तो है? दुख से भरी हुई कन्या ने जो घटना घटित हुई वे सारी कह सुनाई। रानी ने सारी बातें राजा से कही। राजा व्याकुल हो उठा ये कैसा षड़यंत्र है? प्रातःकाल होते ही मदनपाल को बुला भेजा, सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण करके और दूसरों के कहने से यह विश्वास हो गया कि ये श्रीचन्द्र नहीं है।

राजा ने पूछा हे वत्स! वह अंगूठी कुन्डल आदि कहां हैं? मदनपाल ने दूसरे दिखा दिये। राजा सोचने लगा इस समय कैसी अजीब घटना घटी है। पुनः राजा ने मदनपाल से पद्मिनी आदि स्त्रियों के गुण पूछे। परन्तु मदनपाल तो जानता ही नहीं था इसलिये

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चुप रहा। इससे राजा ने पूछा तू कौन है सत्य क्यों नहीं कहता ? तो भी मदनपाल मौन रहा तब राजा ने कहा कि इसको तो चाबुक की फटकारों की सजा होनी चाहिये। सजा से घबराकर वह बोला मैं मदनपाल हूं और अपना चरित्र कह सुनाया और कहने लगा यह बुद्धि बटुक की है उसने मेरे ही कहने से शादी भी की जिससे उससे द्वेष करना योग्य नहीं। उस उपकारी के उपकार का बदला किस प्रकार चुका सकूंगा।

वह सब कुछ मुझे दे गया। वह यहां है या कहीं और इसका मुझे कुछ पता नहीं है। वह श्रीचन्द्र है या कोई और ये भी मैं नहीं जानता। तब राजा ने और लोगों ने कहा कि बटुक ही श्रीचन्द्र थे। तारक भाट ने कहा कि वे श्रीचन्द्र ही थे। इसमें कोई भी संशय नहीं है उनकी बहुत खोज करवाई लेकिन श्रीचन्द्र का कोई पता नहीं लगा।

विलाप करती पुत्री को राजा ने कहा कि तूं रुदन न कर, तेरा पति तुझे मिलेगा परन्तु क्या तू उसे पहचान सकेगी ? प्रियंगुमंजरी ने कहा मेरे बायें अंग फड़कने पर मैं शुभ शकुन से स्वयं जान लूंगी। जब तक मेरे पति मुझे नहीं मिलते उन्होंने मुझे अपनी छोटी अंगुली की अंगूठी दी है मैं उसी की आदर से पूजा करूंगी। मदनपाल से सब आभूषण हाथी आदि सर्व वस्तुएं मंत्री ने राजा के कहने से अपने अधिकार में रख ली। रानीजी की दी हुई अंगूठी उसमें नहीं थी, मदनपाल से उसके लिये पूछा गया तब उसने उत्तर दिया वह तो बटुक ले गया है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

राजा कहने लगे अहो ! देखो उसका परोपकारीपन, धैर्य, मति और बुद्धि ! यहां जाना जाता है कि कन्या कितनी भाग्यवान है। राजा ने बहुत सा धन देकर मदनपाल को मुक्त किया। राजा ने चारों तरफ खोज करवाई लेकिन श्रीचन्द्र का कहीं पता नहीं लगा। तब राजा ने कहा किसी शुभ दिन मंत्रियों को श्रीचन्द्र को बुलाने के लिये भेजेंगे।

चन्द्र के समान गोल मुख वाले श्रीचन्द्र क्षत्रिय के वेष में चलते फिरते एक बहुत बडे जंगल में पहुँचे। अति तृषा लगने से ऊंची जगह चढ़कर जल की खोज करने लगे, इतने में कुछ दूर सूर्य की कान्ति का भी तिरस्कार करता हो ऐसी कान्ति का एक पुंज देखा। वहां पास में जाकर देखा तो वह चन्द्रहास खडग है ऐसा जानकर सोचने लगे कि यह खडग किसका होगा ? पृथ्वी पर रहे हुए पुरुष का है या किसी आकाश में विचरण करते हुए विद्याधर का है? परन्तु इसका स्वामी भी यहां दिखाई नहीं देता, शायद कोई यहां भूल गया होगा। इस प्रकार सोचते हुए बुद्धिशाली श्रीचन्द्र ने कल्याण के लिये उसे ग्रहण किया।

उस खडग की धार की परीक्षा के लिये पास ही जो झाड़ी थी उस पर उन्होंने वार किया, क्षणवार में उसके दो टुकडे हो गये। और उसके मध्य में रहे हुए पुरुष के भी दो टुकडे हो गये। ये देखकर श्रीचन्द्र बोले हा...हा...अहो मेरी अज्ञानता और मूढ़पने से मैंने बहुत बड़ा पाप किया है जिससे अब तो मुझे नरक में भी स्थान नहीं मिलेगा। अब मेरा क्या होगा। ऐसे स्वनिन्दा करते हुए वह पुरुष कुछ

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

होश में था उसके हाथ में खडग देकर कहने लगे मुझे मार डालो मैं अपराधी हूँ। बोलने में अशक्त ऐसे उस पुरुष ने श्रीचन्द्र को खडग अर्पित कर ऐसा संकेत किया कि यहां अगर जल है तो मुझे पिलादो।

जल पिलाकर श्रीचन्द्र बार २ उससे क्षमा याचना करने लगे। थोडी ही देर में वह पुरुष मृत्यु को प्राप्त हुआ। कुछ क्षण वहां ठहर कर दुखित हृदय वाले श्रीचन्द्र जलपान किये बिना खडग सहित वहां से रवाना हो गये। उसी रात्रि को किसी वन में पहुंचे। वहां एक वृक्ष की डाल पर दर्भ का बिस्तर बिछा हुआ देख वह सोचने लगे कि इसके ऊपर कोई मुसाफिर सोया होगा। तो भी उसे उठाकर चारों तरफ देखने लगे। उसी समय उनकी नजर एक खोसल पर पड़ी जिसे लकडे से बंध किया हुआ था उसे आगे खिसका कर वीर पुरुष ने उसमें प्रवेश किया। गुफा के मुंह पर कुछ क्षण ठहर कर वहां जो बड़ी शिला थी उसे उठाया तो क्या देखते हैं कि नीचे की तरफ रास्ता जा रहा है। उस रास्ते से नीचे उतरे तो वहां पाताल महल देखा।

रत्न के दीपकों से भी तेजस्वी दो मंजिल महल को देखकर पहले तो नीचे वाली मंजिल का निरीक्षण किया फिर ऊपर वाली मंजिल पर गये। वहां मणिओं से जड़ित सिंहासन था, उस पर बैठ कर श्रीचन्द्र ने उसे सार्थक किया। बाद में कुतुहल वश सामने एक कमरा था उसे खोला तो देखते क्या हैं वहां कमरे में रत्नों के पलंग पर एक बंदरी बैठी है। बंदरी पहले तो श्रीचन्द्र के पैर पड़ी, बाद वस्त्र के किनारे को पकड़ कर पलंग पर बिठाया। श्रीचन्द्र कहने लगे तू

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चेष्टा से तो मनुष्य प्रतीत होती है परन्तु दिखने में बंदरी इसका क्या कारण है मैं जानना चाहता हूँ।

रुदन करती बंदरी ने दीवार में एक आला था वह बताया और बार बार अपने नेत्र दिखाने लगी। उसके इशारे से उठ कर उस तरफ गये वहां अंजन से भरी हुयी दो डिब्बियें देखी, एक श्याम रंग की थीं दूसरी सफेद बंदरी के संकेत से, काले रंग का अंजन श्रीचन्द्र ने उसके नेत्रों में डाला। उसके अद्भुत प्रभाव से बंदरी दिव्य वेश तथा अलंकार पहनी हुई कन्या के रुप में बदल गई। इस कौतुक को देखकर श्रीचन्द्र बोले 'हे भद्रे तू कौन है? यह स्थान कौनसा है और तुझे बंदरी किसने बनाया है।'

हर्ष और लज्जा युक्त कन्या ने कहा, 'हे नाथ! हेमपुर में मकरध्वज राजा के मदनावली रानी है उनकी पुत्री मैं मदनसुन्दरी हूं। मैं मदनपाल की छोटी बहिन, माता पिता को प्रिय ऐसी मैं अनुक्रम से योवनावस्था को प्राप्त हुयी। मैं पुरुष के ३२ लक्षणों को जानती हूं। मैंने प्रतिज्ञा की कि मैं बत्तीस लक्षणों से युक्त मनुष्य से शादी करुंगी। एक दिन राजसभा में एक याचक ने प्रतापसिंह के पुत्र के गुण-गान गाये की 'दान रुपी पंखे से उत्पन्न हुआ श्रीचन्द्र का यश रुपी पवन, नये अर्थी रुपी रज को सन्मुख लाता है। राजा ने उसका सन्मान कर उसके साथ विवाह की मंत्रणा की।

एक दिन मैं सखियों सहित उद्यान में क्रीड़ा के लिये गई, वहां पुष्पों के क्रीड़ा गृह में से किसी विद्याधर ने मुझे उठा लिया, परन्तु

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

स्त्रियों के भय से मुझे इस महल में रखा है। आज पाचवां दिन है मैं रुदन करती थी जिससे वह बोला कि रुदन क्या करती है? मैं वैताढ्य पर्वत पर रहने वाला रत्नचूड़ नामक विद्याधर हूँ। अभी हमारी गोत्र के ही एक राजा ने मेरा मणिभूषण नगर अपने कब्जे में कर लिया है जिससे मैं अपने परिवार सहित बाहिर रहता हूं। एक दिन पृथ्वी पर घूमते हुये मैं कुशस्थल गया। वहां उद्यान में अश्वों, रथों और हाथियों से युक्त विशाल सेना को देखा।

'वहां एक सुवर्ण के पलंग पर पुष्पों से क्रीड़ा करती हुयी, सखियों से युक्त, सुसराल से पिता के घर जाती हुई पद्मिनी को देख कर मुझे अतिशय प्रेम उत्पन्न हुआ। मनोहर सुभंग अंग वाली उसको हरण करने के लिये एक दिन मैं वहां अदृश्य पण में रहा। मैंने अपने दो रुप करने का यत्न किया। परन्तु पद्मिनी पति से रक्षित थी और स्वशील की रक्षा वाली थी, जिस कारण मेरे दो रुप नहीं हुये। बाद में उसी के समान रुप वाली स्त्री की मैं खोज में था। पृथ्वी पर निरीक्षण करते हुये तूं मिली है अब मैं तुझ से शादी करुंगा। ऐसा कह कर सफेद अंजन डाल कर मुझे बंदरी बना दिया, तीसरे दिन वापिस आकर श्याम अंजन डाल कर सुन्दरी बनाकर कहने लगा, हे सुन्दरी लड्डु ग्रहण करो, मैं लग्न देखकर आया हूँ।

'गुरुवार के मध्यान्ह समय शुभ लग्न है। ये सारी सामग्री तूं रख, मैं विद्या साधने जाता हूँ बुधवार की रात को या गुरुवार प्रातकाल में मैं आऊंगा। मैंने कहा कि, 'हे विद्याधर! तूं मूर्ख है? या जड़

है ? तू तो पिता के समान है, तो तूं मुझ से किस तरह शादी करेगा ? वह हंस कर मुझे बदरी बना गया है। आज बुधवार की रात्रि है आप कौन हैं ? हे साहसिक शिरोमणी आप यहां किस तरह आये हो ? यहां से मुझे निकाल कर उस दुष्ट के पंजे में से निकाल कर मेरा उद्धार करें।

चन्द्रकला के पति श्रीचन्द्र सोचने लगे, 'कल जो व्यक्ति मेरे द्वारा मारा गया था, वही रत्नचूड होगा।' ऐसा सोचकर निगर्वी राजकुमार ने कहा कि, 'मैं मुसाफिर हूं, दरिद्रता के कारण कुशस्थल को धन प्राप्त करने की इच्छा से धूमता हुआ जा रहा था, इस अटवी में वृक्ष पर सोने के लिये चढ़ा, वहां खोखल का मुंह अन्दर की ओर जाते हुये देख मैं उस के अंदर प्रवेश कर गया यहां मैं पाताल महल को देख कर उस पर चढ़ आया यहां तुम्हें बंदरी पन में देखा। अब हे कृश पेट वाली। तूं दुःख क्यों सहन करती है ? तूं कुमारी है तो उस विद्याधर के साथ विवाह करने से तूं विद्याधरी बनेगी, उसमें तुझे बुरा क्या लगता है ?

'हे नाथ ! आप मेरे भाग्य से आये हैं, जिससे आज मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण हुई है। आप संपूर्ण लक्षणों से महान हो। कहा है कि, 'पांच लम्बे, चार छोटे, पांच सूक्ष्म, सात लाल, तीन ऊंचे, तीन चौडे, तीन गहरे, और २ श्याम ये पुरुष के ३२ लक्षण कहे गये हैं। दो हाथ, दो नेत्र, अंगुली, जीभ और नाक ये पांच लम्बी अच्छी हैं। वांसो, कंठ, पुरुष-चिन्ह और जंघा ये चार छोटी अच्छी हैं। दांत, चमड़ी, नख और केश ये चार सूक्ष्म अच्छे हैं। पेट, कन्धे, मस्तक और पैर चार उन्नत शुभ

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

हैं। हाथ और पैर के तलुवे, तालव, नेत्रों के कोने, जीभ, नख और होठ ये सात लाल अच्छे हैं। ललाट, छाती और मुख ये तीन चौडे अच्छे हैं। नाभि स्वर और सत्व ये तीन गहरे अच्छे हैं। आंख की कीकी और बाल ये दोनों काले शुभ माने गये हैं। इस प्रकार बत्तीस लक्षणों से आप युक्त हैं यह निश्चित है।

'मुख को आधा शरीर कहा गया है अथवा मुख सारा शरीर भी कहलाता है। मुख में नाक श्रेष्ठ है, उससे श्रेष्ठ चक्षु हैं, उनसे कान्ति श्रेष्ठ है. उससे श्रेष्ठ स्नेह है, उससे भी श्रेष्ठ स्वर है और उनसे श्रेष्ठ सत्व है। सत्व में सब वस्तुएँ रही हुयी हैं।' चन्द्रहास खड्ग किसी साधारण हाथ में नहीं होता। आप मेरे प्राण हैं। मैंने तो आपको ही वरण किया है, मेरे जीवन आप हो। स्वामी आप अकेले हो। प्रभात होते ही वह दुष्ट आयेगा, उससे पहले ही हम कहीं निकल चलें जिससे वह हमें देख नहीं सके। फिर आज दोपहर को इस लग्न सामग्री से हे प्रभु! गांधर्व विवाह से आप मुझे स्वीकार करो।

श्रीचन्द्र ने कहा 'हे भीरु! तू सुख से यहां रह। डरो नहीं। वह आयेगा तब मैं उसे देख लूंगा वह किस तरह का है। परन्तु यहां दोपहर के समय का पता कैसे चलेगा?" मदनसुन्दरी ने कहा 'हे देव! इस गुफा के नीचे विशाल बड़ का वृक्ष है, उसके नजदीक एक खोखल के छोटे द्वार में से दिन और रात्रि का मध्य भाग दिखाई देता है। उसके बाद प्रातःकाल में मदनसुन्दरी सहित श्रीचन्द्र ने पारणा किया। मध्यान्ह समय में शुभ लग्न में दोनों ने गांधर्व विधि से विवाह किया।

मदनसुन्दरी ने कहा हे स्वामिन! वह विद्याधर क्यों नहीं

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

आया ? तब श्रीचन्द्र ने जो घटना घटी थी वह यथास्थित कह सुनाई। खराब मन्त्री से राजा पीड़ित होता है, फल अवधि पर पकता है ताप लम्बे अरसे में ठीक होता है और पापी पाप से पीड़ित होता है। उस दिन वहीं रहकर पत्नी सहित सारभूत रत्न और अंजन के दोनों कुप्पों को लेकर जिस रास्ते से आये थे उसी रास्ते से बाहर निकल कर शिला से गुफा के द्वार को बन्द कर पृथ्वी में बहुत सा धन गाड़ कर जिसके हाथ में चन्द्रहास खड्ग उल्लसित है ऐसे श्रीचन्द्र सिंह की तरह अटवी को पार कर एक गांव के नजदीक आये। सरोवर की पाल पर रुक कर उन्होंने कहा हे प्रिया ! यहां उपवन में ठहर कर रसोई बनाकर भोजन करते हैं। मदनसुन्दरी ने कहा 'आप सामग्री ले आइये मैं खाना बनाऊंगी।

सारी सामग्री माली से लेकर मदनसुन्दरी ने अति घी वाले घेवर, पूरी आदि वस्तुयें बनाई। प्रतापसिंह के पुत्र ने स्नान करके आभूषणों से भूषित होकर उत्तम तीर्थ की तरफ मुंह करके देववदन की। तब अंगूठी पर नाम देखकर मदनसुन्दरी को पति का नाम मालूम हुआ। पहले भाट से सुना था कि 'कुशस्थल राजा के पुत्र रूप, स्फूर्ति बल और कला से युक्त श्रीचन्द्र हैं। वही ये श्रीचन्द्र हैं ऐसा जानकर अति आनन्दित होती हुई उनके औदार्य आदि गुणों से अति हर्षित हुई राजकुमारी ने कहा 'हे विभो ! भोजन के लिये पधारो।

श्रीचन्द्र ने कहा कि हे भद्रे ! आज प्रिया के हाथ से बना हुआ भोजन पहली बार तैयार हुआ है इसलिये मुनि महाराज को बहराकर

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

फिर भोजन करते हैं। वे सरोवर की पाल पर ज्यों ही आते हैं तो क्या देखते हैं कि दो मुनि बड़ी शान्त मुद्रा वाले उस तरफ ही आ रहे हैं। वच्छ और कच्छ नाम के साधुओं को आमंत्रण करके भक्ति और अति हर्ष से दोनों ने घी और शक्कर से युक्त घेवर आदि बहराये। बाद में बहुत लोगों को साथ लेकर भोजन किया। बाद में पत्नी के साथ उनके पास जाकर उन्हें नमस्कार कर वहां बैठे।

वच्छ मुनि श्री ने धर्म लाभ पूर्वक कहा कि 'चित्त, वित्त और सुपात्र का योग, हे भद्र! बहुत दुर्लभ है। कहा है कि 'समये सुपात्र दान और सम्यक्त्व से विशुद्ध ऐसा बोधि लाभ और अन्त समय में समाधि मरण अभव्य जीव नहीं प्राप्त कर सकता। उत्तम पात्र साधु साध्वी, मध्यम पात्र श्रावक श्राविका और जघन्य पात्र अविरति सम्यग् दृष्टि जीव होते हैं। इस प्रकार से देशना सुनकर श्रीचन्द्र नें विनती की कि 'हे मुनि श्रेष्ठ पापी ऐसे मेरे से अज्ञानतावश उत्तम विद्याधर मारा गया है, उसका मुझे प्रायश्चित दो। वह पाप शल्य की तरह मुझे हमेशा चुभता है।

मुनिश्री ने कहा कि 'हे पुण्यात्मा! तेरी पाप भीरुता भव्य है, पश्चाताप और दान से तेरी शुद्धि हो गई है। तो भी इस विधि से अरिहंत भगवान आदि को नमस्कार करके, नमस्कार मंत्र का जाप करो। संयोग प्राप्त होने पर अरिहंत भगवान का मन्दिर बनवा देना। सिद्धान्त में इस प्रकार कहा है तो उसे सुनो। महाआरम्भ, महा॰ परिग्रह, मांस का आहार करने और पंचेन्द्रिय के वध से जीव नरक

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

की आयुष्य बांधता है। श्री गौतम स्वामी ने पूछा हे वीर! किस प्रकार जीव शुभ और दीर्घ आयुष्य को प्राप्त होता है? भगवान श्री वर्धमान स्वामी ने कहा 'हे गौतम! जीव हिंसा न करे, मृषावाद का सेवन न करे, २७ गुणों से युक्त साधुओं को वन्दन करे और दूसरी रीति से मन को प्रिय ऐसा आहार पानी, खादिम और स्वादिम बहराये। इस प्रकार करने से सचमुच जीव शुभ दीर्घ आयुष्य को बांधता है। किये हुए कर्म का क्षय पश्चाताप से या तपश्चर्या से हो सकता है। कर्म को नाश कर देने से ही शान्ति प्राप्त होती है।

'तुम्हारी छात्राकार की रेखा से, तुम्हारे ललाट और लक्षणों से तुम भविष्य में महान राजा होने वाले हो ऐसा प्रतीत होता है। इसलिये तुम स्थिर रीति से सम्यक्त्व की आराधना करो जिस तरह गिरी में मेरु, देवों में इन्द्र, ग्रहों में चन्द्र, देव में श्री जिनेश्वर देव हैं वैसे ही कर्म में मुख्य सम्यक्त्व हैं। जीव ने प्रायः अनंत मन्दिर तथा जिन प्रतिमाएं भरायीं। परन्तु ये सब भाव बिना से करवाई हुई हैं जिससे दर्शन शुद्धि (शुद्ध श्रद्धा) की एक अंश भर प्राप्ति नहीं हुई। जो भाग्यशाली सम्यक्त्व को अन्तर्मुहूर्त में भी एक बार स्पर्श करे तो वह जीव संसार में ज्यादा से ज्यादा अर्ध पुद्गल परावर्त ही संसार में रहता है। जो दर्शन से भ्रष्ट है वह भ्रष्ट ही कहलाता है उसको मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती। चारित्र रहित हो तो उसे तो सिद्ध गति प्राप्त हो सकती है परन्तु दर्शन (सम्यक्त्व) बिना जीव की मुक्ति नहीं होती।

'सम्यक्त्व परम देव है, सम्यक्त्व परम गुरु है, सम्यक्त्व परम

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मित्र है, सम्यक्त्व परम पद है, सम्यक्त्व परम ध्यान है, सम्यक्त्व श्रेष्ठ सारथी है, सम्यक्त्व श्रेष्ठ बन्धु है, सम्यक्त्व कीमती भूषण है, सम्यक्त्व परम दान है, सम्यक्त्व परम शील है, सम्यक्त्व श्रेष्ठ भावना है। चिंतामणी, कल्पतरु, निधि, कामधेनु, नरेन्द्र या इन्द्र पण ये सब इहलौकिक फल देने वाली वस्तुए किसी भी उपाय से इस भव में प्राप्त हो सकती हैं परन्तु सम्यक्त्व प्राप्त करना दुष्कर है। उसे प्राप्त कर जो उसे खो देता है वह अनन्त काल तक संसार में भवभ्रमण करता है। इसलिये सम्यग्दर्शन रूपी रत्न का हमेशा रक्षण करना चाहिये।

'अगर शीलव्रत का सुन्दर नववाडों से रक्षण होता हो तो वह अच्छी तरह पाला जा सकता है। सागर के वीच नाव में छोटा सा छेद हो जाय तो वह चल नहीं सकती उसी प्रकार क्रियारूपी जीव सम्यक्त्व बिना भव समुद्र से पार नहीं हो सकता। जिस प्रकार महावड़ के वृक्ष का सिर्फ मूल ही उखाड़ा जाय तो भी सारा वृक्ष नाश को प्राप्त होता है उसी प्रकार सम्यक्त्व रूपी मूल अगर नष्ट हो जाय तो शेष चारित्र आदि तुरन्त ही नाश को प्राप्त होते हैं। जिस प्रकार स्वामी के मर जाने से या पकड़े जाने से चतुरंगी सेना भाग छूटती है उसी प्रकार सम्यक्त्व के नष्ट होने पर दान, शील, तप और भाव रूप धर्म नाश को प्राप्त होते हैं।

'जिस प्रकार कार्तिक मास के जाने से कमल कान्ति रहित हो विनाश को प्राप्त होता है उसी प्रकार सम्यक्त्व के नष्ट हो जाने पर तो क्रिया फल बिना की होकर धीरे धीरे नष्ट हो जाती है। जिस प्रकार

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सुन्दर महल की अगर नींव नष्ट हो जाय तो वह विशाल महल भी तुरन्त नष्ट हो जाता है उसी प्रकार दर्शन के जाने के बाद सब तत्व नाश को प्राप्त होते हैं। जिस प्रकार सारथी बिना का रथ, रण मैदान में शस्त्र बिना का पुरुष और ईंधन बिना की अग्नि नाश को प्राप्त होती है सम्यक्त्व बिना के जीव की क्रिया धार पर लीपने जैसी है। अनाज प्राप्त करने के लिये फूंतरों को कूटने जैसा है। सम्यक्त्व बिना बाह्य क्रिया करने वाला अंधेरे में नाचना ऐसा करता है। जिस प्रकार मरे हुए देह का पोषण करना व्यर्थ है उसी प्रकार सम्यक्त्व बिना सब अनुष्ठान व्यर्थ हैं।

सम्यक्त्व प्राप्त होने के पश्चात आत्मा के नरक और तिर्यंच गति के द्वार बन्द हो जाते हैं। देव और मनुष्य के उत्तम सुख तथा मोक्ष सुख स्वाधीन बन जाते हैं। अगर पहले आयुष्य न बांधा हो तो सम्यक्त्व को प्राप्त हुआ जीव वैमानिक देव सिवाय दूसरी गति के आयुष्य को भी नहीं बांधता। श्री जिनेश्वर भगवान के सर्व वचन अन्यथा नहीं होते, उनकी कथित सब बातें सच्ची हैं ऐसी जिसकी बुद्धि है उसका सम्यक्त्व निश्चल है। इस प्रकार गुरु के वचनों को सुनकर श्रीचन्द्र ने उन्हें नमस्कार कर प्रायश्चित ग्रहण कर प्रिया सहित आगे को प्रयाण किया।

क्रम से चलते हुए कल्याणपुर में आये वहां गुण विभ्रम राजा राज्य करता है उस नगर के मध्य भाग में बने हुए मन्दिर के दर्शन कर जब वह दम्पत्ति बाहर आये तो बहुत नर नारी कदम २ पर उन्हें

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

निर्निमेष दृष्टि से देखने लगे। उन दोनों की अद्भुत आकृति देखकर नगर की कोई स्त्री मदनसुन्दरी का, कोई उसके वस्त्र का, कोई उसकी चाल का, कोई उसके मुख का, कोई उसके रूप का, कोई कुन्डल का, कोई श्रीचन्द्र का, कोई उनकी आंखों का और कोई उनके आभूषणों की आपस में बातें करने लगे। बाहर उद्यान में पहले की तरह प्रिया के द्वारा तैयार किया हुआ भोजन करके सरोवर की पाल पर बैठें हैं और पत्नि जितने में पति के आदेश से भोजन करती है इतने में एक योगी वहां आया। ३२ लक्षणों से युक्त श्रीचन्द्र को देखकर विचार करने लगा कि इस पुरुष द्वारा मेरा कार्य सिद्ध हो सकता है गुण विभ्रम राजा का देह भी ऐसे लक्षणों वाला नहीं है। ऐसा सोचकर योगी उनके पास आकर बोलने लगा कि कोई बिरले पुरुष अपने गुण और दोष जानते हैं, कुछ ही मनुष्य दूसरों के कार्य में सहायता करने वाले होते हैं, चन्द मनुष्य दूसरों के दुःख से दुःखी होते हैं। यह सुनकर श्रीचन्द्र ने कहा 'तुम कौन हो ? और ऐसा क्यों बोल रहे हो ?' योगी ने कहा कि मैं त्रिपुर नामका योगी खर्पर का छोटा भाई हूं। गुरु के पास से प्राप्त हुई विद्या से परोपकार के लिये सुवर्ण सिद्धि के लिये भ्रमण करता हुआ मैं यहां आया हूं।

मेरा उत्तर साधक हो ऐसा कोई पुरुष मुझे मिला नहीं है। परन्तु तुम आकृति और शरीर की कान्ति से परोपकारी दिखाई देते हो। देखो ! 'चन्दन के वृक्ष को विधाता ने फल और पत्तों से रहित बनाया है तो भी वह अपनी देह से लोकों का उपकार करता है। तो अगर तुम आज रात अगर मेरे उत्तर साधक बनो तो मेरा कार्य सिद्ध

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

हो सकता है। कहा है कि हे माता ! दूसरे की प्रार्थना को नहीं स्वीकारने वाले पुरुष को तूं जन्म देती नहीं और जिसके द्वारा प्रार्थना का भंग होता हो उसे तो उदर में भी धारण नहीं करती। श्रीचन्द्र ने पूछा कि 'क्या तत्व है ? तेरे क्या कार्य हैं ? तुझे क्या चाहिये ? सुवर्ण सिद्धि किस तरह होती है ?' योगी ने कहा कि 'रात्रि को श्मशान में श्रेष्ठ पुरुष के मुर्दे से और सत्वशाली पुरुष के सानिध्य से वह सुवर्ण सिद्धि होती है। दूसरी सामग्री सुलभ है।

श्रीचन्द्र ने कहा कि हे योगीन्द्र ! तुम वहां जाकर सब सामग्री तैयार करो मैं निश्चय वहां आऊंगा।' जब वह गया तब पत्नी ने पूछा कि हे राजाओं के इन्द्र ! योगी ने क्या कहा था ? श्रीचन्द्र ने योगी का कहा हुआ सारा वृतान्त कह सुनाया। कापते हुए अंग वाली मदनसुन्दरी ने कहा कि 'हे नाथ ! यह आप क्या कह रहे हैं ?' ये योगी तो हमेशा कूट आचरण वाले और निर्दयी होते हैं। मैं आपको यहां से कहीं भी नहीं जानेदूंगी। इस प्रकार विवाद करते रात्रि शुरु हुई, मदनसुन्दरी ने श्रीचन्द्र के वस्त्र को पकड़ा हुआ है छोड़ती नहीं है। श्रीचन्द्र ने कहा कि हे प्रिये ! उज्जवल आत्मा का भविष्य उज्जवल होता है जिसके मन, वचन और काया शुद्ध है उसे कदम २ पर संपदा प्राप्त होती है।

'जिसका अन्तर मलीन होता है उसे स्वप्न में भी सुख दुर्लभ है। इसलिये तूं दुखी क्यों होती है ! श्री नमस्कार महामंत्र के प्रभाव से जो होगा शुभ ही होगा। तू बन्दरी होकर वृक्ष पर चढ़कर निर्भय हो जा तुझे दुख है परन्तु योगी को कहा हुआ यह कार्य तो करना ही चाहिये। इस प्रकार कहकर अंजन से मदनसुन्दरी को बन्दरी बनाकर

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उसे वृक्ष पर चढ़ा कर हाथ में चन्द्रहास खड्ग लेकर बुद्धिशालियों में अग्रसर श्रीचन्द्र योगी के पास गये। श्मशान में कुन्ड की अग्नि से सबको देखते हुए कुंड के नजदीक योगी के पास श्रीचन्द्र खड़े हैं तब योगी ने कहा कि हे वीर पुरुष ! मेरी रक्षा करने वाले बनो। श्रीचन्द्र ने कहा कि 'तुम निर्भयता से अपनी इच्छानुसार साधना करो।' विधि अनुसार आप होम आदि विधि करके जब अर्ध रात्रि व्यतीत हुई तब राजा के पुत्र से योगी ने कहा कि 'हे वीर! इस दिशा में प्रसिद्ध महावड़ की शाखा परएक चोर का शव है वह तुम निर्भय होकर लाओ। वह कार्य जब तक नहीं होवे तब तक तुम्हें एक बार भी नहीं बोलना है' श्रीचन्द्र उस वड़ पर चढ़कर चन्द्रहास से शव के बन्धनों को काटकर उसे पृथ्वी पर पटक कर नीचे उतरे उतने ही में शव को फिर शाखा पर लटकते देखा। साहसिक होकर फिर से बंधन छेदकर शव को कभी कन्धे पर, कभी हाथ में लेकर साहस पूर्वक रास्ते के पास आये इतने में शव अट्टहास्य पूर्वक बोला कि 'हे प्रवीण ! तू राजा का पुत्रभी है और राजा भी है तो मेरी कथा सुनो। परन्तु राजा के पुत्र के चुप रहने से शव फिर से बोला कि 'तुम हुँकार तो दो।'

'क्षिति प्रतिष्ठित नगर का राजपुत्र गुणसुन्दर है। सुबुद्धि वहां के मन्त्री का पुत्र है। वह दोनों घोड़ों के योग से एक महा अटवी में जा पहुँचे तृषा से पीड़ित वह दोनों विशाल सरोवर के पास यक्ष का मन्दिर था वहां बैठे सुबुद्धि पानी पीकर अश्वों की देखभाल करने लगा। गुणसुन्दर उस सरोवर में क्रीड़ा करते सामने किनारे पर गया। वहां उद्यान में कोई कन्या कमल हाथ में लेकर कमल से पैर को, दांतों को

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

और काम को अनुक्रम से स्पर्श कर वेग से अपने स्थान को चली गई। परन्तु गुणसुन्दर उसके भाव को समझा नहीं। इसका क्या मतलब होगा ? ऐसा मित्र से पूछा। मित्र ने कहा कि, पद्मावती कन्या दन्त नामका नगर और कर्णदेव राजा की पुत्री तेरे पर अनुराग वाली हुई है। कुमार मित्र के साथ उस नगर में गया। माली के घर ठहर कर पूछताछ कर मालण द्वारा गुणसुन्दर ने कहलाया कि 'सरोवर के किनारे जिन्हें देखा था वो आये हैं।'

पद्मावती ने चन्दन से गीले हाथ से गुस्से से मालण के मस्तक पर मार कर उसे निकाल दिया। मालण ने सारा वृतान्त गुणसुन्दर से कहा। राजपुत्र ने विलक्ष होकर मित्र से कहा। सुबुद्धि ने कहा कि 'शुद पंचमी को आने का कहा है इसलिये तुम अब प्रसन्न होजाओ। दोनों मित्र किराया देकर अलग जगह रहे। 'हे मित्र ! शुद पंचमी तुमने किस तरह जाणी ? कुमार ने पूछा।

मित्र ने कहा कि 'मालण के मस्तक पर लगे हुए सफेद पांच अंगुलियों से जाना।' पंचमी के दिन उन्होंने मालन को बहुत धन देकर फिर भेजा और पुछवाया कि 'वे किस मार्ग से आये ? पद्मावती ने कुंकुम से रंगे हुए हाथ से गले से पकड़ कर कहा कि 'तू ऐसा बोलती है ? सखियों द्वारा अपमान करवा कर घर के पिछले दरवाजे से दूसरे मंजिल से रस्सी के द्वारा नीचे उतारा। मालण ने आकर कहा कि मैं जीवित आई ये ही मेरा भाग्य।' ऐसा सुनकर मित्र ने कहा 'अभी ठहरो'।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'चार अंगुलियों से गले को पकड़ा इससे ऐसा प्रतीत होता है कि वह रजस्वला है जिससे नवमी की रात्रि को उस तरह पीछे के द्वार से आने के लिये कहा है।' मित्र के कहे अनुसार गुणसुन्दर वहां गया। उसे देखकर हर्ष को पायी हुई राजकुमारी ने क्रीड़ा करके पूछा 'हे प्रभु! मेरे हृदय के भाव आपने किस तरह जाने? कुमार ने मुग्ध भाव से कहा कि मैंने अपने मित्र द्वारा जाने। अच्छी तरह भोजन करवा कर विष युक्त लड्डु देवर के लिये दिये। लड्डू देख कर सुबुद्धि ने कहा कि मेरा नाम क्यों बताया?

प्रभात में लड्डू नजदीक रखकर शौच क्रिया से निपट कर आता है तो देखता है उस पर मक्खियां मरी हुई हैं, लड्डु को वहीं जमीन में दबा दिया। सुबुद्धि ने कुमार से कहा कि रात को अच्छी तरह से क्रीड़ा करके जब वह सो जाये तो उसकी जंघा पर तीन रेखा बनाकर एक झांझर निकाल लेना। इस प्रकार करके वह आया। बाद में दोनों योगी बनकर श्मशान में गये। सुबुद्धि गुरु और गुणसुन्दर चेला बना।

चेले ने किसी सोनी की दुकान पर जाकर झांझर बेचनी चाही। सोनी ने झांझर पर राजा का नाम देखकर झांझर राजा को लेजाकर दिखाई। नाम से अपनी जानकर राजा ने सोनी से पूछा यह झांझर तुम कहां से लाये हो? उसने कहा एक योगी लाया है जो दुकान पर बैठा है। राजा ने योगी को बुलवा कर पूछा तो उसने कहा कि ये तो मेरा गुरु जाने मुझे नहीं मालूम। गुरु को बुलाकर पूछा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

ये झांझर कहां से आई ? गुरु ने कहा कि आज मैं श्मशान में बैठा था तो वहां एक उत्कृष्ट शक्ति आई, मैंने उसका पैर पकड़ कर जंघा पर तीन रेखा कर झांझर निकाल ली इतने में वह पलायन होगई। राजा ने कन्या को सभा में बुलाया। राजा ने गुरु से पूछा तुम कोई विद्या जानते हो ? उसने कहा हां मैं जानता हूँ। राजा कहने लगे अगर तुम मन्त्र जानते हो तो इसको शक्ति के दोष से वर्जित करो। गुरु ने कहा हे राजा ! आज रात्रि को मेरे द्वारा मंत्रित वस्त्र से कन्या का मुख और नेत्रों को बाँधकर पूर्व दिशा में देश के आखिरी किनारे पर हाथ बांध कर छोड़ देना। जो छोड़ने जाय उसको पीछे नहीं देखना होगा। आठ पहर के बाद ये कन्या बिना दोष की हो जायेगी।

गुरु चेले स्वस्थान पर गये। राजा ने कन्या को योगी के कहे अनुसार रास्ते में रखवा दी। वे दोनों अश्वों पर चढ़कर वहां पहुँचे बंधन खोल कर स्वदेश ले गये। कन्या ने कहा देवरजी ! ऐसा काम क्यों किया ? सुबुद्धि ने कहा कि ये भेरी लड्डुओं का कार्य है मेरा नहीं। आठ पहर व्यतीत होने पर राजा वहां पहूँचा परन्तु पुत्री वहां मिली नहीं जिससे राजा का हृदय फट गया। ये पाप किसे लगेगा ? कन्या को कुमार को, राजा को या मित्र को ? जानते हुए भी नहीं बोले तो वह पाप तुम्हें लगेगा। थोड़ी देर ठहर कर प्रतापसिंह राजा के पुत्र ने कहा कि 'ये पाप राजा को लगे क्योंकि उसने कुमारी कन्या का इतनी बड़ी उमर तक ब्याह नहीं किया इसलिये राजा कारण भूत है। दूसरी तरह से देखें तो चारों को लगता है क्योंकि चारों उसमें कारणभूत हैं। कुमार के बोलते ही शव वापस शाखा पर चिपट गया। इस प्रकार तीन बार

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

हुआ। चौथी बार बड़ ऊपर से शव को लेकर चले तो शव नें कहा कि, 'हे राजाधिराज! तुम योगी के पास किस तरह आये हो? यह बहुत धूर्त है। तुमसे साधना सिद्ध कर तुम्हे मार देगा।' उसके वचन सुन श्रीचन्द्र विचारने लग गये।

इतने में ही मध्यमवय वाली एक स्त्री आई। श्रीचन्द्र ने पूछा तुम कौन हो? वह रुदन करती हुई बोली मैं नन्द गांव में रहती हूँ। ये मेरा पति है, किसी समय चोरी करता था जिससे राजा ने इसे मार कर पेड पर लटकाया है। मैं उसे देखने आई हूं। वह स्त्री जितने में उसे चन्दन लगाती है उतने में ही शव ने उसकी नाक काट ली। वह स्त्री तो गांव में चली गई। श्रीचन्द्र शव को योगी के पास लाये। योगी ने स्नान करा कर उसकी पुष्पों से पूजा कर मांडले में कुन्ड के पास रखा।

शव के हाथ में तलवार देकर उसके पैर के पास श्रीचन्द्र को दूसरी तरफ देखते हुये खड़े रखकर कहा कि ऐसा चिंतवन करो कि मेरा कार्य सिद्ध हो पीछे की ओर मुड़कर देखना नहीं।' श्रीचन्द्र ने नवकार मन्त्र से शरीर की रक्षा कर तिरछी दृष्टि से शव पर ध्यान रखा। योगी ने उड़द के दाने मंत्रित करके शव पर डाल कर हुंकार किया। शव थोड़ा खड़ा हुआ चारों तरफ देखकर शान्त होगया। योगी ने श्रीचन्द्र से पूछा 'क्या सोच रहे हो?' जैसा मन, वैसा हीं वचन और वचन जैसा वर्तन हो उसका कार्य सिद्ध हो ऐसा श्रीचन्द्र ने कहा। तब योगी बोला ऐसा कहो कि योगी का कार्य सिद्ध हो। योगी ने मन्त्रित फिर दानेशव पर डाले और हूँकार किया। लाल २ आंखें कर शव खड़ा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

हुआ और कहने ल।। 'अरे दुष्ट ! मुझे शल्य वाले शव में उतारता है ? उसका फल तुझे अभी चखाता हूँ। ऐसा कहकर योगी को उठा कर अग्नि कुण्ड में होम दिया। श्रीचन्द्र मना करते रहे।

योगी सुवर्ण पुरुष होगया। सुवर्ण पुरुष को कहीं दबाकर प्रभात में वंदरी के पास जाकर उसे अंजन से मदनसुन्दरी बनाकर उसे सारा हाल कह सुनाया। ये सुनकर आश्चर्य से प्रिया बोली 'हे नाथ ! सुवर्ण पुरुष का क्या प्रभाव है और उससे क्या होता है ? श्रीचन्द्र ने कहा कि सुवर्ण पुरुष की विधि से पूजा कर उसके चार अंगों को ग्रहण करके वस्त्र से ढ़क देने से प्रभात में वह सुवर्ण पुरुष फिर से अखंड अंगों वाला हो जाता है। इस प्रकार हमेशा करने से वह मनुष्य उसके प्रताप से दाता, भोक्ता और लक्ष्मीवान बनता है।'

परन्तु सुवर्ण पुरुष पर मेरा मन नहीं है कारण कि अन्याय से उत्पन्न हुआ धन होने से, हिंसा से बने होने से, प्रथम व्रत के खंडन से इसका भोग करना दयालु आत्माओं को योग्य नहीं है। इस प्रकार बातें करते हुए दोनों आगे के लिये रवाना हुए। इतने में गुणविभ्रम राजा क्रीड़ा के लिये वहां आया उसने तालाब की पाल पर दोनों को देखा। जितने समय में आम्र वृक्ष की छाया में बैठने को होता है उतने ही समय में परदेश से आया हुआ भाट बोला, 'परस्त्री सहोदर, अनाथ की लक्ष्मी के सामने दृष्टि भी नहीं रखने वाले, अर्थियों के लिये कामधेनु ऐसे श्रीचन्द्र जय को प्राप्त हों।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जिस श्रीचन्द्र ने शून्य नगर को देखकर, नगर में जाकर राक्षस को पैर मसलने वाला सेवक बनाया, कुण्डलपुर का राज्य प्राप्त कर चन्द्रमुखी को ब्याहे, स्वनाम से चन्द्रपुर नगर जिसने बसाया, जो राधावेध और धनुर्विद्या में विशारद है। जगत में अजोड़ ऐसे जगत के राजा श्रीचन्द्र जय को प्राप्त हों। प्रतापसिंह राजा के पुत्र श्रीचन्द्र जय को प्राप्त हों।

महेन्द्रनगर में त्रिलोचन राजा की जन्म से अन्ध पुत्री की श्रेष्ठ कमल के पत्र जैसी आंखें जिसने की वे श्रीचन्द्र जय को प्राप्त हों। विद्याधर वन में जिनके मस्तक पर रायण वृक्ष ने दूध बहाया और चन्द्रलेखा को ब्याहे ऐसे श्रीचन्द्र जय को प्राप्त हों। कान्ति नगरी में मदनपाल के लिये अपने बहाने से प्रियंगुमंजरी से परणे सकल स्त्रियों के लक्षणों के जानकार श्रीचन्द्र जय को प्राप्त हों। वह सारी श्रीचन्द्र की कीर्ति सुनकर विस्मित होकर गुणविभ्रम राजा ने पूछा 'हे बारोट! तुम कहां से आये हो? वह बोला 'मैं कुण्डलपुर नगर से आया हूं, अब मैं अपने भाई के पास वीणापुर नगर को जा रहा हूं।

मदनसुन्दरी भाट के वचन सुनकर बहुत हर्षित हुई और कहने लगी हे नाथ! आज आपका चरित्र सुना है, उससे पहले ही मेरा चित्त आप पर अनुरागित था। श्रीचन्द्र ने प्रिया से कहा 'श्रीचन्द्र नामके अनेक मनुष्य होते हैं।' मदनसुन्दरी ने कहा 'हे नाथ! अभी भी आप अपनी आत्मा को प्रदर्शित नहीं कर रहे हैं? उसका उत्तर उन्होंने हास्य से

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दिया। उसके बाद राजा अपने नगर में चला गया। बाद में राजकन्या ने अर्थी को सुवर्ण मुद्रिका दी।

वीणापुर के रास्ते में जाते हुए एक कोतवाल भटक गया। श्रीचन्द्र को देखकर आश्चर्य से कहने लगा तूं कौन है? यह खड्ग किसका है? ये मुझे दे दे।

श्रीचन्द्र कहने लगे अगर खड्ग की इच्छा हो तो अपने खड्ग को तैयार कर तो खड्ग भी बताऊं और दे सकूं। उन तेजस्वी वचनों को सुनकर वह अधम नगर मे गया, राजा की आज्ञा से सेनापति के साथ जल्दी वापस आया। सेना को आता देख चकित हो कहने लगी 'हे प्रभु! पीछे से क्या विशाल सेना आ रही है?' युद्ध में समर्थ श्रीचन्द्र ने हंस कर कहा 'तुम घबराओ नहीं, मेरे आगे खड़ी हो जाओ। उसे आगे करके खड्ग को दृढ़ता से पकड़ कर श्रीचन्द्र खड़े रहे। 'स्त्री और खड्ग के चोर तूं कहां जाता है? तूं अभी मर जायेगा। मारो २ ऐसा कहते हुए सेना वहां आई।

इतने में तो सिंहनाद पूर्वक श्रीचन्द्र सम्मुख होकर सिंह की तरह संग्राम करने लगे। उनके सिंहनाद से भयभीत होकर राजा के हाथी, रथ, अश्व एक दूसरे पर गिरने लगे। कितने ही तो मृत्यु को प्राप्त हो गये। कितने अधमुए हो गए, वे भागते हुए कहने लगे कि हम तो व्यर्थ में ही मारे गये ये तो कोई विद्याधर है। ये दृष्टि से भी दिखाई नहीं देता। जिसकी दोनों भुजायें प्रिया द्वारा पूजित हैं ऐसे श्रीचन्द्र किसी समय जल्दी से कभी धीरे २ चलते पत्नी सहित चलते हुए

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S.   Jun Gun Aaradhak Trust

सिद्धपुर में आये। वहां उन्होंने सुना कि यहां जिन चैत्य है, उसकी बहुत ही महिमा है, वहां अनेक देशों से लोग यात्रा के लिये आकर अक्षत, वस्त्र, फल और नैवेद्य आदि अनेक प्रकार से पूजा करते हैं।

संघ के जाने के बाद वणिक आदि वहां के लोग देव के द्रव्य को विभाजित कर हमेशा ले लेते थे। उस कारण देव द्रव्य के भक्षण से वे लोग दिन प्रतिदिन निर्धन हो गये। कुलक्षय होगये, जिससे सिद्धपुर नगर छाया बिना का होगया। उनका ये स्वरूप जानकर श्रीचन्द्र ने प्रिया सहित श्री जिनेश्वरदेव को नमस्कार कर प्रिया से कहने लगे कि, 'इन लोगों के घर देव द्रव्य का भक्षण होता है इसलिये यहां का अन्न पानी लेना योग्य नहीं है। बाद में वृद्ध लोगों से कहा कि 'ये जिन मन्दिर जीर्ण क्यों दिखाई दे रहा है? यह तो बहुत खराब बात है अथवा यह अशुभ की निशानी है।

'किसी भी प्रकार का कर्ज अशुभ माना गया है, उसमें भी देव द्रव्य का कर्ज विशेष प्रकार से अशुभ है देव द्रव्य से स्वधन की वृद्धि करनी, उस द्रव्य से प्राप्त हुआ धन, वह धन कुल को नाश कर देता है। मृत्यु के बाद वह जीव नर्क में जाता है। आगमों में कहा है कि जिन प्रवचन की वृद्धि करने वाला, ज्ञान दर्शन का प्रभावक और देव द्रव्य का रक्षण करने वाला तीर्थंकर पद को प्राप्त करता है।'

'देव द्रव्य के भक्षण से और परस्त्री गमन से जीव सातमी नरक में सात बार जाता है। जो श्रावक देव द्रव्य का भक्षण करता है और उसकी उपेक्षा करता है वह प्रज्ञाहीन बनता है। कर्म से लिप्त हो

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जाता है। इसलिये तुम लोग ऐसा कोई उपाय करो जिससे पाप से मुक्ति हो। इस प्रकार कह कर दूसरे ग्राम में जाकर उन्होंने भोजन किया। वहां से आगे चलते हुए दूसरे दिन वन में से जाते हुए दिन के अस्त होने के कुछ समय पहले मदनसुन्दरी थक गई।

जिससे श्रीचन्द्र कहने लगे कि 'प्रिये! गांव तो अभी दूर है, तुम्हारे पैर थक गये हैं इसलिये इस बड़ वृक्ष के नीचे ही यहां रात्रि व्यतीत करते हैं, झोपड़ी की कोई जरुरत नहीं है। वहां ही संथारा करके दोनों लेट गये। प्रथम दो पहर व्यतीत होने पर रास्ते की थकावट के कारण मदनसुन्दरी को तो नींद आगई। श्रीचन्द्र जाग रहे थे, चारों तरफ निरीक्षण की दृष्टि से देख रहे थे इतने ही में दक्षिण दिशा की तरफ रत्न जैसे तेज को देखकर कुतूहल वश वहां गये। वह तेज दौड़ता हुआ कभी दूर तथा कभी पास दिखाई देता था। इस प्रकार देखते हुए बहुत दूर निकल गये, इतने समय में तेज बन्द होता दिखाई दिया। ये इन्द्रजाल है ऐसा मानकर जिस रास्ते से गये थे उसी रास्ते से वापस आगये।

आकर संथारे पर बैठ कर प्रिया से कहने लगे 'हे प्रियतमे! कमल की श्रेणियों से सुगन्ध आने लगी है। पृथ्वी पर कूकड़ बोलने लगे हैं ठंडक होने से अब तुम अच्छी तरह से चल सकोगी, रात्रि व्यतीत होने पर है इसलिये उठो। प्रिया ने कोई जवाब नहीं दिया कुछ क्षण ठहर कर फिर बोले कि 'हिरनियें घास खाने के लिये जा रही हैं, तेजस्वी सूर्य उदयाचल के शिखर को स्पर्श करने की तैयारी में हैं, हे

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

प्रिया उठो, उत्तर न मिलने से मदनसुन्दरी के संथारे पर हाथ फेरते हैं वहां तो मदनसुन्दरी नहीं था। वियोग से दुखी श्रीचन्द्र चारों दिशाओं में निरीक्षण करते हैं परन्तु प्रातःकाल में कहीं पर भी मदन-सुन्दरी के पैर के निशान दिखाई नहीं देते।

उन्होंने विचार किया कि मुझे तेज के बहाने भ्रमित और मुग्ध करके किसी ने प्रिया का हरण किया है परन्तु वह वहां किस प्रकार रह सकेगी? कोई भी मनुष्य जिसे मन में भी नहीं ला सकता और जहां कवि की कल्पना भी नहीं पहुँच सकती वह कार्य पूर्व कृत कर्म रूपी विधि करती है। अघटित को घटित करती है और सुन्दर वस्तु को बिगाड़ देती है। इस प्रकार विधाता मनुष्यों ने कभी जो सोचा भी न हो वह कर देता है। जो भाग्य में लिखा हो वही लोगों के सामने आता है फिर वैसी ही सूझ उत्पन्न होती है। इन सब बातों को सोचकर धीर पुरुष दुख में घबराते नहीं। इस प्रकार उत्सुक चित्त वाले उपाय सोचने लगे।

किसके मनोरथ नहीं टूटते? सब मनोरथ किसके फले हैं। किसे इस लोक में सम्पूर्ण सुख है? कौन भाग्य द्वारा खंडित नहीं हुआ? धूर्त लोग भी स्खलना को पा जाते हैं। तत्व को जानने वाले श्रीचन्द्र ने इस प्रकार सोचकर आगे को प्रयाण किया। चलते २ कनकपुर नगर के पास आये वहां थोड़ी देर के लिये सरोवर की पाल पर वड़ वृक्ष के नीचे थकान मिटाने के लिये सो गये। उसी समय उस

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

नगर का राजा कनकध्वज दैवयोग से अपुत्रिया ही मृत्यु को प्राप्त हो गया

मन्त्रियो ने राज्य की अधिष्ठायिक देवी की आराधना की। वह आई तब उससे पूछा कि राज्य पर किसे स्थापित करें। देवी ने कहा कि 'पंचदिव्य को अधिवासित करो। जिसके मस्तक पर हथिनी अभिषेक करे उसे तुम राजा बना दो। पंचदिव्य तीन दिन नगर में भ्रमण करके नगर के बाहर आये। पांच दिव्यों ने श्रीचन्द्र पर अभिषेक किया। हथिनी ने श्रीचन्द्र पर कलश से अभिषेक किया। अश्व स्वयं हिनहिनाने लगा, छत्र मस्तक पर अपने आप आगया, चामर अपने आप दोनों तरफ झूमने लगे। श्रीचन्द्र सोचने लगे क्या बात है? मंत्री ने कहा कि 'हे नाथ! नवलखा देश का राज्य स्वीकार करो।

'इस नगर का कनकध्वज राजा मृत्यु को प्राप्त हुआ है, उनके नवलखा देश में हमारे भाग्य से आप राजा हुए हो, राजा की कनकावली नाम की पुत्री है उसके साथ पाणिग्रहण करो। लक्षमण आदि मंत्री बहुत ही प्रसन्न हुए। चन्द्रहास खड्ग से देदीप्यमान अंग वाले, कुन्डल आदि से विभूषित और नाम की अंगूठी से श्रीचन्द्र इस प्रकार का अद्भुत नाम जानकर, देखकर हर्ष से विधि पूर्वक श्रीचन्द्र को राज्य पर स्थापित किया। कनकावली को बायीं ओर उत्सव पूर्वक अभिषेक करके बैठाई। राज्याभिषेक का महोत्सव नगर के लोगों ने बड़े ठाठ से

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मनाया। बन्दीखाने से बन्दीजनों की मुक्ति, करमोचन, देव पूजा, गीत नृत्य आदि से श्रीचन्द्र राजा का विशाल महोत्सव हुआ।

लक्षमण मन्त्री ने राजा से विनती की कि 'हे देव ! आप श्री के सदाचार से स्वयं आपश्री की उत्तमता मालूम हो गई है।' कहा है कि 'आचार कुल को प्रदर्शित करता है, संभ्रम स्नेह को बताता है और रूप से भोजन का वर्णन हो जाता है फिर भी आदर से गाते हुए लोग आपश्री के वंश और माता पिता के नाम को जानने की इच्छा करते हैं। यह सुनकर राजा ने सारी सभा के समक्ष बताया कि जब हरिबल माछीमार विशाला नगरी में गया तब क्या नगर के लोगों ने माता पिता और कुल को जाना था ? इसलिये हे भाग्यवान पुरुषों ! तुम्हें कुल आदि का नाम जान कर क्या करना है ? आप लोगों को तो गुण चाहिये दूसरी चीजों से क्या प्रयोजन है ? यह जवाब सुनकर लोग मौन हो गये।

एक बार उस नगर में मनोहर आवाज वाला गायक वीणापुर राजा की पुत्री के स्वयंवर में जाता हुआ वहां आया और राजमार्ग में श्रीचन्द्र के प्रबन्ध को गाने लगा।' 'कुशस्थल के राजा प्रतापसिंह की रानी सूर्यवती ने ओरमान पुत्र के भय से पुष्पों के समूह में पुत्र को रखा था वह श्रेष्ठी के घर वृद्धि को प्राप्त हुआ उसका नाम श्रीचन्द्र ऐसा प्रसिद्ध हुआ। बाद में राधावेध, पद्मिनी से पाणिग्रहण वीणारव को दान देना और विदेश गमन आदि बातें सुनकर नगर के लोगों ने इच्छित दान देकर पूछा कि तुमने 'श्री' श्रीचन्द्र को देखा है ? बड़े

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

गायक ने कहा कि 'मेरे पिता ने देखा था और दान प्राप्त किया था। उनकी बहुत सी कवितायें हैं परन्तु मुझे नहीं आतीं।

दूसरे दिन प्रातःकाल मंत्री राज्य सभा में गये तो राजा ने पूछा कल रात को आप क्यों नहीं आये ? मंत्रियों ने जो सुना था कह सुनाया, कुछ हंसकर राजा अवनत मुख होकर मौन रहे। लक्ष्मण मंत्री सोचने लगा ये वे ही होने चाहिये। मंत्री को विचाराधीन देख, राजा चतुरंग सेना सहित वन में गये। अश्वों द्वारा बहुत क्रीड़ा करके विश्रान्ति के लिये आम्र वृक्ष के नीचे बैठे और जाति के अनुसार अलग २ तरह के घोड़े निकालते हैं, इतने में पश्चिम दिशा की तरफ से जिसके कन्धे पर लकड़ी और हाथ में जलपात्र है ऐसे देदीप्यमान गोलमुख वाले और ऊंचे कपाल वाले, एक मुसाफिर को दूर देश से आया हुआ जानकर सैनिकों द्वारा बुलाया।

वे जितने में राजा के पास आता है दूर से ही श्रीचन्द्र राजा को देखकर हर्ष के आंसुओं सहित उसने कहा कि 'अहो आज बादल बिना वृष्टि अहो ! पुष्प बिना फल, अहो मेरा पुण्य, मैंने अपने स्वामी को देख लिया।' उसको श्रेष्ठ गुणचन्द्र जानकर राजा ने तत्काल आलिंगन किया। श्रीचन्द्र के चरण कमलों में मस्तक को भ्रमर की तरह बहुत लम्बे समय तक झुका कर नमस्कार करके उचित आसन पर बैठा। राजा के मित्र को मन्त्रियों ने और नगर के लोगो ने बड़े आदर से नमस्कार किया।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

राजा ने पूछा 'हे मंत्रि पुत्र ! तुम अकेले कैसे आये ? किस २ मार्ग से होकर आये हो ? तुमने कुशस्थल को कब छोड़ा ? माता पिता कुशल हैं ? तुम्हारी भाभी कहां है ? मेरे प्रयाण के बाद वहां क्या २ हुआ ? ये सब बातें कहो ।' सब कुछ सुनकर मंत्री पुत्र ने कहा 'आपके आदेश से मैंने खजांची से हिसाब लिया, परन्तु मेरे शरीर में बार २ आलस आने के कारण प्रभात होते ही आपके घर आया, वहां आपको न देखकर चन्द्रकला भाभी को चिन्तातुर देखकर मैंने पूछा 'हे स्वामिनी ! स्वामी कहां है ? आप जानती होंगी ? मैंने बहुत बार पूछा तब उन्होंने गद् गद् कंठ से मूल से आखिर तक का वृतान्त कह सुनाया । जिससे मैं बहुत दुखी हुआ । मैंने पूछा मेरे बिना स्वामी कैसे चले गये ? तब स्वामिनी ने कहा कि 'तुम्हें पिता का वियोग न हो इसलिये तुम्हे छोड़ कर देशाटन गये हैं । जैसे तैसे भी तुम पति के मित्र होने से तुम्हारे सिवाय और किसी को कहने की मनाई की है । आपके वियोग से सारी रात्रियें दुख में व्यतीत हुई । मैं भाभी को दुखी देखकर बार २ उनके पास जाता था ।

'आपके माता पिता के पास रही हुई चन्द्रकला को चेन न पड़ने के कारण बडे लोगों के कहने से पद्मिनी राजमहल में गई । महेन्द्रपुर का मन्त्री सुन्दर वहां आया । उससे आपकी वहां तक की हकीकत की जानकारी हुई । कुंडलपुर से मन्त्री विशारद आया जो घटना घटी थी कह सुनाई । आपकी बुद्धि से सूर्यवती रानी बहुत ही हर्षित हुई, आपका मिलाप न हो तब तक घेवर, लड्डू घृत आदि के त्याग का अभिग्रह किया है वे सभर्गी होने के कारण ज्यादा दुखी हो रही हैं । आपश्री के स्वजन

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

राजा, श्रेष्ठी आदि सब कुशल मंगल में हैं सिर्फ आपके ही वियोग का दुख है। प्रभु की दिशा जानकर प्रतापसिंह राजा ने बहुत से सैनिक भेजे हुए हैं। मैं भी आपके स्नेहवश सब धनंजय को सौंप कर बहुत सैनिकों के साथ निकला था।

कुन्डलपुर में चन्द्रलेखा और चन्द्रमुखी से आपकी सारी हकीकत जानी महेन्द्रनगर में जाकर सुलोचना राजकुमारी को नमस्कार कर हेमपुर के स्वरूप को प्राप्त कर कान्तिपुर में आया, प्रियंगुमंजरी बहुत हर्षित हुई उन्हें नमस्कार कर इस दिशा की तरफ आया। मार्ग में दूसरे रास्ते भी निकलते थे उन रास्तों पर सैनिकों को भेजा नगर, गांव, वन इस तरह सब जगह आपकी खोज करते इस नगर में श्रीचन्द्र राजा हैं ऐसा सुनकर हर्ष से जल्दी मैं इस तरफ आया मार्ग में अश्व मृत्यु को प्राप्त हुआ जिससे पैदल चलकर अकेला आया हूं। आज आपश्री को देखकर कृत्य २ होगया हूं मुझे जो दुख था अब वह सुख रूप में बदल गया है।

मन्त्री सामन्तों आदि ने गुणचन्द्र से अपने राजा के माता पिता और कुल जानकर हर्षित होते हुये अपने २ घर गये। मित्र को महान् अमात्य पद पर स्थापित किया। इस प्रकार किये पूर्व तप के प्रभाव से श्रीचन्द्र राजा विशाल राज्यको मित्र सहित चला रहे हैं। कहा है कि 'धर्म के आधार पर ही जगत है, वही धर्म सत्पुरुषों के उपयोग में स्थिर स्वरूप वाला है वे सत्पुरुष जो सत्यनिष्ठ होते हैं वे सत्य सुख रूप सन्तोष को धारण करते हैं अर्थात् सुख रूप सन्तोष उत्पन्न करता है और वह सन्तोष उन्मत्त विषयों के विजय से उपार्जित जय वाला है और वह जय तप से ही साध्य है अर्थात् यह सारी तप की ही महिमा है सारांश यह है कि उपरोक्त सद्गुण उत्तरोत्तर संवंधित है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

[चतुर्थ खण्ड]

कुछ समय व्यतीत होने पर श्रीचन्द्र राजा को मदनसुन्दरी याद आई। लक्ष्मण मंत्री को अच्छी तरह समझा कर मित्र सहित दो उत्तम अश्वों पर बैठ कर थोड़ी ही देर में भयंकर अटवी में आये। वहां वृक्ष पास एक योगी को अतिसार रोग से पीड़ित देखकर श्रीचन्द्र योगी की अनेक प्रकार से सेवा करने लगे और दूर रहे हुए भिल्लपति के गांव से पथ्य औषध आदि लाकर अनेक प्रकार से उपचार किया। राजा ने तेल आदि मसल कर स्नान कराकर योगी को स्वस्थ बनाया। जिससे योगी ने अति हर्षित होते हुए कहा 'हे पुण्यात्मा ! मेरा अभी भी भाग्य उदय में है ऐसी दुर्दशा में भी तुम जैसा बुद्धिशाली मिला।

यह अति दुर्लभ पारसमणी तुम ग्रहण करो इसके स्पर्श से सब धातुएं सुवर्ण के रूप में बदल जाती है। तुम भाग्यशाली हो जिससे मैं तुम्हें यह समर्पित करता हूँ। पृथ्वी को अनृणी करना, जिनालय बनवाना मेरी मृत्यु के पश्चात इस स्थान पर एक मठ बनवाना। इस प्रकार कह कर श्रीचन्द्र के मना करने पर भी जबरदस्ती पारसमणी उन्हें दे दी। श्रीचन्द्र राजा ने योगी के वचन स्वीकार किये। उस योगी के मर जाने पर उसके कहे अनुसार वहां मठ बनवाया। वहां से मित्र के साथ राजा प्रयाण करते हुए एक वन के मध्य भाग में आये। वहां बांस की जाली में १०८ पर्व वाला एक बांस पका हुआ और सीधा शास्त्र लक्षणों से युक्त जानकर उसे काट लिया। उसे काट कर उसके बीच में से एक मोती के जोडे को निकाला। मित्र को श्रीचन्द्र ने कहा जो बड़ा है वह

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

नर है और जो छोटा है वह मादा है। बुद्धिशालियों को यत्न पूर्वक नारी का रक्षण करना चाहिये। नारी जहां है वहां स्वयं नर रात्रि को आता है परन्तु दूसरों को छलने का कारण होने से इससे उत्पन्न हुआ धन दुष्ट कहलाता है।

आगे जाकर जहां वन खतम होता था वहां श्रीगिरी को देखकर श्रीचन्द्र मोहित होगये। वहां गुफाओं को देखते हुए प्यास से व्याकुल हो उठे। कुछ ही क्षणों पश्चात् किसी स्त्री के रोने की आवाज सुनाई दी उसका दुख दूर करने के लिये भयंकर आश्रम में जाकर उससे पूछने लगे कि 'तुम क्यों रो रही हो ?' पानी कहां है क्या तुम जानती हो ? दो महापुरुषों को आया देख गुफा के अन्दर से उसने जल पूर्ण कुम्भ लाकर दिया। परन्तु वह जल उन्होंने नहीं पीया। इसलिये जहां जल था वह जगह बताई वहां जल में स्नान करके वे दोनों स्वस्थ हुए।

भीलड़ी ने कहा 'ये महान् श्री पर्वत है, नजदीक में वीणापुर नगर में पद्मनाभ राजा है उसका एक गांव यहां भी है। उसके स्वामी का स्वर्ण कुंभ चोर चुरा कर ले गये। उनके पैरों के चिन्ह यहां तक आये, परन्तु चोर तो कोई और है और वे लोग मेरे स्वामी को पकड़ कर ले गये हैं उसके पास से स्वर्ण कुम्भ मांगते हैं, उस दुख के कारण मैं रुदन करती थी। श्रीचन्द्र कहने लगे 'हे भद्रे ! तुम लोहे का कुम्भ खाली करके ले आओ, वह लोहे का कुम्भ ले आई, पारसमणी के योग से उस कुम्भ को अग्नि की सहायता से सुवर्ण का करके, दूसरों के दुख को

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दूर करने वाले श्रीचन्द्र ने वह भीलड़ी को दिया। उसको लेकर वह जल्दी से गांव को गई।

वीणापुर नगर में सूर्यवती के पुत्र श्रीचन्द्र किल्लों मोहल्लों को देखते हुए मित्र के साथ पवन को खाते हुए आनन्द का अनुभव करते हुए किसी स्थान पर विश्रान्ति लेते हैं इतने में पूर्व भव में जिस तोती ने अनशन किया था इस भव में वह पद्मनाभ राजा की पुत्री पद्मश्री हुई है वह मंत्री की पुत्री कमलश्री के साथ नगर के बाहर क्रीड़ा करके वापिस जारही थी वहां उसने श्रीचन्द्र को देखा और उन पर मोहित हो गई। उसने चंदन का कटोरा भरकर सखी द्वारा बुद्धि की परीक्षा के लिये भेंट भेजा, उसे देखकर राजा ने पूछा 'ये क्या है? सखी ने कहा 'पद्मनाभ राजा की रानी पद्मावती की पुत्री पद्मश्री ने आपको यह भेंट भेजी है उसे सफल कीजिये। यह सुनकर राजा ने सोचा 'यह कटोरा भोग के लिये नहीं भेजा गया है अपितु मेरी बुद्धि की परीक्षा के लिये भेजा है।

उन्होंने चन्दन के कटोरे के मध्य अपनी छोटी अंगुली की अंगूठी रखकर सखी को कचोले सहित वापिस भेजा। फिर से पद्मश्री ने खुले पुष्प भेजे। राजा ने पुष्पों की माला बनाकर वापस भेजी। तब गुणचन्द्र अमात्य ने पूछा 'ऐसा आपने क्यों किया? राजा ने उसको अपना अभिप्राय कह सुनाया, पद्मश्री ने अद्‌भुत बुद्धि से मेरी परीक्षा लीं है। इस चन्दन के कटोरे की तरह यह नगर पहले भी उत्तम पुरुषों से भरा हुआ है उसमें इस अंगूठी की तरह मेरा स्थान अपने आप हो

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जायेगा। पुष्पों की तरह हम अकेले हैं और गुण बिना के हैं परन्तु पुष्प माला की तरह इकट्ठे होकर सुगुण वाले बनकर इष्ट वस्तु को प्राप्त कर लेंगे।

पद्मश्री के हृदय के भाव को जानने वाले पूर्व भव के इच्छित रूप में सूर्य समान ऐसे तेजस्वी श्रीचन्द्र को पद्मश्री ने मन में पति धारण कर लिया और मन्त्री की पुत्री कमलश्री ने अमात्य गुणचंद्र को पति धारण कर लिया। दोनों कन्यायें उत्तम वरों को बड़े प्रेम से देखने लगीं। वह दोनों कुमारिकायें अपने २ माता पिता का बताने स्वस्थान पर गयीं।

सुवर्णकुम्भ देकर छुड़ाये गये भील को भीलड़ी ने जब सारा वृतान्त सुनाया तो वह भील राजा को नमस्कार करके उन्हें अपने स्थान पर ले गया। प्रभात में पके हुए मधुर आम्रफल उन्हें भेंट किये। फलों से दोनों ने अपनी क्षुधा मिटा कर पूछा कि हेमंत ऋतु में आम्रफल कैसे? भील ने कहा इस गिरि के पांच शिखर हैं उन सब में जो उच्च शिखर ईशान दिशा की तरफ है वहां श्रीगिरि की अधिष्ठनायिका विजयादेवी का मन्दिर है वहां पर हमेशा फल देने वाला आम का देवी वृक्ष है, उसमें से मैं प्रतिदिन आम्रफल लाता हूँ। यह पर्वत बहुत ऊंचा और विशाल है चारों तरफ में सिर्फ एक ही मार्ग है, मेरे सिवाय ऊपर जाने में और कोई समर्थ नहीं है, वृद्धों के कहे अनुसार मैं गाऊ आदि जानता हूँ। आइये पधारिये ऊपर जाकर पर्वत की सुन्दरता को देखकर हम आनन्द मनायें।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मित्र और भील सहित राजा श्रीगिरि पर गुफा, वन, शिखर आदि हर्ष से देखने लगे। बाद में ऐसे तालाब में जहां निर्मल जल में कमल खिले हुये थे उसमें श्रम को दूर करने के लिये स्नान किया उतने में भील सदाफल देने वाले उद्यान में से अमृत जैसी पकी हुई अधपकी द्राक्ष, पके हुए आम्रफल, रायण, केले, खजूर, जामुन, जंबीर, अमृत जैसे बीजोरे, नारंगी, दाड़म, आमली, (इमली), पीलू, फणस, गुन्दे, बोर, खरबूजे, पकी हुई इमली, कितने ही प्रकार के पानी, श्रीफल का पाणी, नागरबेल का पान, इलायची, लविंग, भवली के फल आदि उनके खाने के लिये ले आया।

कमल के समूह, खिले हुए चंपक, केतकी, मालती, मल्लिका, कुन्द, फूल आदि सब वस्तुएं उपभोग के लिये ले आया। उन सबको राजा ने सफल किया। श्रीगिरी के चारों तरफ सुन्दरता को देखकर राजा सोचने लगा कि देवी के आदेश से समय आने पर सुन्दर नगर स्थापन होगा और उस नगर के मध्य के शिखर पर विधि पूर्वक श्री अरिहन्त परमात्मा का मन्दिर बनवाऊंगा। कुछ समय वहां ठहर कर भील को उचित उपदेश देकर अश्वों पर बैठ कर प्रयाण किया। ताप से व्याकुल होने के कारण वह सरोवर की पाल पर रुके। वहां एक प्रवासी आया उसके हाथ में पोपट और पोपटी का पिंजरा था, शास्त्र युक्ति से उनको बुलाकर बहुत हर्षित हुये।

राजा ने पूछा 'इन्हें कहां से प्राप्त किया है? क्या इन्हें बेचना है? वह बोला 'नंदीपुर नगर के हरिषेण राजा की पुत्री तारालोचना

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

है ये तोता तोती हैं, मेरी मार्फत वीणापुर में पद्मश्री सखी को भेजे हैं, तारालोचना ने कहलाया है कि तेरे स्वयंवर पर अनेक राजा आयेंगे, तो उस समय मैं जरूर आऊंगी। वीणापुर में स्वयंवर के लिये मंडप तैयार हो रहा है, उसे देखने राजा मित्र सहित वीणापुर गये। वहां राजा, मंत्री, सामन्त आदि अनेक प्रकार के लोग आये थे।

उन सबको आश्चर्य युक्त करते हुए श्रीचन्द्र राजा मंडप में आए। हरि भाट ने उन्हें देखकर कहा 'पात्र में दिया हुआ दान पुण्य को उपार्जन करवाता है। 'गरीब को दिया हुआ दान दया को दर्शाता है, मित्र को दिया हुआ दान प्रीति की वृद्धि करता है शत्रु को दिया हुआ दान बैर का नाश करता है, भाट को दिया हुआ दान यश की प्राप्ति करवाता है, राजा को दिया हुआ दान सन्मान दिलाता है और सेवक को दिया हुआ दान भक्ति उत्पन्न करता है। तो हे श्रीचन्द्र राजा ! आपका दिया हुआ दान किसी भी स्थान पर फल बिना का नहीं होता।

परनारी सहोदर, दूसरों के दुख देखने में कायर, दूसरों के उपकार के लिये तत्पर, अर्थी के लिये कल्पतरू जैसे श्रीचन्द्र हैं। इत्यादि भाट ने कहा इतने में राजा ने कहा तुम्हारी इच्छा फले ऐसा कह कर भाट को उचित दान दिया। श्रीचन्द्र राजा ने अपने मित्र से कहा कि यहां रहने पर हम लोग पहचाने जायेंगे। ऐसा कहकर श्रीचन्द्र राजा रात्रि में ही उत्तर दिशा की तरफ प्रस्थान कर गये।

वहां किसी यक्ष के मन्दिर में आकर सो गये, प्रातःकाल जागने पर रात्रि में जो स्वप्न आया था वह मित्र को बताने लगे कि मेरु गिरी पर

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कल्पवृक्ष की छाया में कोई अद्भुत देवी लक्ष्मी, कुलदेवी या ब्राह्मी ने मुझे गोद में लिया है इस प्रकार का अद्भुत स्वप्न मैंने अभी देखा है जिससे मुझे महान् लाभ होना चाहिये इसमें कोई संशय नहीं है। इतने में अटवी में से कोई चकित लोचन वाली देदीप्यमान आभूषणों से युक्त लाल फटे हुये वस्त्र वाली सगर्भा सधवा स्त्री अति वेग से आरही थी। अमृत के अंजन वाली दृष्टि है जिसकी ऐसी माता को देखकर श्रीचन्द्र एक दम उठकर सन्मुख गये और दोनों चरणों में नमस्कार करके कहने लगे, हे माता! दुख और मन का खेद अब गया समझो, भय भी गया अब जाणो, मेरे भाग्य से तुम यहां किस तरह आईं? श्रीचन्द्र के वचन सुनकर और उसे देखकर हर्ष से जितने में मन्दिर में जाने लगती है इतने में श्रीचन्द्र के नाम वाली अंगूठी देखकर पहचान कर अति हर्ष के कारण उसके स्तनों से दूध झरने लगा। ललाट को देखकर पूछने लगी कि क्या तुम लक्ष्मीदत्त सेठ के घर प्रसिद्धि पाये हुए श्रीचन्द्र हो? राजा ने ऊं कहकर हां कही। पुत्र जानकर हर्ष से आंसू बहाती हुई गोद में लेकर आंसुओं से नहलाती हुई गाढ़ स्वर से रुदन करती हुई कहने लगी 'हे वत्स! मैं तेरी मां सूर्यवती हूं। तू मेरा पुत्र है, आज हे पुत्र! बारह वर्ष बाद दृष्टि से मिला है। (हस्तलिखित रास में २४ वर्ष लिखा है) ऐसा कह कर दृढ़ आलिंगन कर हर्ष से पागल जैसी होगई। श्रीचन्द्र को भी अपनी मां जानकर बहुत खुशी हुई और कहने लगे हे माता! तुम माता कैसे हो? लाल वस्त्र वाली किस लिये? यह कहो। सूर्यवती ने स्वचरित्र, विवाह आदि, नैमित्तिक की वाणी, स्वप्न, चन्द्र

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

का पान, नाम मुद्रा, पुष्पों के समूह में रखना, देवी का वचन, ज्ञानी मुनि आदि के वचनों को कह सुनाया।

'मैं गर्भवती होने के कारण मुझे विषम प्रकार का दोहद उत्पन्न हुआ कि 'मैं रक्त की नदी में क्रीड़ा करूं" राजा ने मंत्री की बुद्धि से लाख के रस पूर्ण बावड़ी बनवाई उसमें मैं क्रीड़ा कर रही थी, चारों तरफ सैनिकों का पहरा था बहुत समय तक पानी में क्रीड़ा करके मैं तीर पर आई, मेरे लाल गीले वस्त्रों के कारण मांस की भ्रांति से भारण्ड पक्षी मुझे आकाश में ले गया, भ्रमण करता हुआ भारण्ड पक्षी आखिरकार 'नमो अरिहंताण' ऊंची आवाज में बोलने के कारण मुझे शिला पर रखकर एकदम चला गया। गुफा में रात्रि व्यतीत कर प्रातःकाल होते ही मैं इस दिशा की ओर रवाना हुई, दुष्ट पक्षियों के भय से डरती हुई दैवयोग से यहां आ पहुँची हूं। तुझे देखकर हे पुत्र! मैं हर्ष को प्राप्त हुई हूँ और आज मेरे सारे अभिग्रह पूर्ण हुए हैं। मेरे और तेरे वियोग से तेरे पिता बहुत दुखी होंगे।

श्रीचन्द्र माता की स्तुति करने लगे। हे माता मेरा पुण्य वृक्ष आज फला जिस कारण आप मिलीं, मैं धन्य और कृतकृत्य हुआ हूं, कृत पुण्य हुआ हूँ। आज तो मुझ पर बादल बिना की वृष्टि हुई है आज मुझे कैसे मां दिखाई दे गई। जिसने गर्भ को वहन किया जन्म वेला की उग्र पीड़ा को सहन की, फिर जिसके द्वारा पथ्य आहार, स्नान, स्तन-पान, आदि प्रयत्न पूर्वक करवाया गया, विष्टा, मूत्र आदि मलिन कार्य कठिनता से करके पुत्र का जल्दी रक्षण करवाया उस मां की स्तुति में

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

ा श दों से करूं ? बाद में श्रीचन्द्र का सारा चरित्र गुणचन्द्र ने मां को कह सुनाया उसे सुनकर सूर्यवती रानी बहुत ही हर्षित हुई।

पदचिन्हों के जानकार पुरुष पद चिन्हों के अनुसार वहां आये और कहने लगे हे मंत्रीश्वर! दोनों जने ये बैठे हैं। बुद्धिसागर मंत्री ने देदीप्यमान ललाट से युक्त श्रीचन्द्र राजा को नमस्कार किया और विनती की कि हे देव! पहले आपको देखकर पद्मश्री आप पर मोहित हो गई है मेरी पुत्री अमात्य गुणचन्द्र पर मोहित हैं ऐसा जानकर राजा ने मुझे आपकी शोध के लिये भेजा है और कहलाया है कि वे स्वयंवर में आयें तो पहचान कर वरमाला पहनाना।

इतने में नन्दीपुर के हरिषेण राजा की पुत्री तारालोचना द्वारा भेजा हुआ तोता तोती का युगल वीणापुर के राजा के पास पहुँचा। राजा की गोद में बैठी हुई राजकुमारी पद्मश्री उन्हें देखकर वेहोश हो गई हवा आदि उपचारों के द्वारा उसे होश आया। राजा के पूछने पर पद्मश्री ने कहा हे तात! मुझे पूर्व भव का स्मरण हो आया है।

कर्कोट द्वीप में मैं तोती थी वहां से मैं कुशस्थल में सूर्यवती रानी के पास आई वहां प्रथम जिनेश्वर के मन्दिर में जिस वर को देख कर मैंने अनशन किया था वे यहां आये हुए हैं उनके साथ ही मैं ब्याह करूंगी ऐसा कहकर उसने भोजन लेना छोड़ दिया। इतने में हरि भाट ने आकर कहा कि स्वयंवर मंडप में मैंने श्रीचन्द्र को मित्र सहित देखा है। रात्रि में ही सेना तथा भाट सहित आपकी खोज करने भेजा है मेरे

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

भाग्य से आप मुझे यहां मिले हैं। हे देव ! आप यहां पधारो हरि भाट ने सूर्यवती रानी को पहिचान लिया।

रानी और पुत्र सहित वहां का राजा वहां आया, सब आपस में मिलकर हर्षित हुए। नगर में ठाठ से प्रवेश किया। हरि भाट श्रीचन्द्र के इस प्रकार गुण गाने लगा 'कुशस्थल में प्रथम जिनेश्वर के पास तोती ने जिन्हें देखा और यह कहा कि अगले भव में ये ही मेरे पति हों और अब राजकुमारी ने उन्हें ही वरण किया है वे श्रीचन्द्र जय को प्राप्त हों। गुरुवचन से अनशन करके तोती इस भव में पद्मश्री राजपुत्री बनी, प्रथम दृष्टि में जिन्हें वर धारण किया और जाति स्मरण ज्ञान से जिन्हें पहचान लिया वे श्रीचन्द्र जय को प्राप्त हों। गर्भ में वीर पुत्र हो तब रक्त में खेलने का वेहद उत्पन्न होता है उस प्रकार से जिन्हें भारण्ड पक्षी दबोच कर श्रीगिरि के नजदीक उन्हें रख गया वह सूर्यवती माता जिन्हें बारह वर्ष बाद मिली वे श्रीचन्द्र जय को प्राप्त हों।

कनकपुर के कनकध्वज राजा की पुत्री कनकावती सहित जो राज्य का पोषण करते हैं और दैवी सुवर्ण के नवलखा हार से श्रेष्ठ शोभा वाले नवलखा देश के स्वामी जय को प्राप्त हों इत्यादि बोलते हुए भाट को सूर्यवती आदि ने बहुत दान दिया। माता के आग्रह से पद्मश्री और तारालोचना श्रीचन्द्र को व्याही और कमलश्री गुणचन्द्र को व्याही। श्रेणिक राजा ने श्री वर्धमान स्वामी से पूछा कि पूर्व भव के स्नेह के कारण पद्मश्री ने श्रीचन्द्र को वरण किया, उसी तरह कमलश्री का पूर्व

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

भव में गुणचन्द्र के साथ क्या स्नेह था ? भगवान श्री वर्धमान स्वामी ने फर्माया 'पूर्व भव में जो धरण था वह श्री शत्रुंजय गिरि पर छठ्ठ· अट्ठम के तप और श्री परमेष्ठी मंत्र के ध्यान से दो हत्या के पाप से क्षणवार में मुक्त हो गया जो सिंहपुर में श्रीदेवी थी वह दूसरे भव में आनन्दपुर में सुन्दर श्रेष्ठी की जिनदत्ता पुत्री हुई।

वह जिनेश्वर भगवान की धर्म क्रिया में रत थी, अनुक्रम से यौवन को प्राप्त हुई। हृदय में पति की इच्छा वाली कुमारी पिता के साथ संघ लेकर यात्रा के लिये श्री सिद्धाचल तीर्थ पर गई। धरण को तीर्थ की सेवा करते देख जाति स्मरण ज्ञान से पूर्व भव के ज्ञान होने से उसका चरित्र और पूर्व भव का योग जान कर धरण ने उसके साथ क्षमापना कर अनशन लिया। बाल ब्रह्मचारिणी ने संलेखना तप किया, धरण उस तीर्थ की महिमा से गुणचन्द्र हुआ, जिनदत्ता यहां कमलश्री बनी। बाद में बडे ठाठ से विवाह हुआ। वहां दान शालाएं आदि खुलवा कर श्रीचन्द्र वहां के राजा बने। बुद्धिसागर मन्त्री को बहुत ऊंटनियों सहित कुशस्थल प्रतापसिंह राजा के पास भेजा। और उसे कहा कि कनकपुर में लक्ष्मण मन्त्री का समाचार कह कर कुशस्थल जाना और सारा वृतान्त कह सुनाना।

श्रीगिरि में भील ने श्रीचन्द्र राजा को सुवर्ण की खान बतलाई वहां राजा ने श्रीचन्द्रपुर नामक एक विशाल नगर बसाया। श्रीगिरि के बीच के शिखर पर चार द्वार वाला श्रीचन्द्र प्रभु स्वामी का विशाल

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

देरासर बनाया इस प्रकार उन्होंने श्रेष्ठ नगरा बसायी। नगरी के चारों तरफ भयंकर जंगल था।

पूर्व पुण्य के प्रभाव से चिंतामणी रत्न से और सुवर्ण की खान द्वारा श्रीचन्द्र राजा ने पुण्य महोत्सव, जैन मन्दिर, दानशालायें, प्याऊ, आश्रम और आराम गृहों से सारी पृथ्वी को सुशोभित बना दिया। दानशाला में एक दिन एक मुसाफिर आया था। उसको राजा ने पूछा, तुम कहां से आये हो? उसने कहा कि मैं कल्याणपुर से कनकपुर होता हुआ आया हूं। उस देश का राजा कहीं बाहर गया है, उसके राज्य का लेने के लिये ६ राजा चढ़ आये हैं परन्तु वहां के राज्य का गुणी मन्त्री लक्ष्मण चतुरंग सेना से युक्त होकर लड़ाई के मैदान में सामने खड़ा हुआ है।

तत्काल राजा ने मन्त्रणा करके शत्रु पर गुणचन्द्र आदि सैन्य सहित पद्मनाभ राजा को भेजा। राजा श्रीचन्द्र सैन्य को उत्साहित करने के लिये थोड़ी दूर तक उनके साथ गये, फिर सूर्य अस्त होने से पहले वापस कुछ सेना साथ लेकर लौट आए।

श्रीगिरी का चारों ओर से निरीक्षण कर किसी रास्ते के छोटे गांव में ठहरे। वहां एक पास की एक शांत झोंपड़ी के पास आये वहां एक मुसाफिर ने कहा कि कल कुन्तलपुर नगर में सुधन सेठ के घर जबरदस्ती से मैं वहां सोया था। वह सेठ कंजूस है उसके चार पुत्र हैं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मध्य रात्रि में उनकी चारों बहुएं स्नान करके, शृंगार आदि करके वड़ के वृक्ष पर बैठ कर कहीं गईं। मैं डरता हुआ वहां रहा।

रात्रि के अन्तिम पहर में बाहिर घूम कर वापस आईं। वहां से निकल कर मैं पंच योजन दूर यहां आया हूं। यह सुनकर श्रीगिरि के राजा श्रीचन्द्र वहां सेना को छोड़ कर अकेले आगे के लिये निकले। अदृश्य गोली के प्रभाव से संध्या समय सुघन श्रेष्ठी के घर आराम के लिये ठहरे। मध्य रात्रि में बहुएं स्नान आदि कर शृंगार आदि से सुशोभित होकर घर के बाग में गईं। राजा भी उनके पीछे चल पड़ा। शमी वृक्ष पर चढकर परस्पर बातें करने लगीं कि कहां चले? एक ने कहा कि मैंने कर्कोट द्वीप की बातें सुनी हैं इसलिये वहां चलें। श्रीचन्द्र राजा शमी वृक्ष के मूल को पकड कर बैठ गये।

बहुएं बोलीं, योगिनीओं में मुख्य खर्परा, जो विद्या को देने वाली है उसे हमारा नमस्कार हो। ऐसा कहने पर मन्त्र द्वारा वृक्ष आकाश में उड़ने लगा वह कुछ ही क्षणों में कर्कोट द्वीप में पहुंच गया। नगर के नजदीक किसी अच्छे स्थान पर वृक्ष को खड़ा करके, कुतूहल से नगर के अन्दर गयीं, उनके पीछे २ राजा भी क्रीड़ा करते हुये आये वे आगे गयीं इसलिये राजा ने कुतूहल से उस नगर के मुख्य द्वार से अन्दर प्रवेश किया।

विविध जाति के चंदरवों से युक्त आश्चर्यकारी विशाल मंडप में दीपकों की लाइनें थीं। वहां एक सिंहासन रखा हुआ था आगे भाग

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

में मणी और मतियों से जड़ित पाद पीठ वाले सिंहासन को देखा। श्रीचन्द्र कौतुकवश कुछ सोचकर उस पर बैठ गये और मुंह में से अदृश्यकारिणी गोली निकाल ली। जिसके हाथ में तलवार है ऐसे श्रीचन्द्र निर्भय होकर बैठ गये नजदीक में जो थाल पड़ा था उसमें से तांबुल ग्रहण कर ज्योंही दर्पण में मुख देखने लगते हैं उतने ही में दूसरे पर्दे के पीछे रहे हुए सेवकों ने तत्काल आकर कहा 'हे वीर, आप जय को प्राप्त हों।' वाजित्र आदि साज बजने लगे। गीत, नृत्य, करते हुए उन्होंने कहा कि आज सबका भाग्य फल गया है।

इतने ही में नगर का राजा सेना सहित वहां आया। श्रीचन्द्र ने उसको नमस्कार करके पूछा 'यहां क्या है'? राजा ने सिंहासन पर बैठकर श्रीचन्द्र को गोदी में बैठा कर कहा, तुम हमारे भाग्य से यहां आये हो। कर्कोट द्वीप के आभास नगर में मैं रविप्रभा राजा हूँ। मेरे ९ पुत्रियें हैं। कनकसेना, कनकसुन्दरी, कनकमंजरी, कनकप्रभा, कनकआभा, कनकमाला, कनकरमा, कनकचूला और मनोरमा पुत्रियों के यौवन प्राप्त होते ही मैं चिंतातुर हुआ। एक बार एक निमित्तक आया, उससे मैंने पूछा कि इन कन्याओं के पति अलग होंगे या एक ही पति होगा? कुछ विचार कर उसने कहा कि इन सबका एक ही भर्तार होगा। वह परद्वीप में होने से मेरा ज्ञान वहां तक पहुंच नहीं सकता, जिससे नाम, कुल, स्थल आदि बता सकूं। परन्तु आज से दसवें दिन मध्य रात्रि के बाद वह आयेगा।

तब से सारी सामग्री तैयार करवाके रखी है, वह शुभ दिन आज ही है सब कुछ सत्य निकला। इसलिये अब आप कन्याओं के

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

साथ पाणिग्रहण करो। राजा के आग्रह से श्रीचन्द्र ने ९ कन्याओं से विवाह किया। वहां के नगर के लोग और वे चार बहुएं भी देखने आई और कहने लगीं यह योग अद्भुत रूप से हुआ। उन्हें देखकर श्रीचन्द्र विचारने लगे ये चली जायेंगी तब मेरा क्या होगा? तो मैं भी इन्हीं के साथ जाऊं।

ऐसा सोच कर बुद्धिशाली ने विवाह की विधि के बाद ऊपर महल में आकर लग्न वस्त्र पर कुंकुम से 'प्रतापसिंह का पुत्र श्रीचन्द्र कुशस्थल में हूं' इस प्रकार लिखकर अल्प रात्रि शेष रही तब स्ववेष धारण कर अपनी अंगूठी कनकसेना को देकर और उसकी अंगूठी लेकर शरीर चिंता के बहाने वहां से बाहर निकले।

राजा जल्दी २ चलकर वृक्ष के पास पहुँचे। वहां ६ स्त्रियें पहले से ही खड़ी थीं। उनमें मुख्य खर्परा, दूसरी उमा और चार वहुएं थीं। खर्परा ने कहा हे उमा! ये बहुएं अपने घर बहुत दुःखी थी। इनके घर मैं भिक्षा के लिये गई थी इन्होंने बड़े आदर से मुझे उत्तम भिक्षा दी, जिससे मैंने सन्तुष्ट होकर इन्हें विद्या दी। खर्परा ने फिर कहा, हे भद्रे! उमा मेरी शिष्या है। इसके पति के गुम हो जाने पर इसने दूसरा पति कर लिया है। यहां हम आश्चर्य देखने इकट्ठी हुईं हैं अब कौतुक देखने कुशस्थल हम चल रही हैं। चारों बहुओं ने पूछा वहां क्या कौतुक है?

खर्परा ने कहा प्रतापसिंह राजा के सूर्यवती राणी

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

है वह राणी रक्त की बावड़ी में स्नान करके किनारे पर बैठी थीं उसी समय भारण्ड पक्षी ने वहां से उठाकर उनका हरण कर लिया। उसके वियोग से दुखी होकर राजा काष्ट भक्षण के लिये तैयार हुआ है। उसके मंत्रियों ने बड़ी कठिनता से आज प्रभात होने तक रुकने का कहा है। प्रतापसिंह ने मन्त्रियों से कहा कि राज्य सूर्यवती के पुत्र को देना। आज प्रभात में अब राजा काष्ट भक्षण करेंगे।

खर्परा उमा सहित वृक्ष पर गई। श्रीचन्द्र ने सोचा मेरे पुण्य से आज मुझे यह वृक्ष मिला है, सचमुच किसी उपाय से पिता को बचाना चाहिये। ऐसा सोचकर अदृश्य पणे में खर्परा के वृक्ष के मूल में दृढ़ता से उसे पकड़ कर बठ गये। कुछ ही क्षणों में कुशस्यल पहुंच गये। वहां क्या देखते हैं कि सैंकड़ों लोगों से राजा व्याप्त हैं और काष्ट भक्षण की तैयारी में हैं। श्रीचन्द्र अवधूत का वेश बनाकर वहां जाकर बोले ठहरो, कुछ क्षणों के लिये ठहरो। राजा ने कहा तुम क्या जानते हो? श्रीचन्द्र चिन्तन करते हों ऐसी मुद्रा बना कर बोले तुम दुख को छोड़ दो, सूर्यवती पुत्र सहित आपको थोड़े ही दिनों में मिलेगी। क्षेम कुशल के समाचार आठ दिन के अन्दर मिलेंगे।

मन्त्रियों ने हर्षित होकर कहा हे देव! यह सत्यवादी दिखाई देता है, इसलिये एक सप्ताह और ठहर जाइये। गोत्र देवी ही इन्हें यहां ले आई है। इनके वचन सत्य होंगे। चिता को ठण्डी करके, देवी की स्तुति कर आनन्दित होते हुये राजा ने अवदूत सहित नगर में प्रवेश किया। छुपते हुए श्रीचन्द्र दोनों वृक्षों को देखने गये परन्तु वे दिखे

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

नही। दोपहर में भूखे राजा तथा अवदूत ने भोजन किया। राजा ने पूछा इस छोटी उम्र में आप योगी कैसे बने।

श्रीचन्द्र कहने जिस मनुष्य का पेट भरा हुआ हो तो उसके शरीर में स्नेह, स्वर में मधुरता, बुद्धि, लावण्य, लज्जा, बल, काम, वायु की समानता, क्रोध का अभाव, विलास, धर्म शास्त्र, पवित्रता, आचार की चिन्ता, और देवगुरु नमस्कार ये सब बातें संभवित होती हैं। योग की साधना के लिये, गुदे के मूल में चार दल वाला आधार चक्र, चार अक्षर लिखने मध्य में 'ह' अधिष्ठान चक्र ६ कोने वाला, ब-भ-म-य-र-ल नाभि में मणि पूरक चक्र दश दल में दस अक्षर, 'क से ठ' तक के कंठ में विशिद्धी सोला चक्र के सोला स्वर, ललाट में आज्ञा चक्र ह और स इस प्रकार योग की साधना की जाती है। जिसमें सकल संसार के हित के करने की शक्ति है, वर्ण रूप है जिसका ऐसे ब्रह्म बीज को नमस्कार करता हूं।

राजा इस प्रकार दिन और रात अवदूत से चर्चा करते रहते हैं। परन्तु अपना पुत्र हैं यह नहीं जानते। अवदूत सारे राज्य का निरीक्षण करता है। किस समय वह अन्तपुर में गये होते हैं वहां जय आदि भाइयों ने मंत्रणा की कि 'राजा की प्रिया के दुख से मृत्यु होने वाली थी, परन्तु अवदूत ने आकर रोक दिया अब हमें राज्य किस तरह मिलेगा? एक ने कहा कि चार दिन में लाख का महल बनवावें वास्तु मूहूर्त के बाहने बीच के कमरे में राजा को बैठाकर द्वार बंधकर उसे जला देवें। इस षडयंत्र को 'श्रीचन्द्र' ने अदृश्य रुप से सुन लिया।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

श्रीचन्द्र सुनकर जल्दी से अपने उतारे पर आये और वहां से उस लाख के महल तक की सुरग बनवा दी। गुप्त रीति से यह कार्य हो गया।

पांचवे दिन जय आदि के आग्रह से राजा ने अवद्त सहित महल में प्रवेश किया। बाद में द्वार बन्ध कर राजकुमारों ने आग लगा दी। राजा ने अवदूत से पूछा, ऐसा कैसे हो गया? 'श्रीचन्द्र' ने कहा, राज्यलुब्ध तुम्हारे पुत्रों ने राज्य लेने के लिये षड़यंत्र रचा है। यह लाख का महल आपको और मुझे मारने के लिये बनाया है। कुमारों को धिक्कार है, लोभ वश पिता को भी मारने के लिये तैयार हो गये। राजा ने कहा अब क्या करें? तत्क्षण अवदूत ने पैर के प्रहार से सुरंग को खोल कर उस गुप्त सुरग में प्रवेश किया, इतने में तो महल जल कर गिर गया।

राजा सोचने लगे, यह विघ्न किस प्रकार टल गया? अवदूत की बार २ प्रशंसा करते राजा उसके उतारे पर पहुंचे। राजा को मरा हुआ मानकर, जय भाइयों सहित राज्यसभा में छत्र स्थापन करने लगा, लोग व्याकुल हो उठे, मंत्री लोग बुद्धि हीन हो गये। अवदूत राजा से कहने लगा, राजन् नगर बरबाद हो जायगा, लुटेरे राज्य और भन्डार को लूटने लगेंगे। राजा ने उसी समय अपने अंग रक्षकों को बुलाया, वे आये और राजा को जीवित देख कर, हर्षित होकर, राजा की आज्ञा से सैनिकों ने जय आदि चारों भाइयों को लकडी के पिंजरे में बन्द कर दिया।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

प्रतापसिंह राजा छत्र, चामर और अवदूत सहित सुशोभित हो रहे थे। राजा सुवर्ण, रत्न आदि अवदूत को देते हैं परन्तु वह लेता नहीं है। वे कहने लगे, कार्य सिद्ध होने के बाद लूंगा। राजा ने कहा, तुमने मुझे दो बार मरने से बचाया है, इससे भी बढ़कर कोई कार्य सिद्ध होने वाला है? इसलिये हे भद्र! तुम आधा राज्य ग्रहण कर मुझे ऋण मुक्त करो। इस प्रकार राजा प्रतिदिन कहते हैं परन्तु वह लेता नहीं है। परोपकारी पुरुषों को संपदाऐं हर कदम पर प्राप्त होती हैं। सातवें दिन बुद्धि सागर मंत्री कुशस्थल पहुंचा, उसने द्वारपाल द्वारा कहलाया। राजा के आदेश से मंत्री ने राजसभा में प्रवेश किया, उसे देखकर 'श्रीचन्द्र' हर्षित हुये।

राजा के समीप पत्रिका रखकर मंत्री ने कहा हे देव! वीणा-पुर में सूर्यवती रानी पुत्र सहित कुशल मंगल में हैं। गुणचन्द्र सहित श्रीचन्द्र राजा जय को प्राप्त हो रहे हैं। मैं कनकपुर में लक्ष्मण मंत्री को समाचार कह कर यहां आया हूं। मैं आपके पुत्र का मंत्री हूँ, वहां उनके साथ जो घटनायें ही घटी थीं कह सुनायीं। राजा ने श्रेष्ठी आदियों का पत्र उन्हें देकर अपने पुत्र के पत्र को हर्ष से पढ़ने लगे। मंत्री के साथ आया हुआ हरिभाट सविशेष पद हर्ष से गाने लगा। पुत्र और प्रिया के शुभ समाचार को सुनकर हर्ष के अश्रुओं से पूर्ण नेत्रों से नगर में विशाल महोत्सव कराया। 'श्रीचन्द्र' ने मंत्री द्वारा कहलाया था उसी अनुसार धनंजय सेनापति ने चन्द्रकला पद्मिनी को उनके पिता के घर से लेकर बुद्धिशाली राजा सहित श्रीगिरि पर जाने के लिये

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

प्रयाण किया।

सब वाजिंत्रों के नाद, से जयकलश हाथी मद से उद्दत होकर, स्थंभ को उखाड़ कर, महावत को मार कर, नगर में घरों, दुकानों, आदि को गिराता हुआ सारी नगरी को परेशान करने लगा। तब लोग पीड़ित होते हुये शोर करने लगे। उसे सुनकर प्रतापसिंह राजा ने क्या २ हैं? ऐसे कहते हुये महल पर चढ़कर हाथी को देखा। सैनिकों को आदेश दिया, दौड़ो २ जल्दी पकड़ो, छल से हाथी पर चढ़कर उसे अंकुश द्वारा खड़ा करो। मद से परवश बना हुआ हाथी सैनिकों को देखकर और बिगड़ा, अश्वों, रथों, हाथियों, नर-नारियों को कुचलता हुआ, कुशस्थल को बिलोने की तरह मथता हुआ, राजद्वार के नजदीक आया हुआ देखकर राजा आकुल व्याकुल हो उठा। राजा ने सपरिवार जीने की आशा छोड़ दी,। परन्तु ज्योंही हाथी राज द्वार के पास आया त्योंही अवदूत ने अंकुश युक्त होकर वहां आया।

प्रतापसिंह राजा के मना करने पर तथा लोगों के हा हाकार मचाने पर भी, गज-शिक्षा में दक्ष श्रीचन्द्र स्ववस्त्र से जयकलश को कोपायमान करके, सब लोगों के भय से देखते हुये, उसके मर्म को जानने वाले ऐसे श्रीचन्द्र उसे अपने कब्जे में कर, जयकलश के कंधे पर चढ़ बैठे। श्रीचन्द्र को गिराने की कोशिश कराता, डराता हुआ तथा क्रीड़ा को करता हुआ हाथी बड़े वेग से विशाल अटवी में आया, बहुत जल्दी ही अपने देश को छोड़कर वन में आ पहुंचे। तीसरा दिन था निर्मद होकर जयकलश हाथी ने पर्वत के नजदीक स्वयं खड़े रहकर

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अपनी सूंढ से राजा को पानी पीने के लिये उतारा। स्नान करके, पानी पीकर स्ववेष को धारण करके जयकलश को आवाज दी यहां आओ, और फिर हाथी पर आरुढ़ हो गये।

कुशस्थल के राजा ने सेना सहित जयकलश का पीछा किया, रात्रि तक सब जगह खोज करवायी, सब सैनिक खाली हाथ वापिस लौटे। राजा निराश होते हुये बोले 'हस्तिरत्न गया उसके लिये मेरा मन उतना दुखी नहीं, उससे अधिक दुख, जीवन रुपी रत्न को बचाने वाले, सत्य को बोलने वाला अवदूत गया उससे हो रहा है। उसका उपकार मैं कुछ भी नहीं चुका सका। उसके उपकार से दबे हुये राजा ने उसकी बड़ी प्रशंसा की। इधर जयकलश पर बैठे हुये श्रीचन्द्र राजा ने लीला करते हुए दूसरे वन में प्रवेश किया। वहां भीलों ने हस्तिरत्न छीनने के लिये कहा कि तुम कहां जा रहे हो ? चारों तरफ बाणों से भीलों को सज्ज देखकर, श्रीचन्द्र राजा स्थिर होकर, आते हुये बाणों का नाश करने लगे। हस्तिरत्न को श्रीचन्द्र ने इशारा किया, आज्ञा होते ही वृक्ष की शाखा को धारण कर, पत्थरों आदि के टुकड़ों से उस बलवान राजा ने भीलों को जीता। सब भीलों को दूर कर, वृक्ष के नीचे वे महान क्रान्ति वाले राजा बहुत सुन्दर दिखाई दे रहे थे। भीलों को किसने हटाया ये देखने के लिये वहां भीलनियें आयी।

भील राजा की पुत्री मोहिनी श्रीचन्द्र को देखकर मोहित हो पिता से कहने लगी मेरे तो यही पति होंगे दूसरा कोई मेरा पति नहीं। जिससे भीलों के राजा ने बड़े वेग से आकर दो हाथ जोड़कर कह

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

मेरा अपराध क्षमा करिये आप कोई महान् तेजस्वी पुरुष हैं, यह मेरी पुत्री आपके सिवाय किसी से विवाह करना नहीं चाहती, तो आप इसे ग्रहण करो। राजा ने कहा हे भीलों के राजा ! ये कन्या भीलनी है, मैं क्षत्रिय हूं मेरे कुल को कलक लगेगा।

मोहिनी ने कहा 'हे प्रभु ! आपका वस्त्र दो उसे मैं वरण करूं। जब वस्त्र नहीं मिला तो कहने लगी कि अपनी पादुका दे दीजिये, मैं पादुका लेकर हृदय में धारण कर अपने जन्म को सफल करूंगी। हे नाथ ! आपकी सेविका बनकर महल के बाहर हमेशा कार्य करूंगी, अगर आप नहीं देंगे तो अग्नि में प्रवेश कर जाऊंगी। यह सुनकर राजा ने पादुका दी वहां बड़ा भारी उत्सव मनाया गया। भील राजा ने कहा कि जो वस्तुएं मैंने मोहिनी के लिये तैयार करवाई हैं उन्हें ग्रहण करो। अश्व, हाथी, रथ, रत्न, मोती तरह २ के कीमती वस्त्र, सेवक आदि श्रीचन्द्र राजा के पास लाकर रखे।

उनमें अपने पंचभद्र अश्वों को सुवेग रथ से युक्त देखकर राजा हर्षित हुए। उन दोनों अश्वा ने आकर राजा को नमस्कार किया, हर्ष से हेपारव नृत्य करने लगे, उन्हें अपने हाथों से स्पर्श कर स्वीकार करते हुए कहा कि अहो ! ये अद्भुत अश्व कहां से आए ? भील राजा ने कहा हे देव ! भील लोग एक बार डाका डालने गये थे तब रास्ते में उन्होंने एक गायक से रथ और अश्व ले लिये, गायक भाग गया। उन भीलों ने अश्व और रथ मुझे दिये हैं। उस दिन से ही ये अश्व बहुत दुखी थे और सारी रात इनकी आंखों में से आंसू बहते थे। इनको

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सेवा में मोहिनी और सेवक हमेशा तत्पर है। मैंने यह सब मोहिनी के हस्त मेलाप के लिये करवाया है। यह अश्व अत्र इतने आनन्दित क्यों हो रहे हैं ? आप ही बताइये।

राजा ने कहा हे भीलों के राजा ! मेरे हृदय के जीवन समान वायुवेग और महावेग अश्व और सुवेग रथ को मैं अभी ग्रहण करता हूं। बाकी सब बाद में। सैनिकों में से कुंजर नाम के क्षत्रिय को रथ का सारथी बनाया। श्रीचन्द्र ने कहा इस जयकलश हाथी को कुशस्थल या कुंडलपुर भिजवा देना, मैं अभी कनकपुर जा रहा हूँ। इस अंगूठी से मेरा नाम जान लो। श्रीचन्द्र राजा ने कहा, हिंसा का त्याग करना, चार पर्वों में आरम्भ न करना। भगवती सूत्र में कहा है, ८-१४-१५ और ०)) पर्व होते हैं। महीने में ६ पर्व होते हैं, एक पक्ष में तीन पर्व आते हैं। विष्णु पुराग में कहा है, ८-१४ और १५ पर्व हैं। रवि संक्रान्ति भी पर्व है। हे राजेन्द्र ! तेल, मांस और स्त्री का भोग जो इन पर्वों में करता है वह नरक में जाता है, जहां विष्टा-मूत्र ही भोजन है। मनुस्मृति में कहा है, ८-१४-१५ और ०)) पर्व हैं, जो ब्रह्मचारी हो वह स्नातक द्विज कहलाता है, किसी भी प्रकार की हिंसा नहीं करनी चाहिये।

महाभारत में कहा है, घातक, अनुमोदना करने वाला, भक्षण करने वाला, लेने वाला, बेचने वाला, हे युधिष्ठिर ! प्राणी के घातक कहलाते हैं। पशु के अवयवों में जितने रोम रूपी कुए हैं, उतने हजार वर्ष पशु घातक को राधा जाता है। विष्णु भरत शान्ति पर्व के पहले

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

बाद में कहा है, हे भरत ! प्राणि वध में अगर धर्म हो और उससे स्वर्ग मिलता हो तो हम संसार को छुड़ाने वाले किस तरह स्वर्ग जायेंगे ? पशुओं को मार कर, यज्ञ करके, रक्त बहाकर अगर स्वर्ग का रास्ता खुलता हो तो नरक में कोण जायेगा ?

मार्कंड पुराण में कहा हैं जीवों का रक्षण करना श्रेष्ठ है, सब जीव जीने की इच्छा रखते हैं। इसलिये सब दानों में अभयदान प्रशस्त माना गया है। पहेला पुष्प अहिंसा, दूसरा पुष्प इन्द्रियों का निग्रह, तीसरा पुष्प जीव मात्र पर दया है, चौथा विशेष पुष्प क्षमा करना, पांचवां पुष्प ध्यान, छट्ठा तप सातवां पुष्प ज्ञान, आटवां पुष्प सत्य, जिससे देवता भी तुष्टमान होते हैं। इसलिये हमें हमेशा सब जगह जीवों की रक्षा करनी चाहिये।

महाभारत में कहा है, जू, खटमल आदि जन्तुओं को जो नहीं मारता तथा उनकी पुत्र की तरह रक्षा करता है वह स्वर्गगामी जीव माना जाता है। २० आंगुल चौड़ा और ३० आंगुल लम्बा वस्त्र से जो छान कर पानी पीता है और उस वस्त्र में रहे हुये जीवों को फिर से पानी में डाल देता है वह जीव परमगति को प्राप्त होता है। सात गांव जलाने से जितना पाप लगता है, उतना एक दिन पानी छाने बिना पीने से लगता है। कसाई को एक वर्ष में जितना पाप लगे, उतना एक दिन छाने बिना पानी संग्रह करने वाले को लगता है। जो मनुष्य वस्त्र से छाने हुये पानी से सारा कार्य करता है, वह मुनि, महासाधु, योगी और महाव्रती है।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

इतिहास पुराण में कहा है अहिंसा यह परम धर्म है। अहिंसा यह परम तप है, अहिंसा परम ज्ञान है, अहिंसा परम सुख है अहिंसा परम दान है, अहिंसा परम दम है, अहिंसा परम यज्ञ है, अहिंसा परम शुभ है। जो महात्मा अहिंसा के उत्तम धर्म का आचरण करते हैं, वे महात्मा विष्णु लोक में जाते हैं।

नयमंडल ग्रन्थ में लिखा है, सब अभक्ष्य त्यागने योग्य हैं। मद्य-पान में मस्त लोग, अकार्य में मस्त, हमेशा उन्हें न शौच, न तप, न ज्ञान, न बुद्धि, न पुरुषार्थ। मद्यपान से मति भ्रष्ट होती है। उनको दया, ध्यान, धर्म और सत् क्रिया तो होती नहीं। मद्यपान करने वाले को क्रोध, मान, लोभ, मोह उत्पन्न हो जाता है। किसी पर किसी समय राग तो किसी समय द्वेष होता है। गंदे वचन निकलने लगते हैं। मनुष्य मद्य पीकर मांस की इच्छा रखता है। उसके लिये जीव को मारता है। बाद में जब इच्छा बढ़ जाती है तो जीवों के समुदाय मारने में भी हिंचकिचाहट नहीं करता। मद्य, मांस, और छाछ से बाहर निकले हुये मक्खन में अनेक सूक्ष्म जीवों की राशी उत्पन्न हो जाती है।

'आगम में भी' इन वस्तुओं में अनंत जीव उत्पन्न हो जाते हैं ऐसा कहा है। महाभारत के मांस अधिकार में कहा है कि मांस हिंसा वर्धक है मांस दुख-वर्धक और दुख को उत्पन्न करने वाला है। इसलिये मांस भक्षण नहीं करना चाहिये। तिल और सरसों जितना भी मांस

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

जो भक्षण करता है। वह घोर नरक में यावत् चन्द्र दिवाकर जब तक है तब तक जाता है।

मनु स्मृति में भी मद्य का निषेध है। अग्नि से सात गांव जलाने से जितना पाप लगता है वह मद्य पान के एक बिन्दु मात्र के भक्षण से लगता है।

इतिहास पुराण में कहा है, श्राद्ध में धर्म इच्छा से मोहित हुआ मद्य को दे तो वह लपट खाने वालों के साथ घोर नरक में जाता है। रींगणा, कालिगा और मूला के भक्षक हे प्रिया ! वह मूढ आत्मा, अंतकाल में मेरा स्मरण नहीं करता, जिस घर में अन्न के लिये मूलियें उबलती हैं, वह घर श्मशानतुल्य हैं और माता-पिता से वर्जित होता है। पद्म पुराण में उड़द, मूग के साथ कच्चा दही, छाछ खाये तो हे युधिष्ठिर वह मांस समान है ऐसा कहा है। रात्रि भोजन भी नहीं करना चाहिये।

मार्कंड पुराण में कहा है, जब सूर्य अस्त हो जाता है तब पानी खून समान है और अन्न मांस के समान है। स्मृति में कहा है, ब्राह्मण जाति को सुबह और सांयकाल भोजन करने का कहा है, मध्य में नहीं, अग्नि होम करने वालों की यह विधि है। इत्यादि ऐसा कहकर श्रीचन्द्र राजा ने भील से कहा कि जब मैं कुशस्थल रहूंगा, तब यह सैनिक आदि स्वीकार करूंगा। ऐसी शिक्षा देकर, सुवेग रथ पर आरुढ होकर कुंजर सारथी सहित स्वनगर की तरफ वेग से प्रयाण करते हुये संध्या समय

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कुंडलपुर नगर के बाहर उद्यान में रथ रखकर, नगर में गये।

उस नगर का निरीक्षण कर श्रीचन्द्र को नगर के बाहर यक्ष के मन्दिर सोते अभी थोड़ी ही देर ही हुयी थी इतने में राजा की पुत्री सरस्वती विवाह की सामग्री से युक्त आयी, उसने बीच में सोये हुये को देखकर कहा, हे श्रीदत्त मंत्रिपुत्र ! तू उठ। और इस कन्या से शादी कर। श्रीचन्द्र उठे। बलात्कार पूर्वक सरस्वती ने उनसे विवाह किया।

बाद में सरस्वती ने कहा, बाहर उंटड़ी है, चलो हम उस पर बैठ कर कहीं दूर चलें। श्रीचन्द्र ने कहा उंटडी हांकना मैं नहीं जानता तो रात्रि में पैदल भी चलना मुश्किल है, इसलिये प्रातःकाल चलेंगे। उनके आवाज से, यह कोई और है ऐसा प्रतीत होने से रत्नदीप से अच्छी तरह देखा और कहने लगी, हे नाथ ! आपका ललाट चंदन से लिप्त नहीं है, आप कहां से आये हैं ? राजा ने कहा, मैं मुसाफिर हूं। कुशस्थल से आया हूं, तुम यहां इस तरह क्यों आयीं ? तुम कौन हो ? तुम्हें किसका भय है ? मुझ से किसलिये विवाह किया ? सुनामिका और सुरुपा सखियों में से एक ने कहा, हे स्वामी ! इस नगर के अरिमदंन राजा की पुत्री सरस्वती हमेशा इस यक्ष की पूजा करती है, एक बार राजा ने अपनी गोद में बैठी हुयी पुत्री को देखकर नैमित्तिक से पूछा कि इसके लायक वर कहां मिलेगा। वह बोला कुशस्थल के प्रतापसिह राजा का पुत्र जिसे सेठ ने बड़ा किया है वह श्रीचन्द्र महा-त्यागी, रोषायमान हुये यहां आयेंगे। राजा मौन रहे।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

'सरस्वती को रात्रि में स्वप्न में यक्ष ने कहा' मैं तुम्हारे पति को लग्न समय में अपने मन्दिर में आज से पांचवे दिन ले आऊंगा। हर्ष से वह स्वप्न प्रातःकाल होने पर सखी से कहा। इस नगर में मंत्री पुत्र श्रीदत्त सरस्वती का प्रेमी था, परन्तु सरस्वती को उस पर कोई प्रेम नहीं था। श्रीदत्त ने लोभ से मुझे वश कर लिया, मैंने उसे राजकुमारी का स्वप्न बताया। उसके कहे अनुसार मैंने स्वामिनी से कहा कि श्रीदत्त को भी इसी प्रकार स्वप्न आया है। सरस्वती ने कहा कि अगर यक्ष के वचन इस प्रकार है तो ठीक है, वह सामग्री सहित आने वाला था, परन्तु उसके पिता ने उसे आने नहीं दिया होगा जिससे वह आ नहीं सका।

सरस्वती ने कहा, हे देव ! यक्ष के वचन अन्यथा कैसे हो सकते हैं। श्रीदत्त ने मुझे ठगा था, मेरा भाग्य अच्छा है कि मेरा वर साधारण पुरुष नहीं हुआ, यक्ष के दिये हुये आप ही मेरे पति हो, मेरा परम सौभाग्य है परन्तु हम अगर यहां रहेंगे तो मेरे पिता अनर्थ करेंगे। श्रीचन्द्र ने कहा प्रिये ! मैं और वे मनुष्य हैं फिर डरने का क्या काम ? तुम डर क्यों रही हो ? देखते हैं उनमें कितना बल है।

प्रातःकाल जब श्रीचन्द्र ने मुंह धोया तो उनके सूर्य रुपी भाल को देखकर सरस्वती बहुत प्रसन्न हुई। पूजारी ने उनको देखकर जल्दी से राजा को सारी बात कह सुनायी। राजा के आदेश से बलवान सेनापति वहां आया। उसे देखकर, प्रिया के अंग को कांपता देख श्रीचन्द्र बोले, हे भद्रे ! तू डर नहीं। यह गरीब बेचारा क्या करेगा ?

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सैनिक बाहर खड़े रहे हैं अन्दर नहीं आते। सेनापति ने नाम आदि पूछा, परन्तु श्रीचन्द्र तो कुछ भी नहीं बोलते। श्रीचन्द्र ने एक बार सिंहनाद किया जिससे सब सैनिक भाग खड़े हुये। यह देख राजा स्वयं आया। सरस्वती कहने लगी, हे स्वामिन ! पिता यहां आये हैं अब क्या होगा।

सरस्वती को श्रीचन्द्र ने अपनी अंगूठी दिखा कर, हर्ष से सार रत्न ग्रहण कर, कान में कुछ कहकर, अद्भुत अंजन से बंदरी बना कर, राजा के पास जाकर, आस पास रहे हुये सैनिकों को पछाड़ कर, उन राजा के हाथी पर कूद कर, राजा से तलवार छीन, उसे बांध कर चले गये। उन्हें पहचान कर भाट कहने लगा, जिन्होंने चोर की गुफा में से बालपुत्र के वियोग से दुखी ब्राह्मण मंत्री प्रिया को उसके पति के साथ मिलाया और जिन्होंने श्री चन्द्रपुर नगर बसाया, उस कुंडलपुर के अधिपति प्रतापसिंह राजा के पुत्र श्रीचन्द्र जय को प्राप्त हों। जिनके पैर के तलुवों को राक्षस ने भक्ति पूर्वक स्पर्श किया, ऐसे श्रीचन्द्र जय को प्राप्त हों। उसे बहुत लक्ष्मी देकर वन में रथ पर आरुढ़ होकर वेग से प्रयाण किया।

मंत्री ने अरिमर्दन राजा के बन्दन खोले श्रीचन्द्र के शौर्य और दान को देखकर हर्ष युक्त बोले 'अहो वह धीर सरस्वती का पति जा रहा है उन्हें वापस लाओ। सैनिक दौड़े परन्तु उस उत्तम को कोई प्राप्त न कर सका। बंदरी को आंसू बहाती देख राजा ने सखी के पास से सारी हकीकत सुन कर उनकी कला की और उनकी प्रशंसा करते कहा ! हे वत्से ! प्रतापसिंह का पुत्र ही तेरा पति है, हाथियों, अश्वों सहित मैं तुझे कुशस्थल लेकर चलूंगा। इस प्रकार कह कर भाट को

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उचित दान देकर नगर में विशाल महोत्सव किया।

शुभ शकुन द्वारा प्रेरित अटवी में आकर रात्रि में वड़ वृक्ष के नीचे श्रीचन्द्र आसन पर लेट गये। कुंजर सारथी को नींद आ गई और राजा जाग रहे हैं। वहां ढोलक के मधुर स्वर को सुनकर सारथी को कहकर प्रतापसिंह के पुत्र उस दिशा की तरफ गये। किसी गिरि के मध्य में यक्ष के मन्दिर में द्वार बन्द करके श्रीचन्द्र के दोहे सुन्दरियें गा रही थीं। ये अद्भुत क्या है? उसे देखने के लिये दरवाजे के छेद में से देखते हैं कि मदनसुन्दरी आठ कन्याओं को गीत नत्य आदि सिखा रही है। हर्ष को प्राप्त हो विचारने लगे, मेरी प्रिया प्राप्त हो गई।

गोली से अदृश्य होकर प्रभात में जब कन्यायें जाने लगीं तो उनके पीछे हो लिये। एक गुफा में प्रवेश कर दूसरे दरवाजे से मणि के दीपकों से प्रकाशित पाताल महल में आये। महल पर चढ़ कर मदनसुन्दरी कहने लगी मेरा बांया अंग और नेत्र बार २ स्फुरायमान हो रहा है, इसलिये आज मेरे पति या उनका सन्देश आना चाहिये। उन कन्याओं में मुख्य रत्नचूला ने कहा मुझे भी ऐसा ही प्रतीत होता है आप आयीं हैं उसी दिन से तप आयंबिल आदि कर रही हैं उसके प्रभाव से आज आने ही चाहिये। रत्नवेगा ने आकर कहा कि माताजी ने भोजन के लिये सबको बुलाया है। मदनसुन्दरी कहने लगी मुझे अभी भूख नहीं है तुम जाकर भोजन करलो।

मदनसुन्दरी के बिना दूसरी कन्यायें भी भोजन के लिये नही जातीं। इतने में मा ने आकर कहा हे पुत्री! आज तूं भोजन क्यों

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

नहीं कर रही है ? मदनसुन्दरी ने कहा, हे माता आज मुझे बिल्कुल भी भूख नहीं लगी है। उस विद्याधारी ने कहा तेरे पति को ही मेरी कन्याओं ने वरण किया है, नैमित्तक के वचनानुसार भी उन्हीं के द्वारा हमें फिर राज्य प्राप्त होगा। हे पुत्री ! मैं बहुत दुखी और अभागिन हूं। स्थान से भ्रष्ट हुई हूं और भर्तार वन में मृत्यु को प्राप्त हुआ है। देवर और पुत्र सुरगिरि पर विद्या की साधना कर रहे हैं। मैं आई हूं तब तक कुशस्थल से कोई समाचार नहीं आये। हे बुद्धिशालिनी इतना जानते हुए भी तूं इतना आग्रह करवाती है हमें भी अन्तराय न कर और भोजन के लिये चल।

मदनसुन्दरी भोजन नहीं करती। विद्याधरी मदनसुन्दरी को छाती से लगा लेती है, दुख से रोने लगती है। राजा सोचने लगे जिस विद्याधर को मैंने भूल से मार दिया था, उसी की पत्नि मुझ पर कितना स्नेह रख रही है। ऐसा सोचकर महल के दरवाजे पर दृश्य पन में प्रगट होकर द्वारपाल को अंगूठी अन्दर दिखाने के लिये कहा, द्वारपाल अन्दर गया। मणिवेगा ने आकर सुन्दर रूप और आकार वाले को देखकर कहा तुम कौन हो ? इतने में मदनसुन्दरी कन्याओं के साथ आई, पति को देखकर हर्षित होती हुई माता से कहने लगी हे माता ! जिनकी आप हमेशा इच्छा करती थीं वे आपके जमाई आए हैं।

हर्ष से विद्याधरी बाहर आकर प्रशंसा करती हुई अन्दर ले गई और कहने लगी प्रतापसिंह के पुत्र ! तुम हमारे ही भाग्य से आये हो। ऐसा कहकर कन्याओं को आदेश दिया कि श्रीचन्द्र के कण्ठ में वरमाला

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पहनाओ। हर्ष से उन्होंने मालायें पहनाई। श्रीचन्द्र राजा ने कहा हे विद्याधर रानी! यह कौन हैं? और ऐसी परिस्थिती आप लोगों की कैसे हो गई? विद्याधरी ने कहा हे वीर शिरोमणि! वैताढय गिरि पर मणिभूषण नगर में रत्नचूड़ राजा और उनका छोटा भाई मणिचूड़ युवराज था। उनके रत्नवेगा और महावेगा स्त्रियां थीं। उनकी रत्नचूला और मणिचूला आदि चार पुत्रियें और रत्नकान्ता भानजी है।

गोत्री विद्याधरों सहित आकाश में विचरते उत्तर श्रेणी के नाथ सुग्रीव राजा ने उन्हें जीता, जिससे सहकुटुम्ब धनादि लेकर इस पाताल नगरी में रहें। स्वदेश प्राप्त करने के लिये रत्नचूड़ अटवी में खडग के पास विधिपूर्वक उल्टे मस्तक से विद्या को साधने लगे इतने में तो किसी ने उन्हें मार दिया। हम प्रभात में जब पूजा और उपहारादि की वस्तुएं लेकर गये तो वे वहां मरे हुए थे उनकी मृत्यु क्रिया कर हम अपने स्थान वापस आईं।

रत्नचूड़ का पुत्र रत्नध्वज पिता की मृत्यु से व्याकुल अटवी में गया वहां उद्योत के भ्रम से मदनसुन्दरी को पति से अलग करके यहां ले आया। मैंने अपनी सुशीला पुत्री की तरह उसे रखा। ये हमेशा पति के गुण गाती थी, यह सुनकर प्रेरणा से आठकन्याओं ने, वे ही पति वरण करने का निश्चय किया। मणिचूड़ ने नेमित्तिक से पूछा, तब उसने कहा जिस वर को इन कन्याओं ने चुना है वही महासात्विक पुरुष तुम्हारा गया हुआ राज्य तुम्हें वापिस दिलाएगा। मणिचूड़ और रत्नध्वज ने बस्ती बिना के पवित्र मेरुगिरि के नन्दनवन में विद्या की

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

साधना शुरु की है उन्हें चार महिने हो गये हैं और दो महिने बाकी हैं। हमारे भाग्य से आप आए हैं तो अब आप इनसे पाणिग्रहण करो।

चन्द्र के जैसी कान्ति वाली और यश वाली कन्याओं के साथ पाणिग्रहण किया। आग्रह से भोजन आदि कराके महावेगादि ने पहेरामणी देकर पूछा हे राजा ! आप अकेले कैसे ? उन्होंने यथायोग्य चरित्र कह सुनाया। रत्नवेगा ने जब तक मणिचूड़ रत्नध्वज आवे तब तक आप यहां सुख से रहो। आपके रहने से भविष्य में हमारा हित होगा। श्रीचन्द्र ने कहा हे माता ! मुझे बहुत कार्य है, जिससे मैं विलम्ब नहीं कर सकता कनकपुर नगर मुझे तत्काल पहुँचना है। विद्याधरों की विद्या सिद्ध करके आने में दो महिने की देर है कुशस्थल आर लोग आ जाए आपका मिलाप हुआ सो बहुत अच्छा रहा।

विद्याधरी ने कहा मदनसुन्दरी का मुझे विरह न हो इतना स्वीकार करो। मुझे इसके साथ स्नेह है। श्रीचन्द्र ने कहा माता ! विवाह आदि आपके स्वाधीन है आपके राज्य मिलने पर ही विवाह होगा अभी नहीं। बड़ी कठिनता से आज्ञा लेकर रवाना होने लगते हैं तो रत्नचूला कहने लगी आपका विरह हमें दुखित करेगा, फिर मदनसुन्दरी भी यहां नहीं होगी तो हमारी गति क्या होगी ? राजा ने स्नेह से मदनसुन्दरी को वहां रहने के लिये कहा परन्तु वह वहां रहने में समर्थ नहीं। प्रिय से सती अब अलग कैसे रहे। बाद में अवधि का निश्चय कर जबरदस्ती वहां रहने का कहते हैं परन्तु मदनसुन्दरी वहां

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

नहीं रही। मदनसुन्दरी सहित वन में आकर, रथ पर आरूढ़ होकर परस्पर अपनी २ बातें करते कनकपुर की तरफ प्रयाण किया।

क्रम से रुद्रपल्ली उपवन में आये। वहां उस नगर के राजा को हाथी और घोड़ो सहित खड़े हुये देखा, एक तरफ अग्नि बिना की चिता थी दूसरी तरफ अति दुखी कोमल अंग वाली स्त्री को राजा रोकते हुए दिखाई दिये। तीसरी तरफ कोटवाल द्वारा बांधे हुए अद्भुत पुरुष को देखकर श्रीचन्द्र राजा रथ में से उतर कर वृक्ष के नीचे खड़े हो गये और वनपाल से पूछने लगे ये सब क्या है? उसने कहा हे सज्जनों में मुगट समान! यह रुद्रपल्ली नगरी है, व्रजसिंह राजा और उनकी क्षेमवती नामकी रानी है उनकी यह हंसावली पुत्री है। इतने में रथ और राजा को देखकर वहां के राजा ने आश्चर्य से मन्त्री और वहां के मुख्य लोगों को वहां भेजा।

हरि भाट के भतीजे अंगद ने पहचान कर कहा कि 'कनकपुर में कनकध्वज का राज्य कनकावली पुत्री और देवों का अर्पित किया हुआ देवी हार का सुख जो भोग रहे हैं वे श्रीचन्द्र जय को प्राप्त हों। वीणापुर में पद्मश्री और तारालोचना को जाति स्मरण से विवाहा वे माता सहित श्रीचन्द्र जय को प्राप्त हों। श्रीगिरि में विजयादेवी के सानिध्य से सदाफल उद्यान, सुवर्ण की खान, मध्य शिखर पर जिन मन्दिर, दो किल्ले भील की सहायता से मिले वे श्रीचन्द्र जय को प्राप्त हों। श्रीगिरि पर विजया देवी के आदेश से, जिसके हृदय पर नया वस्त्र स्थापित किया वे श्रीचन्द्र जय को प्राप्त हों। श्रीचन्द्रपुर नगर के मध्य में प्रथम जिनेश्वर देव का

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

चार द्वार वाला मनोहर चैत्य जिसने बनवाया वे श्रीचन्द्र जय को प्राप्त हो।

मन्त्रियों ने वहां जाकर पूछा और वापस आकर सारा हाल राजा को कह सुनाया। हंसावली सहित राजा को आते देख, श्रीचन्द्र भी सामने गये और परस्पर नमस्कार करके एक स्थान पर बैठे। श्रीचन्द्र ने मदन सुन्दरी को उचित स्थान पर बैठा कर, राजा से पूछने लगे कि राजकुमारी के दुख का क्या कारण है? राजा ने कहा, हे नवलक्षेश! मेरी पुत्री हंसावली और कनकावली दोनों सखियें हैं, कनकावली अकस्मात् आप से ब्याही, उसे और पिता के राज्य को भोगते हुये, बहुत भाग्यशाली जानकर और आपके गुणों को सुनकर हंसावली ने सर्व साक्षी से कहा, कनकावली के जो पति हैं वे ही मेरे पति हैं। इस प्रकार का विशेष पत्र कनकपुर भेजा।

लक्ष्मण मंत्री के पास से आपके परदेश जाने के समाचार जाने। तब से ही अन्तर से दुखी हंसावली आपका नित्य स्मरण करती है। कुंडील नगर का राजपुत्र चन्द्रसेन जो हंसावली पर अनुरक्त था, उसने हंसावली की प्रतिज्ञा को सुनकर, दुष्ट कर्म के योग से, दुष्ट बुद्धि उत्पन्न हुई। मित्र आदि से पूछे बिना, रात्रि को चन्द्रसेन ने प्रयाण करके कनकपुर में आपकी सारी हकीकत जानी, दुष्ट बुद्धि से प्रपंच से आपका वेष लेकर एक मनुष्य सहित यहां आया, उसके कपट को हम पहचान नहीं सके। हमने इसे श्रीचन्द्र मानकर हर्ष से विवाह उत्सव मनाया।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

किसी एक व्यापारी ने इस दुष्ट को पहचान कर उसको बांध कर खूब मारा तब वह बोला कि मैं श्रीचन्द्र नहीं हूँ बल्कि कुडलेश राजा का पुत्र हूं। अति दुखी हुये हमें यह विवाह बड़ा विषम पड़ गया मन्त्री चिन्तातुर हो गये। इतने में अंगद आया, उसके पास, मे आपके गुणों को सुना। उस दुख से दुखी हंसावली मना करने पर भी काष्टभक्षण के लिये उत्सुक हुई है। जिसका मुख भी देखने योग्य नहीं ऐसे चन्द्रसेन को यहां लाया गया है। अहो? देखो उनका विश्वासघातीपन। अहो उसका छल-कपट, अहो उसका अदीर्घदर्शीपन, अहो कुकृत्यपन अहो हमारा अज्ञान हमने पहले कुछ भी सोचा समझा नहीं। बहुत जल्दी की।

श्रीचन्द्र राजा ने कहा कि इसमें आपका दोष नहीं परन्तु यह तो कर्म राजा की योजना है। जीव ने पूर्व में अनेक प्रकार के कर्म बांधे हुये होते हैं, उसी प्रकार से बुद्धि उत्पन्न होती है फिर वैसी भावना तथा वैसी योजना बनती है। जैसी भवितव्यता होती है। वैसे ही बनाव बनते हैं। दूसरों के दुख को न देख सकने वाले ऐसे श्रीचन्द्र ने उस राजा के पुत्र को छुड़ाया, पास में बैठाकर उसे कहने लगे तूं ने सत्कुल में जन्म लिया फिर इस प्रकार एक स्त्री के लिये ऐसा कपट कैसे किया।

बाद में राजकुमारी से कहने लगे, हे भद्रे! दुख क्यों करती है? ऐसा अकार्य न कर। आत्म हत्या करके मनुष्य जन्म को क्यों गंवा रही हो? मन और वचन से स्वीकृत पति नहीं हो सकता, परन्तु जिसके साथ पाणिग्रहण होता है वही पति माना जाता है, ऐसी रीति

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

है। दूसरे को दी हुई कन्या किसी दूसरे से विवाहित की जा सकती है परन्तु विवाहित स्त्री दूसरे की पत्नी नहीं बन सकती। काष्ठ की थाली में आग एक बार ही रखी जाती है, कनक में पानी एक बार ही रोपा जाता है वैसे ही कन्या भी एक बार ही ब्याही जाती है।

हंसावली ने कहा कुल स्त्री का यह धर्म है और 'सत्य है' जिसे मन में धारण किया उसके सिवाय वह दूसरे को वरती नहीं। मैं मन, वचन और काया से विवाहित और फिर गीत, नृत्य नाम आदि जिसका लिया और जिसका ध्यान किया वही मेरा पति है उसके सिवाय मैं किसी ओर को कैसे सेवूं? विपर्यास से ग्रहण किया हुआ धन को क्या पंडित पुरुष त्याग नहीं करते? आपकी भ्रान्ति से हस्त स्पर्श किये हुए का भी उसी प्रकार त्याग किया जा सकता है। मन से वरण किये हुये वर के सिवाय सती स्त्री दूसरे को किस तरह स्वीकार करे? आपने जो रुठी कही है, उस चोथे मंगल फेरे में लोक की स्त्रियें चित्त से जिसे स्वीकार करती हैं वही पति होता है। मन मे धारण किया हुआ और कहा हुआ कार्य ही फलदायी होता है। और भी कहा 'मन मनुष्य के बंध और मोक्ष का कारण है। जिस तरह बहन और स्त्री को आलिंगन किया जाता है परन्तु उसमें सिर्फ मन में फेर होता है। श्री जिनेश्वर देवों ने कहा हे जो मन सातवीं नरक ले जा सकता है वही मन मोक्ष में भी ले जाता है।

उस सति को श्रीचन्द्र ने कहा, हे सदाचारिणी! वस्तु का वास्तव में परिवर्तन हो सकता है, मणिसुवर्ण आदि। परन्तु विवाहित

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

स्त्री का फेर फार नहीं हो सकता; वुद्धि की भूल से डाला हुआ नमक अन्यथा नहीं होता, परन्तु खारा ही होता है। मीठे पानी से मन से आटा गूंधा हुआ, खारे पानी से गूंधा हुआ आटा मीठा नहीं होता परन्तु जैसा होता है वैसा ही दिखता है। जिसके साथ हस्तमिलाप हुआ है वही भर्तार है वह स्त्री दूसरे के लिये परस्त्री होती है।

हंसावली ने कहा, मेरे चित्त में तो आप ही पति हो, इसके साथ व्याही हूँ पर इसे अपना पति मानती नहीं इसलिये मैं सती हूँ या असती यह तो केवली भगवान जानें। मुझे जो आप पर स्त्री मानते हों तो मुझे अग्नि या तपस्या का ही शरण लेना होगा परन्तु दूसरी कोई गति नहीं। पहले किये हुये कर्म के अन्तराय कैसे टूटे? हंसावली के शील की दृढ़ता को देखकर श्रीचन्द्र राजा और राजा के पुत्र ने उसी की प्रशंसा की।

श्रीचन्द्र कहने लगे, हे राजा! प्राणी विषय से किस प्रकार पीड़ित होते हैं। जीव धन के लिये, जीवित के लिये अतृप्त हुये हैं, होते हैं और होंगे। बीच में तीन रेखा हैं, वे तीन मार्ग हैं, विशाल स्तनरुपी बजार है, स्त्रियों की चपल दृष्टि में, मदन पिशाच, स्खलना पाये हुये मनुष्य को छलता है, दारू तीन प्रकार का है, आटे का मद्य और गुड़ का। तीसरा दारू स्त्री है। जिससे जगत मोह को प्राप्त हुआ है, दारू पीने से नशा चढ़ता है, परन्तु स्त्री को देखने मात्र से नशा चढ़ता है जिससे नारी दृष्टिमदा कहलाती है उसे तो देखना भी

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

नहीं चाहिये । अति संकट हो वहां जाना नहीं, विषम पंथ पर जाना नहीं, महापंथ पर जाना नहीं, संम पंथ पर जाना । परस्त्री संकट है, विधवा विषम है, वेश्या महापंथ है और स्वस्त्री पंथ है । अल्प रुप वाली परस्त्री को मन में नहीं विचारना क्योंकि वह अपथ्य है, वह रूप के रोग का कारण होती है, शरीर को क्षीण करती है । इन्द्रियों में रसना इन्द्रिय, कर्म में मोहनीय कर्म व्रत में ब्रह्मचर्य व्रत और गुप्तियों में मनोगुप्ति कठिनता से जीती जा सकती है ।

पुष्प, फल का रस, दारू, मांस और स्त्री के रस को जिसने पहचान कर त्याग दिया उन महापुरुषों को मैं वन्दन करता हूँ । देव विमान मिलना सुलभ है परन्तु जीवों को श्री जिनेन्द्र का शासन और बोधि बीज दुर्लभ है । इन धर्मवचनों को सुनकर राजा, मंत्री और कन्या आदि ने प्रभावित होकर श्रीचन्द्र को प्रणाम किया ।

चन्द्रसेन ने कहा हे स्वामिन् ! आप मुझे प्राण देने वाले हो मैं आपका सेवक हूँ ।

हंसावली ने प्रतिबोध पाकर कहा, हे वर ! आपने कामदेव को त्यागा हुआ है । आपके धर्म उपदेश से आप जीव और धर्म देने वाले हो । आपके कहे अनुसार श्री अरिहंत परमात्मा मेरे देव हैं, उनका फरमाया हुआ, दया मूल धर्म है और आप गुरु हैं, सर्व रत्नों में मुख्य शील रत्न मेरे शरीर का आभूषण हो जिससे मैं शील वृति

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वाली होऊं। व्रजसिंह राजा ने कहा, हे वीर कोटीर! हमारा यह मनोरथ है कि आप चन्द्रावली को वरो। हंसावली और मदनसुन्दरी के आग्रह से उसकी छोटी बहन से श्रीचन्द्र विस्तार से ब्याहे।

रति और प्रीति से युक्त कामदेव की तरह श्रीचन्द्र दो पत्नियों से सुशोभित इन्द्र की तरह, अनेक प्रकार के बाजों से दिशायें गूंज उठी हैं, हाथियों, घोड़ों, रथों सैनिकों आदि सहित नवलक्षेश देश की सरहद पर पहोंचे। स्वसमाचार पद्मनाभ, गुणचन्द्र आदि को पहुँचाये। स्वनाथ पधारे हैं जानकर हर्ष से सन्मुख आकर स्तुति कर परस्पर सारा वृतान्त सुनाया। गुणचन्द्र ने कहा हे देव! दुर्जय गुणविभ्रम राजा अभी तक जीता नहीं गया। पहले से दस गुणा दन्ड तरीके मांगता है, वह ६ राजाओं से युक्त है। हम दन्ड स्वीकार कर रहे थे इतने में हमारे भाग्य से आप आ गये। जैसे बादल बिन बरसात हुई है।

चन्द्रहास खडग की कान्ति वाले श्रीचन्द्र रूपी सूर्य सैन्य रूपी उदयाचल गिरि पर उदित हुये, प्रताप और देदीप्यमान देह वाले ऐसे श्रीचन्द्र सुशोभित होने लगे। प्रतापसिंह के पुत्र सिंह को आया जान कर, शत्रु सेना जैसे पक्षी कांपते है, कम्पित होने लगी। सारी ही सेना दुखित हो उठी। श्रीचन्द्र राजा ने गुण विभ्रम राजा को कहलाया कि कनकपुर के राजा के पास से जितना दन्ड लिया है उसका सौ गुणा करके वापस दो, नहीं तो युद्ध के लिये तैयार हो जाओ मैं आया हूं। इन गर्व भरे वचनों को सुनकर अन्दर से तो राजा द्रवित हो उठा पर

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

बाहिर से दृढ़ होकर सैनिकों सहित रणक्षेत्र में आया। उसे देख श्रीचन्द्र ने भी अपनी सेना को आदेश दे दिया।

बहुत ही भयंकर युद्ध होने लगा, उस समय जय लक्ष्मी घन्टे के दन्ड की तरह इधर उधर फिरने लगी। गुण विभ्रम राजा ने श्रीनगर के सैन्य को तो भगा दिया, पद्मनाभ राजा, व्रजसिंह राजा लक्ष्मण मंत्री हरिषेण आदि को बाणों द्वारा विंदते हुये देकर श्रीचन्द्र हस्ति पर आरूढ़ हो, चन्द्रहास से शोभित हो गुण विभ्रम राजा के सन्मुख आकर सैनिकों को भगाते हुये कहने लगे, तुम उम्र में मेरे से बड़े होने से, मुझे झुककर चले जाओ, वर्ना लड़ना हो तो पहले वार करो।

गुण विभ्रम राजा ने कहा, तूं बालक है यह क्यों नहीं सोचता? तूं जा क्यों नहीं रहा? ऐसा कहकर तलवार से प्रहार किया। स्व-मस्तक पर आते हुये देख, कुशाग्रबुद्धि वाले श्रीचन्द्र ने चन्द्रहास खडग से उसके हाथ पर प्रहार किया। कवच होने से हाथ तो नहीं कटा परन्तु तलवार के १०० टुकड़े हो गये। यह देख कर राजाधीश ऐसे श्रीचन्द्र ने गुण विभ्रम को गले में धनुष की डोरी डालकर नीचे पटक दिया। उसके हाथी पर से गिरते ही श्रीचन्द्र के सैनिकों ने उसे बांध लिया और लकड़ी के पिंजरे में क़ैद कर दिया।

चारों तरफ श्रीचन्द्रकी जयजयकार होने लगी। चारों दिशाओं में जिनके गुणगान हो रहे हैं ऐसे श्रीचन्द्र कल्याणपुर में स्वआज्ञा और सात देशों में अपनी आज्ञा मंत्रियों द्वारा पलाते हुये क्रमशः कनकपुर में ९ राजाओं के

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

साथ जय लक्ष्मी रुपी माला आभूषण की तरह जिनके गले में सुशोभित हो रही है ऐसे श्रीचन्द्र नगर में प्रवेश करते अत्यन्त सुशोभित हो रहे थे। मार्ग में चलते हुये श्री गिरि पर्वत पर जब उन्होंने सुना कि माता सूर्यवती ने पुत्र का जन्म दिया है तो हर्ष से दान देकर महोत्सव किया और जेल में से कैदियों को मुक्त कर दिया। सब जगह मनोहर गीत, नृत्य, जगह २ तोरण बांधे गये और सब जगह हर्ष का साम्राज्य फैल गया। उस समय गुण विभ्रम राजा को मुक्त करके उसका संमान किया। यह देख गुण विभ्रम राजा श्रीचन्द्र के चरणों में गिर कर कहने लगा मेरे अपराध क्षमा करो, मैं आपका किंकर हूं। उसे आदर से अपनें पास आसन दिया।

कुंडलेश ने श्रीचन्द्रपुर नगर में जाकर अति हर्ष पूर्वक सूर्यवती माता को नमस्कार किया। सब बहुओं, मन्त्रियों, राजाओं ने भी सूर्यवती रानी को नमस्कार किया। माता ने सारा वृतान्त सुनाकर छोटे भाई को श्रीचन्द्र की गोद में दिया, गोद में लेकर उसके प्रसन्नवदन चेहरे को देखकर श्रीचन्द्र ने उसका नाम एकांगवीर रखा। बाद में सब जगह समाचार लिख भेजे जिससे अनेक राजा श्रीचन्द्र की सेवा में भेटनाओं, कन्याओं को लेकर उपस्थित हुये। सब जगह आनन्द मंगल की ध्वनियां होने लगी।

कुछ ही समय बाद पद्मिनी, चन्द्रकला, वामांग, वरचन्द्र, सुधीर, धनंजय, विशाल सैन्य से युक्त तथा सर्व समृद्धि सहित वहां आ पहुँचे जिससे चारों ओर ज्यादा खुशियां छा गई

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सूर्य के समान तेजस्वी श्रीचन्द्र ने सबको अलग २ काम सौंपे। अपने मामा और वामांग को सारे कार्यों की देखभाल धनंजय को सेनापति नियुक्त किया, बाकी के लोगों को अपने अंग रक्षक आदि अलग २ कार्य सौंपे। पद्मिनी चन्द्रकला को पट्टराणी पद पर स्थापन किया। कुंजर, मल्ल, और भील को शिक्षा देकर श्रीगिरि पर रख कर श्रीचन्द्र राजा ने सब राजाओं सहित श्री जिनेश्वरदेव को नमस्कार करके माता, भाई, प्रियाओं तथा मित्र सहित कुशस्थल की तरफ प्रयाण किया।

श्रीचन्द्र हाथियों, घोड़ों, रथों, गायों, बलदों, ऊंटों, महाभटों पालकियों और विशाल सैन्य के साथ बडे ठाठ बाट से आगे प्रयाण कर रहे थे।

प्रयाण से विश्व व्याकुल हो उठा, शेषनाग डगमगाने लगा, कछुआ खेद को प्राप्त होने लगी, पृथ्वी डूबने लगा, समुद्र चंचल हो उठा, पर्वत गिरने लगे दिग हस्ति आक्रन्दन करने लगे। आकाश लुप्त हो उठा दिशाएं अदृश्य होगईं, सूर्य धूल के कारण ढ़क गया इस प्रकार इतनी बड़ी सेना परिवारों के साथ श्रीचन्द्र आगे बढ़ रहे थे।

रास्ते में श्रीचन्द्र स्थान २ पर मन्दिर, पाठशालायें मठ, प्याऊ आदि स्थापित करते हुये क्रमशः कनकपुर कुछ दिन ठहर कर फिर वहां से प्रयाण कर कल्याणपुर नगर में आये। वहां गुणविभ्रम राजा ने अपनी पुत्री गुणवती का विशाल महोत्सव पूर्वक श्रीचन्द्र से विवाह किया।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

आगे आकर मदनसुन्दरी ने वहां के सुवर्ण पुरुष का वर्णन कह सुनाया जिससे माता राजा आदि सब आश्चर्य को प्राप्त हुये। उस जंगल में से सुवर्ण पुरुष को लेकर, बड़ वृक्ष के नीचे भोंयरे में से पाताल महेल में आये। उसमें से सार रत्नों को ग्रहण कर क्रमशः रत्नचूड़ के मृत्यु स्थान पर श्री जिनेश्वर देव का मन्दिर बनवाया। जब आगे आये तो नरसिंह राजा ने आनन्दपूर्वक क्रान्ति नगरी में प्रवेश करवाया। नजदीक में बड़गांव में रहते गुणंधर पाठक को प्रियाओं से युक्त जाकर नमस्कार किया। गुरुपत्नी को नमस्कार कर अपूर्व भेंट दी।

वहां से प्रियंगुमंजरी रानी और नरसिंह राजा सहित श्रीचन्द्र हेमपुर नगर आये। वहां मदनसुन्दरी का वृतान्त जान मकरध्वज राजा अति हर्षित हुआ। वहां से फिर कंपिलपुर आये वहां जितशत्रु राजा ने महान प्रवेश महोत्सव किया। माता के आग्रह से वहां कनकवती प्रेमवती, धनवती और हेमश्री को श्रीचन्द्र बड़े ठाठ से ब्याहे। श्रीचन्द्र को आये जान वीणारव भी अपने नगर से आनंदित होता हुआ वहां आया और बड़ी सुन्दर ढंग से अपना श्रीचन्द्र काव्य मधुर स्वर में जाकर सुनाने लगा।

विशाल अश्वों से पृथ्वी खुद गई है, मद से भरे हुये हाथियों के कुंभ में मोती झर रहे हैं, मोती के कनियों को लेकर खडग बीज की श्रेणी बो रही है। हे कुंडलपति। तीनों लोकों में तुम्हें महान विशालता प्राप्त हुई है, आपकी कीर्ति रुपी लता की प्राप्ति के लिये

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

आपकी तलवार बीज बो रही है इस प्रकार बड़े मनोहर ढंग से गुण-गान करने लगा। उसे श्रीचन्द्र ने पांच लाख सोना मोहर भेंट की और दूसरों को सुन्दर वस्त्र आदि भेंट दिये। हर्ष को प्राप्त हुआ वीणारव सुवर्ण मोहरों को लेकर अपने उतारे पर आया।

उसी रात्रि में वह पांचलाख सोना मोहरें चोर चुरा कर ले गये। यह बात वीणारव ने राजा से कही। जितशत्रु राजा ने कहा, हे देव ! यहां तीन चोरों ने सारे शहर में उत्पात मचा रखा है पकड़ाई में नहीं आते। श्रीचन्द्र राजा ने यह सुन वीणारव को दस लाख सोना मोहरें और दान में दी, उनको लेकर वह अपने उतारे पर गया। रात्रि में अदृश्य होकर श्रीचन्द्र फिरते २ तीन पुरुषों को अच्छी तरह देख लेते हैं। उनमें से दो को तो वह पहचानते हैं कि रत्नखुर और लोहखुर चोर हैं, यह तीसरा कौन है यह सोचने लगे। बाद में ये क्या करते हैं यह देखने के लिये उनके पीछे हो गये।

उनमें मुख्य लोहखुर जो था उसने कहा चलो वीणारव को आज दस लाख मोहरें मिली हैं उन्हें ग्रहण करें। तीसरा जो व्रजजंघ था उसने कहा, मैंने सुना है जो राजा यहां आया हुआ है उसके भंडार में सुवर्ण पुरुष है वह ग्रहण करते हैं। वह कहने लगा तुम्हारे पास अवस्वा-पिनी विद्या है मैं तुम्हारा भतीजा गंध से पहचानी हुई वस्तु याद रखता हूं और तुम्हारा भाई गंध से धन को पहचान जाता है। लोहखुर ने कहा हे भद्र ! श्रीचन्द्र राजा धर्मनिष्ठ, न्यायी, पुण्यशाली है। जिस कारण कोई भी किसी प्रकार से उनकी कोई वस्तु नहीं ले सकता।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

इसलिये तेरा उद्यम व्यर्थ जायगा। ऐसा कहकर रज को लेकर वीणारव के उतारा की तरफ फूंका।

रक्षक और वीणारव आदि निद्राधीन हो गये। तब चोर मन्दर गये और गध द्वारा धन को प्राप्त कर नगर से बाहर निकले। उनके मर्म को जानने वाले श्रीचन्द्र ने भी उनका पीछा किया, उनके कगाये हुये मठ में आकर पीछे के भाग में धन रखकर, शिला से गुफा को बन्दकर, अवदूत का वेश पहन कर मठ में आकर सो गये। यह सब कुछ देख श्री चन्द्र भी राजमहल में जाकर सो गये। प्रातः होते ही यह बात सब जगह फैल गयी कि आज भी वीणारव का धन चोरों ने चुरा लिया है।

राज्य सभा में सब राजा, मन्त्री आदि बैठे थे कुण्डल नरेश गुस्से से जिन शत्रु से कहने लगे कैसा तुम्हारा राज्य है जहां प्रजा को कोई सुख नहीं? जहां चोर बार २ चोरी कर जाते हैं। जितशत्रु राजा अवनत मुख हो गये। यह देख श्रीचन्द्र बोले जो वीर श्रेष्ठ ताम्बूल ग्रहण कर चोरों को पकड़ कर लाएगा उसे मैं अपने विवाह की पहेरामणी दे दूंगा। सभा में बैठे हुए लोगों ने कहा हे देव ! तांबूल लेने वाला काई नहीं है आगे भी सब उपाय व्यथ गये हैं। सब सोच में पड़ गये, इस प्रकार दोपहर हो गई।

उन सब बातों से अज्ञात सूर्यवती माता ने कहलाया कि देव पूजा का समय होगया है और भोजन का समय होगया है सबको भूख

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

लगी है, इसलिये तूं जल्दी आ। 'जो भूख सर्व रूप को नाश करने वाली है, स्मृति को हरने वाली, पांच इन्द्रियों को आकर्षित में करने वाली है, कान और गाल को दीन करने वाली है, वैराग्य को उत्पन्न करने वाली है सम्बन्धियों को छुड़ाने वाली है, परदेश पर्यटन कराने वाली है, पंच-भूतों का दमन करने वाली, चारित्र का नाश करने वाली और प्राणों का भी जिस क्षुधा से नाश हो जाता है वह भूख उत्पन्न हुई है।

श्रीचन्द्र कहने लगे मेरी की हुई प्रतिज्ञा अभी तक निष्फल नहीं हुई जब मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण होगी तभी मैं भोजन करूंगा। ऐसा कहकर श्रीचन्द्र तत्काल खड़े हो गये। गुणचन्द्र ने कहा हे देव ! साहस से ऐसे वचन न कहो चोर कब पकड़े जायेंगे ? श्रीचन्द्र राजाओं सहित पैदल चलते हुए वन क्रीड़ा करते हुए बाहर मठ में आये। वहां पर दूसरे अवधूतों के साथ उन तीनों को मुंह में पान चबाये हुये देख श्रीचन्द्र मठ के बाहर बैठे और उन अवधूतों को अपने पास बुलाया। उन्होंने आकर राजा को आशीर्वाद दिया और खडे हो गये।

तब राजा ने पूछा, कि तुम में योगी कौन और भोगी कौन है ? हम योगी हैं और आप भोगी हैं। राजा बोले तब तुम्हारे मुख में यह तांबुल कैसा ? वह तीनों ही श्याम मुख वाले हो गये, दूसरे अवधूत नहीं तब श्रीचन्द्र की संज्ञा करते ही उन तीनों को चारों तरफ से घेर लिया नमो जिणांणं कहकर राजा ने उठकर मठ का निरीक्षण किया और बाद में आदेश दिया कि यहां बहुत से योगी और मुसाफिर आते

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

हैं, इस मठ के नजदीक नई धर्मशाला बनवाओ। इतना कहकर वह जो पीछे की तरफ शिला थी उसे उठाकर दूर रखी और पृथ्वी खुदवाते हुये अद्भुत गुफा देखी। उसमें से राजा सर्व सुवर्ण मोती आदि वस्तुओं को बाहर निकाल कर देखने लगे तो पूर्व की तथा अभी की चोरी हुयी सब वस्तुयें प्राप्त हो गई।

हे राजन् आपका पुण्य अपूर्व है, अद्भुत भाग्य है, आपकी परीक्षा भी अद्भुत है और आप परोपकार करने में भी अनन्य हैं इसकी प्रकार की स्तवना को कराते हुये, श्रीचन्द्र राजा ने वीणारव और जिस २ की जो वस्तुयें थी वह सब को दे दी। तीनों अवधूतों को जितशत्रु राजा को सोंपकर महोत्सव पूर्वक अपने महल में आये।

जितशत्रु राजा चोरों को चाबुक आदि से सजा देते हैं परन्तु वे अपना नाम आदि कुछ नहीं बताते। राजा उनको चोर जानकर कोटवाल को वध करने के लिये आदेश देता है। ऐसा जानकर बुद्धिशाली श्रीचन्द्र ने चोरों को बुलाकर पूछा, तुम कौन हो ? और तुम्हारा क्या नाम है ? जब उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया तब राजा ने कहा, अहो लोहखुर ! क्या तूं मुझे नहीं पहचानता ? मैंने तुझे महेन्द्रपुर की सीमा पर पुत्री सहित जीवित ही जाने दिया ? तेरी अवस्वापिनी विद्या को मैं जानता हूं। हे रत्नखुर ! प्रथम के आम्रफल का दान क्या तुझे याद नहीं है ? ये तीसरा कौन है, यह कहो।

वे तीनों राजा के चरणों में झुक पड़े। लोहखुर ने कहा, हमारा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अपराध क्षमा करें। जो लोहजंघ चोर था उसके तीन पुत्र वज्रखुर लोहखुर और रत्नखुर अनुक्रम से कुंडल गिरि, तिलक गिरी महेन्द्र गिरी में रहते थे। पहले के पास ताले को खोलने की विद्या थी, वह पहले ही मृत्यु को प्राप्त हो गया। उसका पुत्र यह वज्रजंघ है, इसे पिता ने अदृश्य होने की गोली थी लेकिन इसने वह खो दी। मैं लोहखुर हूं इस प्रकार कह कर वे कहने लगे, आप हमारे स्वामी हो। उनको उपदेश देकर उन्हें अपने पास बिठाया और उनके पास से जो विद्यायें थीं वह भी ग्रहण कर ली।

वहां से राजा महेन्द्रपुर में गये। सोते, बैठते, उठते और चलते हर समय प्रत्येक कार्य करते समय राजा नमो जिणाणं कहते हैं। चारपर्वी तप करने लगे। अर्हंत धर्म की आराधना करते राजा पक्के आस्तिक बन गये। गुफा में से धन निकलवा कर सुलोचना के साथ महोत्सव पूर्वक बड़े बाठ से पाणिग्रहण किया। श्रीचन्द्र राजा ने गुण-चन्द्र को, अपने १४ राजाओं को सेना सहित लाने के लिये रवाना किया। लक्ष्मण, सुधीराज, सुन्दर और बुद्धिसागर इन चार मंत्रियों को भक्ति से भेंटना देने के लिये प्रतापसिंह राजा के पास भेजा। उन्होंने कुशस्थल जाकर वर्धामणी दी कि, राजन्! आप श्री के पुत्र श्रीचन्द्र राजा, माता, भाई आदि सहित महेन्द्रपुर में आये हैं, वहां से तिलकपुर और सिंहपुर होकर, अल्प समय में आप श्री के चरणों में नमस्कार करेंगे।

इधर गुणचन्द्र ने आकर श्रीचन्द्र राजा से विनंती की कि

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कुंडलपुर में भील जिस गंध हस्ती को लेकर आया था वह हाथी हमारे से तो वहां से आता ही नहीं इसलिये आप स्वयं चलकर उसे शिक्षा दो। उसी समय श्रीचन्द्र राजा ने कुंडलपुर की तरफ प्रयाण किया। सुवेग पर रथारूढ़ होकर वे वहां आये। सब राजाओं ने उनका बड़ा ही आदर सत्कार किया। राजा को गध हस्ति ने भी नमस्कार किया, श्रीचन्द्र राजा ने गजराजेन्द्र को उसके नाम से पुचकार उस पर आरूढ़ हो गये। चन्द्रमुखी, चन्द्रलेखा, वीरवर्मा के कुटुम्ब और विशारद आदि के साथ तिलकपुर में आये। तिलक राजा ने उन्हें बड़े आदर से नमस्कार किया और एक महान् महोत्सव किया।

मार्ग में श्रीचन्द्र राजा चन्द्रकला सहित कई देश के राजाओं से पूजित होते हुये वसतपुर में वीरवर्मा को राजा बनाकर, गंध हस्ति पर आरुढ़ हुये, मुकुट, कुंडल आदि उज्जवल ऋद्धि सहित ऐसे सुशोभित हो रहे थे जिस प्रकार इन्द्र ऐरावण हाथी पर शोभता है। पुत्र का आगमन सुनकर शीघ्र मिलने की उत्कंठा वाले प्रतापसिंह राजा ने मंत्रियों, बाजों, अन्तपुर, नगर के लोगों, नाटक मंडलियों आदि सहित कुशस्थल से प्रयाण किया। पुत्र के समाचार प्राप्त कर लक्ष्मीदत्त श्रेणी भी राजा के आदेश से रत्नपुरी से बड़े हर्षोत्सव पूर्वक रवाना हुये।

पिता के आगमन को देखकर पुत्र सर्व ऋद्धियों सहित सन्मुख आया। श्रीचन्द्र ने जब पिता के हाथी को देखा उसी समय वे अपने हस्ति पर से उत्तार कर पैदल चलने लगे। प्रतापसिंह भी हाथी पर से उत्तर पड़े। उसी समय पुत्र ने पृथ्वी पर झुककर पिता के चरण

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कमलों में नमस्कार किया। सब को बहुत खुशी हुई। राजा ने सिंहास नारुढ होकर पुत्र को गोद में लेकर आलिंगन करते हुये बहुत समय तक वियोग रुपी दावानल को हर्ष के आसुओं से क्षणवार में शान्त किया। हर्ष के आंसू गिरती हुई सूर्यवती भी मिली।

चन्द्रकला जिनमें मुख्य है ऐसी बहुऐं सखियों सहित जिनका वृतान्त सासू, ने राजा को सुनाया उन सब ने ससुर के चरणों में पड़कर नमस्कार किया। पद्मनाभ आदि राजाओं ने और गुणचन्द्र आदि सब मंत्रिओं ने राजा के चरण कमल में नमस्कार किया। वरचन्द्र, वामांग, मदनपाल और सेनापति धनंजय ने भी नमस्कार किया कनक और कान्ड देश का राज्य प्रतापसिंह राजा के पास भक्ति पूर्वक लक्ष्मण और विशारद मंत्रियों ने भेंट किया। अपूर्व सुवर्ण पुरुष, रत्न, पारसमणी नर-मादा मोती सुवेग रथ, महावेग, वायुवेग, गंधहस्ति, अश्व आदि सर्व कीमती वस्तुयें पिता के चरण कमलों में रखीं।

सूर्यवती रानी सबसे मिली सबने कुशल वार्ता पूछी। गुणचन्द्र ने श्रीचन्द्र का सारा चरित्र कह सुनाया जिससे राजा बहुत हर्षित हुये। बाद में माता के पास से वखीर भाई को लेकर पिता की गोद में रखा। राजा ने पुत्र को स्व-चरित्र कह सुनाया। वे अवधूत की बार २ प्रशंसा करके स्वआत्म निंदा करने लगे और कहने लगे कि मेरे द्वारा उसका कोई उपकार नहीं हो सका। श्रीचन्द्र ने हंसकर कहा हे तात! आपके प्रताप से भविष्य में सब ठीक होगा।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

दीर्घदर्शी दृष्टि वाले श्रीचन्द्र ने सब को बहुत अच्छी तथा कीमती वस्तुयें भेंट की। तिलक राजा की विनन्ति से राजा पुत्र सहित महोत्सव पूर्वक तिलकपुर नगर में आये। वहां पर रत्नपुरी से पिता लक्ष्मीदत्त श्रेष्ठी को आते हुये सुनकर श्रीचन्द्र राजाओं, श्रेष्ठिओं आदि सहित सन्मुख जाकर माता-पिता को नमस्कार किया श्रेष्ठी ने भी सबको नमस्कार किया, और जाकर प्रतापसिंह राजा के पास रहे। लक्ष्मीवती बहुओं के साथ सूर्यवती के पास रही। उस समय सब को कितनी खुशी और हर्ष हुआ होगा यह तो केवली जानें। बहुत से राजाओं ने श्रीचन्द्र को कन्यायें ब्याही और बहुत भेंटें दीं। सिंहपुर से सुभगांग राजा, दीप शिखा से दीपचन्द्र राजा आदि आये और पुण्यशाली और धन्य ऐसी तिलकमंजरी के साथ श्रीचन्द्र का प्रतापसिंह राजा ने विस्तार से विवाह करवाया। अद्‌भुत योग हुआ। सबके मनोरथ फले। तिलकमंजरी की वरमाला, श्रीचन्द्र को दिन प्रतिदिन यश रुपी सुगंध फैलाती हो ऐसी अद्‌भुत फूलों को देने वाली बनी। वहा से वे सब रत्नपुर आये। वहां अनेक लौंग, इलायची के मंडपो और तरह २ के वृक्षों की छाया वाले समुद्री किनारे पर श्रीचन्द्र ने प्रतापपुर नामक नया नगर बसाया। जहां माता-पिता का परस्पर मिलाप हुआ था वहां मेलकपुर नगर बसाया। प्रतापसिंह राजा के सोने और चांदी के सिक्के बनवाये।

कुछ दिनों बाद कर्कोट द्वीप से चित्र आदि ५०० जहाजों में, रविप्रभ राजा का पुत्र कनकसेन, नौ बहिनों सहित दश हजार हाथियों तीस हजार घोड़ों, करोड़ों सैनिकों सहित वहां किनारे पर आकर

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

उतरा । उस समय प्रतापसिंह राजा क्रीड़ा के लिये वन में गये हुये थे । कर्कोट द्वीप से हाथी, अश्व आये हैं ऐसा सुनकर सब वहां आये और पूछने लगे यहां कैसे आये हो ? कनकसेन ने कहा हम कर्कोट द्वीप से आये हैं और कुशस्थल प्रतापसिंह राजा ने पास जा रहे हैं । ये नव पत्नियें श्रीचन्द्र राजा की हैं ये सब करमोचन के समय सारी चीजें मामा ने उन्हें दी थीं । वे अकेले आये थे, कन्याओं से ब्याह कर, स्व-नाम स्पष्ट अक्षरों में लिख कर किसी दूसरी जगह चले गये हैं । पिताश्री के आदेश से कन्याओं का भाई मैं सारी समृद्धि सहित उन्हें छोड़ने आया हूं, वे स्वामी कहां हैं ? राजा ने आनंदित होते हुये कहा कि प्रतापसिंह राजा के पुत्र श्रीचन्द्र यहीं हैं वे ही इस नगर के राजा हैं । कनकसेन ने आनंदित होते हुये यह ही प्रतापसिंह राजा हैं उनके चरणों में नमस्कार करके कहा हे पूज्य । अपने पुत्र का उपार्जित आप स्वीकारें । कन्याओं तथा समृद्धि देखकर और चरित्र सुनकर राजा तो बहुत ही आश्चर्य को प्राप्त हुआ ।

राज वहीं सिंहासन पर बैठकर पुत्र को परिवार सहित बुलवाते हैं । सामंतों और गुणचन्द्र मंत्रियों सहित श्रीचन्द्र हंस की तरह आये । अर्ध उठे हुये पिता को नमस्कार करके उसके पास बैठे । सूर्यवती पट्ट-रानी भी वधुओं सहित आयीं कनकसेन ने श्रीचन्द्र को नमस्कार किया । नव बहुऐं अद्भुत पति को देखकर बहुत ही हर्षित हुयीं । रुप और कान्ति युक्त उन्होंने सास और ससुर को नमस्कार किया । उनके भाई कनकसेन ने यथातथ्य कहकर हाथी, घोड़े सैनिक आदि दिये ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पिता ने श्रीचन्द्र से पूछा तुम वहां किस तरह और कब गये थे? श्रीचन्द्र वृक्ष पर चढ़कर जिस तरह वहां गये और कुशस्थल आये थे सारा वृतान्त कह सुनाया। राजा और सब लोग बहुत ही विस्मित हुये। राजा ने नगर में श्रेष्ठ प्रवेश महोत्सव कराया और तुष्टमान होकर कहने लगे मुझे जो अवधूत के उपकार को न करने का अफसोस था वह दूर हुआ। तुम्हारी उपकार परायणा भी कमाल की है तेरे गुणों से उपार्जित किये हुए ये सारे राज्य तूं स्वीकार कर। श्रीचन्द्र ने अंजली जोड़ कर कहा मैं आपका सेवक हूं, आप श्री के चरण कमल में मुझे राज्य ही है।

वहां कई दिन रहकर, इन्द्र की तरह वहां से प्रयाण किया। सूर्यवती के कहने से भीलों के राजा को वासुरी देश देकर सिंहपुर में प्रवेश किया। वहां चन्द्रकला बहुत ही हर्षित हुई। पूर्व जन्म की भूमि देखकर गुणचन्द्र मित्र के पास वेहोश होकर गिर पड़ा। शीत उपचार से जब उसे चेतना आयी तो श्रीचन्द्र ने पूछा क्या हुआ? गुणचन्द्र ने कहा कि पूर्व जन्म की स्मृति हो आई तथा अपना पूर्ण भव कह सुनाया जिससे कमल श्री को भी पूर्ण भव की स्मृति हुई कमल श्री ने भी पूर्व भव का वृतान्त कह सुनाया जिससे सब बोध को प्राप्त हुये। यहां जो धरण ज्योतिषी था श्री सिद्धगिरि पर अनशन करके मैं गुणचन्द्र हुआ। श्री देवी धरण की पत्नी दूसरे भव में जिनदत्ता और वह इस भव में कमल श्री हुई।

लोगों ने नमस्कार महामंत्र की और शत्रुंजय तीर्थ की महिमा

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

गायी। सुभगांग राजा ने श्रीचन्द्र को पहेरामणी देकर विवाह उत्सव मनाया। बाद में श्रीचन्द्र ने दीपशिखा नगरी में आकर नानीमां को नमस्कार किया। आनंद से प्रदीपवती रानी ने गोद में लेकर चुंबन करके कहा, तेरा विवाह मैंने अजानते किया था वह आज हृदय में अत्यन्त आनंद देने वाला बना है। उस समय मैंने कहा था कि चन्द्रकला को वर, इसके हस्तस्पर्श से तुझे बहुत राजकन्यायें वरेंगीं। पिता के आदेश से कनकदत्त श्रेष्ठी की पुत्री रुपवती से श्रीचन्द्र ने ठाठ से पाणिग्रहण किया।

कुछ दिन वहां रहकर फिर कुशस्थल की तरफ प्रयाण किया। वहां जाकर श्रीचन्द्र ने विनती की कि हे पिताजी ! कारागृह में से जय आदि भाइयों को मुक्त करो। वे आत्मनिन्दा करते हुये पिता के सन्मुख आये।

मणिचूड़ और रत्नध्वज विद्याधर मेरुगिरि के नंदनवन से विद्या सिद्ध कर अपने नगर में आये। श्रीचन्द्र का सर्व वृतान्त सुनकर, आनंद से विमान रच कर, कुशस्थल के बाहर जहां राजा का पड़ाव था, आकाश में से उतरते हुये रत्नों की कान्ति से आकाश को देदीप्यमान बना दिया। श्रीचन्द्र को परस्पर नमस्कार करके अपनी परिस्थिति बताकर शत्रु पर जय करने की विनती की। बाद में मित्र, माता-पिता, लक्ष्मीदत्त लक्ष्मीवती और अपनी प्रियाओं सहित विमान पर आरूढ होकर श्रीचन्द्र रवाना हुये। उधर पाताल नगर में जाकर वे दोनों सर्व सामग्री सहित

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

वैताढ्य गिरि पर पहुँचे। वहां उन्होंने मणिभूषण नगर में प्रवेश किया।

अनेक बाजों के नाद से दिशायें गूंज उठी श्रीचन्द्र मणिभूषण नगर के उद्यान में उतरे। वहां उद्यान को मनुष्यों से भरपूर देखते हैं। चरपुरुष ने विनती की कि हे देव! इस उद्यान में श्री धर्मघोष सूरीश्वर जी विराजमान हैं। उनकी धर्मदेशना सुग्रीव आदि विद्याधर भी सुन रहे हैं। राजा भी वहां गये। तब गुरु महाराज तप धर्म पर उपदेश दे रहे थे। श्रीचन्द्र को आया हुआ जानकर उन्होंने विशेष तप के प्रभाव का वर्णन किया।

स्वशक्ति से किये हुये तप से, नीचकुल में जन्म नहीं होता रोग होते नहीं अज्ञानपना भी नहीं रहता दरिद्रता नाश को प्राप्त होती है किसी भी प्रकार का पराभव नहीं होता, पग २ पर संपदायें प्राप्त होती हैं। इष्ट की प्राप्ति होती है। श्रीचन्द्र की तरह निश्चय की सब कल्याण कारी वस्तुयें मिलती हैं। श्रीचन्द्र की कथा विस्तार से कहकर, स्वयं-ज्ञानी गुरु ने कहा, हे राजन! हे सुग्रीव! वे ये श्रीचन्द्र राजा हैं, पिता प्रतापसिंह और सूर्यवती माता, चन्द्रकला और गुणचन्द्र आदि हैं। विद्याधरों ने प्रमोद से श्रीचन्द्र को नमस्कार करके उनकी प्रशंसा की। दूसरों ने भी नमस्कार किया।

श्रीचन्द्र राजा ने विनती की कि हे प्रभु! श्री जिनेश्वर देवों द्वारा वर्जित पूर्वभव में मैंने कौनसा पुण्य किया था। गुरु फरमाने लगे

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

कि श्री जंबूद्वीप में, ऐरावत क्षेत्र में, ब्रह्मण नगरी में जयदेव राजा, जयादेवी प्रिया के साथ राज्य करते थे। उनके नरदेव पुत्र था। राजा ने उसे पंडित के पास पढाने भेजा। राजा के वर्धन नामक श्रेष्ठी मित्र था उसके वल्लभा नामकी प्रिया थी उनके चंदन नामक पुत्र था उसे भी उन्होंने उसी पंडित के पास पढाने भेजा, जिस कारण राजपुत्र और श्रेष्ठी पुत्र दोनों मित्र हो गये। क्रमशः सब कलाओं में प्रवीण हो गये। उनकी क्रिया, वचन और चित्त भी एक ही समान था। धीरे २ वे यौवनावस्था को प्राप्त हुये।

क्षितिप्रतिष्ठित नगर में प्रजापाल राजा ने अपनी पुत्री अशोक श्री के विवाह के लिये उद्यान में स्वयंवर मंडप की रचना करायी, कुंकुम पत्रिका द्वारा अनेक राजपुत्रों को आमंत्रण देकर बुलाया। वहां नरदेव भी चन्दन सहित आया। वहां आये हुये सब राजाओं और राजपुत्रों को छोड़कर, पूर्वभव के प्रेम के कारण अशोक श्री ने चन्दन को वरमाला पहनायी। अपना ही मित्र चुना गया है यह देखकर नरदेव बहुत आनंदित हुआ यह देखकर अपनी भानजी श्री कांता नरदेव के लिये चुनी। उन दोनों का बड़े महोत्सव के साथ विवाह किया। बाद में वे अपने नगर में आये। ६ महीने बाद पूर्व कर्म के उदय से चन्दन सेवकों सहित पांच जहाजों को लेकर रत्नद्वीप में गया। वहां बहुत लाभ प्राप्त करके, कोणपुर कीं तरफ रवाना हुआ। परन्तु तूफानी हवा के कारण जहाज संकट में पड़ गये। एक जहाज तो टूट ही गया बाक़ी के सब अलग २ हो गये। दैवयोग से चन्दन का जहाज सर्वीर मन्दिर के

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

बन्दर पर पहुँचा। वहां से मोती खरीद कर घूमता हुआ चन्दन बारह वर्ष बाद कोणपुर पहुँचा। टूटे हुये जहाज के लोग लकड़ी के टुकड़ों के सहारे निकल कर पहले ही कोणपुर पहुँच गये थे। उन्होंने चन्दन का जहाज डूबने के समाचार कहे। जिस कारण सेठ मित्रों और अशोक श्री को बहुत दुख हुआ। उन्होंने ६-७ वर्ष तक समुद्र में खोज करायी परन्तु चन्दन का पता ही नहीं लगा। लोक अपवाद से अशोकश्री ने विधवा का वेश पहना परन्तु उसे विश्वास नहीं हो रहा था। चन्दन बारह वर्ष बाद एक दम आया जान कर सेठ और अशोक श्री को बहुत खुशी हुई।

सेठ, मित्र सास, ससुर नगर के लोग आदि चन्दन को लेने उसके सन्मुख गये। वह उचित दान को देता हुआ महोत्सव पूर्वक नगर में आया। घर में प्रवेश किया। अशोक श्री का धर्म कल्पद्रुम फ़लीभूत हुआ। कालक्रम से नरदेव राजा हुआ और प्रिय मित्र नगर सेठ हुआ। एक दिन वहां ज्ञानी गुरुदेव पधारे। राजा, श्री कान्ता, चन्दन, अशोकश्री ने लोगों सहित आकर गुरू वंदन किया और यथा योग्य स्थान पर सब बैठे।

आचार्य श्री ने धर्मलाभ पूर्वक धर्मदेशना देते हुये कहा, जिस प्रकार छाछ में से मक्खण, कीचड़ में से कमल, समुद्र में से अमृत, बांस में से मोती, उसी प्रकार मनुष्य भव में धर्म हीं सार हैं। अन्त में राजा ने पूछा किस कर्म के योग से चन्दन और अशोकश्री का वियोग हुआ? और किस पुण्य से वापस संयोग हुआ? गुरुदेव फरमाने लगे कि जीव

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अपने ही कर्मो से सुख और दुख भोगता है दूसरा कोई कर्म बांधता नहीं और भोगता नहीं इस भव से तीन भव पहले सुलस श्रेष्ठी था, उससे अगले भव में चन्दन किसी जगह कुलपुत्र था, अशोकश्री उसकी पत्नी थी। उसने उस भव में हास्य से वियोग वाला कर्म बांधा था। वह सुलस के भव में सुभद्रा नामकी उसकी प्रिया बनी तब उसे २४ वर्ष का वियोग हुआ; वह इस प्रकार है।

अमरपुरी में ऋषभदत्त सेठ के दीनदेवी प्रिया थी। उनके सुलस नामक पुत्र था उसका पाणिग्रहण सुभद्रा के साथ किया। वे दोनों अति धर्म प्रेमी थे। गुरुमहाराज के पास जाकर उन्होंने ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया, वे दोनों अति उल्लास से धर्म करते थे परन्तु यह सब दीनदेवी को अच्छा नहीं लगा। सुलस को संसार का रंग लगाने के लिये उसे एक जुआरी की संगत में रखा। जिस कारण वह उसकी संगति से कामपताका वेश्या के साथ १६ साल तक संसार सुख भोगता रहा। उसी के दुख में माता-पिता स्वर्ग सिधार गये। सारा धन भोग में खतम हो गया। निर्धन होने से कामपताका की अक्का ने घर में से निकाल दिया।

अब सुलस धन प्राप्ति के लिये परदेश को रवाना हो गया। मार्ग में सफेद आकड़े को देखकर, उसके नीचे धन होगा ऐसा सोचकर धरणेन्द्र को नमस्कार करके, वहां जमीन खोद कर गुप्त रीति से हजार सोना मोहरें लेकर आगे को प्रयाण किया। किसी नगर में किसी दुकान पर एक ग्राहक को माल देने में मदद की जिससे सेठ को बहुत लाभ

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

हुआ। जिससे उसने प्रसन्न होकर पूछा कि किसके मेहमान हो। उसने कहा तुम्हारा ही, सेठ हर्षित होता हुआ उसे घर ले गया स्नान, भोजन आदि कराकर, सुलस को एक दुकान खोल कर दी।

वहां उस दुकान में बहुत लाभ हुआ, वहां से सुलस ने चलकर तिलकपुर में जाकर जहाजों में करियाना भरकर रत्नद्वीप की तरफ प्रस्थान किया, वहां भी बहुत लाभ हुआ। वहां से रत्न खरीद कर अमरपुरी जा रहा था रास्ते में ही जहाजों के टूट जाने से लट्ठे के सहारे किसी किनारे पर जा लगा। वहां पर केलों से अपनी भूख को शान्त कर चिन्ता ही चिन्ता में आगे बढते एक शव को देखा। उसके वस्त्र के पल्ले में पांच रत्न बन्धे हुये थे उसे लेकर वेलाकुल नगर में आया। वहां रत्नों को बेचकर करीयाणा खरीद कर अमरपुरी की तरफ प्रयाण किया परन्तु रास्ते में ही भील्लों ने लूंट लिया। फिर वह एक सार्थवाह के साथ रवाना हुआ, रास्ते में उसे पारस रस मिला, उसे बेचकर आगे जाते हुये, उसके लाल शरीर को देखकर भारंड पक्षी मांस समझकर उठा कर रोहणगिरी पर रखकर दूसरे भारड़ं से लड़ने लग गया।

इस अवसर का लाभ लेकर, सुलस तत्क्षण वहां से भागकर गुफा में भाग गया। जब भारंड पक्षी उड़ गये तब छुटकारे की सांस लेकर, मुक्त होने से खुश होकर, जहां २ चोट आयी थी वहां वहां औषधी लगायी। इतने में एक पुरुष को देखकर पूछने लगा, कि यह कौनसा पर्वत है। उसने कहा ये रोहणगिरी है, यह गिरि हर एक के

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

भाग्य के अनुसार रत्न देती है। सुलस नें राजा की आज्ञा लेकर पर्वत को खोदना शुरु किया जिससे उसे बहुत से रत्नों की प्राप्ति हुई। उन रत्नों का करियाणा खरीद कर अमरपुरी के तरफ प्रयाण किया। रास्ते में गाढ़ जगल में दावानल से करीयाण भस्मी भूत हो गया। आगे जाते हुये सुलस ने एक अवधूत को देखा, वह रस कुपिका की बातें करता था, जिससे वह आनंदित हुआ।

अवदूत ने सुलस को डोली में बिठाकर, हाथ में भेंस की पूंछ का दीवा करके कुए में उतरा। रस की कुंपी भरकर सुलस ने जब संज्ञा की तो उसे खींचकर ऊपर ले आया। अवधूत ने पहले कुप्पी देने के लिये कहा परन्तु सुलस ने कहा पहले बाहर निकालो फिर दूंगा, जिस कारण अवदूत ने गुस्से से डोली की डोर काट दी। कुछ पुण्य के कारण डोली सहित सुलस रस में न पड़कर किनारे पर ही रह गया। उसमें पहले जिनशेखर नामक व्यक्ति गिरा हुआ था। वह मिला उससे सुलस ने बाहर निकलने का उपाय पूछा। उसने कहा कि एक ही उपाय है जब घो रस पीने आवे उसके पैर के चिपट जाना, उसके साथ ही बाहर निकला जा सकेगा, परन्तु मेरे अंग रस से गल गये हैं इसलिये मैं अब नहीं बच सकूंगा।

जब घो रस पीने आयी तब उसका पैर पकड़ कर सुलस बाहर निकला। वृक्ष के नीचे स्वस्थ होने के लिये बैठा इतने ही मे एक हाथी वहां आया, उसे देखकर सुलस वहां से पलायन कर गया। इतने में एक सिंह आया उसने हाथी को फाड़ डाला। सुलस ने रात्रि एक वृक्ष

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पर व्यतीत की। वहां वह प्रकाशित रत्नों को देखकर उन्हें लेकर शिर्ष नगर में आया। वहां धातुवादीओं ने धोखे से उससे रत्न छीन लिये जिससे वह अति चिन्ता में पड़ गया। उधर जिनशेखर समाधि पूर्वक मर कर आठवें कल्प में देव रुप उत्पन्न हुआ।

सुलस ने एक के बाद एक आती हुयी आपत्तियों से घबरा कर काली चउदश को शमशान में जाकर आपघात करने की तैयारी की, उसी समय पुण्ययोग से जिनशेखर का ध्यान सुलस की तरफ आया, उसने तत्क्षण वहां आकर सुलस को बचाकर, अपनी हकीकत कही। आपघात के लिये ठपका देखकर उसे बहुत धन सहित अमरपुरी में छोड़ा और कहा कि जब जरुरत पड़े मुझे याद करना। ऐसा कहकर देव अन्तरधान हो गया। राजा को भेंटना देकर सुलस घर आकर सगे सम्बन्धियों से मिलता है।

कामपताका को अपने घर लाकर उसके साथ और सुभद्रा के साथ संसार सुख भोगता है। विलास को भोगते हुये धन खतम हो गया तब वह जिनशेखर देव को याद करता है जिससे देव क्रोड़ द्रव्य की वृष्टि कर देव अंतरधान हो गया। एक समय सुलस ने गुरु महाराज से परिग्रह परिमाण का नियम लिया। एक दिन नगर बाहर शरीर चिन्ता के लिये बाहर गया वहां उसने धन देखा, नियम होने के कारण उसने वह धन नहीं लिया। ये समाचार जब राजा को मिले तो राजा ने प्रेम पूर्वक उसे राज्य का खजानची बनाया।

कई वर्ष बीत जाने पर एक ज्ञानी गुरु महाराज पधारे। उनकी

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

देशना सुनकर वैराग्य से राजा, सुलस और सुभद्रा ने ससार त्याग कर दीक्षा ग्रहण की। संयम की उच्चतम रुप मे साधना करते हुये, आत्म रस पीते हुये, ज्ञान, ध्यान में प्रगति करते हुये सुलस ने ५०० अखंड आंबिल किये और सुभद्रा ने १००० अखड आंबिल किये। संयम की साधना और आयंबिल तप के महान प्रभाव से, वे प्रभाविक पुण्य उपार्जन करके क्रमशः काल धर्म को प्राप्त हो, सर्वोत्तम पुण्य के प्रताप से दोनों ने बहुत लम्बे समय तक दैवी सुख भोगे। वहां से चव कर सुलस तो तूं बना और सुभद्र तेरी पत्नी अशोकश्री बनी।

चन्दन पूछने लगा कि अब कर्मों के क्षय का उपाय बताइये। तब आचार्य देव ने फरमाया कि अगर तुम कर्मो का क्षय चाहते हो तो श्री जिनेश्वर देव द्वारा कथित तत्व सुनने, तथा आगम विधि से श्री वर्धमान आयंबिल तप को करने से निकाचित कर्म भी नष्ट हो जाते हैं। गुरु महाराज के आदेशानुसार, चन्दन, अशोकश्री और सगे सम्बन्धियों ने आनंद से महान तप की शुरुआत की। चन्दन की धावमाता, सेठ का सेवक हरी और १६ पड़ोसन स्त्रियों ने भी लज्जा से, इस प्रकार बहुत लोगों ने तप शुरु किया। परन्तु बहुत कम लोगों ने उस महान् तप को पूर्ण किया।

दही, दूध, घी पकवान, खादिम, स्वादिम आदि से पूर्ण घर होने पर भी महान तप में तत्पर होकर चन्दन और अशोकश्री ने तप पूर्ण किया। नरदेव राजा ने मित्र के तप की बहुत प्रशंसा की। परन्तु उसमें मुख शुद्धि न होने के कारण कुछ घृणा भी की। चन्दन ने तप

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पूर्ण होने पर विधि पूर्वक बड़े ठाठ से महोत्सव पूर्वक तप का उद्यापन करके, क्षेत्रों का पोषण करके कालधर्म को प्राप्त हो, अच्युत इन्द्र बना और अशोकश्री का जीव सामानिक देव हुआ।

बाहरवें देवलोक में दैवी सुख भोगकर, श्री धर्मघोष सूरीश्वरजी ने कहा, वह अच्युत इन्द्र वहां से च्यव कर कुशस्थल में श्रीचन्द्र के रुप में जन्मा, तथा सामानिक देव चन्द्रकला पद्मिनी रुप में जन्मा जो तुम्हारी पट्टराणी हुई है। मित्र नरदेवघृणा करने से बहुत भवों में भ्रमण कर, सिंहपुर में धरण ब्राह्मण हुआ। श्री सिद्धाचल तीर्थ पर जाकर अनशन कर इस भव में गुणचन्द्र मंत्री पुत्र, जो तेरा प्राण प्रिय मित्र है। हरी और धावमाता इस भव में लक्ष्मीदत्त और लक्ष्मीवती बने, पूर्व के स्नेह वश जिन्होंने तेरा पुत्रवत् पालन पोषण किया, पाड़ोसिनें राजकुमारियें बन कर तुम्हारी प्रियाएं बनीं। कामपताका जो सुलस के भव में थी वह भील राजा की मोहनी कन्या हुई, इस प्रकार सारा चरित्र कह सुनाया।

उस को सुनकर श्रीचन्द्र, चन्द्रकला, गुणचन्द्र आदि को जातिस्मरण ज्ञान होने से अपना पूर्वभव, उसी तरह साक्षात देखा। उन्होंने आचार्य देव की बहुत ही स्तवना की। उसी समय सुग्रीव की पुत्री रत्नवती को जाति स्मरण ज्ञान होने से पूर्वभव के स्नेह के कारण उसने श्रीचन्द्र को वरा। श्रीचन्द्र ने रत्नवेग आदि विद्याधरों से अज्ञानता से अज्ञानवे रत्नचूड़ के वध की हकीकत कहकर उनसे क्षमा याचना की। सुग्रीव और मणीचूड़ ने भी परस्पर क्षमा याचना की।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

श्रीचन्द्र ने सबके साथ महोत्सव पूर्वक नगर में प्रवेश किया। दक्षिण और उत्तर श्रेणी के अधिपति विद्याधरों ने रत्नों और कन्याओं सहित आकर नमस्कार किया। रत्नवती, रत्नचूला, मणिचूलिका और रत्नकान्ता आदि और भी विद्याधरों की दूसरी पुत्रियों का श्रीचन्द्र से पाणिग्रहण किया। करमोचन के समय आकाशगामिनी और काम-रुपिणी विद्यायें मिलीं।

सुग्रीव आदि ११० विद्याधर अधिपतियों ने श्रीचन्द्र महा-राजा को, विद्याधरों के चक्रवर्ती रुप में विधि पूर्वक महोत्सव से अभिषेक किया। बाद में श्री सिद्धगिरि शिखर की यात्रा करके, माता-पिता, पत्निओं विद्याधरों सहित, विद्याधरों की विनती से उनके नगरों का निरीक्षण किया। आकाश को चित्र विचित्र करते हुये, विद्याधरों की श्रेष्ठ सेना सहित, रत्नों के अनेक वाजित्रों के नाद से गाजते हुये श्रीचन्द्र रुपी मेघ कुशस्थल आये।

कुशस्थल नगर में छोटे-बड़े विशाल मंच बांधे गये। केले के स्थंभ गाड़े गये। बहुत सुन्दर २ तोरण बन्धे। जिनके हाथों में केसर चमक रहा है, ऐसे हाथों से मोतियों के स्वस्तिक होने लगे। कोई हाथों में पुष्पों की माला लेकर खड़े हैं, तरह २ के ध्वज लहरा रहे हैं और अनेक गीत नृत्य हो रहे हैं। स्त्रियें धवल मंगल गीत गा रही हैं। स्थान २ पर चन्दन और कुकम से पवित्र किये हुये राजभुवन हैं, सुन्दर श्रृंगार से सज्जित ऐसी नारियों और नरों से श्रीचन्द्र ने कुशस्थल में प्रवेश किया। मंगल के लिये किये गये पूर्ण कुंभ और अक्षत पात्रों से, राज-

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

भवन छोटा हो गया। सुहागिन स्त्रियों तथा कन्याओं ने श्रीचन्द्र महाराजा को मोती और अक्षत से बधाया। कवि और भाट लोगों ने स्तुति शुरु की। सिंहासन पर बैठे हुये पिता के चरण कमलों के नजदीक श्रीचन्द्र अत्यन्त ही सुशोभित हो रहे थे।

कुछ समय पश्चात द्वारपाल द्वारा सूचना कराकर, कुंडलपुर नरेश भेंटणा रखकर, बन्दरी को बिठाकर सभा को आश्चर्य चकित कराता हुआ भक्ति से नमस्कार करके कहने लगा, मेरे द्वारा पूर्व में अज्ञानता वश जो अपराध हुआ है उसे क्षमा करें। प्रतापसिंह राजा ने पूछा यह कौन है? तुमने क्या अपराध किया है? नरेश ने हाथ जोड़ कर सारा हाल कह सुनाया। प्रतापसिंह के कहने से वानरी की आंख में अंजन डालकर श्रीचन्द्र ने उसे फिर सरस्वती बनाया। लज्जा पूर्वक सास-ससुर को नमस्कार कर, चन्द्रकला आदि को नमस्कार कर, सखी सहित वहां रही मोहनी रत्नों और भीलों सहित वहां आयी। उसे श्रीचन्द्र ने अपने महल के द्वार के आगे स्थापन की। ब्राह्मणी शिवमती को नायक नगर अर्पण किया और बाद में चोर की गुफा में से सारा धन मंगवाया।

विद्या के बल से विद्याधर राजाओं के बल से, चतुरंगी सैन्य बल से और स्वबुद्धि बल से श्रीचन्द्र ने समुद्र तक तीन खण्ड की भूमि को जीता। सोलह हजार देशों के राजाओं ने श्रीचन्द्र को नमस्कार किया। हाथियों घोड़ों, रथों और सैनिकों सहित श्रीचन्द्र अर्धचक्री की तरह शोभने लगे प्रतापसिंह राजा ने एक शुभ दिन, शुभ समय में विद्याधर

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

राजाओं और दूसरे राजाओं के समक्ष श्रीचन्द्र का महान राज्याभिषेक किया। एक छत्री राज्य को करते हुये राजाधिराज बने महापट्टराणी पद्मिनी चन्द्रकला बनी और सोलह पटरानियें १ कनकावली २ पद्मश्री ३ मदनसुन्दरी ४ प्रियंगुमंजरी ५ रत्नचूला ६ रत्नवती ७ मणिचूला ८ तारालोचना ९ गुणवती १० चन्द्रमुखी ११ चन्द्रलेखा १२ तिलकमंजरी १३ कनकवती १४ कनकसेना १५ सुलोचना १६ सरस्वती हुई।

चन्द्रावली रत्नकान्ता, धनवती आदि रुप, लावण्य, सौभाग्य लक्ष्मी की स्थान भूत १६०० रानियें हुई। चतुरा कोविदा आदि सखियें हजारों हुई। पूर्व पूण्य के भोग फल से विद्या से स्वइच्छानुसार रुप बनाकर श्रीचन्द्र राजाधिराज इच्छानुमार भोग भोगते थे। सुग्रीव को उत्तार दिशा का राज्य सौंपा और दक्षिण श्रेणी का राज्य रत्नध्वज और मणिचूल को दिया। जय आदि चारों भाइयों को कई देशों का राज्य दिया। सब जगह वह धर्म राज्य को चलाने लगे।

सोल हजार मंत्रियों में १६०० मुख्य मंत्री थे, लक्ष्मण आदि १६ अमात्य थे उन सब में मुख्य मंत्रीराज गुणचन्द्र था। ४२ लाख हाथी, ४२ लाख उत्ताम अश्व, ४२ लाख रथ, ४२ लाख ऊट ४२ लाख गाड़े, १० करोड़ साधारण घोड़े, अड़तालीश करोड़ धनुर्धारी सैनिक, उत्ताम सेनाधिपति धनजय सहित हमेशा श्रीचन्द्र राजाधिराज की सेवा करते थे।

४२ हजार ऊंचे ध्वज, ४२ हजार बाजे और उतने ही उनके

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

बजाने वाले, ४२ हजार छत्र, चामर को धारण कराने वाले पुरुष, ४२ हजार महावत शोभते थे, हरि तारक आदि भाट, वीणारव आदि गायक और दूसरे कवियों से स्तुति करवाते हुये श्रीचन्द्र सुशोभित होते थे।

सर्व देशों में, सब जातिओं में लोगों को इच्छित दान देकर, सारी पृथ्वी को अऋणी किया। सर्व निमित्रों और सर्व शास्त्रों के आदि में श्रीचन्द्र संवत्सर अंकित कराया। दानशालायें, प्याऊ, मठ, मन्दिर आदि प्रत्येक सोलह २ हजार कराये।

सत्तर वार सब जीवों को बोधिबीज देने वाली मात पिता सहित महायात्रायें कीं। प्रतिदिन श्री जिन पूजा, आवश्यक क्रिया और मात-पिता की भक्ति, गुरु महाराज की चरण स्थापना को वन्दन सर्व क्रिया को करते थे। सारे देशों में अमारी की घोषणा की और अहिंसा को फैलाया।

गांव-गांव में, गिरि-गिरि पर श्री जिन मन्दिर, जिन बिंबों की स्थापना करके पृथ्वी को श्री जिनेश्वर देव से मंडित की। श्री जिन आज्ञा के पालक ऐसे वे, सात क्षेत्रों में धन देते हुये, चार पर्वो में कुव्यापार का निषेध करते हुये, श्री जिन वचन तथा उनके कहे हुये तत्वों में श्रद्धा रखते हुये राज्य पर शासन कर रहे थे।

आनन्द पूर्वक बहुत समय व्यतीत हो गया। मुख्य तीन धर्म, अर्थ और काम को भोगते हुये चन्द्रकला की कुक्षि से चन्द्र स्वपन से

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

सूचित पुत्र रत्न का जन्म हुआ। दादा ने उसका नाम पूर्णचन्द्र रखा। सर्व देशों में जन्म महोत्सव मनाया गया। दूसरी रानियों के भी अनेक पुत्र जन्मे। श्रीचन्द्र पुत्रों सहित इन्द्र की तरह शोभते थे।

महामल्ल राजा और शशिकला रानी के प्रेमकला पुत्री हुई उसके साथ ऐकांगवीर भाई को परणाया। कुटुम्ब के दिन हर्ष पूर्वक व्यतीत हो रहे थे। एक दिन उद्यानपाल ने आकर सूचना दी कि नगर के उद्यान में मुनि समुदाय से युक्त पुण्य के पुन्ज श्री सुव्रताचार्य पधारे हैं। प्रतापसिंह आदि सब आनन्द को प्राप्त हुये।

प्रतापसिंह राजा, श्रीचन्द्र राजा और दूसरे राजाओं और स्व-प्रियाओं सहित मंत्रियों, लोगों आदि के साथ आकर गुरुमहाराज को विधि पूर्वक नमस्कार करके उचित स्थान पर बैठे। धर्मलाभ युक्त गुरुमहाराज ने देशना शुरु की कि विश्व में श्री जिनेश्वर देवों ने साधु और श्रावक दो प्रकार के धर्म कहे हैं। साधु धर्म के पांच महाव्रत, तीन गुप्ति और पांच समिति, श्रावक के १२ व्रत, देव पूजा आदि धर्म कहे हैं। श्री जिनेश्वर देव की पूजा से मन को शान्ति प्राप्त होती है मन की शांति से शुभ ध्यान उत्पन्न होता है, शुभ ध्यान से मोक्ष का अव्याबाध सुख प्राप्त होता है। द्रव्य स्तवना से उत्कृष्ट अच्युत देवलोक तक जा सकते हैं और भाव स्तवना से अन्तर मुहूर्त में केवल ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त होता है।

श्री जिन मन्दिर जाने की मन से इच्छा करे तो एक उपवास का फल उठने से बेले का फल प्रयाण के प्रारम्भ में तेले का फल, चलते

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

हुये १० उपवास का फल, मार्ग में १५ उपवास का फल, देरासर का दर्शन होते महींने के उपवास का फल, श्री जिनेश्वर प्रभु के दर्शन से १ वर्ष के उपवास का फल, तीन प्रदिक्षणा से एक सो वर्ष के उपवास का फल, श्री जिनेश्वर देव की पूजा से हजार वर्ष का फल और श्री जिन स्तवना से अनंतगुणा फल प्राप्त होता है। कहा है कि न्हवण स्नात्र करने से एक सो गुणा विलेपन से हजार गुना, पुष्प माला पहनाने से लाख गुना और गीत, नृत्य, वाजित्र आदि भावपूजा से अनंतगुणा 'कचन मणि और सुवर्ण के हजार यंभों वाला,' सुवर्ण की तल भूमि, श्री जिन भवन कराये उससे भी तप और संयम अधिक है। यह सुनकर बलात्कार श्रीचन्द्र की अनुमति लेकर प्रतापसिंह राजा, और सूर्यवती पटरानी आदि अनेक रानिओं, लक्ष्मीदत्त प्रिया सहित, और मतिराज आदि मत्रिओं ने दीक्षा ग्रहण की। कितनों ने सर्व विरति कईयों ने सम्यक्त्व और देश विरति यथाशक्ति व्रत लिये।

श्रीचन्द्र राजाधिराज ने प्रियाओं सहित श्रावक धर्म स्वीकार किया। सम्यक्त्व मूल पांच व्रत सात उत्तर व्रत इस प्रकार श्रावक के १२ व्रत लिये। श्री अरिहंत भगवान को नमस्कार करके अभिग्रह किया प्रमाण करते हैं। 'अरिहंत मेरे श्रेष्ट देव हैं, निर्ग्रन्थ सुसाधू मेरे गुरु हैं और जिनेश्वर' देवों ने जो कहा है वह ही तत्व है। इस प्रकार जावजीव सम्यक्त्व को धारण किया। श्री जिनेश्वर देव की त्रिकाल पूजा करुंगा, उभयकाल आवश्यक क्रिया करुंगा। श्री जिनेश्वर देव के गर्भ गृह में दश विध आशातना टालूंगा। तंबोल, अशुची डालना विकथा, नींद भोजन पानी क्रीड़ा कलह, जूती और हास्यकथाये दश

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

आशातना टालूंगा। प्रतिदिन एक हजार श्री महामन्त्र नमस्कार का जाप करुंगा। ३०० गाथा का स्वाध्याय करुंगा। एक लाख द्रव्य सात क्षेत्रों में खर्च करुंगा। पहेला स्थूल प्रणातिपात विरमण व्रत, अपराध बिना किसी भी जीव का विकल्प पूर्वक वध नहीं करूंगा और नहीं कराऊंगा। दूसरा स्थूल मृषावाद विरमण व्रत, पांच प्रकार के बड़े झूठ नहीं बोलूंगा। तीसरा स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत, अपराधी सिवायें, कोई भी वस्तु दिये सिवाय ग्रहण नहीं करूंगा। चोथा स्थूल ब्रह्मचर्य व्रत, स्वपत्निओं को छोड़कर जावजीव शीलव्रत पालूंगा। पांचवां परिग्रह परिमाण व्रत, नवविध परिग्रह में से तीन खण्ड राज्य के सिवाय का परिग्रह कम करूंगा। धन धान्य, रूपा, सुवर्ण, खेत महेल दो पैर वाले, चार पैर वालों आदि का भी प्रमाण रखा। छट्टा दिग परिमाण व्रत, तीन खन्ड में नीचे एक कोस से ज्यादा नहीं, ऊपर वैताढ्य भूमि को छोडकर श्री जिनेश्वर देव की यात्रा सिवाय जाऊंगा नहीं।

सातवां भोगोपभोग विरमण व्रत में अनन्तकाय, अभक्ष्य भोजन का त्याग वस्त्र आभूषण का परिमाम, सचित्त वस्तुओं का त्याग, कंद, सूरनकंद, हरी, सोंठ, हरी हल्दी, हरा काचरा, सतावली, वीराली, कुंवार पाठा, अदरक, थोर गिलोय, विरुध, लस्सन्न, वांस, करेला, गाजर, लोग्रेन की भाजी, लोढ की भाजी, गिरिकरण, कोमल पान, किसलय कोमल-वनशेरुग, थेग, अलमोया, भूमिरुआ, वथुआ की भाजी,

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पंल्यक की भाजी, कोमल इमली इस प्रकार ३२ अनंतकाय, का त्याग। १ मध, २ मदिरा ३ मांस ४ मक्खन ५ उदुंबर वृक्ष के पांच अंग, रात्रि भोजन, बोल अथाणा, बोल अठा, बर्फ, करा, कच्ची मिट्टी, कच्चा दूध—दही साथ में द्विदल फुग वाला, चलित रस वाला, अज्ञात फल, तुच्छफल, बहुबीज फल इस प्रकार ३२ अभक्ष्य का त्याग किया।

१५ कर्मादान, अंगार कर्म, वन कर्म, शकटकर्म, गाड़ी अश्व आदि किराये पर फिराने खेती, बोरीग पृथ्वी खुदवाना, दन्त वाणिज्य, कस्तुरी, दांतवाले, पंख, ऊन, हिलते, चलते प्राणी के अंग का व्यापार नहीं करना। मद्य, मक्खन, मांस, दूध, घी, तेल आदि का व्यापार नहीं करना। विष, अफीम, सोमल, शस्त्र, हल, खुदाली, फावड़े आदि का व्यापार नहीं करना।

जिन, चक्की, घाणी, पशु पंखी की पूंछ काटनी, पीठ गालना, डाम देना. खसी करना, दव, घन, खेत में अग्नि, कुएं, तालाब खुदवाना, नहर कडवाना, पानी सुकवाना, असती का पोषण, मैना, पोपट, वेश्या आदि का पोषण और उसकी कमाई लेने आदि धन्धे का त्याग किया।

आठवां अनर्थदण्ड विरमण व्रत, आर्तध्यान, रौद्रध्यान, पाप का उपदेश नहीं करना, हिंसक वस्तुओं का दान नहीं देना, प्रमाद नहीं करना। शस्त्र, अग्नि, सांबेला, यन्त्र औषध, पक्षियों का युद्ध करुंगा नहीं, कराऊंगा नहीं।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

नवमा सामायिक व्रत आर्त, रौद्र ध्यान छोड़कर मुहूंत मात्र (४८ मिनिट) समभाव में यथाशक्ति रहूंगा ।

दसवां देशावकाशिक व्रत, दिशिव्रत का परिमाण, दिन में संक्षेप और रात्रि का अभिग्रह करुंगा ।

चउदह नियमों में भोजन, विगई, वाहन, सचित वस्तुओं का दिशा आदि का प्रमाण, द्रव्य, तंबोल, आसन, विलेपन, जूतियें, स्नान, सुगन्धी, की मर्यादा ब्रह्मचर्य, १-२ सचित्त का त्याग, विगई २-३ सिवाय त्याग, चार पैर वाले, फल फूल आदि की यतना, शय्या पांच, आसन आठ, द्रव्य दश इस प्रकार नियम लिये ।

ग्यारहवां पौषधोपवास व्रत चार पर्वो में पाप कर्म का व्यापार नहीं करुंगा, नहीं कराऊंगा । पौषध करुंगा ।

बारहवां अतिथि संविभाग व्रत उस दिन अतिथि, साधु, साध्वी जी को आहार पानी, वसति, शयन, आसन, वस्त्र, पात्र, दुंगा, इस प्रकार पांच अणुव्रत, चार शिक्षा व्रत, और तीन गुणव्रत कुल बारह व्रत हुये ।

बाकी के शेष आरम्भों में त्रस स्थावर, जीवों की यतना पूर्वक रक्षा करुंगा । राजा, गुरु, गण समुदाय के बल से, देव के बल से, कार्यवश सब प्रकार के समाधि के कारण सिवाय मुझे वनमें जाने के लिये नियम है ।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

अरिहंत, सिद्ध, साधु, सम्यग् दृष्टि देवों की और स्व की साक्षी से श्रीचन्द्र ने ये व्रत ग्रहण किये।

जिसमें सम्यक्त्व मूल है, गुण रूपी क्यारियें हैं, शील रूपी प्रवाल है व्रतरूपी जिसकी शाखायें हैं। ऐसा श्रावक धर्म जो कल्पवृक्ष के समान है, वह मुझे शाश्वत सुख देने वाला बने। ऐसा कहकर गुणचन्द्र सहित गुरू महाराज को नमस्कार करके, प्रतापसिंह राजर्षि आदि नवदीक्षित साधुओं और सूर्यवती आदि साध्वीजी आदि प्रत्येक को वन्दन करके, जिनके नेत्रों से आंसू झर रहे हैं ऐसे श्रीचन्द्र राजाधिराज उनके गुणों को याद करते हुये महल में गये। श्री सुव्रताचार्य आदि राजा की अनुमति लेकर पृथ्वी तल पर विहार कर गये।

श्रीचन्द्र राजाधिराज श्रावक धर्म को पालते हुये, आकाश गामिनी विद्या से भाईयों से युक्त श्री संघ को लेकर, श्री सिद्ध क्षेत्र आदि तीर्थों की और विंध्याचल नदीश्वर द्वीप आदि शाश्वत तीर्थों की यात्रा करते थे। पिता के दीक्षा लेने के पश्चात १८ लब्धियों से युक्त अपने राज्य का सुख पूर्वक पालन करते हुये बहुत समय व्यतीत हो गया प्रतापसिंह राजर्षि, सूर्यवती साध्वीजी आदि शुद्ध चारित्र पालकर जहां एकावतारी हुये इस स्थान विशेष की शुद्धि के लिये महान स्तूप बनवाकर, सब देशों में रथ यात्रा करायी। पद्मिनी चन्द्रकला आदि ने भी अलग २ रथ यात्रायें करवायीं।

क्रम से श्रीचन्द्र राजाधिराज के १६०० पुत्र पुत्रियें हुईं। उसमें सत्तर अद्भुत पुत्र हुये। श्रीचन्द्र रूपी इन्द्र ने बारह वर्ष कुमार-

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

पन में सब कलायें प्राप्त कर लीं। एक सौ वर्ष एक छत्री राज्य का पालन कर, वैराग्य से युक्त मन वाले श्रीचन्द्र राजा ने भाई ऐकांगवीर को श्री गिरि में श्री चन्द्रपुर नगर दिया। स्वय दीक्षा की इच्छा वाले श्रीचन्द्र ने कुशस्थल में चन्द्रकला के पुत्र पूर्णचन्द्र का बड़े महोत्सव से राज्याभिषेक किया। कनकसेन को कनकपुर का राज्याभिषेक कर, नवलक्ष देश का राजा बनाया।

वैताढ्य गिरि की उत्तर और दक्षिण श्रेणी का राज्य रत्नचूला के पुत्र को दिया। रत्नपुर का राज्य रत्नमाला के पुत्र को दिया। मदनचन्द्र को मलय देश का राज्य दिया। ताराचन्द्र को नंदीपुर का राज्य दिया। इस प्रकार अपने पुत्रों को अलग २ राज्य देकर उन पर उनकी स्थापना कर श्रीचन्द्र राजराजेन्द्र ने ६ प्रकार के परिग्रह का त्याग करके चन्द्रकला आदि रानियों, गुणचन्द्र आदि मंत्रिओं सहित, आठ हजार पुरुषों और चार हजार नारियों के साथ श्री धर्मघोषसूरीश्वरजी के पास दीक्षा लेकर उनके साथ पृथ्वी तल पर विचरने लगे।

श्रीचन्द्र राजर्षिने द्वादशांगी श्रुत किया और अति दारुण तप करके आठ वर्ष छद्मस्थपर्याय पालकर, चार घाती कर्मो का क्षय करके अति उत्तम केवलज्ञान को प्राप्त किया। देवों और राजायों ने महान महोत्सव किया देवों ने स्वर्ण कमल पर सिंहासन आदि की रचना की। श्रीचन्द्र केवली ने विचरते हुये १६ हजार साधुयों और ८ हजार साध्वीजी को कुल २४ हजार धर्म देशना की शक्ति से दीक्षायें दीं। बहुतों को समकित आदि क्रियायें समझाकर श्रावक बनाये।

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

गुणचन्द्र आदि बहुत साधुओं ने और चन्द्रकला आदि बहुत साध्वीजी ने कर्मक्षय करके केवलज्ञान प्राप्त किया। कमलश्री और मोहनी शीलव्रत पालकर पहले देवलोक में गयी। वहां से च्यव कर मोक्ष में जायेंगी।

श्रीचन्द्र पैंतीस वर्ष केवली पर्याय पालकर, भव्य जीवों को प्रतिबोध करते हुये, सम्पूर्ण आयुष्य १५५ वर्ष का परिपूर्ण करके निर्वाण पद को प्राप्त हुये (श्री शंखेश्वर पार्श्व प्रभु की शीतल छाया में और उनकी असीम कृपा से वीर सं० २४८७ विक्रम स० २०१७ के चैत्र वद ५ गुरुवार को प्रभात में ११ बजे यह ग्रन्थ थोड़ा ही लिखा गया था इतने ही में दैवी पुष्पों की सुगन्ध महक उठीं वह पांच मिनिट तक रही देरासर से ६ कदम दूर। देरासर में खोज की, परन्तु ऐसी सुगन्ध के पुष्प दिखाई नहीं दिये। अर्थात् श्री वर्धमान तप के प्रेमी, श्री वर्धमान सूरी का जीव जो कि अभी वहां के अधिष्ठायक यक्ष हैं वे पांच मिनिट पधारे थे उनके गले में और हाथ में पुष्प की माला थी उसकी मुझे शायद सुगन्ध आयी। उस समय में प्रथम आवृति की प्रेस कापी लिख रहा था)। १०० वर्ष तक तीन खन्ड के सब राजाओं ने जिनके चरण कमलों की सेवा की चन्द्र की तरह एक छत्री राज्य को पालने वाले श्रीचन्द्र जय को प्राप्त हों। योगरुपी शस्त्र से आठ कर्मो की गांठें जिन्होंने नष्ट कीं ऐसे श्रीचन्द्र केवली जय को प्राप्त हों। भविक रुपी कमल को विकसित करते और सूर्य की तरह बोध देते जो विचरे थे ऐसे श्रीचन्द्र राजर्षि को मैं वन्दन करता हूं। १५५ वर्ष का सम्पूर्ण आयुष्य पूर्ण करके, निर्वाण रुपी धर्म तीर्थ में जो सिद्ध पद को प्राप्त हुये उन महान श्रीचन्द्र को हमेशा मेरा नमस्कार हो। श्रीचन्द्र के समय ९ हाथ की काया थी।

श्रीचन्द्र केवली ने जिन्हें दीक्षा दी उनमें से कितने तो केवल-

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust

ज्ञान प्राप्त करके मोक्ष में गये। कितनों ने सर्वार्थ सिद्ध देव विमान प्राप्त किया। बाकी के सब देवलोक में गये। वे एकावतारी होकर सब सिद्धि पद को प्राप्त होंगे। इस प्रकार श्री आयंबिल वर्धमान तप की कथा श्री वीर स्वामी ने पहले श्रेणिक महाराज को सुनायी थी, उसी प्रकार हे चेटक ! तेरे बोध के लिये श्रीचन्द्र केवली की कथा मैंने (गौतम स्वामी गणधर ने) कही है।

श्रीचन्द्र केवली की कथा ८०० चौवीशी तक इस तप को करते ज्ञानियों द्वारा कही जायेगी। इसे सुन चेटक महाराज तप को करने के लिये उद्यमी बनें। श्री सिद्धर्षि गणी ने ५९८ वर्ष पूर्व प्राकृत चरित्र की रचना करके उसमें से यह रचा गया है। जिसमें विविध अर्थ की रचना की रचना की गई है, उसमें से उध्धृत करायी हुयी कथा में कुछ त्रुटि हो गई हो तो वह मिथ्या दुष्कृत हो।

जहां दया रुपी इलायची, क्षमारुपी लवली वृक्ष, सत्यरुपी श्रेष्ठ लोंग, कारुण्यरुपी सुपारी है। हे भव्यजनों ! मुनिरूपी कपूर, उत्तम गुणरूपी शील, सुपात्र के समूह श्री जिनेश्वर देव द्वारा कथित गुण के करने वाले ऐसे तांबुल को ग्रहण करो।

यह संघ गुण रुपी रत्नों का रोहणाचल गिरि है, सज्जनों का भूषण है, ये प्रबल प्रतापी सूर्य है, महामंगल है, इच्छित दान को देने वाला कल्पवृक्ष है, गुरूओं का भी गुरू है ऐसा श्री जिनेश्वर से पूजित श्री संघ लम्बे समय तक जय को प्राप्त हो।

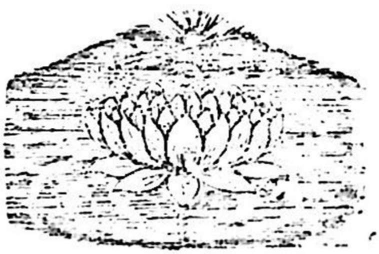

P.P. Ac. Gunratnasuri M.S. Jun Gun Aaradhak Trust